जैक लंडन

जन्म : 12 जनवरी 1876
मृत्यु : 22 नवंबर 1916

पूंजीवादी बर्बरता और नृशंसता का ऐसा चितेरा कि संवेदनशील और न्यायप्रिय व्यक्ति का खून खौल जाय

चालीस साल के अपने जीवन में जैक लंडन ने यात्राएँ कीं और खूब लिखा (पचास से ऊपर पुस्तकें)। *आयरन हील* सर्वाधिक चर्चित। 1899 तक उनकी रचनाओं को प्रकाशकों द्वारा लगातार वापस किया जाता रहा। वे मेल बॉक्स में एक पांडुलिपि डालते थे; कुछ ही दिनों बाद पांडुलिपि एक बंधी-बंधाई अस्वीकृति की पर्ची के साथ मेल बॉक्स में वापस आ जाती थी। जैसे दूसरे सिरे पर किसी मशीन, किसी कल-पुर्जे के शातिर यत्न ने पांडुलिपि को यंत्रवत दूसरे लिफाफे में डालकर उस पर अस्वीकृति की मोहर लगा दी। पर धीरे-धीरे फासिज्म के विरूद्ध उनका लेखन व्यापक रूप से स्वीकार्य होता गया। आज उन्हें पढ़कर लगता है कि फासिज्म के स्वरूप, प्रभाव, प्रयोग और संभावनाओं को लेकर उनका लेखन जैसे भविष्य का दस्तावेज हो। जॉन ग्रिफिथ चेनी के रूप में सैन फ्रैंसिस्को में जन्मने के बाद उन्हें जैक लंडन नाम सौतेले पिता से मिला और तब से मुख्यत: ओकलैंड में रहे। जीवन के अंतिम समय में गुर्दे की बिमारी से पीड़ित। मृत्यु, बेटी बेकी लंडन के अनुसार : "उनकी कई जीवनगाथाओं में लिखा गया है कि मेरे पिता ने आत्महत्या की। मैने यह मानने से हमेशा इंकार किया है। मेरे पास सबूत है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया। मैं जानती हूं कि नवंबर 1916 में वे गंभीर रूप से बीमार थे पर वे मानने से इंकार करते रहे और सामान्य रूप से जीवन चलाते रहे। वे दर्द से बेहद पीड़ित रहते थे और संभावना है कि उन्होंने (मॉर्फीन की) जरूरत से अधिक मात्रा ले ली थी—दुर्घटनावश। तो भी, डाक्टर पोर्टर, जिनको मैं व्यक्तिगत रूप से जानती थी और जिन्होंने मृत्यु प्रमाणपत्र पर दस्तखत किये, के अनुसार मृत्यु का कारण था—यूरेमिक जहर।"

लाल बहादुर वर्मा: प्रख्यात इतिहासकार, साहित्यविद् एवं सक्रिय समाजकर्मी। *गतिविधि :* सजन, सृजनशील, सांस्कृतिक आंदोलन के लिए लेखन-प्रकाशन-वितरण और संगठन में जुटना, जूझना। *सम्पर्क :* बी-239, चन्द्रशेखर आज़ाद नगर, इलाहाबाद-211 004, फोन : 0532-2546769।

इतिहास बोध प्रकाशन

ISBN 81-8235-000-X

9 788182 350007

रु. 55.00

आयरन हील • जैक लंडन

साहित्य उपक्रम

आयरन हील

जैक लंडन

अनुवादक

लालबहादुर वर्मा

आयरन हील

उपन्यास

'मेरा पिता एक अच्छा आदमी था। उसकी आत्मा भली थी। पर जीवन की बर्बरता ने उसे तोड़-मरोड़ कर कुचल डाला था। जंगली मालिकों ने उन्हें जानवर बना के छोड़ दिया था। उन्हें, तुम्हारे पापा की तरह, अभी जिन्दा होना चाहिए था। मजबूत थी उनकी काठी। पर वह मशीन में फंस गए और मुनाफे के लिए खटा-खटा कर मार दिए गए। जंगली परजीवी धनिकों, मालिकों की दावत, या वस्त्राभूषण या ऐशोआराम के लिए उनके खून का इस्तेमाल किया गया।'

—इसी पुस्तक से

'हमने आपको पूंजीपति वर्ग के अनिवार्य विनाश का गणित समझा दिया है। जब हर देश के पास ऐसा अतिरिक्त इकट्ठा हो जाएगा जिसका उपभोग असंभव होगा। तब अपने ही द्वारा शुरू की गई मुनाफे की व्यवस्था चरमराकर बैठ जाएगी। उस समय मशीनों का भंजन नहीं होगा। उस वक्त उनके स्वामित्व का संघर्ष होगा। अगर श्रम जीतता है तो तुम्हारे लिए आसानी होगी। अमरीका ही नहीं सारी दुनिया एक नए और शानदार युग में प्रवेश करेगी। मशीनें आदि आदमी को पीस देने की बजाय उसके जीवन को पहले से अधिक खुशहाल, बेहतर और भद्र बनाएंगी। ध्वस्त मध्यवर्ग और मेहनतकश—तब केवल मेहनतकश होंगे, मशीनों के उत्पादन के न्यायपूर्ण विभाजन में भागीदारी करेंगे। हम सब मिलकर और अच्छी मशीने बनाएंगे। कोई अतिरिक्त उत्पादन नहीं होगा जिसका उपभोग न हो, क्योंकि मुनाफा पैदा ही नहीं होगा।'

'पर मान लो मशीनों और दुनिया के स्वामित्व के संघर्ष में पूंजीपति जीत जाएं।' कोवाल्ट ने पूछा।

'तब हम और मज़दूर और आप सब इतिहास के किसी भी कमाऊ और कुख्यात अधिनायक की तरह के क्रूर अधिनायकत्व के इस्पाती जूतों के नीचे रौंद दिए जाएंगे। इस अधिनायक का उपयुक्त नाम होगा 'आयरन हील'।'

—इसी पुस्तक से

इस सबके बीच से आयरन हील का मार्च जारी है....

© साहित्य उपक्रम

ISBN : 818235-000-X

प्रथम संस्करण : अप्रैल, 2004
पुनर्मुद्रण मई 2006

प्रकाशक
इतिहास बोध प्रकाशन
बी-239, चंद्रशेखर आजाद नगर
इलाहाबाद-211004
दूरभाष : 0532/2546769

467, सेक्टर 9, फरीदाबाद, हरियाणा
दूरभाष : 0129-5007467

लेज़र टाइपसेटिंग
निधि लेज़र प्वाइंट
शाहदरा-110 032

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स
बी-7, सरस्वती कॉम्पलेक्स
लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110 092

आवरण
संयोजन–सुधीर वत्स

मूल्य : **55 रुपये**

को अनियोजित मानते थे, पर दूसरा विद्रोह, जो नियोजित और परिपक्व था, इतनी बुरी तरह कुचल दिया जाएगा इसका उन्हें अनुमान नहीं था।

लगता है एविस ने यह पाण्डुलिपि दूसरे विद्रोह की तैयारी के दौरान लिखी थी। इसलिए इस विद्रोह के परिणाम का इसमें जिक्र नहीं है। उसका इरादा इसे तत्काल प्रकाशित करने का था, आयरन हील को उखाड़ फेंकने के फौरन बाद, ताकि हाल ही में मरे उसके पति को उसके कार्यों के लिए पूरा श्रेय मिले। तभी दूसरे विद्रोह का दमन शुरू हो गया और एविस ने पकड़े जाने के पहले या बाद में पाण्डुलिपि को एक पेड़ में छुपा दिया था।

एविस के बारे में और कुछ नहीं पता चलता। निश्चित ही मर्सीनरीज़ ने उसे मार दिया होगा और जैसा सबको पता है ऐसे मृत्युदंड का कोई दस्तावेज नहीं रखा जाता है। उसे पता नहीं रहा होगा कि दूसरे विद्रोह का दमन कितना भयानक था। उसे क्या पता था कि भावी तीन शताब्दियों के दौरान इस दमन के विरुद्ध तीसरा और चौथा फिर और कई विद्रोह होते रहे। सभी खून के दरिया में डुबा दिए गए। तब मज़दूरों का विश्व आन्दोलन विकसित हुआ। उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि अर्नेस्ट एवरहार्ड को दी गई उसकी श्रद्धांजलि स्वरूप यह पाण्डुलिपि सात शताब्दियों तक एक पेड़ के कोटर में पड़ी रहेगी।

ऐन्थनी मेरेडिथ

आरदिस

हम आयरन हील, कितना सही है यह नाम, का अवतरण और उसके द्वारा विध्वंस और दमन महसूस कर पाते हैं।

साथ ही हम देख पाते हैं कि कैसे यह ऐतिहासिक विशेषण 'आयरन हील' (रौंदने वाली लोहे की एड़ी) एवरहार्ड के दिमाग में जन्मा। इसका इस्तेमाल इसके पहले जॉर्ज गिलफोर्ड के पैम्फलेट 'वी स्लेव्स' में 1912 में हुआ था। इस अज्ञात से आंदोलनकारी के बारे में बस इतना ही पता है कि वह शिकागो कम्यून में मारा गया था। ज़ाहिर है कि उसने यह विशेषण अर्नेस्ट के मुंह से कई बार सुना होगा जब वह उस साल चुनाव लड़ रहा था। इस किताब में वर्णन है कि धनिकतंत्र के लिए उसने यह विशेषण एक डिनर पार्टी में इस्तेमाल किया था।

धनिक तंत्र का उद्‌भव इतिहासकार और दार्शनिक को हमेशा चकित करता होगा। दूसरी ऐतिहासिक घटनाओं का सामाजिक विकास में स्थान है क्योंकि वे अनिवार्य थीं। उनके होने की भविष्यवाणी उसी निश्चितता के साथ ही जा सकती है जिसके साथ ज्योतिर्विज्ञान की भविष्यवाणियां की जाती हैं। आदिम साम्यवाद, दास प्रथा और मज़दूरी समाज के विकास के चरण थे। इस क्रम में धनिक तंत्र को भी एक चरण करार देना हास्यास्पद होगा। यह तो एक भटकाव था, पीछे जाने जैसा था। दास-प्रथा जैसा सामाजिक दमनतंत्र जितना ज़रूरी था उतना ही आयरन हील ग़ैरजरूरी।

सामन्तवाद गलत था पर अपरिहार्य भी। अतिकेंद्रित रोमन साम्राज्य के विघटन के बाद और क्या हो सकता था? पर आयरन हील के साथ ऐसा नहीं था। सामाजिक विकास की व्यवस्थित प्रक्रिया में इसके लिए कहीं जगह नहीं थी। यह न तो ज़रूरी था न अपरिहार्य। यह इतिहास में एक जिज्ञासा बना रहेगा-एक सनक, एक फन्तासी, प्रेत छाया-एक अप्रत्याशित घटना जिसकी सपने में भी संभावना नहीं थी। यह उन राजनीतिक सिद्धांतकारों के लिए चेतावनी भी बना रहेगा, जो आज के हालात के बारे में निश्चयपूर्वक बोलते हैं।

उस समय के समाजशास्त्रियों ने पूंजीवाद को बुर्जुआ शासन का चरमोत्कर्ष, बुर्जुआ क्रांति का पका फल करार दिया था और आज हम इस निर्णय की प्रशंसा करते है। इसके बाद हरबर्ट स्पेन्सर जैसे विरोधी भी स्वीकार करते थे कि समाजवाद आएगा। आत्म-सेवक पूंजीवाद के क्षरण के बाद मानवमात्र के बीच भ्रातृत्व का फूल खिलेगा ऐसा माना जाता था। पर इसकी बजाय पूंजीवाद ने धनिकतंत्र को जन्म दे दिया जो उस समय के लिए भी भयानक था और आज भी लगता है।

बीसवीं सदी के समाजवाद ने बहुत देर से समझा। जब यह समझा जा रहा था तब भी इस राक्षसीतंत्र का यथार्थ उपस्थित था। तब भी, जैसा कि इस किताब से स्पष्ट होता है, इसको स्थायी नहीं समझा जा रहा था। क्रांतिकारी सोचते थे कि इसे कुछ वर्षों में उखाड़ फेकेंगे। यह सच है कि वे किसान विद्रोह को अपरिपक्व और 'प्रथम विद्रोह'

आयरन हील

जैक लंडन

अनुवाद
लाल बहादुर वर्मा

साहित्य उपक्रम

फासीवाद
से मुक्ति
के लिए

प्रस्तावना

यह नहीं कहा जा सकता कि एवरहार्ड-पाण्डुलिपि एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। इतिहासकार के लिए इसमें गलतियों की भरमार है—तथ्यों की गलती नहीं, व्याख्या की गलतियां। एविस एवरहार्ड ने यह पाण्डुलिपि बहुत पहले पूरी की थी। उस समय बहुत सी बातें स्पष्ट नहीं थीं। अब उन पर नज़र डालने पर वे साफ-साफ दिखती हैं। एविस के पास परिप्रेक्ष्य नहीं था। जिन घटनाओं के बारे में वह लिख रही थी उनके वह बहुत करीब थी, यह कहना बेहतर होगा कि वह उनमें डूबी हुई थी। फिर भी व्यक्तिगत दस्तावेज के रूप में इस पाण्डुलिपि की अपरिमित महत्ता है। पर इस संदर्भ में भी परिप्रेक्ष्य की गलती हो गई है—प्यार के पूर्वाग्रह के कारण उत्पन्न विकृति। हम मुस्कराकर एविस को माफ कर देते हैं—अपने पति को हीरो के रूप में देखने के लिए। आज हम जानते है कि वह उतना महान् नहीं था, जितना यह किताब उसे पेश करती है। उसकी भूमिका इस पुस्तक में वर्णित भूमिका से छोटी थी।

हम जानते हैं कि अर्नेस्ट बहुत बलशाली था, पर उतना नहीं जितना उसकी पत्नी उसे बताती है। वह था तो उन नायकों में से एक ही, जो सारी दुनिया में क्रांति को समर्पित थे। हालांकि मेहनतकश के दर्शन की व्याख्या और विस्तार में उसका योगदान असाधारण था। इसके लिए वह जो शब्द इस्तेमाल करता था वे थे 'सर्वहारा विज्ञान' और 'सर्वहारा दर्शन'। इसी से उसके दिमाग की सीमा परिलक्षित होती है। यह सच है कि यह उस काल की सीमा थी जिससे कोई बच नहीं सकता।

पाण्डुलिपि पर लौटें तो वह उस भयानक समय का 'अहसास' कराने में खासतौर से मूल्यवान है। 1912 और 1932 के बीच के समय के लोगों के मनोविज्ञान का इतना जीवन्त चित्रण और कहीं नहीं मिलेगा-उनकी गलतियाँ, उनका अज्ञान, उनकी शंकाएं, उनके डर, आशंकाएं, उनके नैतिक विभ्रम, उनके हिंसक आवेग, असाधारण स्वार्थ और आज के प्रबुद्ध समय में इन्हें समझ पाना सबसे कठिन है। इतिहास तो हमें बताता है कि क्या कैसा था? जन्तु विज्ञान और मनोविज्ञान हमें उनका कारण बताते हैं, लेकिन तीनों मिलकर भी उन्हें जीवन्त नहीं बना पाते। हम उन्हें तथ्य के रूप में स्वीकार करते हैं पर उनकी सहानुभूतिपूर्ण समझ से हम वंचित रह जाते हैं।

यह सह अनुभूति हमें इस किताब को पढ़ने पर मिलती है। हम उस विश्व-नाटक के पात्रों के दिमागों में पैठ जाते हैं, उनकी मानसिक प्रक्रिया हमारी हो जाती है। हम केवल एविस का अपने हीरो पति के प्रति प्रेम ही नहीं समझ पाते, हम धनिकतंत्र की आसन्नता के बारे में उसकी प्रारम्भिक अस्पष्टता भी उसी की तरह महसूस कर पाते हैं।

संविधान में
सबसे नैतिक गारंटी है
मर्जी से पेशा चुनने की

गर्दन पकड़ कर बताना नहीं होता
भीख मांगो, चोरी करो
वेश्या बनो, सियाचिन में मरो

—विकास

होता है। जैसे ही लोहे की एड़ी अपनी सत्ता सुगठित कर लेती है क्रांतिकारियों को एक जटिल भूमिगत तंत्र विकसित करना पड़ता है जिसे कार्यान्वित करती है एविस (जिसका अर्थ होता है चिड़िया)।

लन्डन के श्वेत श्रेष्ठता के विचार उतने ही अनुपस्थित हैं जितने पुरुष श्रेष्ठता के। जापानी सर्वहारा को क्रांतिकारी समाजवादी के रूप में देखा गया है। मैक्सिको के कामरेड इतने शक्तिशाली हैं जितने कि आयरन हील सोच भी नहीं सकता था, शिकागो की उथल-पुथल की ओर भागी जा रही ट्रेन की मिश्रित (मुलाटो) परिचारिका एक गुप्त क्रांतिकारी एजेन्ट है, फिर भी अपने समकालीन समाजवादी कामरेडों की तरह लन्डन भी अभी यह समझ पाने से दूर था कि बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विश्व के अश्वेत लोग क्रांतिकारी शक्तियों का नेतृत्व करने वाले हैं।

'आयरन हील' भयानक स्पष्टता के साथ उस संघर्ष की बर्बरता प्रस्तुत करती है जिसमें हम लिप्त हैं। जब हम शिकागो के संघर्ष का प्रखर चित्रण पढ़ते हैं तो हम उसे उपन्यास के सपाट प्राक्कथन और बेजान फुटनोट की अपेक्षा ज्यादा गहराई से समझ पाते हैं। लन्डन हमें बताते हैं कि पूंजीवादी समाज के उस दौर में जब पूंजीवाद आन्तरिक अन्तर्विरोधों से ग्रस्त है, उतनी भयानक लड़ाई लड़नी पड़ेगी जितनी कि उपन्यास के क्रांतिकारियों को लड़नी पड़ी थी, ताकि हमारे चेहरों को रौंदने की उद्धत घोषणा पूरी न हो सके।

एच. ब्रूस फ्रेंकलिन

नेवार्क, न्यू जर्सी, अमरीका
21 अप्रैल, 1980

भूमिका

आयरन हील 1908 में प्रकाशित हुई। 1947 में फिलिप ने इसे बीसवीं शताब्दी की शायद सबसे आश्चर्यजनक रूप से भविष्यद्रष्टा कृति करार दिया। अब जबकि बीसवीं सदी का अन्त हो रहा है, हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो फिलिप का दावा अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं लगता; क्योंकि हर बीते दशक के साथ यह किताब और अधिक मौजूं और जीवन्त लगती जाती है।

जब जैक लन्डन ने इसे 1906 में लिखा था तो 1905 की रूसी क्रांति को रूस के ज़ार की फौज, आतंकवादी गैंग और गुप्त पुलिस रौंद रही थी। शायद ही किसी को उम्मीद होगी कि इस पराजय से 1917 की विजयी रूसी क्रांति का जन्म होगा। वक्त बीतने के साथ हम उस मुकाम पर खड़े हैं जहां से कह सकते हैं कि वे हमारी शताब्दी की नियामक घटनाएं थीं। हम तो वैश्विक क्रांतियों और प्रतिक्रांतियों के दौर में जी रहे हैं जब भयानक दूरगामी संघर्ष जारी है, मानवजाति के भविष्य का निर्णय करने के लिए। यही वह महायुद्ध है जिसकी कल्पना 'आयरन हील' में की गई है। उपन्यास का विषय है—दरिद्रीकृत जनसमूह, जो दुनिया के अधिकांश काम निपटाता है, और विशेषाधिकार संपन्न अल्पमत, जो मुनाफों से गुलछर्रे उड़ाता है–के बीच अनिर्णीत तीन सौ वर्षों से जारी युद्ध।

जैक लन्डन की कुछ भविष्यवाणियां तो तत्काल प्रमाणित हो गईं। जुलाई 1908 में, इस किताब के प्रकाशन के 5 महीने बाद ही, संयुक्त राज्य अमरीका में एक राष्ट्रीय गुप्त पुलिस, जिसे उस वक्त 'ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन' कहते थे, स्थापित कर दी गयी। 12 वर्षों से कम समय बाद ही मेहनतकशों के राजनीतिक संगठनों के हिंसक दमन की इस पूर्व दृष्टि को चरितार्थ कर दिया गया। 2 जनवरी, 1920 की एक अकेली रात को अमरीका के न्याय विभाग के अटार्नी जनरल पामर के डेपुटी एडगर हूवर के नेतृत्व में एक साथ 70 शहरों में मज़दूरों पर आक्रमण किया गया। उन्हें घरों से खींचकर पीटा गया, छापा-खाने बर्बाद कर दिए गए और दस हजार सक्रिय कार्यकर्ता जेल में ठूंस दिए गए। चार साल बाद ही हूवर को संस्था का सर्वेसर्वा बना दिया गया। अब नाम रखा गया—फैडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफ़.बी.आई. जो आज भी काम करता है)।

इस बीच फासिज़्म को-वह पूंजीवादी राजनीतिक सत्ता जिसकी इस किताब में कल्पना की गई है—बेनिटो मुसोलिनी ने स्थापित कर दिया। यूरोप की जीत शुरू करते हुए 1922 में मुसोलिनी ने रोम तक मार्च किया और इटली की सरकार को ध्वस्त कर

उसके जीवन के भिन्न सामाजिक वर्गों के परस्पर अन्तर्विरोधी अनुभवों में मिलेगा। उसका बचपन दुर्दान्त वंचना में मेहनत करते बीता। उसकी पहली वर्ग-पहचान स्लम और फैक्ट्री में बनी। फैक्ट्री की कमरतोड़ मेहनत से भागकर 15 की उम्र में वह सानफ्रांसिस्को की खाड़ी में सीपियों का एक सबसे साहसी लुटेरा बन गया। इस दौरान एक से एक दंगे थे, पंगे थे, दारू के दौर थे, पर साथ ही थी स्वयं-शिक्षा। उसने कल्पना कर ली कि मानो सीधे नीत्शे की कल्पना वाला सर्वजेता सुपरमैन वही है। उसे समाजवाद की ओर मोड़ा न्यूयार्क की क़ैद के अनुभव ने, जहां उसकी सुपरमैन की कल्पना को राज्य की 'लोहे की एड़ी' (आयरन हील) ने रौंद डाला। 'मैं समाजवादी कैसे बना' (1903) में उसने स्पष्ट किया कि कोई भी आर्थिक तर्क, समाजवाद की अनिवार्यता के बारे में कोई भी सुन्दर प्रस्तुति, मुझे इतनी अच्छी तरह तुष्ट नहीं करती जितनी मुझे मेरे चारों ओर उठी समाज के गड्ढे की दीवारों ने सिखाया, जिसमें मैं नीचे धंसता ही जा रहा था—नीचे और नीचे।

जाहिर है उपन्यास में उसकी भूमिका को चरितार्थ करने वाला शक्तिशाली समाजवादी नेता अर्नेस्ट एवरहार्ड उसी नायक का प्रक्षेपण है जो जैक लन्डन खुद बनना चाहता था। एवरहार्ड शारीरिक रूप से जैक लन्डन का ही प्रतिरूप है। वह, वे ही प्रभावी भाषण देता है, जो लन्डन ने स्वयं दिए थे। लेकिन जो एवरहार्ड को लन्डन का एकमात्र प्रतिरूप देखते हैं वे इस उपन्यास को समझने में चूकते हैं। कैद में पियक्कड़ी के कुंठाग्रस्त दौरों में, दस पैसे घन्टे में फैक्ट्रियों में मशक्कत करते समाज के गड्ढे में धंसे, पूंजीवादी समाज के निकृष्टतम लोग भी लेखक का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरी ओर 1906 में, जब जैक लन्डन अमरीका के सबसे ज्यादा कमाने वाले लेखकों में एक हो गया था, तो वह अंदर से समझ सकता था कि 'लेबर अरिस्टोक्रेसी' होने की क्या अर्थवत्ता है। उपन्यास की सबसे उद्घाटक विडम्बना और आगे तब जाती है जब लन्डन क्रांतिकारियों की एक भूमिगत शरणस्थली को एक सबसे धनी और बुरे पूंजीपति के रैंच में रचता है। वास्तव में वह रैंच स्वयं लन्डन का था। लन्डन की विचित्र भविष्य दृष्टि का उत्स थी उसकी अपने ही स्व में यथार्थ का अन्वेषण और प्रक्षेपण—पूंजीवादी समाज के जीवन में अतिरेकों से जन्मे अन्तर्विरोधों से निर्मित और विखंडित स्व।

बहरहाल इस उपन्यास में लन्डन अपने आप स्वयं ऊपर उठ जाता है। हालांकि हीरो एवरहार्ड है पर हमारी दिलचस्पी धीरे-धीरे वर्णनकर्ता उसकी पत्नी एदिल, जो एक कुशल और होशियार क्रांतिकारी नेता के रूप में विकसित होती जाती है, पर केंद्रित हो जाती है। उपन्यास वास्तव में लन्डन के समाजवादी मित्रों को चेतावनी थी कि उनका मतपत्रों पर ही पूरी तरह निर्भर रहने की रणनीति, एक धोखे भरा भ्रम मात्र है। एवरहार्ड का पूंजीपतियों के सामने दहाड़ने का अतिरेक भी उतना ही खतरनाक साबित

सत्ता सम्हाल ली। 1929 में यह किताब इटली में प्रकाशित हुई। अनुवादक ने सम्हाल कर लिखी गई भूमिका में लिखा कि 'धनतंत्र और जनता के बीच संघर्ष कौन जाने कब फूट पड़ेगा।' कुछ ही दिनों में इस किताब के सस्ते संस्करण तथा जैक लन्डन की अन्य क्रांतिकारी कृतियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया, यह कह कर कि ये फासिज़्म की सत्ता को उखाड़ फेंकने के षड्यंत्र का हिस्सा हैं। किताब के डीलक्स संस्करण जारी रहे क्योंकि सरकार तब तक उसे खतरनाक नहीं मानती थी जब तक वह सुसंस्कृत वर्गों के ही हाथ में सीमित थी। (यह खबर 10 अक्टूबर, 1929 को न्यूयार्क टाइम्स में छपी थी।) तीन साल बाद, मिलान में, जहां से यह किताब प्रकाशित हुई थी, मुसोलिनी ने घोषणा की, 'मैं आज निर्मल अन्तरात्मा के साथ आप से कह रहा हूं—बीसवीं शताब्दी फासिज़्म की शताब्दी होगी .....।'

जैक लन्डन ने धनिकतंत्र की लोहे की एड़ी को इस तरह चित्रित किया है जैसे उसके मॉडल रहे हों बीसवीं सदी के फासिस्ट राज्य—इटली, स्पेन, जर्मनी, पुर्तगाल, बुल्गारिया, रूमानिया, हंगरी। जहां थे—गुप्त ज़ालिम पुलिस, अनियंत्रित सैन्यवाद, और राज्य संचालित आतंक। लन्डन ने फासिज़्म का सारभूत तत्व यह बताया है—यह वह रूप है जिसे पूंजीवादी राज्य तब अपनाता है जब धनिक अभिजन यह महसूस करने लगता है कि मज़दूर क्रांति से उनकी आर्थिक-राजनीतिक सत्ता को खतरा है।

आज ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध में फासिज़्म और नात्सीज़्म को दफन कर दिया गया था। ऐसे ही लोगों को फ्रेंच कवि एमे. सेज़ैर 'डिसकोर्स ऑन कोलोनियलिज़्म' में नात्सीवाद का 'साझेदार' कहता है क्योंकि ऐसे लोग फासिज़्म को ग़ैर यूरोपीय सन्दर्भों में माफ करते हैं, उसके प्रति आंख मूंद लेते हैं, उसे न्यायसंगत ठहराने लगते हैं। तभी तो चिली की पिनोशे सरकार, ईरान के शाह, चिआंग काइ शेक, हैती के राष्ट्रपति द्यूवालिए, पाकिस्तान के जनरल ज़िया, वियतनाम के जरनल थिड और की, फिलीपीन्स के मारकोस, निकारागुआ के सोमोज़ा, इजिप्ट के शाह फैज़ल, क्यूबा के बतिस्ता, मोरक्को के शाह, सऊदी अरब के शाही परिवार, परागुए के स्त्रोसनर और आज की कुछ सरकारों जैसे अर्जेंटीना, ब्राजील, जाएरे, इन्डोनेशिया, दक्षिण कोरिया और दक्षिण अफ्रीका को, जहां की सत्तासीन पार्टी के नेता स्पष्ट कहते हैं कि उनके 'क्रिश्चियन नेशनलिज़्म' का वही मतलब है जो इटली में फासिज़्म और जर्मनी में नात्सीज़्म को स्वतंत्र विश्व (द फ्री वर्ल्ड) का अंग करार दिया जाता है।

स्वयं अमरीका में, जहां 'आयरन हील' घटित होती है, लन्डन की भविष्यवाणियां एकदम प्रासंगिक लगती हैं। 1961 में जोसेफ़ हेलर ने (विख्यात) कैच-22 में दिखाया कि पराजित दिखने वाली फासिस्ट सत्ताएं वास्तव में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमरीका में उदित सैन्य-औद्योगिक तंत्र में कैसे विजयी दिखती हैं। उनकी 'पुलिस के झुंड' हर कहीं नियंत्रण करते दिखते हैं। मुसोलिनी की बहुत सी बातें अमरीकी नेताओं में समाहित लगती हैं। 1960 और 70 के दशक की घटनाएं 'आयरन हील' को वापस घर लाती लगती हैं।

लन्डन ने पूर्वापेक्षा की है कि अपेक्षतया सुविधा सम्पन्न मज़दूर वर्ग आकर्षक उपनगर बसाएगा और जहां दरिद्रता के चरम अंधकार में ढकेल दिए गए बेरोज़गार और निकृष्ट मज़दूर रहते हैं वे शहर के केन्द्रीय इलाके घेट्टो (मलिन बस्तियां) बन जाएंगे। अशिक्षा और अज्ञान फैलाने के लिए वहां जानबूझकर शिक्षा न पहुंचने देने का षड्यंत्र किया जाएगा। भोजन, स्वास्थ्य सेवाएं और आवास इतना मंहगा कर दिया जाएगा कि ज्यादा से ज्यादा लोगों की पहुंच के बाहर हो जाय। सरकार विरोधी हर संगठन में गुप्त, ज़ालिम पुलिस की घुस पैठ कर दी जाएगी, एक स्थायी टुकड़खोर सेना स्थापित होगी, सरकार स्वयं बम विस्फोट आदि के षड्यंत्र करेगी, विरोधी नेताओं, शिक्षकों, लेखकों को घेरने के चक्कर में पुस्तकों पर प्रतिबंध लगेगा, छापेखाने नष्ट किए जाएंगे और उनका चरित्र हनन किया जाएगा। उनमें से कुछ को जेल भेजा जाएगा; कुछ ऐसे विरोधियों की, जो जनक्रांति के अगुआ लगेंगे, उनकी हत्या की जाएगी और शहरों में भाड़े की फौज और गुरिल्ला सैनिकों के बीच संघर्ष होगा। 1960 के दशक के अंत तक (इस किताब के प्रकाशन के कुछ ही दिनों बाद) संगठित एफ.बी.आई. वैसी ही दिखने लगी थी जैसी गुप्त पुलिस की उपन्यास में कल्पना की गई है। उसके एजेन्ट नागरिक अधिकार के कार्यकर्ताओं, युद्ध विरोधियों और सरकार विरोधी नेताओं पर आक्रमण और उनकी हत्या की योजना बनाने और उसे अंजाम देने में शामिल होने लगे थे । यह संगत ही लगता है कि फेडरल और राज्य पुलिस द्वारा मार्क क्लार्क और फ्रेड हैम्पटन की सोते में निर्मम हत्या उसी शिकागो में की गई जहां धनिक तंत्र के टुकड़खोरों की गुप्त सेना द्वारा निम्नतम पायदान के जन के महाविद्रोह की क्रूर हत्या की जैक लन्डन ने कल्पना की थी।

अस्तित्व के संकट के समय पूंजीवाद कितना हिंस्र और भयानक हो सकता है इसे अपने समकालीन बुद्धिजीवियों में जैक लन्डन ने सबसे ज़्यादा समझा था। इन्हीं भविष्यवाणियों की वजह से यह किताब समाजवादी प्रेस में भी निन्दित की गई थी। लेकिन लन्डन की सबसे उल्लेखनीय अन्तर्दृष्टि यह नहीं थी। उसकी सबसे अंतर्दृष्टि-संपन्न भविष्योक्ति थी—पूंजीवादी वर्ग की रणनीति के बारे में। वह रणनीति जो उसे आने वाले दशकों के दौरान उसकी सत्ता को बहाल रखेगी। उसकी भविष्योक्ति है कि शासक वर्ग अपने महामुनाफे का इस्तेमाल मज़दूर वर्ग के एक हिस्से को खरीद लेने, उसे समन्वित करने में खर्च करके उसे 'श्रमिक वर्ग के अभिजात' में रूपान्तरित कर देगा। वह पूरे मज़दूर वर्ग को नियंत्रित करने का काम करेगा। यह अवधारणा मार्क्सवाद और अमरीकी मज़दूर आंदोलन के इतिहास के लिए एक दम नई नहीं थी। फिर भी 1937 में त्रात्स्की को कहना पड़ा था 'आयरन हील जब प्रकाशित हुआ तब तक एक भी मार्क्सवादी क्रांतिकारी ने ... वित्तपूंजी और श्रमिक अभिजाततंत्र (लेबर ऐरिस्टोक्रेसी) के बीच खतरनाक संश्रय के परिप्रेक्ष्य की ऐसी भरपूर कल्पना नहीं की थी।'

आखिर लन्डन ऐसी स्तब्धकारी दृष्टि तक पहुंचा कैसे? मेरे ख्याल से उत्तर स्वयं

देखने लगे। बोले—'मैं समझता हूं श्री अर्नेस्ट सही हैं। लैस्से फेयर, कुछ भी करने की छूट सबको, बस अपनी परवाह करने की नीति प्रतिपादित करती है। जैसा कि अर्नेस्ट ने उस दिन कहा था ''चर्च स्थापित व्यवस्था के साथ है और व्यवस्था का आधार वही स्वार्थ है।''

'लेकिन ईसा की शिक्षा यह तो नहीं।' बिशप चिल्लाया।

अर्नेस्ट ने झट जवाब दिया—'आजकल चर्च ईसा की शिक्षाएं नहीं दे रहा, इसीलिए मज़दूरों को चर्च से कुछ नहीं लेना-देना। चर्च पूंजीपति-वर्ग द्वारा मज़दूरों के बर्बर और हिंस्र शोषण को क्षमा करता है।'

'चर्च इसे क्षमा नहीं करता।' बिशप ने प्रतिवाद किया।

'चर्च प्रतिकार करता है? और विरोध नहीं करता तो माफ तो करता ही है। और फिर चर्च को पूंजीपति वर्ग का समर्थन भी तो प्राप्त है।'

बिशप ने मासूमियत से कहा—'मैंने इस दृष्टिकोण से तो देखा ही नहीं। आप गलत कह रहे होंगे। मैं जानता हूं कि दुनिया में बहुत कुछ पापपूर्ण और दुखदायी है। मैं जानता हूं चर्च ने प्रोलेतारिया को खो दिया है।'

'प्रोलेतारिया कब था आपके साथ? वह तो चर्च के बाहर, उसके बिना ही विकसित हुआ है।' अर्नेस्ट ने ज़ोर देकर कहा।

'मैंने समझा नहीं।' बिशप बुदबुदाया।

'तो फिर मुझे समझाने की इजाज़त दें। अठ्ठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में मशीनों और फैक्ट्रियों के आने से मेहनतकशों का भारी समुदाय भूमि से अलग होता गया। श्रम की पुरानी व्यवस्था ध्वस्त हो गई। लोग गांव छोड़ने को मज़बूर होते गए और फैक्ट्रियों के निकट जानवरों की तरह ठंसने लगे। मांओं और बच्चों को भी फैक्ट्री में काम करना पड़ा। पारिवारिक जीवन छिन्न-भिन्न हो गया। हालात बहुत खराब थे। खून-पसीने की कहानी है।'

बिशप का चेहरा बिगड़ता गया था। वह बोला—'मालूम है, मालूम है। भयानक था वह सब, पर उसे गुज़रे डेढ़ सौ वर्ष हो चुके हैं।'

'तभी, डेढ़ सौ साल पहले आज का प्रोलेतारिया जन्मा था। चर्च ने इसे नज़रअंदाज किया था। जब राष्ट्र को बूचड़खाना बनाया जा रहा था, चर्च गूंगा बना रहा था। जैसे आज विरोध नहीं कर रहा वैसे ही तब भी नहीं किया था। जैसा कि समाजवादी नेता आस्टिन लेविस ने हाल ही में कैलीफोर्निया में कहा है, 'ईसामसीह ने आदेश दिया था 'मेरी भेड़ों की परवरिश करो' और कसाई उन्हें मौत के घाट उतारते रहे और चर्च ने विरोध नहीं किया। मैं आगे बढ़ूं इसके पहले मैं चाहता हूं कि आप साफ-साफ बता दें कि आप मुझसे सहमत हैं या असहमत। चर्च तब खामोश रहा या नहीं?'

बिशप बोल नहीं पा रहा था। ऐसी स्थितियों का वह आदी नहीं था।

'अठ्ठारहवीं शताब्दी का इतिहास लिपिबद्ध है। चर्च का व्यवहार कैसा था इसे

मेरा ईगल

अमरीका में गर्मी की मुलायम हवा रेडवुड के पेड़ों को स्पन्दित करती रहती है। वाइल्ड वाटर झरना नीचे काई लगे पत्थरों में मधुर लहरें पैदा करता रहता है। धूप में तितलियां हैं और हर कहीं से मक्खियों की सुलाने वाली गुनगुनाहट सुनाई पड़ती है। कितनी चुप्पी है, कितनी शांति, और मैं यहां बैठी सोच रही हूं और अशांत हूं। यह शांति ही मुझे अशांत बना रही है—कितनी अवास्तविक लग रही है। सारी दुनिया शांत है—पर यह तूफान के पहले वाली शांति है। मैं अपने कानों, सारी ज्ञानेन्द्रियों को झकझोरती हूं, कहीं आने वाले तूफान का सुराग मिले। काश! पर वह वक्त से पहले न हो!

आश्चर्य नहीं कि मैं अशांत हूं। मैं सोच रही हूं-सोचे जा रही हूं, कोई अन्त नहीं है सोचने का। मैं इतने दिनों से जीवन में धंसी रही हूं कि इस शांति से उत्पीड़ित हूं। उस नृत्य और विनाश के तूफान की वास्तविकता से अपने को बचा नहीं सकती। मेरे कानों में पीड़ितों की चीख है। मैं देख सकती हूं, जैसा कि पहले देखती रही हूं, कि शरीर से मांस के लोथड़े नोचे जा रहे हैं और आत्माएं खींचकर ईश्वर की ओर उछाली जा रही हैं। इसी तरह हम बेचारे मानव अपनी परिणति तक पहुंचते हैं—धरती पर स्थायी सुख-शांति के लिए विध्वंस और विनाश करते।

और फिर मैं एकाकी हूं। जब मैं भावी के बारे में नहीं सोचती तो अतीत के बारे में सोचने लगती हूं—मेरा ईगल जो अब नहीं रहा-शून्य को अपने अनथक पंखों से टकराता, अपने प्रज्ज्वलित सूर्य-मानव-स्वातंत्र्य की ओर पर मारता। मैं चुपचाप बैठकर उस महान घटना का इन्तजार नहीं कर सकती जिसका सूत्रधार वही था पर उसे देखने के लिए नहीं रहा। उसने अपनी जवानी उसी पर वार दी, जीवन न्योछावर कर दिया। यह उसी का किया हुआ है, उसी ने इसे रचा था।

इस इन्तज़ार की चिन्ताकुल घड़ियों में मैं अपने पति के बारे में लिखूंगी। जीवित लोगों में से मैं हूं जो उसके चरित्र पर सबसे ज्यादा रोशनी डाल सकती हूं—ऐसा नेक चरित्र जिस पर जितना ही प्रकाश पड़े, कम है। उसकी आत्मा महान थी। जब मेरा प्यार निस्वार्थ हो जाता है, मेरा सबसे बड़ा पश्चाताप यही होता है कि वह इस भावी प्रभाव को देखने के लिए जीवित नहीं है। हम असफल नहीं हो सकते-उसने उसकी इतनी मजबूत नींव रखी है। 'आयरन हील' का नाश हो, जल्दी ही उसे अवनत मानवता के ऊपर से उठा फेंका जाएगा। एक आह्वान पर सारी दुनिया के श्रमिक उठ खड़े होंगे-ऐसा दुनिया के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। दुनिया के मजदूरों के बीच एकजुटता सुनिश्चित है। पहली बार दुनिया में उतनी ही व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय क्रांति होगी जितनी विस्तृत दुनिया है।

आप देख रहे हैं मैं आसन्न से भरी हुई हूं। मैंने दिन-रात इतना जीया है—भरपूर और इतने दिनों तक कि वह हमेशा मेरे दिमाग पर छाया रहता है। हकीकत यह है कि मैं अपने पति के बारे में, इसके बारे में सोचे बगैर सोच ही नहीं सकती। वही तो इसकी आत्मा था और मैं इन दोनों को अलग कैसे कर सकती हूं, विचारों में?

जैसा कि मैंने कहा है मैं ही उसके चरित्र पर काफी रोशनी डाल सकती हूं। यह सभी जानते हैं कि उसने मुक्ति के लिए कठिन प्रयास किया था और बहुत कुछ भोगा था। उसने कितना प्रयत्न किया और कितना सहा, मैं अच्छी तरह जानती हूं क्योंकि मैं इन बीस वर्षों के दौरान लगातार उसके साथ रही। मैं जानती हूं उसका धैर्य, उसका अनथक प्रयास, उस लक्ष्य के प्रति उसका अपरिमित समर्पण जिसके लिए अभी दो महीने हुए उसने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया।

मैं सीधा-सरल लिखूंगी और बताऊंगी कि अर्नेस्ट एवरहार्ड ने कैसे मेरे जीवन में प्रवेश किया? कैसे मैं उससे पहली बार मिली? कैसे वह बढ़ता गया, बढ़ता गया और मैं उसका अंग हो गई? कैसे उसने मुझे रूपान्तरित कर दिया? इस तरह आप उसे मेरी नज़रों से देख सकते हैं, वैसे जान सकते हैं जैसे मैंने जाना था—सिवाय उन बातों के जो मेरे लिए इतनी मधुर और अंतरंग हैं कि मैं उन्हें बता नहीं सकती।

मैं उनसे पहली बार फरवरी 1912 में मिली थी, जब वह मेरे पिता के मेहमान की तरह बर्कले में डिनर पर आए थे। मैं यह नहीं कह सकती कि मुझ पर उनका पहला प्रभाव सकारात्मक था। वह बहुत से मेहमानों में से एक थे और सबके आने के इंतजार में ड्राइंगरूम में उनकी उपस्थिति कुछ अटपटी-सी थी। डिनर में पादरियों का बाहुल्य था। तभी डैडी ने उसे 'प्रीचर्स नाइट' करार दिया था और उनके बीच अर्नेस्ट निश्चित ही बाहरी लग रहे थे।

पहली बात तो यह कि उनके कपड़े फिट नहीं थे। उन्होंने एक गहरे रंग का रेडीमेड सूट पहन रखा था। हकीकत तो यह थी कि कोई भी रेडीमेड सूट उनको फिट हो ही नहीं सकता था। उस रात उनका कोट उनकी मांसपेशियों के अनुसार फूला हुआ था और दोनों कंधों के बीच ढेरों सिलवटें पड़ी हुई थीं। उनकी गर्दन 'प्राइज़ मनी' के लिए लड़ने वाले पहलवान जैसी थी-मोटी और मज़बूत। तो क्या यही है वह सामाजिक दार्शनिक और कभी घोड़े की नाल लगाने वाला, जिसे मेरे पिता ने ढूंढ़ निकाला था। फूली मांसपेशियों और बैलों जैसी गर्दन के कारण वैसा ही लगता भी था। फौरन उस पर एक लेबल चस्पा किया 'मजदूरों का टॉम' (उन्नीसवीं सदी में मशहूर अश्वेत गवैया ब्लाइंड टॉम की प्रतिभा को याद करते हुए।)

तभी उसने मुझसे हाथ मिलाया था—दृढ़तापूर्वक मजबूत हाथों से और उसकी काली आंखों ने मेरी ओर देखा, थोड़ा घूर के। मैं तो माहौल की बेटी थी और उस जमाने में मेरे वर्ग संस्कार थे ही। मेरे ही वर्ग के किसी आदमी ने ऐसा किया होता तो वह असभ्य माना जाता। मुझे पता है कि मेरी आंखें झुक गई थीं और मैंने तनावमुक्त सांस

जुटाता है। दोनों के संयुक्त प्रयास से धन पैदा होता है जिसे वे बांट लेते हैं। पूंजी के हिस्से को 'लाभांश' कहते हैं और श्रम वाले को 'मज़दूरी'।

'एकदम ठीक। कोई कारण नहीं कि यह बंटवारा मित्रतापूर्ण न हो।' बिशप ने उत्साहपूर्वक कहा।

अर्नेस्ट ने कहा—'आप अभी ही भूल गए जिस पर हम सहमत हुए थे। हम सहमत थे औसत आदमी स्वार्थी होता है यानी वह आदमी जो है। आप हवाई बातें कर रहे हैं और आदमी जैसे होने चाहिए की बात कर रहे हैं, जो हैं नहीं। धरती पर लौटें तो मज़दूर, चूंकि वह स्वार्थी है, वह सब चाहता है जो बंटवारे में पा सकता है। पूंजीपति भी, चूंकि वह स्वार्थी है, बंटवारे में वह सब चाहता है जो पा सकता है। जब कोई चीज़ उतनी ही है जितनी है और दो व्यक्ति उतना सब चाहता है जितना पा सके तो हितों में टकराहट तो होगी। यह पूंजी और श्रम के बीच हितों की टकराहट है। और इनमें समझौता संभव नहीं। जब तक पूंजीपति और श्रमिक हैं—बंटवारे का संघर्ष चलता रहेगा। अगर आप आज सानफ्रांसिस्को में होते तो पैदल चलना पड़ता क्योंकि सड़क पर गाड़ियां नहीं हैं।'

'फिर हड़ताल?'

'हां! ट्राम की कमाई में बंटवारे को लेकर झगड़ा है।'

'यह ग़लत है। मज़दूरों की अदूरदर्शिता है। यहां उन्हें कैसे मिलेगी हमारी सहानुभूति?'

'जब वे पैदल चलने पर मजबूर होंगे।' अर्नेस्ट ने कहा।

'उनका दृष्टिकोण एकदम संकीर्ण है। आदमी को आदमी होना चाहिए, जानवर नहीं। अब हिंसा होगी, हत्याएं होंगी, दुखी विधवाएं और लावारिस बच्चे। पूंजी और श्रम को मित्रवत् होना चाहिए। उन्हें हाथ मिलाकर सामान्य हित के लिए काम करना चाहिए।'

'फिर उड़े हवा में। ज़मीन पर आइए। याद रखिए कि हम सहमत हुए थे कि सामान्य व्यक्ति स्वार्थी होता है।'

'पर उसे होना तो नहीं चाहिए।'

'यहां मैं आपसे सहमत हूं। उसे स्वार्थी नहीं होना चाहिए, पर वह है और रहेगा—तब तक जब तक यह समाज-व्यवस्था शूकर-नैतिकता पर आधारित है।' अर्नेस्ट ने जवाब दिया।

बिशप का चेहरा सफेद हो गया; पर डैडी हंसे।

'हां शूकर नैतिकता ही कहेंगे, पूंजीवादी व्यवस्था में यही होता है और आपका चर्च भी उसी के पक्ष में है। आपके उपदेश भी इसी नैतिकता की बात करते हैं—शूकर नैतिकता और कोई शब्द नहीं।'

बिशप ने मानो बचाव के लिए डैडी की ओर देखा पर वह तो हंस कर दूसरी ओर

'मैं आपसे दिल से सहमत हूं।' उसने जवाब दिया, 'हम समाजवादी यही तो बताना चाहते हैं—हितों में टकराहट का अंत। मुझे एक अंश पढ़ने दीजिए।' उसने किताब लेकर कुछ पन्ने पलटे, 'पेज नंबर 126। वर्ग-संघर्ष का जो चक्र अनगढ़ आदिम कम्युनिज़्म के अंत और निजी सम्पत्ति के प्रारम्भ के साथ शुरू हुआ था उसका अंत सम्पत्ति के समाजीकरण के साथ हो जाएगा।'

'मैं असहमत हूं।' बिशप ने हस्तक्षेप किया तो उसकी भावनाओं की गहनता के कारण उसके तपस्वी चेहरे के पीलेपन में क्षण भर को एक चमक पैदा हो गई, 'तुम्हारा आधार ही ग़लत है। पूंजी और श्रम के बीच हितों की टकराहट जैसी कोई चीज़ नहीं होती—यूं कहें होनी चाहिए।'

'धन्यवाद! अपने अंतिम शब्दों से आपने मेरा आधार मुझे वापस कर दिया।'

'लेकिन टकराहट हो ही क्यों?' बिशप ने उत्साहपूर्वक पूछा।

'इसलिए कि हम ऐसे ही हैं।' एवरहार्ड ने कंधे उचकाए।

'पर हम ऐसे नहीं हैं।'

'क्या आप आदर्श व्यक्ति की बात कर रहे हैं—निस्वार्थी, दैवी, इतने कम हैं कि न के बराबर, या फिर आप सामान्यजन की बात कर रहे हैं?'

'सामान्य जन की ही।'

'जो कमज़ोर और दोषपूर्ण होता है, ग़लती कर सकता है।'

बिशप ने गर्दन हिलाई।

'क्षुद्र और स्वार्थी।'

गर्दन फिर हिली।

'ध्यान दें—मैंने स्वार्थी कहा है।'

'औसत आदमी स्वार्थी होता है।' बिशप ने माना।

'जो भी मिले पाना चाहता है।'

'पाना तो चाहता है—है यह निन्दनीय।' बिशप ने कहा।

'तब तो आप फंस गए', एवरहार्ड के जबड़े एक जाल की तरह कस गए, 'मुझे स्पष्ट करने दीजिए। एक आदमी है—सड़क पर काम करता है।'

'पूंजी न होती तो वह काम कर ही नहीं सकता था।' बिशप ने हस्तक्षेप किया।

'एकदम सच। पर आप यह मानेंगे ही कि अगर श्रम मुनाफा न कमाए तो पूंजी नष्ट हो जाएगी।'

बिशप चुप रहा।

'मानेंगे न?'

बिशप ने गर्दन हिलाई।

'तो हमारे वक्तव्य एक दूसरे को काट देते हैं। हम वहीं पहुंच गए जहां से शुरू किया था। फिर शुरू करें। काम करने वाला व्यक्ति श्रम देता है। शेयर-होल्डर पूंजी

ली थी, जब अपने प्रिय बिशप मोरहाउस की ओर मुड़कर स्वागत किया था। वह मध्य उमर के मधुर और गंभीर व्यक्ति थे, देखने और अच्छाइयों में ईसा सरीखे। साथ ही, विद्वान भी थे।

लेकिन अर्नेस्ट का साहस, जिसे मैंने उद्धतता माना था, उसके स्वभाव के बारे में एक अच्छा इशारा था। वह सादा, सीधा और निडर था और पारम्परिक शिष्टाचार पर वक्त नहीं बरबाद करता था। बाद में उसने स्पष्ट किया था—'तुम मुझे अच्छी लगी थी और मैं उस चीज़ से अपनी आंखें क्यों न भर लेता जो मुझे सुंदर लग रही हो।' मैंने कहा है कि वह किसी चीज़ से नहीं डरता था। वह एक नैसर्गिक श्रीमन्त था, जबकि वह था उनके विरोधी खेमें में। वह एक महामानव था, नीत्शे के शब्दों में 'ब्लांड बीस्ट'। साथ ही वह जमहूरियत से रौशन मशाल जैसा था।

दूसरे मेहमानों से मिलने के चक्कर में और अपने ऊपर पड़ने वाले अप्रिय प्रभाव के कारण इस मज़दूरों के दर्शनिक के बारे में एकदम भूल गई, हालांकि डिनर के दौरान एक-दो बार मेरी नज़र उस पर पड़ी थी। वह कभी एक पादरी की बात सुन रहा था कभी दूसरे की; आंखों की उसी चमक के साथ। मैंने सोचा, उसमें 'ह्यूमर' तो है और भद्दे कपड़ों के लिए मैंने उसे माफ़ कर दिया।

वक्त बीतता गया, डिनर चलता गया और उसने ज़बान नहीं खोली जबकि धर्माधिकारी लगातार बोले जा रहे थे, मज़दूरों के बारे में, उनके चर्च से संबंधों के बारे में और इस बारे में कि चर्च ने उनके लिए क्या किया है। मैंने मार्क किया कि उसके न बोलने पर मेरे पिता खफ़ा थे। एक बार पल भर की खामोशी का लाभ उठाकर पिता ने उससे कुछ कहने को कहा, पर नमक लगे बादाम कुतरते हुए उसने कंधा उचकाकर कहा, 'मुझे कुछ नहीं कहना।'

पर मेरे पिता भी कहां मानने वाले थे। उन्होंने कहा—'हमारे बीच एक मज़दूर वर्ग का प्रतिनिधि है। मुझे विश्वास है कि वह एक नए दृष्टिकोण के साथ बातें रख सकता है जो दिलचस्प और ताज़गी भरी हो सकती हैं। मेरा मतलब श्री एवरहार्ड से है।'

दूसरों ने शिष्टाचार में दिलचस्पी दिखाई और उससे अपना पक्ष रखने को कहा। उनका उसके प्रति रवैया इतना मेहरबान और सहिष्णु था कि वास्तव में वे उसके सरपरस्त लग रहे थे। मैंने देखा कि अर्नेस्ट ने इसे मार्क किया और मज़ा लिया। उसने चारों ओर देखा और मैंने उसकी आंखों में हंसी देखी।

'मुझे चर्चगत विवादों की मर्यादाएं नहीं आतीं'; उसने शुरू किया, फिर हिचका, विनम्रता और अनिर्णय के कारण।

'जारी रखो', वह बोले। डॉ. हैमरफील्ड ने कहा 'सत्य किसी भी व्यक्ति में हो, हमें एतराज़ नहीं होता, अगर ईमानदारी हो।' उन्होंने संशोधित किया।

'तो आप सत्य और ईमानदारी में फर्क करते हैं?' अर्नेस्ट हंसा।

डाक्टर को झटका लगा, पर उसने जवाब दिया—'हममें से सर्वोत्तम से भी गलती हो सकती है, सर्वोत्तम से भी।'

अर्नेस्ट की भंगिमा एकदम बदल गई, वह एक नया आदमी बन गया। उसने जवाब दिया—तो ठीक है, मैं यहां से शुरू करता हूं कि आप सब ग़लत हैं। आपको कुछ नहीं आता, मज़दूर वर्ग के बारे में तो और कुछ नहीं। आपका समाजशास्त्र उतना ही बुरा और बेकार है, जितनी आपकी विचार पद्धति।'

जो उसने कहा; उससे भी ज्यादा बुरा था, जैसे उसने कहा। मैं उसकी पहली आवाज पर ही चौंक पड़ी थी। आवाज़ में भी उतना ही दम था, जितना निगाहों में; एक प्रकार का आह्वान था जिसने मुझे उत्तेजित कर दिया। मेज के इर्द-गिर्द बैठे सभी ऊंघते से लोगों की एकरसता भंग हो गई और वे जाग से उठे।

'आखिर हमारी विचार-पद्धति में क्या इतना भयानक, बुरा और बेकार है नौजवान?' डॉक्टर हैमरफील्ड ने पूछ लिया। उनकी आवाज़ और कहने के ढंग में कटुता झलकने लगी थी।

'आप लोग पराभौतिकवादी (मेटाफिज़िकल) हैं—अपनी पराभौतिकी से कुछ भी प्रमाणित कर सकते हैं। और फिर हर पराभौतिकवादी अपने जैसे दूसरे को, अपने संतोष के लिए, ग़लत साबित कर सकता है। आप लोग विचारों में अराजकतावादी हैं। आप पागल ब्रह्मांड रचयिता हैं। आप में से हर व्यक्ति अपने ही ब्रहमांड में, अपनी ही कल्पना और मनोकामनाओं के संसार में रहता है। आप जिस दुनिया में रहते हैं उसे एकदम नहीं जानते और वास्तविक संसार में आपके विचारों के लिए कोई जगह नहीं है, सिवाय एक मानसिक विकृति की परिघटना के रूप में।

'आपको पता है कि आपको बातें करते सुनते हुए मुझे क्या याद आ रहा था? मुझे याद आ रही थी मध्य युग की वह गंभीर और विद्वत्तापूर्ण बहस कि सूई की नोक पर कितने लोग नृत्य कर सकते हैं। आप लोग बीसवीं शताब्दी के बौद्धिक जीवन से उतने ही दूर हैं जितना दस हज़ार साल पहले का अपनी जड़ी-बूटी से दवाई बनाता कोई आदिवासी।'

जब अर्नेस्ट बोल रहा था, आवेग में उसके चेहरे पर चमक थी, उसकी ठुड्डी और जबड़े में वक्तृता की आक्रामक भंगिमा थी। वह हमेशा भी लोगों को उद्वेलित कर पाता था—उसकी हथौड़े मारती भंगिमा लोगों को आत्मविस्मृत कर देती थी। उस समय ऐसा ही हो रहा था। बिशप मोरहाउस मेज़ पर झुका उसे तन्मयता के साथ सुन रहा था। डॉक्टर के चेहरे पर क्रोध और क्षोभ झलक रहा था। औरों की भी कुछ ऐसी ही दशा थी। कुछ अपना बड़प्पन प्रदर्शित करने के लिए बस मुस्करा रहे थे। मुझे तो बस मज़ा आ रहा था। मैंने पापा की ओर झांका। मुझे डर लगा कि कहीं अपने ही द्वारा फेंके गए इस बम के विस्फोट पर वह हंस न दें।

डॉक्टर ने हस्तक्षेप किया—'आपके शब्द अस्पष्ट हैं। दो-टूक बताएं कि आपका

अर्नेस्ट एक दिन पापा के साथ आया। बिशप पहले ही से आए थे और हम बरांडे में चाय पी रहे थे। अर्नेस्ट बर्कले में ही मौजूद था क्योंकि यह युनिवर्सिटी में जन्तुविज्ञान के विशेष कोर्सेज़ ले रहा था। साथ ही वह एक नई किताब पर मेहनत कर रहा था—दर्शन और क्रांति। (यह किताब लगातार गुप्त रूप से छपती रही।)

अर्नेस्ट के आते ही मानो बरांडा छोटा लगने लगा। ऐसा नहीं कि वह बहुत बड़ा था—कद तो पांच फिट नौ इंच ही था, उससे बड़प्पन की एक आभा छिटक रही थी। मुझसे मिला तो उसमें एक अटपटेपन का सा आभास हुआ। उसकी साहसपूर्ण दृष्टि और आत्मविश्वास से भरे हाथ मिलाने से इस अटपटेपन का कोई मेल नहीं था। हां हाथ मिलाते समय उसकी दृढ़ आंखों में जैसे कोई सवाल था और वह पहले की तरह देर तक मुझे देखता रहा।

मैंने कहा—'मैं आपका मज़दूरवर्ग का दर्शन पढ़ रही हूं।'

सुन कर खुशी झलकी उसकी आंखों में।

'आपने उस वर्ग को तो ध्यान में रखा ही होगा जिसके लिए वह लिखा गया है।'

'निश्चित ही, और इसलिए मुझे आपसे झगड़ना है।'

'मुझे भी आपसे एक झगड़ा निपटाना है।' बिशप ने कहा।

एवरहार्ड ने कंधे उचकाए और चाय का प्याला उठा लिया।

बिशप ने इशारा किया कि पहले मैं शुरू करूं। मैंने कहा—'आप वर्ग-घृणा उकसाते हैं। मज़दूर वर्ग में जो भी संकीर्ण और हिंस्र है उसे जगाने को मैं गलत और आपराधिक मानती हूं। वर्ग-घृणा समाज विरोधी है और मेरी समझ से समाजवाद विरोधी भी।'

'नॉट गिल्टी—मैं अपराध नहीं स्वीकारता। मैंने जो भी लिखा है उसमें वर्ग-घृणा है ही नहीं—न शब्दों में, न गंतव्य में।

'वाह!' मैं इल्ज़ाम लगाती चीखी और किताब खोलने लगी। मैं पन्ना पलट रही थी और वह चाय पीता मुस्कराता रहा। मैंने कहा—'पेज नम्बर 132' मैंने ज़ोर से पढ़ा—'सामाजिक विकास के इस दौर में मज़दूरी देने और पाने के बीच संघर्ष दिखाई देता है।'

मैंने विजेता की तरह उस पर नज़र डाली।

'उसमें वर्ग-घृणा की तो बात है नहीं।' वह मुस्कराता रहा।

'लेकिन आपने वर्ग-संघर्ष लिखा है।'

'वर्ग-संघर्ष, वर्ग-घृणा तो नहीं। मेरा विश्वास कीजिए हम वर्ग-घृणा नहीं पैदा करते। हम कहते हैं वर्ग-संघर्ष सामाजिक विकास का नियम है और इसके लिए हम ज़िम्मेदार नहीं। हम वर्ग-संघर्ष पैदा नहीं करते, बस उसकी व्याख्या करते हैं—वैसे ही जैसे न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की। हम हितों की टकराहट की व्याख्या करते हैं जिसके कारण वर्ग-संघर्ष पैदा होता है।'

'लेकिन हितों में टकराहट नहीं होनी चाहिए।' मैं चिल्लाई।

परिचय बढ़ने पर उस दिन पादरियों को दावत में बुला लिया। दावत के बाद उन्होंने मुझे बताया था कि उसके बारे में कितना कम जानते थे। वह मज़दूर परिवार में जन्मा था हालांकि उसका परिवार दो सौ वर्षों से अमरीका में रह रहा था। दस साल की उम्र में वह मिल में काम करने लगा था। बाद में वह एप्रेंटिस रहा और एक लोहार का काम करने लगा। उसने स्वाध्याय से ही जर्मन और फ्रेंच भी सीख ली थी। उन दिनों वह एक नई-नई खुली समाजवादी प्रकाशन संस्था के लिए शिकागो में विज्ञान और दर्शन की किताबों का अनुवाद करके मामूली आजीविका कमा रहा था। उसने अर्थशास्त्र और दर्शन पर किताबें लिख रखी थीं। उनसे भी थोड़ी आमदनी हो जाती थी।

सोने जाने से पहली इतनी बातें पापा ने बताई थीं। बिस्तर पर देर तक नींद नहीं आई और स्मृति में उसकी आवाज़ की गूंज सुनाई देती रही। मुझे अपने ही विचारों से डर लगने लगा। वह मेरे वर्ग के पुरुषों से कितना भिन्न था, कितना विजातीय पर कितना शक्तिशाली। उसके आत्मविश्वास से मुझे खुशी भी हो रही थी और मैं आतंकित भी हो रही थी क्योंकि मेरी कल्पना उड़ान पर थी। मैं उसे प्रेमी और पति के रूप में देखने लगी थी। मैंने बराबर सुना था कि पुरुष की शक्ति नारी के लिए निर्बाध आकर्षण होती है; और वह तो बेहद शक्तिशाली था।

'नहीं, नहीं! यह असंभव है, बकवास है', मैं चिल्लाई। सुबह जागी तो उसे फिर देखने की इच्छा भी जाग उठी। मैं फिर देखना चाहती थी कि वह कैसे बहस में लोगों को पालतू बना लेता है। उसकी वाणी में आक्रामकता का आवेग सुनना चाहती थी—उनकी आत्मतुष्टि और जड़ता को छिन्न-भिन्न करते उसके बल और निश्चय को फिर देखने की लालसा जाग उठी थी। अगर उसने शेखी बघारी तो? तो क्या, वह खुद ही तो कह रहा था कि इसका प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, उसे शेखी बघारते देखना अच्छा भी तो लगता है, उद्वेलित करने वाला, मानो कोई जंग शुरू होने वाली है।

कई दिन बीतते गए। मैंने पिता से लेकर एवरहार्ड की किताबें पढ़ीं। उसके लिखे शब्द भी वैसे ही थे जैसे बोले हुए-स्पष्ट और कायल कर देने वाले। वे कायल भी करते और शंका भी बनाए रखते। एवरहार्ड में सुबोधता की प्रतिभा थी। उसकी प्रस्तुति हर तरह से परिपूर्ण होती। इस सब के बावजूद बहुत कुछ ऐसा था जो मैंने पसन्द नहीं किया था। उसने वर्ग-संघर्ष पर बहुत ज्यादा ज़ोर दिया था—पूंजी और श्रम के बीच अन्तर्विरोध, हितों के बीच संघर्ष, पर।

पापा ने डॉ. हेमरफील्ड की उसके बारे में प्रतिक्रिया मुस्कुराते हुए बताई थी—अर्नेस्ट एक गुस्ताख पिल्ले जैसा था। कम और अपर्याप्त जानकारी, यानी अधजल गगरी छलकत जाय, वाली। उन्होंने उससे फिर मिलने तक से इन्कार कर दिया था।

दूसरी ओर बिशप मोरहाउस ने उसमें दिलचस्पी दिखाई थी। फिर मिलने को उत्सुक थे। उन्होंने कहा था—'बलशाली नौजवान है, एकदम जीवन्त, एकदम जीवन्त। हां, आत्मविश्वास अधिक है, जरूरत से ज्यादा।'

पराभौतिकवादी से क्या मतलब है?'

'मैं आपको ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि आप उन्हीं की तरह तर्क कर रहे हैं। आप विज्ञान के ठीक विपरीत बहस कर रहे हैं। आपके निष्कर्षों में सत्यता नहीं है। आप सब कुछ प्रमाणित कर सकते हैं और कुछ भी नहीं। आप में से कोई दो शायद ही सहमत हो पाएं। आप में से हर कोई अपने को और अपने संसार को स्पष्ट करने के लिए अपनी चेतना में घुस जाता है। चेतना को चेतना के माध्यम से स्पष्ट करना वैसा ही है जैसे अपने जूतों के फीतों को उठाकर अपने को उठाने का प्रयास।'

मोरहाउस ने कहा—'मैं समझ नहीं पा रहा हूं। मुझे तो लगता है बुद्धि की हर बात पराभौतिक होती है। आखिर विज्ञानों में सबसे सटीक और आश्वस्तकारी गणित एकदम पराभौतिक ही तो होता है। वैज्ञानिक चिंतन करने वाले की हर विचार प्रक्रिया पराभौतिक ही होती है। आप यह तो मानेंगे ही।'

अर्नेस्ट ने जवाब दिया—आप ही ने कहा है कि आप नहीं समझ पा रहे। पराभौतिकवादी अपनी ही आत्मगतता से निगमनात्मक ढंग से तर्क गढ़ता है। वैज्ञानिक, अनुभव के तथ्यों से आगमनात्मक ढंग से तर्क करता है। पराभौतिकवादी, सिद्धांत से तथ्य की ओर जाता है; वैज्ञानिक, तथ्य से सिद्धांत की ओर। पराभौतिकवादी, ब्रह्मांड को अपने माध्यम से व्याख्यायित करता है और वैज्ञानिक, ब्रह्मांड के माध्यम से अपने को।'

'ईश्वर की कृपा है कि हम वैज्ञानिक नहीं हैं।' डॉक्टर संतोष के साथ भुनभुनाए।

'तो आप क्या हैं?' अर्नेस्ट ने पूछा।

'दार्शनिक।'

'एकदम सही।' अर्नेस्ट ने हंसते हुए कहा, 'आप वास्तविक और ठोस दुनिया को छोड़ हवा में उड़ चले हैं—उड़न यंत्र जैसे एक शब्द के साथ। प्रार्थना करता हूं, कृपया धरती पर लौटें और मुझे बताएं कि दार्शनिक से आपका आशय क्या है?'

गला साफ करते हुए डाक्टर बोले—'दर्शन वह है जिसे पूरी तरह व्याख्यायित नहीं किया जा सकता, सिवाय उसके समक्ष जिसके मस्तिष्क और प्रकृति दार्शनिक हैं। टेस्ट ट्यूब में नाक घुसेड़े संकीर्ण वैज्ञानिक दर्शन नहीं समझ सकता।'

अर्नेस्ट ने मार की धार को टाल दिया। यही उसका तरीका था। वह बहुत ही बिरादराना तौर पर बोला—

'तब तो आप दर्शन की मेरी परिभाषा को ज़रूर समझ जाएंगे। पर उसके पहले मैं आपको चुनौती देता हूं कि या तो उसमें ग़लती निकालें या चुपचाप पराभौतिकवादी बने रहें। दर्शन व्यापकतम विज्ञान है। इसकी तर्क प्रणाली किसी भी विशिष्ट विज्ञान या सभी विज्ञानों जैसी है। इसी आगमनात्मक पद्धति से दर्शन सभी विज्ञानों के समन्वय से एक महाविज्ञान की रचना करता है। जैसा स्पेन्सर ने कहा है किसी भी विज्ञान के तथ्य अंशतः एकीकृत ज्ञान हैं। सभी विज्ञानों के ज्ञान को एकीकृत करता है दर्शन। दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है—मास्टर साइंस कह सकते हैं। कैसी लगी मेरी परिभाषा?'

मानो लंगड़ाते हुए डाक्टर बोला, 'प्रशंसनीय, एकदम प्रशंसा योग्य'।

अर्नेस्ट निर्मम हो रहा था। उसने चेताया—'याद रखें मेरी परिभाषा पराभौतिकी के लिए मारक है। अगर आपने अभी मेरी परिभाषा में दोष नहीं निकाले तो बाद में अपने पराभौतिक तर्क बघारने लायक नहीं रह जाएंगे। उस दोष को तलाशने के लिए आप ज़िन्दगी से गुजरें और तब तक खामोश रहें जब तक दोष ढूंढ़ न लें।'

अर्नेस्ट ने इन्तज़ार किया। चुप्पी दु:खद थी। डॉक्टर दुखी था, वह उलझन में भी था। अर्नेस्ट के कठोर आक्रमण ने उसे हिला दिया था। उसे विवाद की सीधी और सरल पद्धति की आदत नहीं थी। उसने मेज़ के चारों ओर अपील करती नज़र डाली, पर किसी ने कुछ नहीं कहा। मैंने देखा, पापा अपनी नैपकिन से हंसी छिपा रहे थे।

डॉक्टर की उलझन चरम पर पहुंची देख कर अर्नेस्ट बोला—'पराभौतिकवादियों को अयोग्य साबित करने का एक और तरीका है। उनका मूल्यांकन उनके कामों से करो। उन्होंने हवाई किले बनाने और अपनी छायाओं को ही देवता समझने की ग़लती करने के अलावा और किया क्या है, मानव समाज के लिए? उन्होंने लोगों की खुशियां बढ़ाई हैं, मैं मानता हूं, लेकिन उनका ठोस योगदान क्या है? उन्होंने दिल की भावनाओं के केन्द्र के रूप में दार्शनिक व्याख्या की, माफ करेंगे मेरे इस इस्तेमाल को, उधर वैज्ञानिक, दिल से रक्त-प्रवाह का सूत्रीकरण कर रहे थे। वे भुखमरी और महामारियों की 'खुदा की मार' कहकर निन्दा कर रहे थे। उधर वैज्ञानिक अनाज के लिए गोदाम बनवा रहे थे, शहरों को साफ-सुथरा बना रहे थे। उन्होंने अपनी ही छाया और आकांक्षाओं से देवता गढ़े और वैज्ञानिक सड़कें और पुल बनाते रहे। वे धरती को ही ब्रह्मांड का केन्द्र घोषित करते रहे जबकि वैज्ञानिक अमरीका और सितारों की खोज करते रहे। क़िस्सा कोताह उन्होंने समाज के लिए कुछ नहीं, एकदम कुछ नहीं किया। धीरे-धीरे विज्ञान की प्रगति के साथ वे हाशिए में जाते रहे। ज्यों-ज्यों उनकी आत्मगत व्याख्याओं को प्रमाणित तथ्य उखाड़ते गए उनकी नयी-नयी व्याख्याएं आती रहीं, प्रमाणित तथ्यों की भी, और वे ऐसा अंत तक करते ही रहेंगे इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। महानुभाव! आप में और एस्किमों में बस एक ही अंतर है—आप हजारों साल के प्रमाणित तथ्यों के बावजूद वैसा ही कर रहे हैं—बस।'

'और फिर भी अरस्तू के विचारों ने बारह सौ वर्षों तक राज्य किया और अरस्तू पराभौतिकवादी था।' डॉ. बॉलिग फोर्ड ने गर्दन ऊंची कर घोषित किया। उन्होंने चारों ओर देखा तो उन्हें सहमति और मुस्कराहटों का पुरस्कार मिला।

'आपका उदाहरण दुर्भाग्यपूर्ण है', अर्नेस्ट ने जवाब दिया, 'आपने मानव इतिहास के एक अंधकारपूर्ण काल का संदर्भ उठा दिया। एक ऐसा काल जिस दौरान पराभौतिकवादियों ने विज्ञान के साथ बलात्कार किया, भौतिकी दार्शनिक के जादुई पत्थर की खोज बन गया, रसायनशास्त्र अलकेमी बन गया (सोना बनाने की विधि तलाशता), और ज्योतिर्विज्ञान ज्योतिष बन गया। अरस्तू के वर्चस्व का शोकपूर्ण परिणाम!'

इसीलिए मैंने 24 साल की हो जाने के बावजूद शादी नहीं की थी। मुझे वह पसन्द था, इतना तो मुझे स्वीकारना ही होगा। पर पसन्द के पीछे उसके बुद्धि और तर्क ही नहीं थे। बांहों से उछलती सी मछलियों और पुरस्कृत पहलवान जैसे गले के बावजूद वह मुझे एक सीधे सादे लड़के जैसा लगा था। मुझे महसूस हुआ था कि एक उफनते बुद्धिजीवी के पीछे एक संवेदनशील और नरम व्यक्ति का अस्तित्व था। ऐसा मैंने कैसे महसूस किया मुझे नहीं मालूम, सिवाय इसके कि मुझमें भी नारी सुलभ अन्तर्दृष्टि है।

उसके आह्वान में कुछ ऐसा था जो मेरे दिल को छू गया। वह मेरे कान में गूंजता रहा और मुझे महसूस हुआ कि मैं उसे फिर-फिर सुनना चाहती हूं, उसके चेहरे की गंभीरता को झुठलाती उसकी आंखों में हंसती चमक फिर-फिर देखना चाहती हूं। और भी अस्पष्ट और अनिश्चित भावनाएं उद्वेलित कर रही थीं। उस क्षण मैंने उसे प्यार-सा किया था, वैसे मुझे विश्वास है कि अगर उससे दोबारा भेंट नहीं होती तो वह भाव गुज़र जाता, मैं भूल जाती उसे।

पर ऐसा होना नहीं था। मेरे पापा की समाज विज्ञान में नवजात दिलचस्पी और उनकी डिनर पार्टियों के कारण ऐसा होना नहीं था। मेरे पिता समाजशास्त्री नहीं थे। मेरी मां से शादी एक खुशहाल शादी थी और उनके विषय भौतिकी में उनके शोधों ने भी उन्हें खुशी दी थी। पर मां की मौत के बाद पैदा शून्य को उनका काम भर नहीं सका था। पहले तो उन्होंने दर्शन में घुसपैठ की, पर जल्दी ही उनकी दिलचस्पी अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में पैदा हो गई थी। उनमें मजबूत न्यायबोध था और अन्याय के विरुद्ध उनका आवेग बढ़ता ही गया। हालांकि मुझे पता नहीं था कि उसका परिणाम क्या होगा? मैंने जीवन में उनकी नई दिलचस्पी का स्वागत ही किया था। वह एक बालसुलभ उत्साह के साथ इन नई रुचियों में डूब रहे थे बिना सोचे कि यह राह किधर जा रही है।

उन्हें प्रयोगशाला की आदत थी और अब उन्होंने डाइनिंग टेबुल को समाजशास्त्र की प्रयोगशाला में रूपान्तरित कर दिया था। दावत में हर तरह के लोग शामिल किए जाते थे—वैज्ञानिक, राजनीतिक लोग, बैंकर, व्यवसायी, प्रोफ़ेसर, मज़दूर नेता, समाजवादी, अराजकतावादी। पापा उन्हें बहस के लिए उद्वेलित कर देते थे और फिर समाज और जीवन पर उनके विचारों का विश्लेषण करते थे।

उस दिन के कुछ ही पहले वह मिले थे एवरहार्ड से मेहमानों के जाने के बाद। पापा ने बताया था कि एक दिन एक नुक्कड़ पर एक व्यक्ति कुछ मजदूरों के सामने भाषण दे रहा था और वह रुक कर सुनने लगे थे। यही व्यक्ति एवरहार्ड था। वह नुक्कड़ नेता भर नहीं था। वह समाजवादी पार्टी में ऊंचे मुकाम पर था। वह बड़ा नेता था और समाजवादी दर्शन का विद्वान समझा जाता था। वह जटिल बातों को भी सरल भाषा में अभिव्यक्त कर देता था। वह जन्मजात वक्ता और शिक्षक था और मज़दूरों को नुक्कड़ पर अर्थशास्त्र भी समझा सकता था।

पापा ने उस दिन उसे सुना, उनकी दिलचस्पी बढ़ी और मुलाकात तय हो गई।

बॉलिगफोर्ड दुखी हो गया पर अचानक चेहरे पर चमक लहराई और बोला—''चलो मान लेते हैं कि तुमने जो भयानक तस्वीर खींची है, वह सही है। पर तुम्हें स्वीकारना होगा कि पराभौतिकी में निहित शक्ति थी कि उसने मानवता को उस अंधकारपूर्ण काल से बाहर निकाला-भावी शताब्दियों के प्रकाश में।'

'इसमें पराभौतिकी का कोई योगदान नहीं था।' अर्नेस्ट ने कहा।

'क्या? आविष्कार यात्राओं के लिए क्या विचार और अनुमान ज़िम्मेदार नहीं थे?' डॉ. हैमरफील्ड चिल्लाकर बोले।

'मैंने सोचा था आप चुप रहेंगे क्योंकि आपने मेरी परिभाषा में कोई दोष निकाला ही नहीं। अब तो आप भुरभुरी ज़मीन पर खड़े हैं। पर आप लोगों का यही तरीका है इसलिए मैं इसे माफ करता हूं। मैं दोहरा रहा हूं खोज यात्राओं से पराभौतिकी को कुछ नहीं लेना देना। उनकी वजह थी खान-पान, रेशम और जवाहरात, रुपए-पैसे और हिन्दुस्तान के पारम्परिक रास्ते का बंद हो जाना। 1453 ईसवी में तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया जीत लिया और हिन्दुस्तान जाने वाले काफिलों का रास्ता रुक गया। यूरोप के व्यापारियों के लिए किसी और रास्ते की तलाश ज़रूरी थी। यही था मूल कारण खोज-यात्राओं का। कोलम्बस हिन्दुस्तान के लिए नए रास्ते की तलाश में ही निकला था। ऐसा ही लिखा है इतिहास की किताबों में। उसी दौरान धरती के आकार, रूप और प्रकृति के बारे में और तथ्यों का पता चला और पुराना टालेमी का सिस्टम बेकार हो गया।'

डॉ. हैमरफील्ड के होंठ फड़फड़ाने लगे।

'आप सहमत नहीं हैं मुझसे? तो बताइए मैं कहां गलत हूं?'

'मैं तो बस अपनी बात की पुष्टि करूंगा। कहानी बहुत लम्बी है। अभी उसमें नहीं पड़ा जा सकता।' डॉक्टर ने चालाकी से कहा।

'वैज्ञानिक के लिए कोई कहानी बहुत लम्बी नहीं होती। तभी वह हर कहीं पहुंच जाता है, तभी वह अमरीका पहुंच गया।' अर्नेस्ट ने मीठी बात कही।

मैं उस पूरी शाम का वर्णन नहीं करूंगी। हालांकि उस शाम को जब मैंने अर्नेस्ट को पहली बार जाना था, एक एक पल, एक-एक ब्योरा याद करना मुझे खुशियों से भर देता है।

एक जंग जारी थी। पादरी लोगों के चेहरे लाल हो जाते, खास तौर पर तब, जब अर्नेस्ट उन्हें रूमानी दार्शनिक, हवाई विचारक आदि कहता और तथ्य पेश करता—'तथ्य, महाशय! ठोस तथ्य', कह कर विजेता की तरह किसी को मुंह की खाते देखता। उसके पास तथ्यों का अंबार था, जिन्हें वह उन पर बमों की तरह बरसा रहा था।

'तुम तथ्यों के पुजारी लगते हो।' डॉक्टर ने चिढ़ाया।

'खुदा तथ्य के अलावा कुछ नहीं और अर्नेस्ट उनका पैगम्बर है।' बालिंग फ़ोर्ड ने सूत्रीकरण कर दिया।

अर्नेस्ट बस मुस्कराता रहा।

'मैं आपकी ईमानदारी को चुनौती नहीं दे रहा। आप हैं ईमानदार। आप वही प्रवचन देते हैं जिसमें आपका विश्वास है। यही तो है आपका मूल्य, आपकी शक्ति, उनके लिए अगर आपका बदलता है आप जैसे ही कुछ ऐसा कहेंगे जो व्यवस्था के लिए खतरनाक हो; आप अस्वीकार्य हो जाएंगे और हटा दिए जाएंगे। हर वक्त आप में से, कोई न कोई हटाया ही जाता है। मैं ठीक ही तो कह रहा हूं?'

इस बार असहमति नहीं सुनाई पड़ी। बस डॉक्टर ने एतराज़ किया—

'उन्हें इस्तीफ़ा देने के लिए तब कहा जाता है जब उनके विचार ग़लत हो जाते हैं।'

'इसे ही दूसरी तरह से ऐसे कहेंगे कि जब उनके विचार अस्वीकार्य हो जाते हैं। इसीलिए कहता हूं अपना काम कीजिए, तनख्वाह उठाइए पर खुदा के लिए मज़दूरों को उनके हाल पर छोड़ दीजिए। आप दुश्मनों के खेमे के हैं। आप में और मज़दूरों में किसी तरह की समानता नहीं। आपके हाथ मुलायम हैं क्योंकि आपके काम दूसरे करते हैं। आपके पेट गोल हैं क्योंकि उनमें काफी भोजन जाता है। (बॉलिंग फोर्ड इस पर चौंका और हर आंख उसकी मोटी तोंद पर गई। कहा जाता था कि वर्षों से उसने अपने पैर नहीं देखे थे।) और आपके दिमाग व्यवस्था-पोषक-सिद्धांतों से भरे पड़े हैं। आप उतने ही भाड़े के सिपाही हैं—एकदम ईमानदार, जैसे फ्रांस की क्रांति के समय लुई सोलहवें के स्विस गार्ड थे। नमकहलाली कीजिए और अपने उपदेशों से अपने मालिकों के हित की रक्षा कीजिए। मज़दूरों को नकली नेतृत्व देने से बाज आइए। ईमानदार हैं तो एक ही साथ दो खेमों में नहीं रह सकते। मज़दूर आपके बिना ही काम चला लेंगे। विश्वास कीजिए वह आपके बिना ही आगे बढ़ते जाएंगे। और हां, वह आपके बिना बेहतर कर सकेंगे।'

चुनौतियां

मेहमानों के जाने के बाद पापा आराम से कुर्सी पर पसर गए और देर तक ठहाके लगाते रहे। मां की मौत के बाद मैंने उन्हें इस तरह दिल से हंसते नहीं देखा था। हंसते हुए ही बोले—'मैं बाज़ी लगा सकता हूं कि डॉ. हैमरफील्ड को ज़िन्दगी में कभी ऐसी टक्कर नहीं मिली होगी। धार्मिक विवादों में शिष्टाचार! तुमने मार्क किया कैसे एवरहार्ड ने एक मेमने की तरह शुरू किया और कैसे वह थोड़ी ही देर में शेर की तरह दहाड़ने लगा। कितना शानदार अनुशासित दिमाग़ है उसका। अगर उधर ध्यान देता तो एक अच्छा वैज्ञानिक बन सकता था।'

मैं कैसे कहूं कि मेरी एवरहार्ड में गहरी दिलचस्पी पैदा हो गई थी। और ऐसा महज़ उसने जो और जैसे कहा था उसी वजह से नहीं हुआ था। उसमें उसके व्यक्तित्व की भी भूमिका थी। उसके जैसे इन्सान से मैं कभी नहीं मिली थी। मुझे लगता है

'मैं तो टेक्सास वाले आदमी की तरह हूं' उसने कहा। मतलब बताने के इसरार के बाद उसने कहा—'मिसूरी क्षेत्र के लोग हमेशा कहते हैं 'आपको दिखाना पड़ेगा।' पर टेक्सास वाला कहेगा 'आपको उसे मेरे हाथ पर रखना पड़ेगा।' ज़ाहिर है वह पराभौतिकवादी नहीं हो सकता।

इसी तरह जब उसने एक बार यह कह दिया कि पराभौतिक दार्शनिक सत्य की कसौटी नहीं झेल सकते तो डॉक्टर उबल पड़े—

'नौजवान! क्या है सत्य की कसौटी? क्या बताओगे कि कौन सी चीज़ है जिसने उन्हें परेशान रखा है जिनके पास तुमसे कम अक्ल नहीं होगी?'

'निश्चित! अक्लमंद लोग सत्य को लेकर उलझन में पड़े रहे क्योंकि वे उसे ले उड़ते थे। अगर ठोस धरती पर ही रहते तो पा जाते, समझ जाते कि अपने जीवन के ही हर व्यवहार और विचार में वह सत्य को ही परख रहे हैं।' अर्नेस्ट का आत्मविश्वास उन्हें चिढ़ा रहा था।

'कसौटी, कसौटी। छोड़ा लम्बी भूमिका। बस यह बताओ कि सत्य की कसौटी है क्या? यही हमें बता दो हम भी देवता तुल्य हो जायेंगे।'

अर्नेस्ट के चेहरे पर अमर्यादित क्षोभ उतर आया जिससे लोग खुश नज़र आए पर बिशप मोरहाउस इससे दुखी नज़र आए। अर्नेस्ट ने कहा—

'स्टैनफोर्ड यूनीवर्सिटी के प्रेसिडेन्ट डॉ. जारडन का कहना है कि सत्य की कसौटी बहुत साफ है। क्या यह कारगर होगा? क्या आप अपना जीवन इसमें लगा सकते हैं?'

'हुंह! तुमने बिशप बर्कले की बात नहीं की। उनका जवाब दिया है किसी ने?' डॉक्टर ने व्यंग्य किया।

'पराभौतिकवादियों का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि, लेकिन उनका उदाहरण दुर्भाग्यपूर्ण है। बर्कले ने स्वयं स्वीकार है कि उनके विचार कारगर नहीं हुए।'

डॉक्टर क्षुब्ध हो गया मानो उसने अर्नेस्ट को चोरी करते या झूठ बोलते पकड़ लिया हो। वह चिंघाड़ता हुआ सा बोला—'नौजवान! तुम्हारा यह वक्तव्य उस जैसा ही है जैसा तुम आज बोलते रहे हो बेकार और ग़ैर ज़रूरी पूर्वानुमान।'

'मैं तो चूर-चूर हो गया डॉक्टर, बस यही नहीं पता कि मुझे लगा क्या आकर। बस मेरे हाथ पर रख दो उसे।' अर्नेस्ट ने धीरे से कहा।

'ज़रूर! ज़रूर! तुम्हें कैसे पता? कैसे जाना तुमने कि बर्कले ने स्वीकारा है कि उसकी पराभौतिकी निष्फल सिद्ध हुई? कोई सुबूत? नौजवान! बर्कले की धारणाएं कारगर हैं—हमेशा।'

'मैं इसलिए कहता हूं कि बर्कले की पराभौतिकी ने काम नहीं किया', उसने रुक-रुक कर कहा, 'क्योंकि बर्कले दीवारों से नहीं दरवाजे से प्रवेश करते हैं, क्योंकि वह ठोस खान-पान में विश्वास करते हैं, क्योंकि वह रेज़र से दाढ़ी बनाते हैं जो उनके बाल काट देता है।'

'लेकिन ये वास्तविक बातें हैं, पराभौतिकी मस्तिष्क से संबंधित है।' हैमरफील्ड चिल्लाया।

'और वे मस्तिष्क में काम करती हैं। मस्तिष्क में सुई की नोक पर ढेरों फरिश्ते नाच सकते हैं, एक अजीबोग़रीब देवता दिमाग़ में जी सकता है, काम कर सकता है और इसके विरुद्ध सुबूत नहीं मिलेंगे। डॉक्टर मेरे ख्याल से आप मस्तिष्क में ही रहते हैं।'

'मेरा मस्तिष्क—एक राज्य है मेरे लिए।'

'इसका मतलब यही हुआ कि आप हवा में रहते हैं। पर भोजन के वक्त तो धरती पर आते ही होंगे या जब भूकम्प आ जाय। डॉक्टर साहब सच बताइए कि क्या भूकम्प के वक्त आपको ज़रा भी डर नहीं लगता कि आपके इस अभौतिक शरीर पर एक अभौतिक ईंट न गिर जाय?'

तत्काल और अनजाने में डॉ. हैमरफील्ड का हाथ उनके ललाट पर चला गया जहां एक निशान था जिसे बालों से ढंक दिया गया। हुआ यह था कि अर्नेस्ट के मुंह से गलती से एक सही उदाहरण निकल गया था। डॉक्टर 1906 के भूकम्प में मरते-मरते बचे थे। उन पर चिमनी गिर पड़ी थी।

सभी के मुंह से हंसी फूट पड़ी।

'तो फिर? विरोध में कोई सुबूत।' अर्नेस्ट ने हंसी थमने के बाद पूछा। उसने दोहराया—'हां तो फिर? और आपका वह तर्क?'

डॉक्टर फिलहाल पस्त हो गया था। जंग दूसरी तरफ जारी थी। अर्नेस्ट लगातार पादरियों को चुनौती दे रहा था। जब उन्होंने कहा कि वे मज़दूरों को जानते हैं तो अर्नेस्ट ने उन्हें वह बताया जो वे नहीं जानते थे और पूछा कि इन तथ्यों को ग़लत साबित कर सकते हों तो करें। वह तथ्य प्रस्तुत करता और बार-बार उनको हवाई उड़ानों से उतारकर धरती पर ले आता था।

वे सारे दृश्य लौट-लौट कर सामने आते हैं। मैं आज भी उसे सुन सकती हूं, हमला करते, डंक मारने वाले निर्मम तथ्य उछालते। वह न दया करता था, न उसकी अपेक्षा करता था। मैं कभी नहीं भूल सकती उसका अंतिम हमला।

'आपने बार-बार आज स्वीकारा है, सीधे-सीधे या फिर अपने अज्ञानपूर्ण वक्तव्यों के द्वारा कि आप मज़दूर वर्ग को नहीं जानते। इसके लिए आप दोषी नहीं। कैसे जान सकते हैं आप उन्हें? आप उनके मुहल्ले में रहते नहीं। आप तो पूंजीपतियों के साथ दूसरे मुहल्ले में बसते हैं। और क्यों न करें ऐसा? आखिर पूंजीपति ही देते हैं आपकी तनख्वाह, पोषण करते हैं आपका, आपको कपड़े देते हैं जिन्हें आज आप पहने हुए हैं। बदले में आप वह पराभौतिकी प्रचारित करते हैं जो उन्हें खासतौर पर स्वीकार्य है। विशेष रूप से स्वीकार्य वे हैं जो स्थापित व्यवस्था के लिए खतरनाक नहीं।'

मेज़ के चारों ओर असहमति की भुनभुनाहट सुनाई दी।

वे इस बात का अनुमोदन पाते हैं कि वही मानवजाति की योजना की व्यवस्था करेंगे। उन्होंने तो राजा के दैवी अधिकार का पुनराविष्कार-सा कर लिया है—अपने को व्यावसायिक राजा मान कर।'

उनकी स्थिति में कमज़ोरी इसमें निहित है कि वे केवल व्यवसायी हैं। दार्शनिक नहीं हैं वे, न ही जीवविज्ञानी या समाजविज्ञानी। अगर होते तो चीज़ें ठीक-ठाक रहतीं। एक ऐसा व्यवसायी जो जीवविज्ञानी और समाज विज्ञानी भी होगा वह यह तो जानेगा ही कि मानवता के लिए क्या ठीक है। पर व्यवसाय के बाहर ये लोग मूर्ख होते हैं। उन्हें व्यवसाय के अलावा कुछ नहीं पता। उन्हें मानवजाति के बारे में कुछ भी नहीं पता है? समाज में फिर भी वे लाखों-करोड़ों भूखे-नंगे और दूसरे के भाग्य विधाता बनना चाहते हैं। इतिहास कभी उनके ऊपर ठहाका लगाएगा।

मुझे श्रीमती विक्सन और श्रीमती पर्टनवैथ की बातें सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ था। आखिर तो वे 'सोसायटी विमेन' (यानी मौजमस्ती वाली औरतें) ही तो थीं। उनके महलों जैसे घर थे। उनके घर सारे देश में फैले थे—पहाड़ों में, झील किनारे, सागर तट पर। उनके पास नौकरों की फौज थी और उनके सामाजिक कार्य आश्चर्यजनक होते थे। वे चर्च और विश्वविद्यालयों को संरक्षण प्रदान करते थे और पादरी उनके आगे घुटने टेकते थे। ये दो औरतें शक्ति थीं—धन की, जैसी कि अर्नेस्ट की मदद से मैं समझने वाली थी। उनके पास विचार को आर्थिक सहायता देने वाली शक्ति थी।

वे अपने पतियों की नकल करती थीं और पतियों की नीतियों, कर्त्तव्यों और ज़िम्मेदारियों के बारे में बढ़-चढ़ कर बोलती थीं। उन पर भी वही आचारनीति हावी थी जो उनके पतियों पर—उनके वर्ग की नीति। वे धारा-प्रवाह ऐसे मुहावरों का इस्तेमाल करते थीं जिसका वे अर्थ तक नहीं जानती थीं।

वे तो चिढ़ गई थीं जब मैंने उन्हें जैक्सन परिवार की हालत और स्वेच्छा से उसके बारें में कुछ न किए जाने के बारे में बात की थी। उन्होंने कहा था कि उनका सामाजिक कर्त्तव्य बताने के लिए वे किसी की कृतज्ञ नहीं होने वाली। मैंने जितने सपाट ढंग से उनसे जैक्सन की मदद करने को कहा, उन्होंने उसी ढंग से इनकार कर दिया था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि मैंने दोनों से अलग-अलग बात की थी और एक को पता नहीं था कि दूसरे से भी ऐसी बात हुई या होगी। उनका समान उत्तर यह था कि वे कभी लापरवाही को रियायत नहीं देने वालीं। वे दुर्घटनाओं का मुआवज़ा देकर गरीबों को दुर्घटना करने का लालच देंगी।

ये दोनों औरतें सच्ची थीं। वे अपने वर्ग और अपनी श्रेष्ठता में विश्वास से मदहोश थीं। उनका वर्ग-नीतिशास्त्र उन्हें हर काम के लिए स्वीकृति देता है। श्रीमती पर्टनवैथ के विराट घर से लौटते वक्त मैंने मुड़कर देखा था और अर्नेस्ट की बात याद आई थी कि वे भी तंत्रबद्ध हैं, पर चोटी पर बैठे हैं।

इतिहास से जाना जा सकता है।' अर्नेस्ट बोला।

'मानना पड़ेगा कि चर्च खामोश रहा था।' बिशप ने स्वीकारा।

'चर्च आज भी खामोश है।'

'यहां मैं असहमत हूं।' बिशप ने प्रतिवाद किया।

अर्नेस्ट ने उसके अन्दर झांकने की कोशिश की और चुनौती स्वीकारने के अन्दाज़ में बोला—'ठीक है। आइए देखते हैं। शिकागो में ऐसी भी आंखें हैं जो सारे हफ्ते काम करती हैं और एक डालर भी नहीं पातीं। क्या चर्च ने विरोध किया?'

'मेरे लिए तो यह खबर है। सारे हफ्ते की मजदूरी एक डालर से भी कम। यह तो भयानक है।' बिशप का जवाब था।

'चर्च ने विरोध किया?'

'चर्च को पता ही नहीं है।' बिशप को संघर्ष करना पड़ रहा था।

अर्नेस्ट ने व्यंग्य किया—'और चर्च को आदेश था हमारी भेड़ों को पोसना।' हमारी व्यंग्यात्मक शैली को माफ़ करिएगा पर हमारा धैर्य टूट जाता है इन मसलों पर। इस पर क्या आप आश्चर्य करेंगे? फैक्ट्रियों में बच्चों के साथ होने वाले बर्ताव का कभी आप लोगों ने विरोध किया है? छः-सात साल के बच्चे बारह घण्टे की पाली में काम करते हैं। वह सूरज की रोशनी कभी नहीं देख पाते, मक्खियों की तरह मरते रहते हैं। मुनाफ़ा उनके खून में जन्मता है। उसी मुनाफे से खूबसूरत चर्च बनते हैं, जहां आप लोग चिकने-चुपड़े तुन्दिल मुनाफाखोरों को सुन्दर-सुन्दर उपदेश देते हैं।'

'मुझे पता नहीं था।' बिशप का चेहरा पीला पड़ गया था। लगता था उसे मिचली आ रही है।

'तो आपने विरोध नहीं न किया?'

बिशप ने गर्दन हिलाई।

'तो चर्च आज भी वैसा ही गूंगा है जैसा अठ्ठारहवीं सदी में था?'

बिशप चुप था और इस बार अर्नेस्ट ने अपनी बात पर जोर नहीं दिया।

'और यह न भूलिए कि अगर चर्च वाला विरोध करता है तो निकाल दिया जाता है।'

'मैं सोचता हूं ऐसा करना उचित नहीं।'

'आप विरोध करेंगे?' अर्नेस्ट ने पूछा।

'जिन बुराइयों की बात की है हमें दिखाइए और मैं विरोध करूंगा।'

'मैं दिखाऊंगा। आपको नर्क की यात्रा करवाऊंगा।'

'और मैं विरोध करूंगा। चर्च गूंगा नहीं रहेगा।' बिशप तन कर बैठ गया और उसके नर्म चेहरे पर एक योद्धा की कठोरता फैल गई।

'आपको निकाल दिया जाएगा।' अर्नेस्ट ने चेतावनी दी।

'मैं एक और बात कहूंगा। जो आपने कहा है वह वैसा ही है तो मैं साबित करूंगा

कि चर्च ने अज्ञानवश गलती की है। साथ ही मेरी राय है कि जो भी औद्योगिक समाज में ग़लत है वह पूंजीपति वर्ग के अज्ञान के कारण है। जैसे ही उसे पता चलेगा वह ग़लतियों को दुरुस्त कर देगा। और यह बात बताना चर्च का कर्त्तव्य होगा।' बिशप ने जवाब दिया।

अर्नेस्ट हंसने लगा-क्रूर हंसी।

मुझे बिशप के बचाव में उतरना पड़ा।

'याद रखें आप एक ही तरफ की बातें देख रहे हैं। हम में भी अच्छाई है, हालांकि आप हमें ज़रा भी समझने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं हैं। बिशप ठीक कहते हैं। उद्योगों में ठीक है कि भयानक गड़बड़ी है, जैसा आप कहते हैं, पर वह अज्ञान के कारण है। समाज के विभाजन का काफी विस्तार हो गया है।'

'जंगली कहा जाने वाला इंडियन उतना क्रूर और जंगली नहीं, जितना कि पूंजीपति वर्ग।'

उसके जवाब पर मैंने उससे नफ़रत की थी।

'आप हमें जानते नहीं। हम क्रूर और जंगली नहीं हैं।' मैंने जवाब दिया।

'तो साबित कीजिए।' उसने चुनौती दी।

'कैसे साबित करूं आपके सामने?' मेरा गुस्सा बढ़ रहा था।

'मेरे सामने नहीं, स्वयं अपने सामने साबित करें।'

'मुझे पता है।'

'आप कुछ नहीं जानतीं।' उसका अभद्र जवाब था।

'हां तब, बोलो बच्चो।' डैडी ने सहलाना चाहा।

'मुझे परवाह नहीं।' मैंने गुस्से में शुरू किया।

पर अर्नेस्ट ने टोका। 'मैं समझता हूं आपके पास धन हैं, या कहें आपके पिता के पास है—एक ही बात हुई—सिएरो मिल में लगा हुआ धन।'

'उससे यहां क्या मतलब?' मैं चिल्ला पड़ी।

'कुछ ज्यादा नहीं सिवाय इसके कि जो गाउन आपने पहन रखा है उस पर खून का धब्बा है, जो खाना खाती हैं उसमें खून मिला है—बच्चों और जवानों का खून आपकी छत से टपक रहा है। मैं आंखें बंद कर लूं तो उसे चूता सुन सकता हूं अपने चारों ओर—टप-टप-टप।' ऐसा कहकर उसने कुर्सी पर उठंग कर आंखें बंद कर लीं।

मैं आहत थी। मेरे अभिमान को चोट लगी थी। मेरी आंखें फूट पड़ीं। मेरे साथ जीवन में ऐसा क्रूर व्यवहार कभी नहीं हुआ था। बिशप और डैडी दोनों परेशान हो गए। वे बात को मोड़ने की कोशिश करने लगे। पर अर्नेस्ट ने आंखें खोलीं और उन्हें हाथ हिलाकर मना कर दिया। उसकी आंखें और मुंह गंभीर थे। आंखों में हंसी थी, तनिक भी चमक नहीं थी। तनिक भी पता नहीं लग रहा था कि वह कितनी कठोर बात करने वाला है। उसी क्षण एक आदमी, जो उधर से गुज़र रहा था, रुका और हमारी ओर नज़र

के विरुद्ध था। और उसी मिल के क्यों सभी मिलों के सभी मज़दूरों के विरुद्ध था। क्या यह सभी उद्योगों की हकीकत नहीं थी?

अगर यही सच था तो समाज एक झूठ था। मैं अपने ही द्वारा निकाले गए नतीजे से पीछे हट गई। वह इतना भयानक और डरावना था कि सच नहीं हो सकता था। पर जैक्सन तो था, उसका बाजू, मेरे गाउन पर धब्बे और मेरी छत से टपकता खून—यह सब सच था। और फिर जैक्सन तो बहुतेरे थे—सैकड़ों में थे—जैक्सन ने खुद ही कहा था। और मैं जैक्सन से भाग नहीं सकती थी। मैं सिएरो मिल्स के सबसे बड़े शेयर होल्डरों श्री विकसन और श्री पर्टनबेध से मिली। पर मैं उन्हें नहीं हिला सकी जैसे उनके कर्मचारी मैकेनिकों को हिलाया था। मैंने पाया कि उनके अन्दर समाज के अन्य लोगों की अलग श्रेष्ठता का नीतिशास्त्र था। उसे मैं श्रीमंतों या मालिकों का नीतिशास्त्र कह सकती हूं। उन्होंने नीति को बढ़ा-चढ़ाकर बात की और नीति तथा अधिकार को समानार्थी करार दिया। मुझसे उन्होंने बाप की तरह मेरी नौजवानी और अनुभवहीनता देखते हुए संरक्षणात्मक रवैये के साथ बात की। अपनी खोज के दौरान मुझे उनसे रद्दी कोई और नहीं मिला था। उन्हें पक्का विश्वास था कि उनका आचार एकदम सही था। उन्हें कोई प्रश्न, कोई बहस बेमानी थी। उन्हें इत्मीनान था कि वे समाज के रक्षक थे और वे ही बहुतों का भला करते थे। उन्होंने उन हालात की दयनीय तस्वीर खींची—अगर मज़दूरों के पास उनके विवेक द्वारा दी गई रोज़ी भी नहीं होती?

इन दो मालिकों से मिलने के तत्काल बाद मैं अर्नेस्ट से मिली और अपना अनुभव उसे बताया। मेरी ओर खुशी की अभिव्यक्ति से देखते हुए बोला:

'यह तो अच्छा हुआ। आप तो स्वयं सत्य को खोद निकाल रही हैं। यह आपका ही अनुभवजन्य सामान्यीकरण है और सही है। औद्योगिक तंत्र में बड़े पूंजीपति के अलावा किसी की स्वतंत्र-इच्छा नहीं होती और वह भी कितनी! आपने देखा ही कि मालिक लोग एकदम निश्चित हैं कि जो वह कर रहे हैं ठीक है। यही तो इन हालात में सबसे बड़ी बकवास है। वे अपनी प्रकृति से इस तरह आबद्ध हैं कि वह कुछ भी ऐसा नहीं कर सकते जिसे वे सही न समझते हों। उनके कामों के लिए कोई-न-कोई स्वीकृति चाहिए उन्हें।'

'जब वे कुछ करना चाहते हैं—निश्चित ही अपने व्यवसाय में, तो वे तब तक इन्तज़ार करते हैं जब तक उनके दिमाग में कोई-न-कोई धार्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक या फिर दार्शनिक धारणा नहीं कौंधती, जो उसको साबित कर दे। और तब वे उसे कर डालते हैं बिना सोचे कि मानव मस्तिष्क की यह कमज़ोरी है कि इच्छा विचार की जननी है। वे कुछ भी करना चाहें उसे स्वीकृति मिल ही जाती है। वे नकली कारणवादी हैं। वे वास्तव में जेसूट (कट्टर कैथोलिक) जैसे होते हैं। वे गलत भी करने को तैयार रहते हैं ताकि उसमें से सही पैदा हो सके। एक मज़ेदार और पहेली जैसा झूठ उन्होंने यह गढ़ा है कि वे बुद्धिमत्ता और योग्यता में सारी मानवजाति में सर्वश्रेष्ठ हैं। वहीं से

साप्ताहिकों ने भी किया।

मैंने पर्सी लेटन को पकड़ा। वह यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट था और पत्रकारिता कर रहा था। वह उस समय तीन सबसे प्रभावी अखबारों में से एक में अपरेंटिस था। जब मैंने जैक्सन और उसके मामले के ज़िक्र तक को अखबारों द्वारा दबा दिए जाने का कारण पूछा तो वह मुस्कराया था।

'सम्पादकीय नीति, हमें उससे कुछ नहीं लेना देना। यह तो संपादकों की बात है।' वह बोला।

'लेकिन क्यों है यह नीति?'

'हमारा कारपोरेशनों से पुख्ता रिश्ता है। अगर कोई विज्ञापन देता है तो ऐसी खबरें नहीं छपने देगा। अगर कोई अंदर घुसाने की कोशिश करेगा तो नौकरी जा सकती है। सामान्य दर से दस गुना ज्यादा देने पर भी तुम्हारी खबर नहीं छपेगी।' उसने कहा।

'तो तुम्हारी नीति क्या है? लगता है तुम्हारा काम है मालिकों—जो पूंजीपतियों के हाथों नाचते हैं—के निर्देश पर सच को तोड़ना मरोड़ना।'

'मुझे इससे कोई मतलब नहीं।' क्षण भर को उसे असुविधा हुई, पर रास्ता सूझते ही चमक आ गई, 'मैं यूँ ही बातें नहीं लिखता। मेरी अन्तरात्मा साफ है। हां, यह तो सच है कि दिन भर में कितने ही ग़लत काम होते हैं। पर वह तो कारोबार का हिस्सा है।'

'फिर भी तुम एक दिन संपादक की कुर्सी पर बैठना और नीति निर्धारित करना चाहते हो?'

'तब तक पक जाऊंगा।' उसका उत्तर था।

'अभी पके नहीं हो तो बताओ अभी क्या सोचते हो सामान्य संपादकीय नीति के बारे में?'

'मैं नहीं सोचता कि कोई पत्रकारिता में सफल होना चाहता है तो मालिकों से कोई पंगा लेगा। इतना तो मैंने समझ ही लिया है।'

उसने सिर एक समझदार की तरह हिलाया।

'लेकिन सही?' मैंने ज़ोर दिया।

'तुम्हें खेल की समझ नहीं है। यही है सब कुछ क्योंकि सही लगता है। तुम्हें दिख नहीं रहा?'

'एकदम अस्पष्ट', मैं बुदबुदायी। लेकिन उस नौजवान के लिए मैंने दर्द महसूस किया। चिल्ला पड़ने या रो पड़ने का मन किया।

मैं जिस समाज में रह रही थी उसकी सतह के आर-पार देख पा रही थी मैं। मुझे पीछे का भयानक यथार्थ दिखने लगा था। मुझमें उस भुनभुनाते वकील के प्रति सहानुभूति का ज़ज्बा उभरा जिसने मुकदमें में हार का मुंह देखा था। लेकिन यह गुप्त षड्यंत्र बढ़ता गया। यह केवल जैक्सन के विरुद्ध नहीं था। यह दुर्घटनाग्रस्त हर मज़दूर

डाली। वह लम्बा-तगड़ा था हालांकि कपड़े मामूली थे। उसके सिर पर बांस के बने सामान-कुर्सियों, स्टैन्ड वगैरह का बड़ा-सा बोझा था। वह इस तरह देख रहा था जैसे अन्दर बहस चल रही हो कि भीतर आकर अपना सामान बेचने की कोशिश करे कि न करे।

'उस आदमी का नाम जैक्सन है।' अर्नेस्ट ने कहा।

'इतना तगड़ा शरीर लेकर उसे कहीं काम करना चाहिए, न कि घर-घर घूम कर सामान बेचना।' मैंने तीखे ढंग से कहा।

'इसकी बाईं बांह पर नज़र डालिए।'

मैंने देखा कमीज की बाईं बांह खाली थी।

'उसी बांह का खून मैंने आपकी छत से टपकता सुना।' बिना कड़ुवाहट के बोल रहा था अर्नेस्ट 'उसकी बांह सिएरो मिल में कट गई थी और आप लोगों ने उसे घायल घोड़े की तरह निकालकर सड़क पर हांक दिया मरने के लिए। जब मैं आप से कह रहा हूं तो मेरा मतलब है सुपरिन्टेन्डेन्ट और मैनेजर से, जिन्हें शेयर होल्डरों ने मिल चलाने के लिए लगा रखा है। एक हादसा हो गया था। उसने कम्पनी के कुछ डालर बचाने की कोशिश की थी। मशीन में उसका हाथ फंस गया था। वह चाहता तो दांते में फंसी छोटी सी चीज़ को जाने देता। पर वह उसे निकाल लेने के लिए उसे हाथ से खींचता रहा और हाथ फंस कर उंगलियों से कंधे तक चिथड़े-चिथड़े हो गया। रात का वक्त था। फैक्ट्री में ओवरटाइम चल रहा था। उस तिमाही में काफी मुनाफा हुआ था। जैक्सन कई घंटों से काम कर रहा था। थकान से उसकी फुर्ती घट गई थी। इसी वज़ह से वह मशीन में फंस गया था। उसकी बीवी है, तीन बच्चे हैं।'

'और कम्पनी ने क्या किया था उसके लिए?' मैंने पूछा।

'कुछ नहीं। अरे हां, कुछ तो किया था। अस्पताल से लौटकर उसने मुआवज़े का जो मुकदमा किया था कंपनी उसके खिलाफ लड़ी और जीती। आप जानती हैं कम्पनी काबिल वकीलों से काम लेती है।'

'आपने पूरी कहानी नहीं बताई या फिर आपको सारा किस्सा मालूम ही नहीं।'

'हो सकता है आदमी गुस्ताख हो।' मैंने विश्वास के साथ कहा।

'गुस्ताख, हा! हा! गुस्ताख मशीन ने उसका बाजू चबा डाला और वह गुस्ताख। पर था तो वह विनम्र मामूली नौकर और उसके गुस्ताख होने का कोई रिकार्ड तो है नहीं।' उसकी हंसी में एक तीखापन था।

'लेकिन कोर्ट? कोर्ट जितना आपने बताया उतने पर तो उसके खिलाफ फैसला नहीं देती!'

'कर्नल इन्ग्रैम आपकी कम्पनी के सीनियर वकील हैं।' उसने मेरी ओर ग़ौर से देखा और फिर कहा, 'मैं बताता हूं आप को क्या काम चाहिए मिस कनिंघम। आपको जैक्सन के मामले की तहकीकात कर लेनी चाहिए।'

'मैंने पहले ही निश्चय कर लिया था।' मैंने बड़े ढंग से कहा।

'ठीक है। तो मैं बता देता हूं कि वह कहां मिलेगा। पर यह सोच कर मैं कांप जाता हूं कि आप जैक्सन के बाजू को लेकर क्या सिद्ध करेंगी।' उसने भलमनसाहत के साथ कहा।

तो हुआ यह कि मैंने और बिशप ने अर्नेस्ट की चुनौती स्वीकार ली। वे साथ ही निकल गए और मैं अकेली बची उस अन्याय के भाव के साथ, जो मेरे और मेरे वर्ग के साथ हुआ था। यह आदमी तो जंगली जानवर था। मुझे उससे नफरत हो रही थी। मैंने अपने को सांत्वना दी कि मज़दूर वर्ग के आदमी से और अपेक्षा भी क्या की जा सकती थी!

जैक्सन का बाजू

मैंने तनिक भी कल्पना नहीं की थी कि जैक्सन का बाजू मेरी जिन्दगी में क्या भूमिका अदा करने वाला था। जैक्सन से तो मैं एकदम प्रभावित नहीं हुई जब मैंने उसे ढूंढ़ निकाला। वह खाड़ी के छोर पर दलदल के पास एक टूटे-फूटे मकान में मज़दूर बस्ती में रहता था जिसका किराया मकान के हिसाब से बहुत ज्यादा था। घर के चारों ओर गड्ढे थे जिनमें सड़ते पानी और काई की बदबू बर्दाश्त के बाहर थी।

जैक्सन वैसा ही विनम्र और मामूली था जैसा उसके बारे में बताया गया था। वह कुछ बना रहा था और उसने अपना काम मेरी बात के दौरान जारी रखा। पर विनम्रता के बावजूद जिस कौशल से एक हाथ से काम कर रहा था उसकी मूर्खता की बात झूठी लग रही थी। मुझे एक बात सूझी।

'तुम्हारा हाथ मशीन में फंसा कैसे था?' मैंने पूछा।

'पता नहीं।' उसने कुछ सोचते हुए से मेरी ओर देख कर रहा।

'बस हो गया।' 'लापरवाही'। मैंने कहलवाना चाहा।

'नहीं! नहीं! ऐसा कहना ठीक नहीं! मैं ओवरटाइम कर रहा था। थका हूंगा। मैंने सत्रह साल काम किया मिल में। मैंने देखा कि एक्सीडेंट सीटी बजने के पहले ही होता है अक्सर। मैं तो बाजी लगा सकता—सीटी बजने के पहले वाले घंटा में जितना एक्सीडेंट होता उतना सारा दिन में नहीं। आदमी कई घंटा काम करने के बाद उतना चौकस नहीं रहता?। मैंने देखा है बहुतों को उसी दौरान कटते-पिटते।'

'बहुतों को?'

'सैंकड़ों! बच्चों तक।'

थोड़े ब्योरे ज्यादा थे वरना जैक्सन की बताई कहानी सारत: वही थी जो मुझे बताई गई थी। जब मैंने पूछा कि उसने मशीन चलाने का कोई नियम तो नहीं तोड़ा था तो उसने गर्दन हिला दी—

फिर भी मैंने पाया कि वह भी निरक्षर मैकेनिक की ही जैसी स्थिति में थे। वह स्वतंत्र व्यक्ति नहीं थे, वह भी पहिए से बंधे थे। जैक्सन का नाम लेते ही उनमें आए परिवर्तन को मैं कभी नहीं भूल सकती। उनकी मुस्कराती खुश-इखलाकी भंगिमा भूत की तरह गायब हो गई। अचानक आई भयग्रस्त अभिव्यक्ति उनकी कुलीन मुखाकृति को बिगाड़ गई। मैं वैसे ही घबड़ा गई जैसे तब हुआ जब जेम्स स्मिथ फूट पड़ा था। कर्नल ने गाली नहीं दी। यही एक छोटा-सा अंतर बन गया उनमें और एक मजदूर में। वह वाक्चातुरी के लिए प्रसिद्ध थे। पर ग़ायब था वह तेवर। अचेतन रूप से ही सही वह बगलें झांकने लगे। पर वह उन वृक्षों के पीछे फंस चुके थे।

हां! वह जैक्सन का नाम सुनते ही बीमार लगने लगे। मैंने क्यों छेड़ा विषय? उन्हें मेरा मज़ाक अच्छा नहीं लगा। यह मेरी निकृष्ट रुचि और अनुदारता का परिचायक था। क्या मुझे पता नहीं था कि उनके पेशे में व्यक्तिगत भावनाओं का कोई मतलब नहीं था। उन्हें वह दफ्तर जाते वक्त घर पर छोड़ जाते थे। दफ्तर में उनकी भावनाएं बस पेशेगत होती थीं।

'जैक्सन को मुआवज़ा मिलना चाहिए था या नहीं?' मैंने पूछा।

'निश्चित ही, मेरा मतलब है व्यक्तिगत रूप से मेरी भावना के अनुसार निश्चित ही। पर इससे मुकदमे के कानूनी पहलू से कुछ नहीं लेना देना।' उसने जवाब दिया।

वह धीरे-धीरे अपने को समेटने लगा।

'मुझे बताइए! क्या हक़ का कानून से कोई वास्ता है?'

'तुमने एक ग़लत शब्द का इस्तेमाल कर दिया।' वह मुस्कराते हुए बोला।

'हक़ की जगह शक्ति न?' उन्होंने सिर हिलाया, 'और फिर भी कहा जाता है कि हमें कानून न्याय दिलाता है।?'

'यही तो विडम्बना है। हमें न्याय मिलता है।' उसने जवाब दिया।

'आप पेशेवर जवाब दे रहे हैं—हैं न?' मैंने पूछा।

कर्नल शरमा गया, वास्तव में शरमा गया और पलायन का रास्ता ढूंढ़ता लगा। पर मैंने रास्ता रोक लिया और हिली नहीं।

'आज बताइए। जब कोई अपनी व्यक्तिगत भावनाएं पेशेवत भावनाओं के सामने न्योछावर कर देता है तो क्या उसे एक प्रकार का आत्मिक अंग-भंग नहीं कहेंगे?'

कर्नल ने कोई जवाब नहीं दिया। वह फूहड़ ढंग से फूट लिए थे—पॉम का एक पौंधा कुचलते हुए।

फिर मैंने अखबारों को आज़माया। मैंने जैक्सन प्रकरण के बारे में एक संतुलित, तथ्यपरक और गंभीर लेख लिखा। मैंने जिनसे बात की थी उन पर कोई आरोप नहीं लगाया—बल्कि मैंने उनका नाम तक नहीं लिया। मैंने बस तथ्य लिखे-उसकी मिल में नौकरी, उसकी मशीनों को बचाने की कोशिश और नतीजे में हुई दुर्घटना, उसकी मौजूदा दुर्दशा और भुखमरी। तीन स्थानीय अखबारों ने मेरा लेख लौट दिया। यही दो

देख सकती थी—उसी कपड़े से बना था मेरा गाउन। और तब मुझे सिएरो मिल का ख्याल आया, उसके द्वारा दिए गए लाभांश का ख्याल आया और जैक्सन के खून और अपने गाउन पर पड़े धब्बे का ख्याल आया। जैक्सन को भूलना मुश्किल था—मेरी सोच लौट-लौट कर वहीं पर आ जाती।

मेरे अन्तरतम में मुझे अहसास होता जैसे मैं किसी कगार पर खड़ी हूं। ऐसा लगता मैं जीवन के एक नए और भयावह पक्ष का साक्षात्कार करने वाली हूं। और मैं अकेली ऊपर। अर्नेस्ट का सारा संसार ऊपर-नीचे हो रहा था। मेरे डैडी थे, उनके ऊपर अर्नेस्ट का प्रभाव दिख रहा था। बिशप थे। पिछली बार देखा तो बीमार लग रहे थे, भारी तनाव में थे। उनकी आंखों में अवधनीय संत्रास था। मुझे इतना ही पता था कि अर्नेस्ट ने नरक दिखाने का वादा पूरा कर दिया था। पर उन्होंने कौन से नारकीय दृश्य देखे थे पता नहीं क्योंकि वह सुन्न हो गए लगते थे और उनके बारे में कुछ भी नहीं कह पा रहे थे।

एक बार जब ऐसा लग गया कि मेरा छोटा-सा संसार उलट-पुलट गया है तो मुझे इसका कारण अर्नेस्ट लगने लगा। मैंने सोचा 'उससे मिलने से पहले हम कितने सुखी और शांत थे।' दूसरे ही क्षण लगा कि ऐसा सोचना सत्य के साथ विश्वासघात है और अर्नेस्ट रूपान्तरित हो गया—सत्य का दूत, दैवी चमक के साथ निर्भीक देवदूत जैसा-सत्य और न्याय के लिए—गरीब, दुखिया, प्रताड़ित, एकाकी जन के लिए जूझता हुआ। फिर एक और छवि उभरी—ईसामसीह—वह भी तो दुखियारों के लिए पुरोहितों और पाखंडियों के विरुद्ध उठ खड़ा हुए थे। मैंने यीशू के क्रास पर हुए अंत के बारे में सोचा और अर्नेस्ट को लेकर मन वेदना से भर गया। क्या उसका भी वैसा ही अंत होना है—युद्ध के आह्वान वाली आवाज़ का, एक जीवन्त नेक व्यक्तित्व का अंत?

उसी क्षण मुझे लगा कि मैं तो अर्नेस्ट को प्यार करने लगी हूं—उसे सुखी कर देने की इच्छा से पिघली जा रही हूं। मैंने उसके जीवन के बारे में सोचा—एक कठिन, कठोर और वंचना से भरा जीवन होगा। मैंने उसके पिता के बारे में सोचा जिसने उसके लिए झूठ बोला, चोरी की और खटता हुआ मर गया। वह भी तो दस की उम्र में ही फैक्ट्री में काम करने को मजबूर हुआ था। मेरे हृदय में उससे बांहों में भर कर उसका सिर अपने सीने पर रख सहलाने की इच्छा का ज्वार आ गया—अनगिनत विचारों से थका हुआ सिर बस उसे आराम से सहलाने, थोड़ा विस्मृत करने की इच्छा!

मैं कर्नल इन्ग्रैम से चर्च के द्वार पर मिली। मैं उसे बहुत दिनों से बहुत अच्छी तरह जानती थी। पॉम और रबर के पेड़ों के नीचे मैंने उन्हें फंसा लिया, हालांकि वह जान नहीं सके कि मैं उन्हें फंसा रही हूं। वह मुझसे पारम्परिक मुस्कराहट और वीरभाव के साथ मिले। शिष्टाचार, कूटनीतिज्ञता, व्यावहारिकता और उदारभाव उनके स्वभाव में था। जहां तक उपस्थिति का प्रश्न है वह हमारे समाज में सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले आदमी थे। उनके सामने यूनिवर्सिटी का अध्यक्ष भी बेढब और छोटा लगता था।

'मैंने दाहिने हाथ से मशीन की बेल्ट पकड़कर बाएं से उस टुकड़े को निकालने की कोशिश की। मैं देख नहीं पाया कि बेल्ट उतरी कि नहीं। मैंने सोचा मेरे दाहिने हाथ ने ऐसा कर दिया होगा। पर वह तो हुआ ही नहीं था। मैंने जल्दी की पर बेल्ट तो उतरी ही नहीं और बांह चबा ली गई।'

'बहुत दर्द हुआ होगा'! मैंने सहानुभूति दिखाई।

'हड्डियों का पिसना अच्छा नहीं था।' उसका जवाब यही था।

मुआवजे के मुकद्दमे के बारे में उसे ठीक-ठीक याद नहीं था। उसे बस यह ठीक से याद था कि उसे कोई मुआवजा नहीं मिला था। उसे लगा था कि फोरमैन और सुपरिन्टेन्डेंट की गवाही ने ही फैसला उसके खिलाफ कर दिया था। 'गवाही वैसी नहीं हुई जैसी होनी चाहिए थी।' उसने बस इतना ही कहा।

और मैंने उनसे मिलने का निश्चय किया।

एक बात साफ थी। जैक्सन की हालत बेहद खराब थी। बीवी बीमार थी और फेरी लगाकर वह घर के लिए पर्याप्त नहीं कमा पा रहा था। किराया वक्त से अदा नहीं हो पाता था और सबसे बड़ा लड़का ग्यारह का था, पर काम करने लगा था।

'मुझे चौकीदार की नौकरी तो दे ही सकते थे।' आखिरी शब्द सुनकर मैं चली आई थी।

जैक्सन के वकील, सुपरिन्टेन्डेंट और दो फोरमैनों की बातें सुनकर मुझे यह तो लगने ही लगा था कि अर्नेस्ट की बातों में कुछ तो था ही।

जैक्सन का वकील कमज़ोर और अयोग्य जैसा लगा था और मुझे आश्चर्य नहीं हुआ था कि ऐसा आदमी मुकदमा हार गया था। पहले पहल तो मुझे लगा था कि ऐसा वकील करके जैक्सन को ठीक ही फल मिला, पर दूसरे ही पल अर्नेस्ट के दो वक्तव्य कौंधे थे—'कम्पनी बहुत योग्य वकील रखती है' और 'कर्नल इन्ग्रैम चालाक वकील है।' मैंने तेज़ी से सोचा। मुझे समझ में आ गया कि कंपनी जैक्सन द्वारा किए गए वकील से काबिल ही वकील लगाती। पर यह तो एक छोटा ब्योरा था। मुझे लगा कोई और बड़ा कारण रहा होगा मुकदमा हारने का। मैंने वकील से पूछा—

'आप मुकदमा क्यों हारे?'

वकील थोड़ी देर परेशान और चिन्तित रहा और मन में मुझे इस दयनीय प्राणी पर दया आई। फिर वह भुनभुनाने लगा। मुझे विश्वास था कि उसका भुनभुनाना उसकी स्थितियों से जुड़ा था। वह पैदाइश से ही तबाह लगता था। वह गवाहियों के बारे में भुनभुनाया कि उन्होंने वही गवाही दी जो उन्हें जिताने वाली थी। वह एक भी ऐसा शब्द नहीं निकलवा पाया था जिससे जैक्सन जीतता। उन्हें पता था कि रोटी के किस तरफ मक्खन लगा है। जैक्सन तो मूर्ख था। मुझे तो कर्नल इंग्रैम ने कन्फ्यूज़ कर दिया था। क्रास इग्जामिनेशन में कर्नल प्रखर था। उसने जैक्सन से नुकसानदेह जवाब निकलवा लिए थे।

'अगर उसका पक्ष सही था तो उसके जवाब नुकसानदेह कैसे हो सकते थे?'

'सही से क्या मतलब?' उसने पूछा, 'ये किताबें देखी हैं? मैं इन्हें पढ़ कर यही समझ पाया हूं कि कानून एक चीज़ है और सही दूसरी चीज़। किसी वकील से पूछिए। आप स्कूल में पढ़ने जाते हैं कि सही क्या है लेकिन उन किताबों तक जानने जाते हैं कानून।'

'तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि कानून जैक्सन के पक्ष में था फिर भी वह हार गया? तो क्या आप कहना चाहते हैं कि जस्टिस काल्डवेल की अदालत में न्याय नहीं?' मैंने पूछा।

वकील ने क्षण भर मुझे घूरा और फिर उसके चेहरे की आक्रामकता पिघल गई। वह फिर भुनभुनाने लगा—'मुझे सही मौक़ा नहीं मिला। उन्होंने जैक्सन को और मुझे भी बेवकूफ बना दिया। मेरे पास क्या अवसर था? कर्नल इंग्रैम बड़े वकील हैं। बड़े न होते तो सिएरो मिल का काम मिलता उन्हें? आर्सटन लैंड सिन्डीकेट, बर्कले कॉनसॉलिडेटेड, सैन लिएन्द्रो और प्लेज़ेन्टन इलेक्ट्रिक का काम मिलता उन्हें? वह कॉरपोरेशनों के वकील हैं और उन्हें मूर्खता के लिए पैसे नहीं मिलते। सिएरो मिल ही उन्हें साल में बीस हज़ार डालर देती है। आखिर किसलिए? मेरी तो वह औकात नहीं। होती तो मैं बाहर नहीं पड़ा रहता जैक्सन जैसों का मुकदमा करने के लिए। आप क्या सोचती हैं जैक्सन का मुकदमा जीतने का क्या मिलता मुझे?'

'आपने शायद लूट लिया होगा उसे!'

'क्यों नहीं! आखिर मुझे भी तो जीना है। जीना है कि नहीं?'

'उसकी बीवी है, बच्चे हैं।' मैंने कहा।

'मेरे भी हैं। और इस धरती पर एक भी और व्यक्ति नहीं है जिसे परवाह है कि वे जिएंगे या मरेंगे।' उसने पलट कर जवाब दिया।

अचानक उसका चेहरा नरम पड़ गया। उसने अपनी घड़ी खोल दी। पिछले हिस्से में एक औरत और दो छोटे बच्चों की फोटो थी—

'ये रहा मेरा परिवार। देखिए उन्हें। कठिन दिन बिताए हैं हमने, कठिन दिन। मैंने सोचा था उन्हें इस शहर से दूर भेज दूंगा, अगर ज़ैक्सन का मुकदमा जीत गया। यहां उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। पर नहीं कर सका।'

मैं चलने लगी तो वह फिर झुक कर भुनभुनाने लगा—'मुझे तनिक भी उम्मीद नहीं थी। कर्नल इंग्रैम और जस्टिस कॉल्डवेल में अच्छी दोस्ती है। मैं यह नहीं कह रहा कि ठीक गवाही हुई होती तब भी दोस्ती काम आती। फिर भी मैं कहना चाहूंगा कि जस्टिस काल्डवेल ने काफी कोशिश की कि मैं सही गवाही न निकलवा सकूं। दोनों ही एक ही क्लब के मेम्बर हैं। उनकी पत्नियों के बीच आना जाना है, उनके घर पार्टियां चलती रहती हैं।'

दरवाज़े पर रुक कर मैंने पूछ लिया—'और फिर भी आप सोचते हैं कि जैक्सन का पक्ष सही था?'

'अरे मैं—क्रांतिकार्य में लगे लोगों के लिए दुर्घटना या मौत की आठ गुना ज्यादा संभावना होती है।' उसने बेपरवाही से जवाब दिया। बीमा कम्पनियां विस्फोटक पदार्थों का परीक्षण करने वाले रसायनज्ञों से मजदूरों की अपेक्षा आठ गुना अधिक किश्त लेती हैं। और मेरा तो शायद ही बीमा करें! पूछो क्यों?'

मेरी आंखें फड़फड़ाईं। चेहरे में गर्म खून दौड़ गया। ऐसा नहीं था कि उसने मेरी आर्द्रता भांप ली थी। भांपा तो मैंने था और उसकी उपस्थिति में?

उसी समय डैडी आए और मेरे साथ घर जाने की तैयारी में जुट गए। अर्नेस्ट ने उधार ली गई कुछ किताबें लौटाईं और पहले निकल गया। पर बाहर जाने से पहले पलटकर बोला :

'अरे हां! जब तक तुम अपनी और मैं बिशप की शांति नष्ट किए हुए हैं, तुम्हारा श्रीमती विक्सन और श्रीमती पर्टनबैक से मिल लेना बेहतर रहेगा। उनके पति मिल के मुख्य शेयर होल्डर हैं। सारी मानवता की तरह वे भी बंधी हैं मशीन से पर वे इस तरह बंधी हैं कि वे उसके ऊपर हैं।'

मशीन के गुलाम

मैं जितना ही सोचती जैक्सन के बाजू के बारे में उतनी ही हिल उठती। मेरे सामने ठोस हालात थे। मैं पहली बार जिन्दगी के रू-ब-रू थी। यूनिवर्सिटी में मेरी ज़िन्दगी, मेरी स्टडी, मेरी कल्चर कुछ भी वास्तविक नहीं था। मैंने जीवन और समाज के बारे में बस सिद्धांत जाने थे जो काग़ज पर बहुत भले लगते थे, पर अब तो मैं जीवन को ही देख रही थी। जैक्सन का बाजू जीवन का एक तथ्य था। अर्नेस्ट के शब्द—'तथ्य जनाब, निर्विवाद तथ्य' मेरी चेतना में गूंज रहे थे।

यह विकराल लगने लगा था—असंभव, कि हमारा सारा समाज खून पर टिका हुआ है। और फिर भी जैक्सन तो एक हकीकत था। मैं उसे नज़रअंदाज नहीं कर सकती थी। मेरा दिमाग लगातार उसी की ओर मुड़ जाता, कुतुबनुमा की सुई जैसे उत्तर की ओर मुड़ जाती है। उसके साथ विकट व्यवहार हुआ था। उसके खून की कीमत नहीं चुकाई गई थी ताकि लाभांश अधिक चुकाया जा सके। मैं ऐसे बीसियों परिवारों को जानती थी जिनको अधिक लाभांश मिला था और जैक्सन के बाजू के कारण जिन्हें मुनाफा पहुंचा था। अगर एक आदमी के साथ ऐसा दुर्व्यवहार हो सकता था और दुनिया बिना परवाह किए अपने रास्ते चली जा सकती थी तो क्या बहुतों के साथ ऐसा नहीं हो सकता? मुझे याद आया। अर्नेस्ट ने बताया था कि शिकागो में औरतें नब्बे सेन्ट के लिए लगातार काम करती थीं और दक्षिण की कपड़ा मिलों में बच्चे गुलामों की तरह खटते थे। मैं कपड़ा बनाते हुए चुरा लिए गए खून के कारण उनके सफेद पड़ गए हाथों को

'मैं नहीं सोचता कि मैं जानता हूं। पहले सोचा था जैक्सन के पलड़े में भी कुछ है। मैंने पत्नी को नहीं बताया, उसे निराश नहीं करना चाहता था। उसने शहर जाने का मन बना लिया था। यह सब था बहुत कठिन।'

'आपने इस बात की ओर उनका ध्यान क्यों नहीं आकर्षित किया था कि जैक्सन मशीन को नुकसान न हो, इस कोशिश में था।' मैंने एक फोरमैन पीटर डॉनेली से पूछा।

वह थोड़ी देर सोचता रहा। फिर चिन्ता का भाव दौड़ा चेहरे पर और वह बोला : 'काहे कि मेरी एक अच्छी-सी पत्नी है और तीन सुन्नर-सुन्नर बच्चे। आपने कभी देखा नहीं होगा उनसा, इसीलिए।'

'मैं समझी नहीं।' मैंने कहा।

'कइसे कहें ऐसा ठीक नहीं होता।' उसने जवाब दिया।

'तुम्हारा मतलब है...।' मैंने शुरू किया पर उसने आवेग में हस्तक्षेप कर दिया :

'मेरा वही मतलब है जो हमने कहा। कितने बरस से हम मिल में काम कर रहा हूं। एक लड़का था जब मैंने मज़दूर की तरह शुरू किया था। कड़ी मेहनत से आज जहां पहुंचा हूं—फोरमैन हूं आज। मुझे विश्वास नहीं है कि मैं डूब रहा होऊं तो कोई आदमी मेरे लिए हाथ बढ़ाकर बचाएगा। मैं यूनियन में था। पर दो हड़तालों में मैं कम्पनी के साथ रहा।' वे मुझे हड़ताल-भेदिया कहते हैं—कोई मेरे साथ खाने-पीने को तैयार नहीं है। आप देख पा रहे हैं ई दाग? ढेला चला के मारा था ऊ लोगन ने। सभी बच्चा मजदूर तक गाली देता है लोग। कौन है मेरा सिवा कम्पनी के? मेरा रोजी-रोटी बच्चा लोग का जिनगी सब तो मिलै के कारन है। इसीलिए।'

'जैक्सन का कसूर था?'

'उसको मुआवजा मिलना चाहिए था। अच्छा मजूर था कोई झगड़ा-झंझट नहीं करता था।'

'तो तुमने कसम खाने के बाद भी पूरा सच नहीं बताया।'

उसने सिर हिलाया।

'सच, पूरा सच, सच के अलावा कुछ नहीं।' मैंने पवित्र ढंग से कहा।

उसका चेहरा फिर निर्विकार हो गया। उसने उसे उठाया-मेरी ओर नहीं, आसमान की ओर।

'मैं अपना बच्चन के लिए हमेशा नरक में जलने को तैयार हूं।'

मनहूस चेहरे वाले सुपरिन्टेनडेंट हेनरी डलास ने मेरी ओर देखा और बात करने से इनकार कर दिया। मुकदमे और गवाही के बारे में मैं उससे एक शब्द नहीं निकलवा सकी। पर दूसरे फोरमैन के सन्दर्भ में मैं भाग्यशाली सिद्ध हुई। जेम्स स्मिथ कठोर चेहरे वाला आदमी था और उसे देख कर तो मेरा दिल बैठ गया। उससे बात करते वक्त भी लगा कि वह स्वतंत्र नहीं था। पर बात चली तो मुझे लगा कि वह औसत से अधिक तेज़ था। वह पीटर डॉनेली से सहमत था कि जैक्सन को मुआवज़ा मिलना चाहिए था।

'लेकिन तुम तो स्वतंत्र हो, निश्चित ही।'

'पूरी तरह नहीं। मैं दिल के तारों से नहीं बंधा हूं। कई बार कृतज्ञ हो जाता हूं कि मेरे बच्चे नहीं हैं हालांकि मैं खूब प्यार करता हूं बच्चों से। कभी शादी की तो बच्चे पैदा करने का साहस नहीं जुटा पाऊंगा।'

'यह तो बुरा सिद्धांत हुआ।' मैं चिल्लाई।

'जानता हूं। पर यह एक ज़रूरी सिद्धांत है।' उसने उदासी भरे शब्दों में कहा, 'मैं क्रांतिवादी हूं और यह खतरनाक पेशा है।'

मैं ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी।

'अगर मैं तुम्हारे डैडी के मुनाफ़े को चुराने के लिए उनके घर में घुसूं तो वह क्या करेंगे?'

'वह रिवाल्वर रख कर सोते हैं। ज्यादा उम्मीद है कि वह तुम्हें गोली मार देंगे।'

'और अगर मैं लाखों लोगों के साथ सभी धनिकों के घरों में घुसने की कोशिश करूं तो काफी गोलियां चलेंगी। क्यों?'

'हां! पर तुम वैसा कर नहीं रहे।' मैंने प्रतिकार किया।

'यही तो कर रहा हूं मैं। और हम महज़ घरों में रखा धन ही नहीं लेना चाहते—उसके स्रोत भी ले लेना चाहते हैं—सारी फैक्ट्रियां, सारी खदानें, रेलें, बैंक और स्टोर। यही है क्रांति। यह सब दरअसल खतरनाक है। मैं जितनी कल्पना करता हूं उससे भी ज्यादा गोलियां चलेंगी। लेकिन जैसा मैं कह रहा था कोई स्वतंत्र नहीं है आज। हम सब औद्योगिक मशीन के दातों में फंसे हुए हैं। तुमने देख लिया कि तुम्हारी और जिन व्यक्तियों से बातें कीं, उनकी क्या स्थिति है। औरों से भी बात करो—कर्नल इन्ग्रैम से बात करो। उन रिपोर्टरों से जिन्होंने जैक्सन की खबर छपने नहीं दी, उन एडिटरों से जो उन अखबारों को चलाते हैं। उन सबको तुम मशीन का पुर्जा ही पाओगी।'

बातचीत के दौरान थोड़ी देर बाद मैंने एक सीधा-सा प्रश्न पूछा, दुर्घटना में मज़दूरों की ज़िम्मेदारी के बारे में और जवाब मिला आंकड़ों भरा लेक्चर :

'सब कुछ लिखा है किताबों में। आंकड़ें इकट्ठे हैं और अंतिम रूप से प्रमाणित हो चुका है कि पारी शुरू होने के शुरुआती समय में कभी-कभार ही होती हैं दुर्घटनाएं। ज्यों-ज्यों मज़दूर थकते हैं, उनकी शारीरिक और मानसिक शिथिलता बढ़ती है, दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ने लगती है।

'क्यों! जानती हो तुम्हारे डैडी की सुरक्षा की संभावना एक मज़दूर की अपेक्षा तीन गुना ज्यादा है? ऐसा ही है। बीमा कम्पनियां भी जानती हैं? वे तुम्हारे डैडी से एक हज़ार की दुर्घटना बीमा पालिसी पर चार डॉलर बीस सेन्ट वार्षिक लेंगी जबकि उसी पालिसी पर एक मज़दूर से पन्द्रह डालर वसूलेंगी।'

'और तुमसे?' मैंने पूछा। पूछते वक्त मैंने महसूस किया कि मेरी भावना आर्द्र हो चली है।

वह तो और आगे तक गया। उसने कहा कि उनका बर्ताव निर्दयी और कठोर था जिसने दुर्घटना से लाचार हुए एक मज़दूर को यूं ही सड़क पर छोड़ दिया। उसने बताया कि मिल में बहुत दुर्घटनाएं होती हैं और मालिकों की नीति है मुआवजे के मुकदमे को अंत तक मुस्तैदी से लड़ना। उसने कहा :

'इसका मतलब होता है शेयर होल्डरों को हर साल लाखों का मुनाफा।' और मुझे याद आया डैडी को पिछली बार मिला शेयर और उससे खरीदा गया मेरा सुन्दर गाउन, डैडी की किताबें। मुझे अर्नेस्ट का आरोप याद आया कि मेरे गाउन पर खून के धब्बे हैं और कपड़ों के नीचे जैसे कुछ रेंगने लगा।

'जब तुमने गवाही दी तो तुमने यह नहीं कहा कि जैक्सन मशीनों को बचाने की कोशिश में दुर्घटनाग्रस्त हो गया?'

'नहीं! मैंने ऐसा नहीं कहा। मैंने गवाही दी कि जैक्सन लापरवाही की वजह से घायल हुआ था और कम्पनी पर कोई आरोप नहीं लगाया जा सकता।'

'क्या वह लापरवाही थी।'

'कुछ भी कहें उसे, पर हकीकत यह है कि घण्टों काम करते रहने पर आदमी थक जाता है?'

मेरी उस व्यक्ति में दिलचस्पी बढ़ रही थी। वह निश्चित ही बेहतर कोटि का व्यक्ति था।

'तुम अधिकांश मज़दूरों से ज्यादा शिक्षित लगते हो।'

'मैं हाई स्कूल तक पढ़ सका हूं। छोटे-मोटे काम करता हुआ वहां तक पहुंच पाया।' मैं यूनिवर्सिटी जाना चाहता था लेकिन पिता की मौत हो गई और मुझे नौकरी करनी पड़ गई। उसने शर्माते हुए कहा मानो अपनी कमज़ोरी बता रहा हो :

'मैं प्रकृतिवादी बनना चाहता था। मुझे जानवरों से प्यार है लेकिन मुझे मिल में काम करना पड़ा। तरक्की होकर फोरमैन बना तो शादी कर ली। फिर परिवार और फिर, फिर तो अपना मालिक मैं स्वयं रहा नहीं।'

'क्या मतलब है तुम्हारा?'

'मैं स्पष्ट कर रहा था कि मैंने वैसी गवाही क्यों दी—क्यों मैंने आदेश माने।'

'किसके आदेश।?'

'कर्नल इन्ग्रैम के। उन्होंने ही मेरी गवाही तैयार की थी।'

'और जैक्सन मुकदमा हार गया।'

उसने गर्दन हिलाई और उसके चेहरे का रंग बदलने लगा।

'जैक्सन की एक पत्नी और दो बच्चे थे।'

'पता है।' उसने धीरे से कहा, पर चेहरा स्याह होता जा रहा था।

'मुझे बताओ क्या वह आसान था—हाई स्कूल वाले तुम और गवाही देने वाले तुम—यह परिवर्तन?'

वह फूट पड़ा। उसने मुट्ठी कस ली, मानो मार बैठेगा और भद्दी-सी भाषा में गाली निकली।

मैं चौंक पड़ी—डर गई। फिर वह सम्हल गया:

'माफी चाहता हूं। आसान नहीं था। अब आप जा सकती हैं—जो आपको मुझसे निकलवाना था, निकलवा चुकीं। पर जाने से पहले एक बात सुनती जाइए। आपका कोई फायदा नहीं होने वाला। मैं अपनी बातें दोहराऊंगा नहीं। कोई गवाह भी नहीं है। मैं साफ इनकार कर दूंगा। मुझे ऐसा करना पड़ा तो करूंगा—शपथ लेकर कटघरे में इनकार कर दूंगा।'

स्मिथ से बात के बाद मैं डैडी के दफ्तर गई। वहां अर्नेस्ट से मुलाकात हो गई। अनपेक्षित थी यह भेंट, पर वह मिला तो उन्हीं आत्मविश्वासपूर्ण आंखों के साथ। वही कस कर हाथ मिलाना और वह मिश्रण अटपनेपन और मस्ती का। लगता था पिछली तूफानी भेंट हुई ही नहीं थी। पर मैं नहीं भूलने वाली थी।

'मैं जैक्सन के मामले को देख रहीं हू।' मैंने अचानक कहा।

वह दत्तचित्त होकर सुनने लगा। उसकी आंखों से लगा कि उसे मेरे हिल जाने का विश्वास हो गया है।

'लगता है उसके साथ बुरा व्यवहार हुआ। मैं ... मैं सोचती हूं हमारी छत से उसका खून टपक रहा है।' मैंने स्वीकारा।

'निश्चित ही। अगर जैक्सन जैसों के साथ दयापूर्ण व्यवहार हो तो मुनाफा इतना ज्यादा नहीं होगा।'

'अब कभी सुन्दर गाउन पहनने पर मज़ा नहीं आने वाला।'

मैं विनम्र और उबर गई-सी महसूस कर रही थी। एक सुन्दर भाव था मन में, मानो अर्नेस्ट पादरी हो जिसके सामने मैं स्वीकारोक्ति के लिए खड़ी हूं। फिर उसकी शक्ति ने मुझे प्रभावित किया—ऐसा उसके बाद हमेशा होता रहा। लगा जैसे शांति और सुरक्षा की किरणें फूट रही हों।

'रेशम नहीं, बोरा पहनो तब भी मज़ा नहीं ले सकोगी क्योंकि जूट मिलों में भी यही होता है—हर जगह वही। हमारी यह गौरवान्वित सभ्यता खून में डूबी हुई है और उस लाल धब्बे से न तुम बच सकती हो, न मैं। किन लोगों से बात की है तुमने?'

मैंने सब कुछ बता दिया।

'उनमें से एक भी स्वतंत्र नहीं था—सभी बंधे थे निर्दय औद्योगिक तंत्र से। दर्द तो यह है—त्रासदी, कि वे दिल के तारों से बंधे हैं—वे अपने बच्चों को बचाना चाहते हैं—नौजवान ज़िन्दगियां। यही सुरक्षा का अन्तर्भाव उनके अंदर किसी भी अन्य भाव से ज्यादा मजबूत है। मेरे बाप! उसने चोरी की, झूठ बोला, कौन से बुरे काम नहीं किए ताकि मेरे और मेरे भाइयों-बहनों के मुंह में रोटी का टुकड़ा डाल सके। वह औद्योगिक तंत्र का गुलाम था और उसने उसे चूस लिया—काम कराते-कराते मार डाला।'

'एकदम यही तो कहा उस बूढ़े विलकॉक्स ने। और भी बहुत कुछ। उसने कहा ऐसा करना कुरुचिपूर्ण है, एकदम अनुपयोगी और यूनिवर्सिटी की परम्परा और नीतियों से एकदम असंगत। वह इसी तरह की सामान्य बातें बोलता रहा। मैं उसे किसी खास बिन्दु पर दबोच नहीं पाया। मैंने उसे बहुत भद्दी स्थिति में डाल दिया और वह बस यह दोहराता रह गया कि वह और सारी दुनिया एक वैज्ञानिक के रूप में मेरा कितना सम्मान करती है। ऐसा कहना, उसे अच्छा नहीं लग रहा था—मैं साफ-साफ देख पा रहा था।'

'वह एक स्वतंत्र व्यक्ति तो है नहीं। बेड़ियां पड़ी हों तो आदमी ढंग से तो नहीं चल सकता।' अर्नेस्ट ने कहा।

'हां! मैं बस इतना ही निकलवा पाया—यूनिवर्सिटी को जितना पैसा चाहिए इस साल, सरकार उतना देने को तैयार नहीं है। अब कमी की पूर्त्ति धनी लोग ही तो कर सकते हैं। उन्हें कितना बुरा लगेगा कि निरावेग बुद्धिमत्ता के निरावेग समर्पित उच्चादर्श से विश्वविद्यालय च्युत हो। जब मैंने उनसे बहस की कि मेरे व्यक्तिगत जीवन का यूनिवर्सिटी के उच्चादर्श से स्खलन का क्या लेना-देना तो उसने मुझे दो साल की छुट्टी का ऑफर दिया। पूरी तनख्वाह के साथ मनोरंजन और रिसर्च के लिए। उन हालात में मैं स्वीकार तो नहीं ही कर सकता था।

'बेहतर होता कि आप उसे स्वीकार लेते।' अर्नेस्ट ने गंभीरतापूर्वक कहा।

'यह तो घूस था।' पापा ने विरोध किया और अर्नेस्ट ने गर्दन हिला दी। 'एक भिक्षुक तक ने बताया कि शहर में चर्चा है कि मेरी बेटी एक कुख्यात' से व्यक्ति के साथ देखी जाती है और यह यूनिवर्सिटी के सम्मान और चलन के अनुकूल नहीं है। ऐसा नहीं था कि उन्हें व्यक्तिगत तौर पर एतराज़ हो, नहीं, पर चर्चा हो रही है और मुझे समझना चाहिए।'

अर्नेस्ट ने इस पर सोचा और बोला, 'इसमें यूनीवर्सिटी के आदर्श से ज्यादा ही दांव पर लगता है। किसी ने प्रेसीडेन्ट विलकॉक्स पर दबाव डाला है।' उसके चेहरे पर विषादपूर्ण क्रोध की छाया थी।

'तुम्हें लगता है ऐसा?' पापा की आवाज़ से लगा वह इससे डरे नहीं हैं; बस, उनकी दिलचस्पी बढ़ी है।

अर्नेस्ट ने कहा : 'काश मैं उस धारणा को आप तक सम्प्रेषित कर पाता जो मेरे मन में शक्ल अख्तियार कर रही है। दुनिया के इतिहास में समाज कभी इतने भयंकर उद्वेलन में नहीं था जितना आज है। हमारी औद्योगिक व्यवस्था में आ रहे तेज परिवर्तन हमारी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक संरचना में भी तेज़ी से परिवर्तन ला रहे हैं। हमारे समाज की बुनावट और स्वरूप में एक आवश्यक क्रांति करवट ले रही है। उसका धीमा सा आभास होता है। पर हवा में उसकी उपस्थिति दर्ज है, आज-अभी। व्यापक, अस्पष्ट और भयंकर चीज़ों की आहट महसूस हो रही है। वे क्या रूप लेंगी सोचकर मन कांप उठता है। आपने उस रात विक्सन की बातें सुनी थीं। उसकी बातों के पीछे भी

उन्हीं की गली में

अर्नेस्ट अक्सर घर आने लगा—डैडी या विवाद भरे डिनर के लिए ही नहीं । उस समय भी मैं उसके आने के कारणों में अपने योगदान के बारे में सोचती थी। पर कुछ ही दिनों में मुझे पता चल गया कि मेरा आकलन ठीक था। क्योंकि अर्नेस्ट जैसा प्रेमी शायद ही कोई हो। उनकी नज़र और हाथ मिलाते हुए पकड़ की तेज़ी बढ़ती गई। उसकी आंखों में सवाल और जरूरी बनते गए।

पहली नज़र में उसका मुझ पर असर ठीक नहीं पड़ा था। फिर मैंने पाया था कि मैं उसकी ओर आकर्षित होती जा रही हूं। फिर उसने मुझ पर और मेरे वर्ग पर हमला किया और मेरा विकर्षण बढ़ गया। बाद में मैंने देखा कि उसने मेरे वर्ग की निन्दा नहीं की थी। उसने उसके बारे में जो भी कठोर और तीखीं बातें कही थीं, वे सच थीं। मैं फिर उसके करीब हो गई थी। वह मेरी देववाणी बन गया। उसने समाज के चेहरे से मुखौटा नोच डाला। उसने मुझे उस यथार्थ की झलक दिखा दी जो जितना असुन्दर, था उतना ही सच।

जैसा मैंने पहले कहा है उस जैसा प्रेमी और नहीं। कोई ऐसी लड़की नहीं होगी जो किसी कैम्पस में रहे, 24 वर्ष की हो जाए और उसे प्रेम का अनुभव न हो। मुझसे बिन दाढ़ी वाले दीवानों, बुढ़ाते प्रोफ़ेसरों, खिलाड़ियों आदि ने प्रेम किया था। पर किसी ने अर्नेस्ट जैसा प्रेम नहीं किया। उसकी बाहें मुझे पता लगने से पहले मुझे घेर लेतीं। उसके होंठ मेरे होठों पर होते, इसके पहले कि मैं प्रतिकार या इनकार करती। उसकी लगन के सामने पारम्परिक नारी सुलभता की बात हास्यास्पद थी। उसका शानदार अजेय आवेग मुझे बहा ले जाता। उसने प्रस्ताव नहीं किया। उसने मेरा आलिंगन किया, चूमा और मान बैठा कि हमारी शादी तो होनी ही है। कोई बातचीत नहीं हुई इस विषय पर। एक ही बात हुई, वह भी बाद में, कि शादी कब हो।

यह सब अभूतपूर्व था, अवास्तविक जैसा, फिर भी अर्नेस्ट की सत्य की कसौटी के अनुसार यह सब कारगर सिद्ध हुआ। मैंने अपना जीवन समर्पित कर दिया और विश्वास भाग्यशाली सिद्ध हुआ। फिर भी प्यार के शुरूआती दिनों में मुझे उसके उग्र और आवेगमय प्यार को देखकर अक्सर भविष्य को लेकर डर लगने लगता। पर यह डर निर्मूल था। शायद ही किसी औरत को ऐसा भद्र और मुलायम पति मिला हो। मुलायमियत और हिंसा का यह अजीबोगरीब मिश्रण उसकी चाल में बेपरवाही और अटपटेपन के मिश्रण जैसा ही था। इस थोड़े से बेतुकेपन को वह कभी खत्म नहीं कर पाया, पर यह था मज़ेदार। हमारे ड्राइंग रूम में उसका व्यवहार मुहावरे में कहें तो क्रॉकरी की दुकान में एक सावधान बैल जैसा लगता था।

उसके मेरे प्रेम के बारे में लेशमात्र भी शंका इसी समय पूरी तरह दूर हो गई (शंका

भी अधिक से अधिक एक अचेतन शंका थी)। फिलोमथ क्लब की वह आश्चर्यजनक संघर्ष की रात जिसमें अर्नेस्ट ने उस्तादों को उनकी गली में ही धूल चटा दी थी। वह क्लब प्रशान्त महासागर तट की सबसे विशिष्ट जगहों में से था। इसे एक बेहद धनी महिला श्रीमती ब्रेन्टवुड ने बनावाया था। वही उसका पति, परिवार और खिलौना था। उसके सदस्य समुदाय के सबसे धनी लोग थे—धनिकों में सबसे मजबूत दिमाग के लोग। क्लब को थोड़ा बौद्धिक पुट देने के लिए थोड़े से विद्वान भी सदस्य थे।

इस क्लब की कोई अपनी इमारत नहीं थी। यह उस तरह का क्लब नहीं था। हर महीने किसी सदस्य के घर लोग किसी का लेक्चर सुनने इकट्ठे होते। वक्ताओं को प्राय: मानदेय देकर बुलाया जाता था। मानलीजिए किसी रसायनशास्त्री ने रेडियम पर न्यूयार्क में कोई शोध किया तो उसे उतनी दूर से सारा खर्चा देकर बुलाया जाता और अच्छा खासा मानदेय भी दिया जाता। इसी तरह ध्रुव की यात्रा से लौटे यात्री या फिर साहित्यिक या कलात्मक सफलता प्राप्त करने वाले के साथ भी किया जाता था। कोई बाहर का व्यक्ति नहीं आ सकता था और विचार-विमर्श क्लब की नीति के अनुसार प्रकाशित नहीं होता था। इस तरह बड़े राजनेता भी अपने मन की बात यहां कर लेते थे—ऐसा कई बार हुआ था।

मेरे सामने बीस साल पहले अर्नेस्ट का लिखा एक पत्र है। उसमें से मैं निम्नलिखित उतार रही हूं :

'तुम्हारे पिता फिलोमथ के सदस्य हैं। इसलिए तुम आ सकती हो। अगले मंगलवार की रात जरूर आना, तुम्हें जिंदगी का मज़ा आ जाएगा, मेरा वादा रहा। अपनी हाल की मुलाकातों में तुम मालिकों को हिला नहीं पाई थीं। अगर तुम आईं तो मैं तुम्हारे लिए उन्हें हिला कर रख दूंगा। मैं उन्हें भेड़ियों की तरह गुर्राने के लिए उकसाऊंगा। तुमने बस उनकी नैतिकता पर सवाल उठाए थे। जब उनकी नैतिकताओं पर सवाल उठते हैं तो वे और अधिक आत्मतुष्ट और श्रेष्ठ बन जाते हैं। पर मैं तो उनकी थैलियों के लिए खतरनाक बनूंगा। उनकी मूल प्रकृति की जड़ें हिला दूंगा। अगर तुम आई तो तुम्हें शानदार कपड़ों में हड्डी के लिए गुर्राते और झगड़ते गुफा मानव दिखाई पड़ेंगे। मैं वादा करता हूं तुम्हें जंगली जानवरों की हुआं-हुआं सुनने को मिलेगी, साथ ही उनकी प्रकृति के बारे में अन्तर्दृष्टि भी। 'उन्होंने मुझे फाड़ खाने के लिए निमंत्रित किया है। यह सुश्री ब्रेण्टवुड का 'आइडिया' है। उन्होंने निमंत्रण देते वक्त ऐसा थोड़ा इशारा किया था। उन्होंने सदस्यों को ऐसा मज़ा पहले भी दिया है। उन्हें मासूम और भद्र सुधारकों को निमंत्रित करने में आनन्द आता है। ब्रेन्टवुड के ख्याल से मैं बिल्ली की तरह सौम्य और घर की गइया की तरह निर्विकार हूं। उन्हें ऐसा ही इम्प्रेशन दिया मैंने—इनसे इनकार नहीं करूंगा। पहले तो झिझक रही थीं, जब तक उन्हें मेरे अहानिकर होने

दखलअंदाजी है। मैंने समझा मेरे जैक्सन मामले में छानबीन करने को देखते हुए उनका ऐसा सोचना स्वाभाविक ही था। पर समाज में निर्णायक भूमिका निभाने वाले दो ऐसे शक्तिशाली व्यक्तियों की मेरे प्रति भावना के प्रभाव का मैंने ठीक से मूल्यांकन नहीं किया था।

सचमुच मैंने पाया कि मेरे दोस्त मुझसे दूरी रखने लगे। पर मैंने सोचा ऐसा इसलिए था क्योंकि अर्नेस्ट से मेरी संभावित शादी को मेरे सर्किल में स्वीकारा नहीं जा रहा था। कुछ दिनों बाद जब अर्नेस्ट ने मुझे बताया कि मेरे वर्ग की ऐसी मानसिकता स्वत: स्फूर्त नहीं थी—इनके पीछे एक संगठित आचरण था। 'तुमने अपने एक वर्ग शत्रु को शरण दी है।' उसने कहा, 'शरण ही नहीं तुमने तो उसे प्यार भी दिया है, स्वयं को दिया है। यह वर्ग के साथ विश्वासघात है। ऐसा मत सोचना कि तुम्हें इसकी सज़ा नहीं मिलेगी।'

इसके पहले ही एक दिन पापा लौटे तो अर्नेस्ट मेरे साथ ही था। हमने देख लिया कि वह क्षुब्ध थे—दार्शनिक रूप से क्षुब्ध। वह शायद ही कभी वास्तव में नाराज़ होते थे। कभी-कभी संतुलित क्रोध वह कर लेते थे। इसे वह टॉनिक कहते थे। हमने समझ लिया था कि उन पर वह टॉनिक क्रोध हावी था।

'क्या ख्याल है? हमने आज विलकॉक्स के साथ लंच किया।' वह बोले। विलाकॉक्स विश्वविद्यालय के अध्यक्ष थे जिन्हें एक्सटेंशन मिल चुका था। उनके मुरझाए मस्तिष्क में 1870 ई० वाले सामान्यीकरणों का अम्बार था, जिन्हें उन्होंने उसके बाद दोहराया नहीं था।

'मुझे आमंत्रित किया गया था, बुलाया गया था।' पापा ने बताया।

वह रुके। हम इन्तज़ार करने लगे।

'वाह कितनी नफासत से किया गया यह सब! पर मुझे दी गई चेतावनी। वह भी उस जीवाश्म द्वारा।'

अर्नेस्ट बोला : 'मैं अन्दाज़ा लगा सकता हूं कि आपको किसलिए चेतावनी मिली होगी।'

'ज्यादा से ज्यादा तीन अनुमान'। पापा हंसे।

'एक ही काफी होगा और वह भी अनुमान नहीं, नतीजा निकाला गया होगा। आपको अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए चेतावनी मिली होगी।'

'एकदम सही। तुमने कैसे लगाया अन्दाज़ा?'

'मुझे पता था ऐसा होने वाला है। मैंने आपको चेताया भी था।'

पापा सोचने लगे। बोले : 'हां तुमने कहा तो था। पर मुझे विश्वास नहीं हुआ था। बहरहाल मेरी किताब के लिए यह निर्णायक प्रभाव है।'

अर्नेस्ट ने बात आगे बढ़ा दी : 'अगर आप मुझे और दूसरे समाजवादियों और तरह-तरह के उग्रपंथियों को इसी तरह आमंत्रित करते रहे तो जो होने वाला है उसके आगे तो यह कुछ भी नहीं है।'

चुनाव जीत ही जाओ और हम तुम्हें सत्ता सौंपने से इनकार कर दें?'

'हमने यह भी सोच लिया है। हम भी उसी भाषा में जवाब देंगे। तुम लोगों ने सत्ता को शब्दों का राजा घोषित किया है। बहुत अच्छा। ऐसा ही होगा। जिस दिन हम मतपेटियों में जीत जाएंगे और शांतिपूर्वक तथा संवैधानिक तौर पर जीती हुई सरकार तुम हमें सौंपने से इनकार करोगे और कहोगे कि अब हम क्या करेंगे—उसी दिन हम तुम्हें जवाब देंगे और हमारे जवाब का आवरण होंगे गालियों की गूंज और मशीनगनों की तड़तड़ाहट।

'तुम हमसे बच नहीं सकते। यह सच है कि तुमने इतिहास पढ़ा है। यह सच है कि मज़दूर इतिहास के प्रारम्भ से ही धूल में ही पड़ा रहा है और यह भी सच है कि जब तक तुम्हारे और तुम्हारे वारिसों के हाथ में सत्ता रहेगी, वे धूल धूसरित ही रहेंगे। मैं सहमत हूं। तुमने जो भी कहा सबसे सहमत हूं। सत्ता ही निर्णायक रहेगी, जैसे कि वह अब तक रही है। यह तो वर्ग-संघर्ष है। जैसे तुमने सामन्तों को नीचे खींच लिया था वैसे ही हमारा वर्ग—मज़दूर वर्ग—तुम्हें ऊपर से नीचे खींच लेगा। अगर तुम जन्तु विज्ञान और समाज विज्ञान भी उसी तरह पढ़ लो जैसे इतिहास पढ़ा है तो तुम समझ जाओगे कि मैंने जो कहा है वह अनिवार्य है। यह उतना महत्वपर्ण नहीं है कि यह एक साल में होगा या दस साल में या हज़ार साल में—पर तुम्हारा वर्ग नीचे गिराया जाएगा ज़रूर। और यह बलपूर्वक होगा। हम मज़दूरों ने इस शब्द को आत्मसात कर लिया है और वह हमारे अंदर गूंजता रहता है। सत्ता, एक बड़ा शब्द है।

फिलोमथ की रात का इस तरह अंत हुआ।

पूर्वाभास

यही समय था जब भावी घटनाओं का भलीभांति पूर्वाभास होने लगा था।

अर्नेस्ट ने पिताजी द्वारा समाजवादियों और मज़दूर नेताओं को घर आमंत्रित करने और उनकी मीटिंगों में भाग लेने की नीति पर सवाल खड़ा कर दिया था। पर उन्होंने इसे हंस कर टाल दिया था। जहां तक मेरा सवाल है मैं मज़दूर नेताओं और विचारकों के सम्पर्क से बहुत कुछ सीख रही थी। मैं सिक्के का दूसरा पहलू देख रही थी। मैं वहां की निस्वार्थता और उच्च आदर्श से बहुत खुश थी। पर मैं समाजवाद पर उपलब्ध विराट दार्शनिक और वैज्ञानिक साहित्य से भयभीत भी थी। मैं तेज़ी से सीख रही थी पर इतना तेज़ नहीं कि अपनी खतरनाक स्थिति को समझ पाती।

चेतावनियां मिलीं, पर मैंने ध्यान नहीं दिया। उदाहरण के लिए सुश्री पर्टनवैथ और श्री विक्सन का विश्वविद्यालय पर बहुत प्रभाव था और उनका इशारा था कि मैं बहुत अग्रगामी और अपना प्रभाव दिखाने वाली युवती हूं और मेरी प्रवृत्ति में दिखावा और

का भरोसा नहीं हो गया। मुझे ढाई सौ डॉलर की अच्छी-सी फीस मिलेगी जो रैडिकल होते हुए भी एक बार गवर्नर का चुनाव लड़ने वाले व्यक्ति के उपयुक्त ही है। मुझे शाम के मुनासिब कपड़े भी पहनने पड़ेंगे—यह अनिवार्य है। मैं तो कभी ऐसे सजा ही नहीं जीवन में। मुझे तो सूट किराए पर लेना पड़ेगा। पर फिलोमथ में अवसर पाने के लिए इससे भी ज्यादा करने को तैयार था।'

''संयोग, उस दिन बैठक पर्टनबैथ के घर में थी। बड़े से ड्राइंग रूम में अलग से कुर्सियां डाली गई थीं और कोई दो सौ लोग मौजूद होंगे। अर्नेस्ट को सुनने के लिए। सचमुच समाज के लाडले लोग वहां उपस्थित थे। मैंने मज़े के लिए दिमाग़ में जोड़ा कि यहां मौजूद लोग कितने धन के मालिक होंगे। अंदाज करोड़ों तक पहुंच गया। और ये लोग निखट्टू रईस नहीं थे—सभी कामकाजू थे, औद्योगिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय।

हम सब बैठे हुए थे जब सुश्री ब्रेन्टवुड अर्नेस्ट को लेकर आईं। वे जल्दी से शीर्ष स्थान तक पहुंच गए जहां से उसे बोलना था। उसने शाम की पोशाक पहनी हुई थीं। चौड़े कंधों और शाही सिर के साथ वह बेहद जंच रहा था। और फिर उसकी भंगिमाओं में वह अटपटापन तो था ही। मैं तो सोचती हूं मैं तो बस उस अटपटेपन पर ही जान दे देती। उसे देखकर अद्‌भुत प्रसन्नता हो रही थी। मैंने उसकी हथेली की नब्ज़ अपने पर महसूस की, उसके होंठों का स्पर्श और मैं ऐसे मान से भर गई कि मन किया उस बैठक में ही चिल्ला पड़ूं : 'वह मेरा है, उसने मेरा आलिंगन किया है और मैं, केवल मैं उसके मन में छाई हूं—उन सारे बड़े-बड़े विचारों के बावजूद।'

ब्रेन्टवुड ने उसका कर्नल फॉन गिलबर्ट से परिचय कराया। मुझे समझ में आ गया कि अध्यक्षता उन्हें ही करनी है। वह उद्योगपतियों के सफल वकील थे, साथ ही बेहद धनी। उनकी न्यूनतम फीस एक लाख डालर थी। वह कानून के उस्ताद थे—उसे कठपुतली की तरह नचाते थे। उसे गुंथी मिट्‌टी की तरह गढ़ सकते थे। चीनी पहेली की तरह तोड़-मरोड़ कर अपनी डिज़ाइन में फिर कर सकते थे। देखने में और मुहावरों में वह पुरानी चलन के थे, पर कल्पना, जानकारी और विदग्धता में ताज़ा कानून की तरह जवान थे। पहली बार वह तब प्रसिद्ध हुए थे जब शार्डवेल नामक करोड़पति की 'विल' उन्होंने तोड़ डाली थी (यानी वह व्याख्या कर दी थी जो विल करने वाले की मंशा के विरुद्ध थी। विल बनवाना और उसे तोड़ देना उस समय का कमाऊ पेशा था)। इसके लिए उन्होंने पांच लाख डॉलर लिए थे। उसके बाद तो वह रॉकेट की तरह उड़ चले थे। उन्हें अक्सर देश का सबसे बड़ा वकील कहा जाता था—निश्चित ही पूंजीपतियों का। तीन सबसे बड़े अमरीकियों की किसी भी सूची में उसका नाम होता ही।

वह उठा और चुनिन्दा शब्दों में प्रच्छन्न व्यंग्य के साथ अर्नेस्ट का परिचय करवाया। अर्नेस्ट के समाज सुधारक और मज़दूर नेता होने को उसने सूक्ष्म विनोद का पुट दिया। श्रोता मुस्कराए। मैंने क्षुब्ध होकर अर्नेस्ट की ओर देखा। वह तनिक भी तनाव में नहीं था। इससे मेरा क्षोभ और बढ़ गया। वह तो मानो उनकी उपस्थिति तक के प्रति सचेत नहीं लग रहा था। वह मूर्ख लग रहा था! एक क्षण को मैंने सोचा कि अगर वह सत्ता और दिमाग़ों की ऐसी उपस्थिति से आतंकित हो गया तो! पर फौरन मेरे होठों पर मुस्कराहट आ गई। वह मुझे मूर्ख नहीं बना सकता। पर औरों को तो बना रहा था वैसे ही जैसे सुश्री ब्रेन्टवुड को बनाने में सफल हुआ था। वह एकदम सामने बैठी थीं और इधर-उधर नजरें दौड़ा रही थीं और लग रहा था, कही जा रही बातों की प्रशंसा कर रही थीं।

कर्नल के बाद अर्नेस्ट की बारी थी। उसने हल्की आवाज़ में शुरू किया, रुक-रुक कर, थोड़ी अचकचाहट के साथ, विनम्रता पूर्वक. उसने बताया—मजदूर परिवार में जन्म, विकृष्ट स्थितियों में परवरिश जिसमें शरीर और आत्मा दोनों की भूख विदारक थी। उसने अपनी महत्वाकांक्षाओं और आदर्शों के बारे में बताया और अपनी स्वर्ग की धारणा के बारे में भी जिसमें बड़े लोग रहते थे। उसने कहा :

'हमारे ऊपर थी, आत्मा की निस्वार्थता, स्वच्छता और भद्र विचार, उत्कृष्ट बौद्धिक जीवन। यह सब मैंने सी साइड लाइब्रेरी के उपन्यासों (ऐसा साहित्य जो मज़दूरों को धनिकों के बारे में भ्रमित करता था) से जाना था। उनमें खलनायकों और उत्साही लोगों के अलावा सभी नारी-पुरुष सुन्दर बातें सोचते थे, सुन्दर भाषा बोलते थे और शानदार काम करते थे। संक्षेप में, जैसे मेरे लिए सूरज का उगना एक सच था वैसे ही यह भी कि मेरे ऊपर जो है सब सुन्दर, शरीफ, मनभावन है जो जीवन को सौन्दर्य और सम्मान प्रदान करता है—वह सब जो जीवन को जीने योग्य बनाता है और जीवन के दुखों और कठिनाइयों की क्षतिपूर्ति कर देता है।'

फिर उसने मिलों में अपने जीवन का वर्णन किया—कैसे घोड़े का नाल लगाने का पेशा सीखा और समाजवादियों से भेंट हुई। उनमें ऐसी तीक्ष्ण और प्रखर बुद्धि वाले मिले, पादरी भी जिनकी ईसाइयत को कुबेर भक्तों का कोई धार्मिक संप्रदाय बांधे नहीं रख सका और प्रोफेसर जो विश्वविद्यालयों के शासकवर्गों की मातहती के खिलाफ थे। उसने कहा कि समाजवादी क्रांतिकारी थे जो अपने समय के अविवेकपूर्ण समाज को उखाड़ फेंकना चाहते थे और अवशेष से भविष्य के समाज का निर्माण करना चाहते थे। उसने बहुत कुछ कहा, पर सब लिखने में बहुत समय लगेगा। पर मैं वह नहीं भूल सकती जो उसने क्रांतिकारियों के बीच जीवन के बारे में कहा। तब तक प्रवाह आ चुका था। उसकी आवाज़ में मज़बूती और आत्मविश्वास आ चुका था और उसकी आवाज, उसके विचार और वह खुद दमकने लगा। उसने कहा :

में बस शब्दाडम्बर था, शोर था। आप भालू पर भुनगों की तरह भुनभुनाते रहे। ये रहा भालू और आपकी भुनभुनाहट ने उसके कानों को गुदगुदाया भर है।' उन्होंने अर्नेस्ट की ओर इशारा करते हुए कहा।

'विश्वास कीजिए स्थिति गंभीर है। भालू ने हमें कुचलने के लिए पंजे फैला दिए हैं। उसने कहा है कि इस देश में 15 लाख क्रांतिकारी हैं। यह सच है। उसने कहा है कि उसका इरादा है हमारी सरकार, हमारे महल, हमारा ऐशो-आराम हमसे छीन लेना है। यह भी सच है। एक परिवर्तन, समाज में एक महान परिवर्तन आने वाला है। पर खुशी की बात है कि यह वह परिवर्तन नहीं होगा जिसकी भालू को अपेक्षा है। भालू ने कहा है वह हमें कुचल देगा, क्यों न हमीं उसे कुचल दें।'

गले से गुर्राहट निकली, लोगों ने एक दूसरे की ओर देखते हुए इस बात की पुष्टि की। चेहरे सख्त हो गए। वे थे जुझारू, यह तो निश्चित था। विक्सन ठंडे लहजे में निरावेश बोलते गए :

'लेकिन हम भालू को भुनभुनाहट मात्र से नहीं कुचल सकते। हमें उसका शिकार करना पड़ेगा। हम उसे शब्दों से जवाब नहीं देंगे। हमारा जवाब इस्पाती होगा। सत्ता हमारे हाथ में है। इसे कोई नकार नहीं सकता। उस सत्ता की बदौलत ही हम सत्ता में बने रहेंगे।'

वह अर्नेस्ट की ओर मुड़ा। वह एक नाटकीय क्षण था :

'यह है हमारा उत्तर। हमारे पास तुम्हारे लिए बर्बाद करने को शब्द नहीं है। जब तुम अपने मजबूत हाथ हमारे महलों और ऐशोआराम पर डालोगे, हम तुम्हें बता देंगे शक्ति क्या होती है। हमारे जवाब गोलियों की गूंज और मशीनगनों की सरसराहट के साथ आएंगे। हम अपनी एड़ियों (आयरन हील) से तुम क्रांतिकारियों को मसल देंगे। तुम्हारे चेहरे रौंदते हुए। दुनिया हमारी है और रहेगी। जहां तक मज़दूरों का सवाल है वे धूल में रहे हैं, जब से इतिहास शुरू हुआ। और हमें इतिहास मालूम है वे धूल में ही रहेंगे जब तक मेरे, हमारे और हमारे वारिसों के हाथ में सत्ता रहेगी। यही है वह शब्द, शब्दों का राजा—सत्ता—न ईश्वर, न धनदेवता, शक्ति। अपनी जबान को इसी से तर करो—सत्ता।'

अर्नेस्ट ने शांतिपूर्वक कहा :

'मुझे जवाब मिल गया। यही जवाब दिया जा सकता था। सत्ता। हम मज़दूर भी इसी की बात करते हैं। हम जानते हैं—कटु अनुभवों से जानते हैं कि अधिकार, न्याय, मानवता की कोई अपील आपको छूती ही नहीं। आपके दिल, आपकी एड़ियों की ही तरह सख्त हैं जिनसे आप हमारे चेहरे कुचलेंगे। इसीलिए हम सत्ता की बात करते हैं। चुनाव के दिन अपने मतों की शक्ति से आपकी सरकार आपसे छीन लेंगे—'

विक्सन बीच में ही कूद पड़ा :

'क्या फर्क पड़ता है अगर तुम्हें बहुमत, भारी बहुमत ही मिल जाय। मान लो तुम

देने की कोशिश भी नहीं करेंगे।'

'यह असहनीय है, अपमान है यह।' गिलबर्ट चिल्लाया।

'आप इसका जवाब न दें, यह असहनीय है। किसी को भी बौद्धिक रूप से अपमानित नहीं किया जा सकता। अपमान अपनी प्रकृति से ही भावात्मक होता है। आप प्रकृतस्थ हो लें। मेरे इस बौद्धिक आरोप का कि पूंजीपति वर्ग ने समाज की दुर्व्यवस्था की है आप एक बौद्धिक उत्तर दें।' अर्नेस्ट ने गंभीरतापूर्वक कहा।

कर्नल चुप और गंभीर बने बैठे रहे। चेहरे पर एक श्रेष्ठता का भाव लिए हुए, ऐसे जैसे कोई भद्र व्यक्ति बदमाश से बात करना पसंद न कर रहा हो।

अर्नेस्ट ने कहा : 'उदास न हों। इस बात से हौसला बढ़ाएं कि आपके वर्ग के किसी भी व्यक्ति ने आज तक जवाब नहीं दिया है।' वह बोलने के इच्छुक अन्य लोगों से मुखातिब हुआ और कहा : 'अब आपकी बारी है। हमला शुरू करें। बस यह न भूलें कि कर्नल ने प्रश्न का जवाब देने में सफलता नहीं पाई है।'

जो कुछ वहां हुआ उसे पूरी तरह लिख पाना मेरे लिए असंभव है। मुझे तो अहसास ही नहीं था कि तीन घन्टे के दरमियान कितने शब्द बोले जा सकते हैं। बहरहाल यह सब था शानदार। उसके विरोधियों का आवेश जितना ही बढ़ रहा था वह उसे उतना ही बढ़ाने में लग गया। उसके ज्ञान का संसार विराट था। अपने एक मुहावरे, एक शब्द, एक भंगिमा से वह उन्हें 'पंक्चर' कर देता था। उसने उनके तर्कभाव का टेक्निकल नाम भी बताया—यह झूठा न्यायवाक्य (सिलोजिज़्म) है, वह उपसंहार प्रमेय से एकदम अलग है। अगला प्रमेय पाखण्डपूर्ण है क्योंकि उसमें उपसंहार छपा हुआ है। यहां गलती है, एक पूर्वधारणा। अगले में सभी पाठ्य पुस्तकों में छपे निश्चित सत्य के विरुद्ध दावा प्रस्तुत किया गया था।

इसी तरह चलता रहा और वह उनकी बातों की धज्जी उड़ाता गया—तथ्य की मांग करता हुआ—सिद्धांतों को नज़रअन्दाज़ करता हुआ। उसके तथ्य उनके लिए वाटरलू साबित होते—(उन्हें पराजित करते)। जब वे मजदूर वर्ग पर हमला करते तो वह उलट वार करता : सूप तो सूप, चलनी भी—जिसमें बहत्तर छेद हैं।' और फिर वह सबसे कहता : आखिर आप इस आरोप का उत्तर क्यों नहीं देते कि आपके वर्ग ने दुर्व्यवस्था की है? आपने दूसरी-दूसरी ढेरों बातें कीं। पर जवाब नहीं दिया। क्या इसलिए कि जवाब है ही नहीं।'

श्री विक्सन बहस के अंत में बोले। एक वही संतुलन बनाए हुए थे और अर्नेस्ट ने उन्हें वह सम्मान दिया जो उसने किसी को नहीं दिया था। उन्होंने सोचते हुए कहा :

'किसी उत्तर की आवश्यकता नहीं है। मैंने सारी बहस आश्चर्य और जुगुप्सा के साथ सुनी है। मुझे आपसे घृणा हो रही है महानुभाव! आप मेरे वर्ग के हैं और मूर्ख स्कूली बच्चों की तरह व्यवहार कर रहे हैं—भले ही बीच-बीच में नैतिकता और राजनीति वाली उत्तेजना घुसा देते हों। आप हर तरह से पराजित किए जा चुके हैं। आप

'क्रांतिकारियों में मैंने इन्सानियत में गर्म विश्वास, पक्का आदर्शवाद, निस्वार्थ मधुरता, त्याग और शहादत का भाव देखा है—आत्मा की वे सारी गौरवशाली और वेधक चीज़ें। उनका जीवन स्वच्छ, उदार और जीवन्त था। मैं महान आत्माओं के साथ था जो रुपए-पैसे पर शरीर और आत्मा को वरीयता देते थे और जिनके लिए झोपड़-पट्टी के भूखे बच्चे के झीने कपड़े, सारी शान शौकत, व्यावसायिक विस्तार और विश्व साम्राज्य से अधिक महत्वपूर्ण थे। सामने था उद्देश्य की उदारता और प्रयासों की वीरता। मेरे दिन धूप और चांदनी में बीत रहे थे, आग भी थी और ओस थी। सामने जलती थी पवित्र ज्योति, ईसामसीह की अपनी ज्योति—गर्म, मानवीय, पीड़ित पर अन्ततः जिसको बच जाना था, जिसका उद्धार होना था।'

जैसा पहले कई बार देखा था उसका रूपान्तरण हो गया था। उसकी आंखें उसके अन्तर की पवित्रता से चमक रही थीं और उसको घेरे हुए एक चमक थी जो उसकी आंखों से बरस रही थी। और लोग इसे नहीं देख पा रहे थे। मैंने सोच लिया कि इसका कारण था मेरी आंखों में प्यार और खुशी के आंसू। बहरहाल मेरे पीछे बैठे विक्सन अप्रभावित थे क्योंकि मैंने उन्हें व्यंग्य करते सुना : 'सब यूटोपियन!' (यह एक ऐसा शब्द था जो किसी भी बात को हवाई करार देकर खारिज करने के लिए बोला जाता था।)

अर्नेस्ट ने अपनी प्रगति का वर्णन किया—जब वह उच्च वर्गों के सम्पर्क में आ गया और उनके कंधों से कंधा मिलाने लगा। फिर उसका मोह भंग हुआ। मोह भंग के वर्णन में उसने जो शब्द इस्तेमाल किए वे श्रोताओं को अच्छे नहीं लगे होंगे। उसे आश्चर्य हुआ था जानकर कि मिट्टी तो एक ही है पर सबका जीवन सुन्दर और उदार नहीं था। जिस स्वार्थपरकता से उसका सामना हुआ उससे वह डर गया। उसे जिस बात से सबसे अधिक आश्चर्य हुआ, वह थी बौद्धिक जीवन की सम्पूर्ण अनुपस्थिति। क्रांतिकारियों के बीच से निकलकर वह मालिकों की मूर्खता के बीच आ गया था। और फिर शानदार चर्च और उनमें शिक्षा देते मोटी तनख्वाहों वाले पादरियों के बावजूद ये लोग—नारी हों या पुरुष, मोटे तौर पर भौतिक थे। यह सच है कि उनके बीच छोटे-मोटे आदर्शों और छोटी-मोटी नैतिकताओं पर चर्चा होती थी, पर उनके जीवन की कुंजी थी 'सुखवाद'। उनमें वास्तविक नैतिकता नहीं थी—वह जिसकी शिक्षा स्वयं यीशू ने दी थी, पर जिस पर व्यवहार नहीं होता था:

'मैं ऐसे लोगों से मिला' उसने कहा 'जो शांति के राजकुमार का नाम लेते थे युद्ध की आलोचना में, पर शहर के गुंडों को बंदूक पकड़ाते थे—अपनी फैक्ट्रियों में हड़ताल करने वाले मज़दूरों को मार गिराने के लिए। मैं ऐसे लोगों से मिला जो इनाम के लिए लड़ने वालों की क्रूरता पर बेतरतीब क्षोभ प्रकट करते थे, पर उसी समय खाद्य पदार्थों में मिलावट में भागीदारी करते थे जिससे इतने बच्चे मरते थे जितने हाथ-रंगे

हेरोद ने भी नहीं मारे होंगे।'

'एक थे सुगढ़ शरीफ़ज़ादे, डमी डायरेक्टर कार्पोरेशनों की कठपुतली जो विधवाओं और अनाथों को चुपके से लूटते थे। एक दूसरे भद्रलोक, सजिल्द किताबें खरीदते थे और साहित्य-संरक्षक थे, एक मुस्टंडे शहरी दादा को ब्लैकमेल के पैसे देते थे। एक संपादक ने, जो पेटेन्ट दवाइयों के विज्ञापन छापते थे, मुझे बदमाश लफ्फाज कहा जब मैंने उनसे पेटेन्ट दवाइयों की असलियत छापने के लिए कहने का साहस दिखाया। एक और महोदय जो आदर्शवाद के सौन्दर्य और ईश्वर की नेकी के बारे में गंभीरता से दावे करते थे, ने हाल ही में अपने एक साथी के साथ व्यवसाय में विश्वासघात किया था। एक व्यक्ति जो चर्च का स्तम्भ था और विदेश जाने वाले मिशन के लिए खूब धन देता था अपनी मुलाजिम लड़कियों से थोड़ी सी भूख से मारने वाली मज़दूरी देकर दस-दस घण्टे काम करवाता था और इस तरह उन्हें सीधे वेश्यावृत्ति की ओर उन्मुख कर देता था। एक और महाशय जो यूनीवर्सिटी में पीठ स्थापना के लिए भारी दान देते थे, ऊंचे-ऊंचे गिरजाघर बनवाते थे, कोर्ट में पैसों के लिए छल करते थे। एक रेलों के निर्माता ने नागरिक, एक भद्रजन और एक ईसाई होने की नैतिकता ध्वस्त कर दी जब उसने चुपके से कमीशन दिया, कई-कई बार। एक सेनेटर एक अशिक्षित और जंगली मिल मालिक के हाथ में कठपुतली, एक गुलाम, था। ऐसे ही थे ये गवर्नर, सुप्रीम कोर्ट के जज और इन सबको रेल में सफर करने के लिए फ्री पास मिला हुआ था। और वह पूंजीपति मशीनों, मशीनों के बॉस और पास देने वाले रेल रोड—सबका मालिक था।'

'और इस तरह मैंने अपने को स्वर्ग नहीं व्यवसायवाद के सूखे रेगिस्तान में पाया। मुझे मिली व्यावसायिक क्षेत्र को छोड़कर उनके जीवन के हर क्षेत्र में मूर्खता। मुझे कोई साफ-सुथरा, भद्र और जीवन्त नहीं मिला—हां बहुतों में सड़ांध की जीवन्तता थी। जो मुझे मिला वह था विराट स्वार्थ और निर्ममता और भौंड़ी भूखी, व्यावहारिक और व्यवहृत भौतिकता।

अर्नेस्ट ने उन्हें उनके बारे में और अपने मोहभंग के बारे में बहुत कुछ बताया। बौद्धिक रूप से उन्होंने उसे बोर किया था, नैतिक और आत्मिक रूप से उसे बीमार कर दिया था और इस तरह वह अपने क्रांतिकारियों के पास वापस लौट गया था जो स्वच्छ, भद्र और जीवन्त और वह सब थे जो पूंजीवादी नहीं थे।

'अब मुझे उस क्रांति के बारे में आपको बताने दीजिए।' लेकिन पहली बात तो यह कि उसके भयानक कटाक्ष ने उन्हें तनिक भी नहीं छुआ था। मैंने चारों ओर देखा। सभी, उसने उनके बारे में जो कुछ कहा था, उस अनछुए श्रेष्ठ बने आत्मतुष्ट बैठे थे। और मुझे याद आया कि उसने मुझसे एक बार कहा था कि उनकी नैतिकता की कैसी भी आलोचना उन्हें हिला नहीं पाती। हां! उसकी भाषा के आवेग ने सुश्री ब्रेन्टवुड को प्रभावित किया था। वह घबड़ाई और चिन्तित लग रही थीं।

अर्नेस्ट ने क्रांति की सेना के वर्णन से शुरू किया। उसने उसकी शक्ति के आंकड़े

के ज्ञान, कम्पनियों को कानून से बचाने या उनके हित में नए कानून बनाने का सबंध है, मैं आपके पांव की धूल भी नहीं हूं। पर बात अगर मेरी विशेषज्ञता, समाजविज्ञान की हो तो आप मेरे पैर की धूल हैं। यही याद रखें कि आपके कानून का जौहर एक दिन का होता है। आपको ऐसी किसी चीज़ में महारत नहीं हासिल जिसका स्थायी महत्व हो। इसलिए आपका ऐतिहासिक और समाजविज्ञानी बातों पर कठमुल्लावादी ज़ोर और उद्धृत सामान्यीकरण दो कौड़ी के हैं।'

अर्नेस्ट ने क्षण भर रुककर वकील को गौर से देखा—उसका चेहरा स्याह हो रहा था, क्रोध से विकृत हो रहा था, सांस फूल रही थी, शरीर में ऐंठन हो रही थी और उसके नाजुक हाथों की मुट्ठी खुल बंद हो रही थी। ज़ाहिर है वह 'नर्वस' था।

'पर लगता है आपमें कूवत बाकी है, तो आपको एक और अवसर देता हूं। मैंने आपके वर्ग को कठघरे में खड़ा किया है। आप मुझे ग़लत साबित कर दीजिए। मैंने बताया कि आधुनिक व्यक्ति की हालत कितनी खराब है—अमरीका में तीस लाख बाल गुलाम हैं जिनके श्रम के बिना मुनाफा संभव नहीं और फिर डेढ़ करोड़ ऐसे लोग हैं जिन्हें न ठीक से खाना मयस्सर है, न वस्त्र, न मकान। मैंने बताया कि आज इन्सान की उत्पादन शक्ति गुहा मानव के मुकाबले हज़ार गुना ज्यादा है—सामाजिक संगठन और यंत्रों के कारण। इन दो तथ्यों से और कोई परिणाम निकलता नहीं सिवाय इसके कि पूंजीपति वर्ग ने दुर्व्यवस्था की है। यही मेरा आरोप था और मैंने खासतौर पर और विस्तार से इसका जवाब देने को कहा था। नहीं मैं तो इससे भी आगे गया था। मैंने भविष्यवाणी की थी कि आप इसका जवाब नहीं देंगे। अब यह आपके ऊपर है कि मुझे ग़लत साबित करें। आपने मेरे भाषण को झूठ कहा था। कर्नल साहब मेरे झूठ को साबित करें। उस आरोप को ग़लत साबित करें जिसे मैंने और मेरे डेढ़ लाख साथियों ने आप और आपके वर्ग पर लगाया है।'

कर्नल गिलबर्ट भूल ही गए कि वह अध्यक्षता कर रहे थे और शिष्टाचार के नाते उन्हें दूसरों को बोलने का अवसर देना चाहिए। वह उठ खड़े हुए, हाथ झुलाते, संयम और शब्दाडम्बर को दूर फेंकते। लगे अर्नेस्ट की जवानी और लफ्फाजी को गाली देने। मज़दूर वर्ग की अयोग्यता और निरर्थकता पर भयानक हमला करने लगे।

इस तूफान का अर्नेस्ट ने जवाब दिया :

'वकील होने के नाते आपको अपना दृष्टिकोण ठीक से रखना चाहिए था पर आप जैसा तो मैंने आदमी ही नहीं देखा। मैंने जो कहा उसका मेरी जवानी से क्या लेना देना? और मजदूरवर्ग की निरर्थकता का? मैंने आरोप लगाया था कि पूंजीपतिवर्ग ने दुर्व्यवस्था फैलाई है। इसका तो आपने जवाब नहीं दिया, कोशिश तक नहीं की। क्यों? क्योंकि आपके पास जवाब है ही नहीं। यहां के श्रोता वर्ग के आप चैम्पियन हैं। सभी, मेरे अलावा, आपकी ओर देख रहे हैं कि आप जवाब दें क्योंकि स्वयं उनके पास तो है नहीं। जहां तक मेरा सवाल है, मुझे पता है कि आप न केवल जवाब नहीं दे सकते आप

प्रस्तुत किए (विभिन्न देशों में डाले गए मतों की संख्या)। अब उपस्थित लोगों में भुनभुनाहट शुरू हुई। उनके चेहरों पर तनाव दिखा, होठ भिंचने लगे। अंत में जैसे टकराहट की घोषणा हो गई जब उसने बताया कि समाजवादियों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन में 15 लाख तो अमरीका में ही हैं, सारी दुनिया में तो दो करोड़ पैंतीस लाख हैं।

ढाई करोड़ की यह फौज शासकों और शासक वर्गों को सोचने पर मजबूर करेगी ही। इस फौज की घोषणा है—कम से नहीं काम चलने का, हमें आपका सब चाहिए। हमें उससे कम में सन्तोष नहीं होगा। हमें अपने हाथों सत्ता की लगाम और मानव की नियति चाहिए। ये रहे हमारे हाथ। वे मज़बूत हैं। हम आपकी सरकारें, आपके महल, आपका ऐशोआराम सब छीन लेंगे और तब तुम लोग भी अपनी रोटी के लिए इसी तरह मेहनत करोगे जैसे किसान खेत में या भूखा क्लर्क शहरों में। ये रहे हमारे हाथ मजबूत हाथ।' ऐसा कहते हुए उसने अपने दोनों मजबूत बाजू फैला दिए, लोहार के हाथों ने हवा को ऐसे पकड़ रखा था जैसे बाज़ के पंखों को। वह जागृत श्रमिक की तरह खड़ा था और हाथ ऐसे फैले थे मानो श्रोताओं को मसल डालेंगे।

मैं देख रही थी कि श्रोतागण कैसे क्रांति की इस ठोस, संभावना संपन्न और आक्रामक छवि के सामने सिकुड़ते से जा रहे थे। यह हाल औरतों का ज्यादा था, मर्दों का नहीं। चेहरे पर डर फैल रहा था। वे लोग सक्रिय धनिक थे, जुझारू आलसी नहीं। एक हल्की आवाज़ हवा में उठी, थमी और फिर रुक गई। यह गुर्राहट की पूर्व सूचना थी जिसे उस रात मैं कई बार सुनने वाली थी—मनुष्य में विद्यमान आदिम आवेग और बर्बरता की सूचक गुर्राहट। उन्हें पता भी नहीं था कि उनके गलों से ऐसी आवाज़ निकली है। यह एक झुंड की गुर्राहट थी जो उनके अचेतन से निकली थी। उसी क्षण उनकी आंखों में लड़ने की जो चमक मैंने देखी मैं जान गई थी कि वे अपना मालिकाना हक आसानी से नहीं छोड़ने वाले।

अर्नेस्ट ने आक्रमण जारी रखा। उसने बताया कि अमरीका में 15 लाख क्रांतिकारी इसलिए हैं क्योंकि पूंजीपति वर्ग ने समाज में दुर्व्यवस्था पैदा कर दी है। उसने गुफामानव और आज के असभ्य लोगों की आर्थिक स्थिति का चित्र खींचा और बताया कि उनके पास न मशीनें हैं न उपकरण, सिवाय शक्ति के उत्पादन में लगे लोगों की नैसर्गिक क्षमता के। फिर उसने यंत्र और तंत्र के विकास की बात बताई जिससे सभ्य मानव की उत्पादन क्षमता पहले के असभ्य के मुकाबले हज़ारों गुना बढ़ गई है।

'पांच व्यक्ति हजारों के लिए रोटी पैदा कर सकते हैं। एक व्यक्ति ढाई सौ के लिए सूती और तीन सौ के लिए रेशमी कपड़े तथा हज़ार के लिए जूते तैयार कर सकता है। इससे यह नतीजा निकाला जा सकता है कि समाज की एक सक्षम व्यवस्था से आधुनिक सभ्य मानव, गुफा मानव की अपेक्षा बहुत बेहतर स्थिति में होगा। पर क्या ऐसा है? आइए देखें। अमरीका में आज डेढ़ करोड़ लोग गरीब हैं—ग़रीबी से मतलब है कि उपयुक्त भोजन-छाजन के अभाव में काम के लायक क्षमता नहीं अर्जित की जा

सकते। आप ऐसा केवल अपने मज़दूरों से कर सकते हैं क्योंकि उनकी रोज़ी-रोटी,उनकी जिन्दगी आपके हाथों में है।'

'जहां तक प्रकृति की अवस्था की ओर लौटने की बात है जिसे आपने मेरी पैदाइश के पहले पढ़ा था, मुझे कहने दीजिए कि लगता है उसके बाद आपने कुछ नहीं पढ़ा। समाजवाद का प्रकृति की अवस्था से उसी तरह कुछ नहीं लेना-देना जैसे कैलकुलस का बाइबिल शिक्षा से। मैंने आपके वर्ग को मूर्ख कहा था—व्यवसाय के घेरे के बाहर, आपने मेरे वक्तव्य को सही प्रमाणित कर दिया है।'

अपने लाख टकिए वकील का ऐसा भयानक अपमान मेज़बान ब्रेंट के लिए असह्य था। उन पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया। वह एक साथ हंसने-रोने लगीं। उन्हें वहां से बाहर ले जाया गया। यह एक तरह से ठीक ही हुआ क्योंकि उसके बाद तो और बुरा हुआ।

थोड़ी शांति हुई तो अर्नेस्ट ने फिर कहना शुरू कर दिया :

'मेरी बात न मानिए। स्वयं आपके अधिकारी आपको मूर्ख करार देंगे। आपके अपने ज़रखरीद विद्वान आपको गलत साबित कर देंगे। किसी छोटे-से छोटे समाजशास्त्र के डीलर से रूसो के प्राकृतिक अवस्था के सिद्धांत और समाजवाद के सिद्धांत के बीच के अन्तर के बारे में पूछिए। वह बता देगा। अपने किसी महान अंकशास्त्री और समाजशास्त्री से पूछिए। कहीं भी, किसी भी पुस्तकालय में सजी इन विषयों की किसी भी किताब से पूछें। सभी जवाब देंगे कि इन दोनों में कोई संगति नहीं है। दूसरी ओर, सबका जवाब होगा कि प्राकृतिक अवस्था और समाजवाद दो ध्रुवों पर खड़े हैं। और फिर कह रहा हूं, मेरी बात न मानिए। आपकी मूर्खता आपकी ही किताबों में, जिन्हें आप कभी नहीं पढ़ते, दर्ज है। जहां तक मूर्खता का प्रश्न है आपने अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व किया है।'

'आपको कानून और व्यवसाय आता है कर्नल। आपको कार्पोरेशनों की सेवा करना और कानून को तोड़-मरोड़कर उनका मुनाफ़ा बढ़ाना आता है। बहुत खूब! करते रहिए यही। खूब नाम-धाम कमाया है। बहुत अच्छे वकील हैं आप, पर आप बहुत खराब इतिहासकार हैं। आपको समाजविज्ञान बिलकुल नहीं आता और आपको जीवविज्ञान तो उतना ही आता है जितना प्राचीनकाल के यूनानियों को।

कर्नल अपनी कुर्सी में मथनी हो रहे थे। कमरे में भरपूर खामोशी थी। सभी चमत्कृत, मैं तो कहूंगी पंगु हुए बैठे थे। महान् कर्नल के प्रति ऐसे भयानक वक्तव्य के बारे में न किसी ने सुना था, न सपने में भी सोच सकता था—अविश्वसनीय। वही गिलबर्ट जिसकी कोर्ट में खड़ा होते ही जज कांपने लगते थे, पर अर्नेस्ट तो अपने शत्रुओं के प्रति एकदम निर्मम था। उसने कहा :

'इसे अपने पर छींटाकशी न समझें—सभी को उसका पेशा मुबारक! आप अपने पेशे की हद में रहें और मैं अपने। आपने विशेष योग्यता अर्जित की है, जहां तक कानून

सकती। अमरीका में आपके तमाम तथाकथित श्रम कानूनों के बावजूद तीस लाख बाल श्रमिक है। बारह वर्षों में उनकी संख्या दुगुनी हो गई है। लगे हाथ मैं समाज व्यवस्थापकों के सामने यह प्रश्न भी खड़ा करूंगा कि उन्होंने 1910 की जनसंख्या रपट प्रकाशित क्यों नहीं की। जवाब ज़ाहिर है—वे डर गए हैं। निर्धनता के आंकड़े उमड़-घुमड़ रही क्रांति को बरसा देते हैं।'

'मैं अपनी भर्त्सना की ओर लौटता हूं। अगर पहले से हज़ार गुना ज्यादा है उत्पादक शक्ति तो फिर अमरीका में 15 लाख लोगों को ठीक से भोजन-छाजन क्यों नहीं मिलता। क्यों यहां तीस लाख बाल श्रमिक हैं? यह सच्ची भर्त्सना है। पूंजीपति वर्ग ने व्यवस्था ठीक से नहीं चलाई। इस तथ्य से कि आज लोगों की हालत गुफा मानव से भी बदतर है और उत्पादक शक्ति हज़ार गुना ज्यादा है, केवल यही नतीजा निकाला जा सकता है कि भारी दुर्व्यवस्था है—आप मालिकों ने आपराधिक और स्वार्थपूर्ण भारी दुर्व्यवस्था की है और उसका जवाब आप मुझे नहीं दे सकते। इसी तरह अमरीका में आपके वर्ग के लोग 15 लाख क्रांतिकारियों को जवाब नहीं दे सकते। आप जवाब नहीं दे सकते—मैं आपको चुनौती देता हूं। मैं यह भी कहने का साहस कर रहा हूं कि मेरे वक्तव्य की समाप्ति के बाद भी आप जवाब नहीं देंगे। दूसरी बातों के लिए आप लफ्फाजी कर सकते हैं पर इस मुद्दे पर आपकी जुबान नहीं खुल सकती।'

'आप अपनी व्यवस्था में असफल रहे हैं। आप अच्छे और लालची रहे हैं। आप बेशर्मी से उठ कर, जैसे आज, कहते रहे हैं कि बिना बच्चों के श्रम किए मुनाफा असंभव है। मेरी बात न मानें—यह सब दस्तावेजों में दर्ज है, आपके खिलाफ। आपने मधुर आदर्शों और प्यारी नैतिकता की बात कर अपनी अन्तरात्मा को सुला दिया है। आप सत्ता और सम्पत्ति से फूल गए हैं, सफलता ने मदहोश कर दिया है। आपके हमारे विरुद्ध बचने की तनिक भी आशा नहीं, वैसे ही जैसे शहद के छत्तों पर बैठे मुटल्ले पतंगे श्रमिक मधुमक्खियों के आक्रमण से नहीं बचते। आप समाज की व्यवस्था में असफल रहे हैं और अब व्यवस्था आप से ले ली जाएगी। अमरीका के पन्द्रह लाख मेहनतकशों के साथ मिलकर दुनिया का मजदूर वर्ग व्यवस्था आप से छीन लेगा। यही है क्रांति, हमारे मालिको! इसे रोक सको तो रोक लो।'

थोड़ी देर तक अर्नेस्ट की आवाज उस बड़े रूम में गूंजती रही। फिर मुझे वही गुर्राहट सुनाई पड़ी जिसका पूर्वाभास हो चुका था। दर्जनों आदमी खड़े होकर अध्यक्ष का ध्यान आकर्षित करने लगे। सुश्री बेन्टवुड के कंधे जोर-जोर से उचक रहे थे। मैंने सोचा वह अर्नेस्ट पर हंस रही हैं और मुझे गुस्सा आया। पर फौरन समझ में आया कि वह हंसी नहीं, हिस्टीरिया थी। इस आग के गोले को सम्मानित फिलोमथ क्लब में लाने की बात से वह आतंकित थीं।

कर्नल ने क्षोभ के आवेग से तमतमाए हज़ारों चेहरों की ओर ध्यान नहीं दिया। उसका अपना चेहरा लाल हो रहा था। वह उछल कर खड़ा हो गया और हाथ हिलाने

लगा। कुछ पल के लिए उसके मुंह से अस्फुट ध्वनियां ही निकल पाईं। फिर तो धारा फूटी—पर यह एक लाख डालर फीस वाले वकील का भाषण नहीं था, न ही मुहावरे पुराने थे।

'झूठ पर झूठ। जीवन में कभी एक घन्टे के अन्दर इतना असत्य नहीं सुना। इसके अलावा नौजवान! यह भी बता दूं कि तुमने कुछ भी नया नहीं कहा। मैंने यह सब तुम्हारे जन्म से पहले कालेज में पढ़ लिया था। जां जाक रूसो ने तुम्हारे समाजवादी सिद्धांत की स्थापना दो सौ साल पहले कर दी थी—ज़मीन की ओर लौटने की बात! पलटना! जन्तु विज्ञान इसे बकवास कहता है। ठीक ही कहा गया है 'नीम हकीम खतरे जान' और तुमने अपने पागलपन से इसे आज प्रमाणित कर दिया है। झूठ पर झूठ। मुझे झूठ के अतिरेक से कभी इतनी उबकाई नहीं आई थी। तुम्हारे अपरिपक्व सामान्यीकरण और बचकाने तर्कों के बारे में क्या कहूं।'

उसने तिरस्कारपूर्वक अपनी उंगलियों से अपनी भंगिमा बताई और बैठने लगा। महिलाओं के होंठों की भंगिमाओं से कर्नल का समर्थन अभिव्यक्त हुआ। पुरुषों के गलों से कुछ आवाजें भी निकलीं इसी काम के लिए। जो दर्जन भर पुरुष बोलने के लिए खड़े हुए थे उनमें से आधे एक साथ बोलने भी लगे। जो मछली बाज़ार जैसी स्थिति बनी उसका वर्णन असंभव है। सुश्री पर्टनबैथ की दीवारों ने ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा होगा। यही थे उद्योग के संचालक और समाज के मालिक—शानदार कपड़ों में गुर्राते, फुफकारते जंगली। अर्नेस्ट ने दरअसल उन्हें झकझोर दिया था, जब उसने हाथ बढ़ाया था मानो उनकी थैलियां छीन लेगा। वे हाथ उन्हें 15 लाख अमरीका क्रांतिवादियों के लगे थे।

परन्तु अर्नेस्ट ने ऐसी हालत में भी अपना संतुलन नहीं खोया था। वह कर्नल के बैठ पाने के पहले ही उछल कर खड़ा हो गया था।

'एक-एक करके।' वह चिग्घाड़ा।

आवाज उसके भारी फेफड़ों से निकली थी और उस आंधी पर लगाम लग गई—व्यक्तित्व की शक्ति से उसने लोगों पर शांति मानो थोप दी।

'एक-एक करके।' अब उसने नर्मी से कहा, 'मुझे कर्नल गिलबर्ट का जवाब देने दें। उसके बाद बाकी लोग मुझ पर टूट पड़ें—पर याद रहे एक-एक करके। कोई जमघट नहीं—यह फुटबाल का मैदान नहीं है।'

वह कर्नल की ओर मुड़ कर बोला :

'जहां तक आपका सवाल है आपने मेरी किसी बात का जवाब नहीं दिया। आपने बस मेरी मानसिक क्षमता पर कुछ आवेगपूर्ण और घिसी-पिटी टिप्पणियां की हैं। वह सब आप अपने पेशे में इस्तेमाल कर सकते हैं पर मुझसे इस तरह नहीं बोल सकते। मैं आपसे मज़दूरी बढ़ाने या मशीन से बचाने की विनती करता हाथ में रोजी थामे आपका कोई मज़दूर नहीं। मुझसे बात करते वक्त आप सच्चाई को लेकर कठमुल्ला नहीं हो

कानून पास किया और दोनों बार सुप्रीम कोर्ट ने उसे असंवैधानिक करार दिया। न्यायालय तो है ही ट्रस्टों के हाथ में। हम लोग जनता, जनता न्यायाधीशों को पर्याप्त नहीं देती। लेकिन एक दिन ऐसा आएगा—

'जब ट्रस्टों का संयोजन जारी व्यवस्थापिकाओं को नियंत्रित करेगा, जब ट्रस्टों का संयोजन स्वयं सरकार बन जाएगा।' अर्नेस्ट ने हस्तक्षेप कर दिया।

'कभी नहीं! कभी नहीं!' आवाज़ उठी। सभी आक्रामक मूड में आ गए।

'तो बताइए! क्या करेंगे आप अगर ऐसा समय आता है?

'हम अपनी सारी ताक़त लगाकर उठ खड़े होंगे।' मिस्टर ऐसमुनसेन चिल्लाए और दूसरों ने हामी भरी।

'गृह युद्ध शुरू हो जाएगा।' अर्नेस्ट बोला।

'तो हो जाए। हम अपने पूर्वजों के कृत्यों को भूले नहीं हैं। अपनी आज़ादी के लिए हम लड़ेंगे और मरेंगे।'

ऐसमुनसेन के जवाब में मेज़ के चारों ओर बैठे सभी लोगों की आवाज़ शामिल थी।

अर्नेस्ट मुस्कराया। बोला : 'भूलिए मत कि हम सहमत हुए थे कि आपके सन्दर्भ में आज़ादी का मतलब है दूसरों से मुनाफ़ा निचोड़ने की आज़ादी।'

सारे लोग नाराज़ हो गए, लड़ाई पर उतारू। पर अर्नेस्ट ने उन्हें नियंत्रित किया और उसकी बात सुनी जा सकी:

'एक और सवाल। जब आप सारी शक्ति लगा कर उठ खड़े होंगे तो आपके विद्रोह का कारण यह होगा कि सरकार ट्रस्टों के कब्जे में है। इसलिए सरकार अपनी ताकत के विरुद्ध सेना को झोंक देगी—आर्मी, नौसेना, मिलिशिया पुलिस-संक्षेप में युनाइटेड स्टेट्स की सारी संगठित सैन्य शक्ति। तब आपकी ताकत का क्या होगा?'

उनके चेहरों पर हताशा छा गई।

इसके पहले कि वे उबरते अर्नेस्ट ने फिर प्रहार किया: 'आपको याद है अभी कुछ दिन पहले तक हमारी सेना कुल पचास हज़ार थी? हर साल वह बढ़ती गई और आज तीन लाख है।'

प्रहार जारी रहा :

'यह भी सब कुछ नहीं है। आप अपने प्रिय फैन्टम मुनाफा की सेवा में लगे रहे और अपने प्रिय वस्तुपूजा प्रतियोगिता के गुण गाते रहे उनके संयोजन ने और खतरनाक चीज़ें विकसित कर लीं जैसे मिलिशिया।'

'हमारी भी ताकत है, हम फौज के आक्रमण से लोहा लेंगे।' कोवाल्ट चिल्लाए।

'आप खुद मिलिशिया में भर्ती हो जाएंगे और मैन, फ्लोरिडा या फिलिपीन्स भेज दिए जाएंगे अपनी आज़ादी के लिए गृह युद्ध करने वाले साथियों का खून बहाने। और केंनसस, विस्कानसिन या किन्हीं और राज्यों से भर्ती होकर लोग यहां कैलीफोर्निया

वे ही रूपहीन बातें हैं, जिन्हें मैं महसूस कर रहा हूं। वह उन परिवर्तनों की अतिचेतना के प्रभाव में बोल रहा था।'

'तुम्हारा मतलब है....।' पापा बोलते-बोलते रुक गए।

'मेरा मतलब है कि कुछ विराट और खतरनाक होने वाला है धरती पर। आप चाहें तो धनतंत्र की छाया कह सकते हैं। मेरा निकटतम अनुमान यहीं तक पहुंचता है। वह कैसा होगा इसकी कल्पना करने से इन्कार करता हूं। (धन शक्ति अपने को बनाए रखने के लिए लोगों के पूर्वाग्रहों का इस्तेमाल करेगी जब तक धन कुछ लोगों की ही मुट्ठियों में सिमट नहीं जाता और गणतंत्र ध्वस्त नहीं हो जाता।'—अब्राहन लिंकन ने अपनी हत्या के कुछ ही दिन पहले यह लिखा था।)। मैं कहना यह चाहता था कि आप खतरनाक स्थिति में घिर गए हैं—ऐसा खतरा जिसे मेरा डर बढ़ा दे रहा है क्योंकि मैं उसका अनुमान नहीं लगा पा रहा हूं। मेरी राय मानिए और छुट्टी ले लीजिए।'

'पर यह तो कायरता होगी।' पिताजी ने विरोध किया।

'एकदम सही। आप बुजुर्ग हैं। आपने काफी काम कर लिया—महान् कार्य भी। आज की लड़ाई को जवानों और शक्ति पर छोड़िए। हम नौजवानों को अभी अपना काम करना है। एविस हमारे साथ खड़ी है। मोर्चे पर वह आपका प्रतिनिधित्व करेगी।'

पापा ने एतराज़ किया : 'वे मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकते। खुदा का शुक्र है कि मैं आज़ाद हूं। मैं जानता हूं, यकीन करो मेरा कि ये किसी ऐसे प्रोफ़ेसर को कितना भयानक नुकसान पहुंचा सकते हैं जो यूनिवर्सिटी पर आर्थिक रूप से निर्भर हो। मैं तनख्वाह के लिए प्रोफ़ेसर नहीं हूं। मैं अपनी आमदनी से अच्छी तरह गुज़ारा कर सकता हूं। ज्यादा वे मेरी तनख्वाह बंद कर सकते हैं।'

'पर आप समझ नहीं रहे हैं कि अगर मेरा डर सच निकला तो वे आपकी व्यक्तिगत आमदनी, आपका मूल भी, उसी आसानी से ले सकते हैं जैसे आपकी तनख्वाह।'

पापा कुछ पल खामोश रहे। वह गहराई से सोच रहे थे। उनके चेहरे पर निर्णय की लकीरें उभर रही थीं। अंत में वह बोले : 'मैं छुट्टी पर नहीं जाऊंगा। मैं अपना काम जारी रखूंगा। तुम ग़लत हो सकते हो। बहरहाल तुम सही हो या ग़लत, मैं अपने मोर्चे पर डटा रहूंगा।'

'तो ठीक है। आप उसी रास्ते पर चल रहे हैं जिस पर बिशप मोरहाउस, और उसी ध्वंस की ओर। जल्दी ही आपका सर्वहाराकरण हो जाएगा।'

बात बिशप की ओर मुड़ गई और अर्नेस्ट ने बताया कि वह उनके साथ क्या कर रहा था :

'नर्क की जो यात्रा मैंने करवाई है उसके बाद उनकी आत्मा तक बीमार हो गई है। मैं उन्हें कुछ मज़दूरों के घर ले गया। मैंने औद्योगिक तंत्र द्वारा हाशिए पर फेंक दिए गए कुछ मानवीय उच्छिष्टों को दिखाया। उन्होंने उनकी कहानी सुनी। मैं उन्हें सानफ्रांसिस्को

की झुग्गियो में ले गया। पियक्कड़ों, वेश्याओं, अपराधियों के बीच उन्होंने वह सीखा जो महज़ गरीबों के बीच नहीं जाना था। वह बेहद बीमार हो गए हैं। उससे भी बुरी बात यह कि वह नियंत्रण के बाहर हो गए हैं। वह अति नैतिक हैं—सब कुछ उन्हें बेहद छू गया है। और अव्यावहारिक तो है ही। वह हवा में उड़ रहे हैं अपने नैतिक भ्रमों और सभ्य लोगों के बीच काम की योजनाओं के साथ। वह महसूस कर रहे हैं कि यह उनका परम कर्त्तव्य है कि चर्च की प्राचीन आत्मा का पुनरुद्धार करें और उसका सन्देश मालिकों तक पहुंचाएं। वह अति आवेग की स्थिति में हैं। देर-सबेर वह टूटेंगे और तब होगा दमन। उसका रूप कैसा होगा मेरे लिए अनुमान लगाना भी मुश्किल है। वह एक पवित्र-उदात्त आत्मा हैं पर कितने अव्यावहारिक हैं। वह मेरे वश के बाहर हैं। मैं उनके पांव धरती से जोड़े रखने में असमर्थ हूं। वह हवा में उड़ रहे हैं। अब सलीब पर चढ़ने ही वाले हैं। ऐसी ऊंची आत्माओं का यही हश्र होता है।'

'और तुम', मैंने पूछा। वैसे मैं मुस्करा रही थी पर उसके पीछे प्रेम-जन्य चिंता की गंभीरता भी थी। उसने हंस कर कहा :

'नहीं, मैं नहीं। मुझे फांसी हो सकती है, या हत्या; पर मुझे सलीब पर कभी नहीं चढ़ाया जाएगा। मेरी जड़ें धरती में दूर तक और मजबूती से धंसी हैं।'

'पर तुम्हें बिशप को वहां तक पहुंचाने की ज़रूरत थी? तुम इससे तो इन्कार नहीं करोगे कि इसके लिए ज़िम्मेदार तुम्हीं हो?'

'जब लाखों लोग कठिनाइयों और मुसीबतों में हों तो एक को आराम करने के लिए क्यों छोड़ा जाए?'

'फिर तुमने पापा को छुट्टी पर चले जाने की राय क्यों दी?'

'क्योंकि मैं एक शुद्ध और उदात्त आत्मा नहीं हूं। क्योंकि मैं स्वार्थी, ठोस और धीर व्यक्ति हूं, क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूं और 'रूथ' की तरह कह सकता हूं 'तेरे लोग मेरे लोग'। और जहां तक बिशप का सवाल है उसके कोई बेटी तो है नहीं। इसके अलावा चाहे जितना छोटा सही, लाभ तो होगा ही। उनका विलाप क्रांति को कुछ तो लाभ पहुंचाएगा ही, और उसके लिए छोटी-से-छोटी बात का महत्त्व है।

मैं अर्नेस्ट से सहमत नहीं हो पाई। मैं बिशप की भद्र प्रकृति से परिचित थी। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि उनकी न्याय के पक्ष में उठी आवाज़ एक छोटे विलाप जैसी ही रह जाएगी। पर अभी तक जीवन की कटु वास्तविकताओं की जानकारी मुझे वैसी नहीं थी, जैसी अर्नेस्ट की। वह बिशप के प्रयासों की निरर्थकता को साफ-साफ देख पा रहा था। आने वाले दिनों में यह मेरे सामने भी स्पष्ट हो गया।

कुछ दिन बाद ही अर्नेस्ट ने एक कहानी की तरह मुझे बताया कि उसे सरकार की ओर से एक प्रस्ताव मिला है—अमरीका के लेबर कमिश्नर का पद। मैं तो खुशी से फूली नहीं समायी। तनख्वाह ऊंची थी और हमारा विवाह सुरक्षित हो जाता। अर्नेस्ट के लिए नौकरी सर्वथा अनुकूल थी। और फिर उसके प्रति मेरे ईर्ष्यालु मन के कारण मैंने

'तो क्या यह सच नहीं है कि संयोजन जिसे हम ट्रस्ट कह रहे हैं हजारों प्रतिस्पर्धी कम्पनियों से बेहतर और सस्ता उत्पादन करता है?'

फिर किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया।

'तो क्या यह अतर्कसंगत नहीं होगा कि हम सस्ते और सक्षम संयोजन को नष्ट करें?'

थोड़ी देर तक कोई नहीं बोला। फिर कोवाल्ट ने जुबान खोली : 'तो हम करें क्या? हमें तो ट्रस्टों का विनाश ही उनकी प्रभुता से बचने का एकमात्र रास्ता सूझ रहा है।'

अर्नेस्ट तत्काल चेतना और आवेग से भर गया। वह चीखा :

'मैं बताता हूं दूसरा रास्ता। हमें उन आश्चर्यजनक मशीनों को नष्ट नहीं करना चाहिए। हमें उन्हें नियंत्रित करना चाहिए। हमें उनकी क्षमता और सस्ती उत्पादकता का लाभ उठाना चाहिए। हमें उन्हें अपने हक़ में चलाना चाहिए। हमें उनके मालिकों को हटाकर स्वयं उन्हें चलाना चाहिए। महानुभाव! परविकसित किसी भी संयोजन से बेहतर है आर्थिक-सामाजिक संयोजन। यह विकास के क्रम में है। हम संयोजन का मुकाबला बेहतर संयोजन से करेंगे। यह विजय का पक्ष है। हम समाजवादियों की ओर आ जाएं और विजय के पक्ष में खड़े हों।'

इस पर असहमति फूटी। सिरों ने नकारा। भुनभुनाहट शुरू हो गयी।

अर्नेस्ट ने हंस कर पूछा : 'तो फिर आप इतिहास विरोधी होना बेहतर समझते हैं? आप पुरानी लकीर पीटते रहना बेहतर समझते हैं। ऐसे तमाम लोगों की तरह आपका अंत सुनिश्चित है। कभी आपने जानने की कोशिश की है कि जब आज के ट्रस्टों से भी बड़े संयोजन पैदा हो जाएंगे तब आप क्या करेंगे? कभी सोचा है कि अगर आज के ट्रस्टों ने अपने बीच संयोजन कर लिया—संयोजनों का संयोजन-सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक ट्रस्ट बना लिया तो आपका क्या होगा?'

वह अचानक और बिना प्रसंग के काल्विन की ओर मुखातिब हो गया :

'बताइएगा अगर यह सच न हो। आप नई पार्टी बनाने पर मजबूर हो गए क्योंकि पुरानी पार्टियां ट्रस्टों की हो गई हैं। आपके प्रचार का मुख्य मुद्दा ट्रस्ट है। आपके मार्ग में जितने भी व्यवधान हैं, आप पर जितने भी प्रहार होते हैं, आपकी हर हार के पीछे किसी न किसी ट्रस्ट का हाथ होता है। ऐसा है कि नहीं? बताइए न?'

काल्विन परेशान हो गए, पर चुप रहे।

'बताइए। प्लीज़।'

काल्विन ने कबूल किया : 'यह सच है। हमने ओरेगॉन की व्यवस्थापिका में बहुमत प्राप्त किया और शानदार रक्षात्मक कानून बनाए। पर गवर्नर ने वीटो कर दिया। ज़ाहिर है वह ट्रस्टों का आदमी था। कोलोराडो में हमने अपना गवर्नर चुना तो व्यवस्थापिका ने उसे पदग्रहण नहीं करने दिया। दो बार हमने नेशनल इनकम टैक्स का

एकदम नहीं जानते। आप आर्थिक विकास के संक्रमण काल में हैं पर इसे आप नहीं समझते। उसी से सारा विभ्रम पैदा हो रहा है। आप क्यों नहीं लौट सकते? क्योंकि आप लौट ही नहीं सकते। आप आर्थिक विकास के ज्वार को लौटा नहीं सकते जैसे नदी की धारा को उलट नहीं सकते। कहते हैं जोशुआ ने सूरज को रोक दिया था। आप तो उसे पीछे लौटाना चाहते हैं। आप समय को दोपहर से सुबह की ओर ले जाना चाहते हैं।

'श्रम बचाने वाली मशीनों और संगठित उत्पादन, बेहतर योग्यता के संयोजन के रूबरू आप वक्त को कई पीढ़ियों पीछे ले जाना चाहते हैं—जब न बड़े पूंजीपति थे, न बड़ी मशीनें, न रेलें-जब छोटे-छोटे पूंजीपति आर्थिक अराजकता में आपस में लड़ते-झगड़ते थे, जब उत्पादन पिछड़ा हुआ था, बहुत कुछ बेकार जाता था, संगठन का अभाव था और उत्पादन मंहगा था। जब जोशुआ ने सूरज को रोका था तो वह काम आसान था क्योंकि उसकी मदद देवताओं ने भी की थी। पर खुदा ने छोटे पूंजीपतियों का साथ छोड़ दिया है। उनका सूरज अस्त हो रहा है, अब वह कभी नहीं उगेगा। उसे रोकने की क्षमता आप में है नहीं। आप नष्ट हो रहे हैं और समाज से विलुप्त हो जाना आपकी नियति है।

'यही आदेश है विकास का। यह है दैवी निर्णय। संयोजन प्रतिस्पर्धा से अधिक शक्तिशाली है। आदिम मानव एक तुच्छ प्राणी था गुफाओं में छिपता हुआ। वह अपने मांसभक्षी शत्रुओं से लड़ता था। वे प्रतिस्पर्धी जानवरों के दिन थे। आदिम मानव संयोजक जानवर था। इसीलिए अन्य जानवरों पर उसकी क्षमता-प्रभुता स्थापित हो पाई। तब से मानव लगातार बृहत्तर संयोजन करता जा रहा है। यह प्रतिस्पर्धा और संयोजन के बीच हज़ारों साल से चल रहा युद्ध है जिसमें प्रतिस्पर्धा की हार होती गई है। जो उसकी ओर खड़ा होता है हारता ही है।'

'लेकिन ट्रस्ट तो स्वयं प्रतिस्पर्धा के बीच से ही जन्मे हैं।' काल्विन ने हस्तक्षेप किया।

'एकदम सही बात है,' अर्नेस्ट ने जवाब दिया, 'और ट्रस्टों ने स्वयं प्रतिस्पर्धा का अंत कर दिया। तभी तो आपने खुद कहा कि आप डेयरी व्यवसाय में नहीं टिक सके।'

उस शाम की पहली हंसी फूटी और अपने ही विरुद्ध वह भी हंसी में शामिल हो गए। अर्नेस्ट ने कहा: 'अभी हम ट्रस्ट के मुद्दे पर हैं तो कुछ बातें साफ कर ली जाएं। मैं कुछ बातें बोलूंगा। असहमति हो तो टोकें। नहीं बोलना सहमति सूचक होगा। क्या यह सच नहीं है कि मशीन हथकरघे की अपेक्षा ज्यादा और सस्ता कपड़ा बुनेगी?'

वह रुका पर कोई बोला नहीं।

'क्या यह बेहद अतर्कसंगत नहीं होगा कि मशीनों को तोड़कर हम पहले वाली मंहगी और भद्दी पद्धति अपनाएं?'

स्वीकृति में सिर हिले।

इस पेशकश को उसकी क्षमता के सम्मान के रूप में लिया।

फिर मैंने देखा कि उसकी आंखों में चमक आई और वह मुस्कुराने लगा।

'तुम इसे अस्वीकार..... तो नहीं कर रहे?'

'अरे यह घूस है घूस। इसके पीछे विक्सन का और उसके भी पीछे और बड़े लोगों का हाथ है। यह एक पुरानी चाल है उतनी ही पुरानी जितना वर्ग-संघर्ष-श्रम की फौज से कप्तानों को चुरा लेने की चाल। बेचारे छले जाते मज़दूर। काश तुम जानतीं कि उनके कितने नेता इसी तरह अतीत में खरीदे जाते रहे हैं। एक सेनापति को खरीद लेना उससे और उसकी फौज से लड़ने से बहुत सस्ता, बहुत ही सस्ता होता है। मैं बिक नहीं सकता अगर और किसी कारण से नहीं तो बस अपने पिता की स्मृतियों के कारण—जिस तरह उन्हें खटा-खटा कर मारा गया, वही मुझे स्वीकारने से रोकेगा।'

मेरे इस शक्तिशाली नायक की आंखें भर आईं। उसका पिता कैसे अपने बच्चों का पेट भरने के लिए छोटी-छोटी चोरियां तक करने और झूठ बोलने को मज़बूर हुआ था—इसे वह कभी भूल नहीं पाता था। एक बार उसने कहा था :

'मेरा पिता एक अच्छा आदमी था। उसकी आत्मा भली थी। पर जीवन की बर्बरता ने उसे तोड़-मरोड़ कर कुचल डाला था। जंगली मालिकों ने उन्हें जानवर बना के छोड़ दिया था। उन्हें, तुम्हारे पापा की तरह, अभी जिन्दा होना चाहिए था। मजबूत थी उनकी काठी। पर वह मशीन में फंस गए और मुनाफे के लिए खटा-खटा कर मार दिए गए। जंगली परजीवी धनिकों, मालिकों की दावत, या वस्त्राभूषण या ऐशोआराम के लिए उनके खून का इस्तेमाल किया गया।'

बिशप का विज़न

अर्नेस्ट ने मुझे लिखा : 'बिशप मेरे हाथ से निकल गया है। वह आसमान में उड़ रहा है। आज रात वह हमारी इस दुखियारी दुनिया को ठीक करने का अभियान शुरू कर रहे हैं। वह अपना संदेश देंगे आज। मुझे उन्होंने बताया है और मैं उन्हें रोक नहीं पाया। आज वह एक सभा को संबोधित करेंगे और भूमिका में अपना संदेश शामिल करेंगे।'

'तुम चलोगी?' निश्चित ही सब बेकार जाएगा, यह पूर्व-निश्चित है। उनका तो दिल टूट ही जाएगा, तुम्हारा भी टूटेगा। पर तुम्हारे लिए एक सबक होगा। तुम जानती हो जानेमन कि मैं कितना सम्मानित महसूस करता हूं क्योंकि तुम मुझसे प्यार करती हो। इसी वजह से चाहता हूं तुम मेरी पूरी वकत जान जाओ। मैं अपनी तुम्हारे मुकाबले अयोग्यता की थोड़ी भरपाई कर लेना चाहता हूं। मैं अपने मान के लिए चाहता हूं कि तुम जानो कि मेरी सोच सही है। मेरा दृष्टिकोण कठोर है। ऐसे नेक बिशप की निरर्थकता तुम्हें बता सकेगी, ऐसी कठोरता का कारण। इसलिए आज रात आ ही

जाओ। हालांकि आज रात की घटनाएं उदासी पैदा करेंगी, पर मैं सोचता हूं वे तुम्हें मेरे और करीब ले आएंगी।'

सभा उस रात सानफ्रांसिस्को में थी। सभा में सार्वजनिक अनैतिकता और उससे उबरने के उपाय पर बात होनी थी। बिशप ने अध्यक्षता की। जब वह मंच पर बैठे तो उनका टेंशन साफ दिख रहा था। यूनिवर्सिटी के नैतिकता विभाग के अध्यक्ष, एच. एस. जोन्स, मशहूर दान अयोजक डब्ल्यू० डब्ल्यू० हर्ड, परोपकारी फिलिप वार्ड और इसी तरह के दूसरे थोड़े कम प्रसिद्ध लोग।

बिशप मोरहाउस उठे और अचानक बोलने लगे : 'मैं अपनी टमटम में सड़कों से गुज़र रहा था। रात थी। खिड़की से मैं इधर-उधर देख रहा था। अचानक लगा आंखें खुल गई हैं। चीज़ें वैसी ही दिखाई दे रही हैं जैसी वास्तव में हैं। पहले तो मैंने आंखें ढँक लीं हाथों से, ताकि उस भयानकता को देखने से बच सकूं, पर अंधेरे में प्रश्न कौंधा : क्या किया जाय? क्या किया जाय? थोड़ी देर में प्रश्न दूसरी तरह उठा : मालिक लोग क्या करेंगे? प्रश्न के साथ सारा परिवेश प्रकाश से भर गया और मुझे अपना कर्त्तव्य सूरज की तरह स्पष्ट दिखने लगा, वैसे ही जैसे दमिश्क की ओर जाते हुए पॉल को कभी दिखा था।

'मैंने गाड़ी रुकवाई और उतर पड़ा। थोड़ी देर की बातचीत के बाद मैंने वहां मौजूद दो सार्वजनिक महिलाओं को अपने साथ चलने के लिए राज़ी कर लिया। यीशू सही हैं तो ये दो बदकिस्मत औरतें मेरी बहनें थीं और उनके शुद्धीकरण की एक मात्र आशा मेरे स्नेह और कोमलता पर निर्भर थी।

'मैं सानफ्रांसिस्को के सुन्दरतम मुहल्लों में से एक में रहता हूं। जिस घर में रहता हूं वह एक लाख डालर का होगा। उसमें रखी कलाकृतियों, किताबों और साज-सज्जा में भी इतना ही लगा होगा। बड़ा-सा घर है, महल ही कहें, ढेरों नौकर हैं। मैंने कभी नहीं जाना कि महल किस काम के लिए अच्छे होते हैं। लेकिन अब जानता हूं। मैं उन सड़कछाप औरतों को अपने साथ लाया और अब वे वहीं रहेंगी। मैं महल के हर कमरे में ऐसी बहनों को रखूंगा।'

श्रोता उद्वेलित होते जा रहे थे। मंचस्थ लोगों के चेहरों पर आवेश बढ़ता जा रहा था। उसी क्षण बिशप डिकिनशन उठे और आवेग में कुछ भुनभुनाते हुए मंच और हाल से उठकर चले गए। पर बिशप मोरहाउस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह अपने विज़न को संजोए बोलते गए :

'भाइयों और बहनों! मैं अपने इस काम में अपनी बहुत-सी कठिनाइयों का हल देखता हूं। मुझे पता नहीं था टमटम गाड़ियां किसलिए होती हैं। अब पता है। वे बीमार, बुजुर्ग और कमज़ोर लोगों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने और उन्हें सम्मान देने के लिए बनी हैं जिन्होंने सम्मानबोध तक खो दिया है।

'मुझे महलों का इस्तेमाल नहीं पता था। पर अब मुझे उनका इस्तेमाल आता है।

करते थे और उस मुनाफ़े की बदौलत पत्नी को यूरोप की सैर पर भेज दिया था। यह मत्स्य न्याय है। आपने इन्हें खा लिया और जब आपसे बड़ी मछलियां आपको खा रही हैं तो आप चिल्ला रहे हैं। यह बात यहां मौजूद आप सब लोगों पर लागू होती है। आप सभी चीख-चिल्ला रहे हैं। आप सभी हार रहे हैं और चीख रहे हैं।

'पर आप सीधी बात नहीं बोलते जैसा मैंने कहा है। आप नहीं कहते कि आप दूसरों से मुनाफ़ा चूसना चाहते हैं और आप चिल्ला इसलिए रहे हैं कि दूसरे आपसे मुनाफ़ा चूस रहे हैं। नहीं, आप इसके लिए बहुत चालाक हैं। आप दूसरी बात कहते हैं। आप छोटे पूंजीपति काल्विन की तरह का भाषण देते हैं। क्या कहा उन्होंने? उनके कुछ मुहावरे थे—'हमारे मूल सिद्धांत ठीक हैं', 'इस देश को ज़रूरत है मूलभूत अमरीकी पद्धतियों—सबको स्वतंत्र अवसर की ओर लौटने की', 'स्वतंत्रता चाहिए जिसके लिए यह देश जन्मा था', 'हमें अपने पूर्वजों के सिद्धांतों की ओर लौटना चाहिए।'

जब वह कहता है 'सबके लिए स्वतंत्र अवसर' तो उसका मतलब होता है मुनाफा निचोड़ने का स्वतंत्र अवसर, जो उसे बड़े ट्रस्ट लेने नहीं दे रहे। इसमें सबसे ग़लत बात यह है कि आप लोग हर बार दोहराते हैं कि इन पर आपको विश्वास हो गया है। आप अपने साथ के नागरिकों को लूटने का अवसर चाहते हैं, अपने छोटे धन्धे में, पर आपने मोहावेश में उसे स्वतंत्रता कहना शुरू कर दिया है। आप स्वार्थी और अपने ही सुख में लोट-पोट करने वाले लोग हैं पर आपके शब्दों का जादू आपको विश्वास दिलाता है कि आप देशभक्त हैं। मुनाफे की इच्छा, जो निपट स्वार्थ के अलावा कुछ नहीं, को आप दुनिया समाज के लिए परोपकार में रूपान्तरित कर देते हैं। बहुत हुआ, आइए आज अपनों के बीच थोड़ा ईमानदार हो लें। सच्चाई का सामना करें और सीधी बात बोलें।'

वहां बैठे लोगों के चेहरे क्रोध से लाल हो चुके थे—हां, थोड़ा भय भी झांक रहा था। इस कोमल चेहरे वाले नौजवान से, उसके शब्दों के उतार-चढ़ाव और प्रहार तथा दो टूक सीधी-सच्ची बातों से वे थोड़ा डर गए थे।

श्री काल्विन ने तत्परता से उत्तर दिया : 'क्यों नहीं, हम क्यों अपने पूर्वजों के उन सिद्धांतों की ओर नहीं लौट सकते जब इस गणतंत्र की स्थापना हुई थी। तुमने काफी कुछ सच कहा है मिस्टर एवरहार्ड, हालांकि था वह कटु। परन्तु यहां अपने बीच हमें बोलना चाहिए। हमें सारे मुखौटे उतार देने चाहिए और सच्चाई को वैसे ही स्वीकार लेना चाहिए, जैसे एवरहार्ड ने बयान किया है। यह सच है कि छोटे पूंजीपति मुनाफे के पीछे भागते हैं और ट्रस्ट हमारे मुनाफे हमसे छीन रहे हैं। यह भी सच है कि हम ट्रस्टों को बरबाद कर देना चाहते हैं ताकि हमारा मुनाफ़ा कायम रहे। हम ऐसा क्यों न करें, आखिर क्यों।'

अर्नेस्ट ने मुस्कराकर कहा : 'ये हुई कोई बात! यही तो मुद्दा। मैं बताने की कोशिश करूंगा कि क्यों नहीं करना चाहिए यह, हालांकि कठिन होगा कहना। आप जानते हैं आपने थोड़ा बहुत व्यवसाय सीखा है, पर सामाजिक विकास के बारे में आप

का खेल पुराने तरीकों से ही खेल रहे हैं। जीवन का सार आपके लिए मुनाफ़ा है। आपका दृढ़ और सतत् विश्वास है कि आपको मुनाफ़ा कमाने के लिए ही पैदा किया गया है। एक ही चीज है। इस बीच ट्रस्ट पैदा हो जाता है और आपके मुनाफे चाट जाता है। यह अवरोध बन जाता है और उससे उबरने का एक ही उपाय है—जो आपका मुनाफा छीन रहा है उसका खात्मा।

'मैंने आपको ध्यानपूर्वक सुना है और एक ही नाम आपको बांध सकता है—मशीन-भंजक हैं आप। आप जानते हैं किसे कहते हैं मशीन भंजक? बताता हूं। अट्ठारहवीं शताब्दी में इंग्लैंड में मर्द और औरतें अपनी-अपनी झोपड़ियों में कपड़ा बुनते थे। यह पद्धति धीमी और खर्चीली थी। फिर आया भाप का इंजन और श्रम बचाने वाले यंत्र। एक हज़ार कर्घे एक ही इंजन से चलाए जा सकते थे और पहले के मुकाबले सस्ता और ज्यादा कपड़ा बुना जाने लगा। फैक्ट्री में समन्वय था और स्पर्धा टिक नहीं सकी। अपने लिए बुनने की बजाय लोग फैक्ट्री में पूंजीपति मालिकों के लिए कपड़ा बुनने लगे। बच्चे और सस्ते में काम करने लगे और वयस्क बेकार होने लगे। जीवन स्तर गिरने लगा। भुखमरी बढ़ी और उन्होंने इसे मशीन का दोष समझा। उन्होंने मशीनें तोड़नी शुरू कर दी। वे सफल नहीं हुए। वे काफी मूर्ख थे।

'आपने उनसे सबक नहीं लिया। डेढ़ सौ साल बाद आप भी मशीनें तोड़ने पर आमादा हैं। आपने खुद ही माना कि ट्रस्ट का यंत्र-तंत्र बेहतर और सस्ते तरीके से काम करता है। तभी आप उससे स्पर्धा नहीं कर पाते। फिर भी आप उसे तोड़ेंगे। आप तो इंग्लैंड के मूर्ख मज़दूरों से भी ज्यादा मूर्ख हैं। आप स्पर्धा की पुनर्स्थापना कर सोचते रह जाते हैं और ट्रस्ट आपको नष्ट करते जाते हैं।

'आप सब एक ही किस्मत दोहरा रहे हैं—स्पर्धा का अंत और संयोजन का प्रारंभ। आपने, श्री ओवेन, बर्कले में स्पर्धा को नष्ट किया। जब आपकी संस्था ने तीन छोटे दुकानदारों को उखाड़ फेंका। आपने बेहतर संयोजन किया। फिर भी आप दूसरे संयोजनों का दबाव महसूस करते हैं, ट्रस्टों का संयोजन, और आप चिल्लाते हैं। क्यों? क्योंकि आप ट्रस्ट नहीं हैं। अगर आप सारे देश के लिए किराना ट्रस्ट होते तो आप दूसरा गीत गाते होते। गीत होता—'ट्रस्टों को मिली भगवान की दुआ'। आपका संयोजन ट्रस्ट नहीं है और आप अपनी कमज़ोरी समझते हैं। आप अपने अंत का अनुमान लगाने लगे हैं। आप अपने और अपने स्टोर्स को बंधक बना महसूस करते हैं। आप देख रहे हैं कि शक्तिशाली कैसे आगे बढ़ते जा रहे हैं। आप उनके बढ़ते हाथ देख रहे हैं। वे आपके हितों को कभी यहां, तो कभी वहां नुकसान पहुंचाते रहते हैं—रेल ट्रस्ट, तेल ट्रस्ट, इस्पात ट्रस्ट, कोयला ट्रस्ट और आप जानते हैं कि अंततः वे आपको नष्ट कर डालेंगे—आपके मुनाफे का अखिरी कतरा भी हड़प लेंगे।

'आप, जनाब! एक बुरे खिलाड़ी हैं। जब आपने तीन दुकानदारों को चूस डाला था अपने बेहतर संयोजन के नाते, तो आप सीना फुलाकर योग्यता और साहस की बात

चर्च के महल रास्ते में छूट गए और नष्ट हो रहे लोगों के लिए अस्पताल और नर्सरी की तरह होने चाहिएं।'

उन्होंने लम्बी सांस ली—अपने अंदर के विचारों को सर्वोत्तम ढंग से कैसे प्रकट करें इस चेष्टा में।

'भाइयों। मैं नैतिकता के बारे में आपको कुछ बताने लायक नहीं। मैं पाखण्ड और शर्म की ज़िन्दगी इतने दिनों तक बिता चुका हूं कि औरों की क्या मदद कर पाऊंगा। परन्तु अपनी उन बहनों के साथ रहने ने मुझे सिखा दिया है कि बेहतर रास्ता पा लेना आसान है। जिन्हें यीशू और उनके सिद्धान्तों पर विश्वास है उनके लिए इन्सानों के बीच का एक ही रिश्ता है—प्यार का, मात्र प्यार ही पाप से, मौत से बड़ा होता है। इसलिए मैं आपमें जो धार्मिक हैं उनसे कहता हूं कि वही कीजिए जो मैंने किया है, कर रहा हूं। आप में जो भी समृद्ध हैं उसे चाहिए कि वह अपने घर में किसी चोर को रखे और उससे भाई जैसा और किसी वेश्या को रखकर बहन जैसा बर्ताव करे। तब सानफ्रांसिस्को को न पुलिस की ज़रूरत रह जाएगी, न मजिस्ट्रेट की। जेलें अस्पताल बन जाएंगी और अपराध के साथ अपराधी भी विलुप्त हो जाएंगे।

'हमें स्वयं को केवल धन नहीं देना चाहिए। हमें वही करना चाहिए जो स्वयं यीशू ने किया था—यही है आज चर्च का सन्देश। हम उस मालिक की शिक्षा से दूर भटक गए हैं। हम अपने ही मांस-मज्जा में लिप्त हैं। हमने यीशू की जगह मैमन (धन देवता) को बिठा दिया है। मेरे पास एक कविता है जो पूरी कहानी कहती है। मैं उसे पढ़ना चाहता हूं। उसे किसी दोषी व्यक्ति ने लिखा है जो दोष के बावजूद साफ-साफ देख पा रहा था। इसे कैथोलिक चर्च पर आक्रमण की तरह नहीं देखना चाहिए। इसे सभी चर्चों पर, चर्चों की शान-शौकत और यीशू के मार्ग से भटकाव पर आक्रमण समझना चाहिए। ऐसी है वह कविता:

गुम्बद में चांदी की तुरहियां गूंजीं
लोग भय से घुटनों पर झुक गए
और लोगों की गर्दनों पर सवार
मैंने रोम के लार्ड को खुदा के मानिन्द देखा

पादरी तुल्य वस्त्र थे, आग से भी ज्यादा सफेद
शाही लाल गाउन झूल रहा था
सिर पर थे तीन स्वर्ण मुकुट
प्रकाश और वैभव के बीच पोप घर लौटा।

मेरा मन व्यर्थ बीते वर्षों के बीच भटका

समुद्र किनारे के एकान्त में
'लोमड़ियों की मांद होती है और चिड़ियों के घोंसले
मैं और मैं ही थका-हारा घायल पैर लिए
भटकता हूं आंसुओं से प्यास बुझाने।

श्रोता उद्वेलित थे पर प्रतिक्रियाहीन। बिशप अपनी धुन में थे,

'और मैं आप में से धनिकों से, सभी धनिकों से, कहता हूं कि आप उस मालिक की भेड़ों का कठोर दमन करते हैं। अपने हृदय कठोर कर लिए, आपने धरती से उठती आवाजों-दु:ख की आवाज़ों, के लिए कान बन्द कर लिए हैं। आप नहीं सुन रहे, पर एक दिन वे सुनी जाएंगी। इसीलिए कहता हूं—'

उसी समय जोन्स फिलिपवार्ड ने अपनी कुर्सी छोड़ी और बिशप को मंच से उतार दिया। श्रोता सांस रोके स्तब्ध बैठे रहे।

सड़क पर पहुंचकर अर्नेस्ट अजीब तरह से हंसने लगा। उसकी हंसी मुझे कष्ट दे रही थी। मेरा मन दमित आंसुओं के साथ रो पड़ने को तैयार था। अर्नेस्ट ने चिल्लाते हुए कहा : 'दे दिया बिशप ने संदेश—उसके अन्तर में छिपी कोमल प्रकृति और साहस फूट पड़े और उसके ईसाई श्रोता इस नतीजे पर पहुंच गए कि उनके बिशप का दिमाग ख़राब हो गया है। देखा कैसे उसे मंच से उतारा गया? इसे देख नर्क में भी हंसी गूंज उठी होगी।'

'फिर भी आज बिशप ने जो कहा और किया उसका भारी प्रभाव पड़ेगा।' मैंने कहा।

'ऐसा सोचती हो?' मज़ाक उड़ाते हुए अर्नेस्ट ने पूछा।

'सनसनीख़ेज असर होगा। देखा नहीं रिपोर्टर लोग कैसे जल्दी-जल्दी नोट्स ले रहे थे?' मैंने ज़ोर दिया।

'एक लाइन नहीं छपने वाली कल के अखबारों में।'

'मुझे विश्वास नहीं होता।' मैं चिल्लाई।

'तो थोड़ा इन्तज़ार कर लो। एक पंक्ति नहीं, एक विचार नहीं प्रकाशित होगा। ये दैनिक अखबार? दैनिक दमन के सूचक हैं।'

'लेकिन रिपोर्टर? मैंने उन्हें नोट लेते देखा?'

'बिशप ने जो भी कहा उसका एक शब्द नहीं छपेगा। तुम सम्पादकों को भूल रही हो। उन्हें उन नीतियों के लिए तन्ख्वाह मिलती है जो वे लागू करते हैं। और उनकी नीति है कि कुछ भी ऐसा प्रकाशित न हो जो स्थापित व्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकता है। बिशप का वक्तव्य स्थापित नैतिकता पर हिंस्र प्रहार था। उसे धर्मद्रोह कहा जाएगा। उन्हें मंच से उतार दिया गया ताकि वह और द्रोह न कर सकें। अखबार उस

कोशिश की। स्वतंत्र दूध वाले हमेशा हमारा घेरा तोड़ बाहर निकल जाते थे। उसके बाद आया वह 'मिल्क ट्रस्ट'।

'स्टैंडर्ड ऑयल के भारी मुनाफे से बची अतिरिक्त पूंजी से धन लेकर न?'

काल्विन ने स्वीकारा : 'हां! पर तब हमें पता नहीं था। उसके एजेन्टों ने हमें निमंत्रित किया—'आइए और मोटाइए', 'बाहर रहिए—भूखे मरिए'। हम में से ज्यादा अन्दर चले गए। हम भूखे नहीं मरे। हमें फायदा हुआ... पहले फायदा हुआ। शुरू में दूध का रेट था एक सेंट में एक क्वार्ट। मूल्य का चौथाई हमें मिल जाता था। तीन-चौथाई ट्रस्ट को चला जाता था। फिर दाम बढ़ा दिया गया पर हमारा हिस्सा नहीं बढ़ा। शिकायत बेकार गई। ट्रस्ट का नियंत्रण था पूरा का पूरा। हमें पता चला कि हम तो बन्धक बन गए। बाद में हमारा हिस्सा कभी नहीं बढ़ा और हम चुसते रहे। क्या करते हम? हम निचुड़ चुके थे। डेयरी वाले बचे ही नहीं—बाकी बचा मिल्क ट्रस्ट।'

'पर दूध का दाम दो सेन्ट बढ़ाकर आप टक्कर ले सकते थे।' अर्नेस्ट ने हलके से सुझाव दिया।

'हमने भी यही सोचा। कोशिश की।' काल्विन थोड़ी देर रुका, फिर बोला 'उसने हमें तोड़ दिया। ट्रस्ट हमसे सस्ते दर पर दूध बाज़ार में पहुंचा सकता था। जब हमें नुकसान हो रहा था, तब भी उन्हें थोड़ा मुनाफा हुआ। उस चक्कर में मैंने पचास हज़ार डालर गंवाए। हममें से अधिकांश दिवालिया हो गए। डेयरी वालों का अस्तित्व ही समाप्त हो गया।'

'तो ट्रस्ट ने आपका मुनाफ़ा आपसे छीन लिया। और आप राजनीति में चले गए ताकि ट्रस्ट के खिलाफ कानून बनवाकर उसे खत्म कर दें और अपना मुनाफ़ा वापस पा जाएं?' अर्नेस्ट ने पूछा।

काल्विन का चेहरा चमक उठा। बोला : 'एक दम यही तो कहता हूं मैं किसानों के बीच अपने भाषणों में। यह तो सारांश है हमारे विचारों का।'

'फिर भी ट्रस्ट का दूध तो स्वतंत्र दूध वालों के दूध से सस्ता है।'

'क्यों न हो? उसके पास बड़ी पूंजी है, जिसने शानदार संगठन और नए-नए यंत्र संभव कर दिए हैं।'

'यहां कोई बहस नहीं है। वह तो ऐसा करेंगे ही और कर ही रहे हैं।' अर्नेस्ट ने कहा।

यहां काल्विन महोदय ने एक राजनीतिक भाषण झाड़ दिया। औरों ने भी अपने विचार सुनाने में चूक नहीं की। सब मिलकर ट्रस्टों का अंत चाहते थे।

अर्नेस्ट ने मुझ से धीरे से कहा : 'बेचारे मासूम। जितना देख रहे हैं, साफ-साफ देख रहे हैं पर अपनी नाक के आगे तो देख ही नहीं पा रहे।'

थोड़ी देर बाद उसे फिर मौका मिला और फिर तो वह सारी शाम छाया रहा। वह बोला : 'मैंने आप सबके विचार ध्यानपूर्वक सुने हैं। मैं देख रहा हूं कि आप व्यवसाय

धर्मद्रोह को चुप्पी की विस्मृति में झोंककर उसे शुद्ध कर देंगे। अमरीकी प्रेस? एक परजीवी विकास है जो पूंजीपति वर्ग पर निर्भर है। उसका काम है जनमत को ढाल कर व्यवस्था की सेवा करना और यह वे लोग बखूबी कर रहे हैं।

'मैं एक भविष्यवाणी करता हूं। कल के अखबारों में इतना ही छपेगा कि बिशप की तबियत खराब है कि वह ज्यादा मेहनत करते रहे हैं और पिछली रात ज्यादा बीमार हो गए। कुछ दिन बाद छपेगा कि उनका मानसिक संतुलन बिगड़ रहा है और उनके कृतज्ञ अनुयायियों ने उन्हें छुट्टी दे दी है।

'इसके बाद दो में से एक बात होगी—या तो बिशप छुट्टियों से 'सुधर' कर लौटेंगे, अपना विज़न' वहीं छोड़कर या फिर उनका पागलपन ज़ारी रहेगा और फिर अखबारों में दर्द भरी घोषणा हो जाएगी कि बेचारे बिशप पागल हो गए और फिर उन्हें चारदीवारों में बड़बड़ाते रहने के लिए छोड़ दिया जाएगा।'

'तुमने यहां अति कर दी।' मैंने ज़ोर से कहा।

'समाज की नज़रों में यह सचमुच पागलपन है। कौन ईमानदार आदमी, अगर वह पागल नहीं है, तो चोरों और वेश्याओं को अपने घर में भाइयों-बहनों की तरह रखेगा? यह सच है कि यीशू के दोनों ओर दो चोर थे, जब वह मरे। पर वह एक दूसरी कहानी है। पागलपन? हम जिससे असहमत हैं। उसकी मानसिक प्रक्रिया को हमेशा ही गलत मानते हैं। इसलिए उस आदमी का दिमाग तो ग़लत हुआ; पर ग़लत दिमाग और पागल दिमाग के बीच की है कोई रेखा? इसे सोच पाना मुश्किल है कि कोई संतुलित व्यक्ति किसी के सन्तुलित समाहारों से एकदम असहमत हो सकता है।

'आज शाम के अखबारों में इसका एक अच्छा उदाहरण छपा है। मैरी मकन्ना मार्केट स्ट्रीट के दक्षिण में रहती है। वह ग़रीब, पर ईमानदार महिला है। वह देशभक्त भी है। पर वह अमरीकी 'झण्डे' और वह जिस सुरक्षा का प्रतीक है, के बारे में ग़लत विचार रखती है। उनके साथ क्या हुआ? उसका पति दुर्घटनाग्रस्त हो गया और तीन महीने अस्पताल में पड़ा रहा। महिला ने औरों के कपड़े धोने शुरू कर दिए, फिर भी वक्त पर किराया नहीं चुका पाती थी। कल लोगों ने उसका घर खाली करवा लिया। पर पहले उसने घर पर अमरीकी झण्डा फहरांया और उसकी साया में ही घोषित किया कि यही झण्डा उसे अधिकार देता है कि उन्हें कोई घर से निकालकर सड़क पर फेंक दे' क्या हुआ? उसे गिरफ्तार किया गया और पागलखाने भेज दिया गया। आज जांच-पड़ताल की गई। काबिल डाक्टरों ने उसे जांच करने के बाद पागल घोषित कर दिया। उसे पागलखाने भेज दिया गया है।'

मैंने एतराज़ किया : 'यह दूर की कौड़ी है। कल्पना कीजिए कि मैं एक साहित्यिक किताब की शैली के बारे में सबसे असहमत हो जाऊं तो क्या मुझे इसके लिए जेल भेज दिया जा सकता है?'

'ठीक बात है। पर यह विविध मत समाज के लिए खतरा नहीं माने जाते। यह है

है और क्षमता बेहतर लगती है।'

'तो आपकी शाखा ने उन तीनों दुकानों का मुनाफा निगल लिया। यही न। एक बात बताएं उन तीनों दुकानदारों का क्या हुआ?'

'एक हमारी डिलिवरी वैन का ड्राइवर है, दूसरे दो का क्या हुआ नहीं मालूम।'

अर्नेस्ट अचानक श्री कोवाल्ट से मुखातिब हो गया :

'आप तो लागत से कम पर वाला व्यापार काफी करते हैं। क्या हुआ उन छोटे दवा के दुकानदारों का जिन्हें आपने खदेड़ दिया?'

'उनमें से एक श्री हासफर्वर हमारे नुस्खा विभाग के इनचार्ज हैं।' जवाब मिला।

'आपने उनके मुनाफे सोख लिए?'

'और क्या! इसीलिए तो धन्धे में हैं।'

'और आप श्री एसमुनसेन हताश हैं कि रेल वालों ने आपका मुनाफा सोख लिया?'

उन्होंने गर्दन हिलाई।

'आप यही तो चाहते हैं कि मुनाफा आप कमाएं?'

उन्होंने फिर गर्दन हिलाई

'दूसरों से मुनाफा?'

'और कैसे कमाया जाता है?' ऐसमुनसन का छोटा-सा जवाब मिला।

'तो फिर व्यापार का खेल है दूसरों से मुनाफा कमाना और दूसरों को अपने से मुनाफा न कमाने देना। क्यों? ऐसा ही तो है?'

अर्नेस्ट को सवाल दोहराना पड़ा तब जवाब मिला:

'ठीक! ऐसा ही है। हां यह ज़रूर है कि दूसरों के मुनाफा कमाने पर हमें तब तक एतराज नहीं होता जब तक वह निचोड़ना न चाहें।'

'निचोड़ने से आपका मतलब है भारी मुनाफा और फिर भी आप स्वयं भारी मुनाफा कमाने की कोशिश करते हैं? है न?'

एसमुनसेन ने इस कमज़ोरी को स्वीकारा।

एक और व्यक्ति को अर्नेस्ट ने चिकोटी काटी, उसी समय। वह था काल्विन जो किसी समय बड़ी डेयरी का मालिक था।

'कुछ दिन पहले आप 'दुग्ध ट्रस्ट' से लड़ रहे थे—आज आप बड़े किसानों की राजनीति कर रहे हैं। कैसे हुआ यह सब?' अर्नेस्ट ने पूछा।

'अरे मैंने लड़ाई छोड़ी थोड़ी है। मैं उनसे उसी मोर्चे पर लड़ रहा हूं जहां लड़ना संभव है—राजनीतिक मोर्चा। अभी दिखाता हूं आपको। कुछ साल पहले हम डेयरी वाले जो चाहते थे, करते थे।'

'आपस में तो स्पर्धा रहती ही होगी।'

'उसी से तो मुनाफा नीचे ही रहता था। हमने डेयरी वालों को संगठित करने की

फर्क। पर मैरी मकन्ना और बिशप मोरहाउस के मतभेद खतरनाक हैं। अगर सभी गरीब लोग कर देना बंद कर दें और अमरीकी झन्डे की शरण में चले जायं तो क्या होगा? श्रीमन्तशाही ध्वस्त होने लगेगी। बिशप के विचार उतने ही खतरनाक हैं। गए पागलखाने!'

'अभी भी मैं सहमत नहीं हूं।'

'तो कर लो इन्तज़ार।'

मैं करने लगी इन्तज़ार।

अगली सुबह मैंने सारे अखबार मंगवाए। अर्नेस्ट यहां तक तो सच निकला। बिशप का एक भी शब्द नहीं छपा था। एक दो अखबारों में छपा था कि वह भाव विह्वल हो गए थे। जो बिशप के बाद बोले थे उनकी बातें विस्तार से छपीं थीं।

कुछ दिन बाद छोटी सी खबर छपी कि वह बहुत थक गए थे और छुट्टी पर चले गए हैं। यहां तक तो ठीक था पागलपन की ओर कहीं कोई इशारा नहीं था। मैंने उस कठिन राह की कल्पना तक नहीं की थी जिस पर बिशप को चलना बाकी था—पागलखाना और सूली पर चढ़ना, जिस ओर अर्नेस्ट ने इशारा किया था।

मशीन भंजक

अर्नेस्ट के समाजवादी उम्मीदवार की तरह अमरीकी व्यवस्थापिका का चुनाव लड़ने के ठीक पहले की बात है। पापा ने एक दावत दी। परिवार में उसको नाम दिया—लाभ-हानि दावत। अर्नेस्ट ने इसे 'मशीन भंजकों की दावत' करार दिया। वास्तव में वह एक व्यापारियों की दावत थी—छोटे व्यापारियों की। शायद ही उनमें से कोई भी किसी बड़े—यानी दो-चार लाख से ज्यादा के, व्यापार में दिलचस्पी रखता हो। वे मध्यवर्गीय व्यापारियों के प्रतिनिधि थे।

उसमें थे—ओवेन-ओवेन एंड कम्पनी का, किराना स्टोर की एक चेन का मालिक। हम भी वहीं से घर का सामान खरीदते थे। कोवाल्ट एंड वाशबर्न दवा कंपनी के दोनों ही पार्टनर मौजूद थे। कोत्रा कोस्ता काउन्टी की मशहूर ग्रेनाइट क्वेरी के मालिक एसमुनसेन भी था। इसी तरह छोटी फैक्ट्रियों के मालिक, पार्टनर, छोटे व्यवसायी यानी संक्षेप में छोटे पूंजीपति।

सभी चालाक लगने वाले दिलचस्प आदमी थे। उनकी बातचीत सीधी और स्पष्ट थी। उनकी सामान्य शिकायत बड़े कारपोरेशनों और ट्रस्टों से थी। उनका सिद्धांत था—तोड़ो ट्रस्ट (बस्ट द ट्रस्ट)। सारे दमनों का उत्स थे ट्रस्ट और सभी की दुखभरी कहानी एक ही थी। वे रेल, टेलीग्राफ और भारी इनकम टैक्स के सरकारीकरण की वकालत कर रहे थे। भारी संग्रहों के विरुद्ध उनमें भारी गुस्सा था। इसी तरह स्थानीय

बुराइयों के समाधान के लिए वे पानी, गैस, टेलीफोन और ट्राम आदि पर म्युनिसिपैलिटी का नियंत्रण चाहते थे।

क्वेरी के मालिक श्री एसमुनसेन की कठिनाइयों की कहानी विशेष रूप से दिलचस्प थी। उसने स्वीकारा कि उसे अपने व्यापार में कभी मुनाफ़ा नहीं मिला—सानफ्रांसिस्को में आए भूकम्प से हुए विनाश के कारण मिले व्यवसाय के भारी अवसर के बावजूद, सानफ्रांसिस्को का निर्माण कार्य छः साल से चल रहा था। इस दौरान उसका व्यापार चार गुना, आठ गुना बढ़ गया था फिर भी उसकी हालत बेहतर नहीं हुई थी। उसने कहा :

'रेल वाले हमारे व्यवसाय को हमसे भी थोड़ा बेहतर जानते हैं। वे एक-एक पैसा जानते हैं, मेरे चालन खर्च का। हमारे ठेकों की शर्तें जानते हैं। कैसे जान जाते हैं इसका हम केवल अनुमान लगा सकते हैं। निश्चित ही उनके जासूस मेरी ही कम्पनी में होंगे। उनकी पहुंच हमारे ठेकों से जुड़े सभी लोगों तक है। जब कभी मुझे कोई बड़ा ठेका मिलता है जिसकी शर्तें मेरा मुनाफ़ा बढ़ा सकती हैं— तो ढुलाई का किराया तुरन्त बढ़ा दिया जाता है। कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलता। मेरा मुनाफ़ा रेल वाले खा जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में कभी उन्हें अपने किराया दर पर पुनर्विचार की बात समझा नहीं पाया। दूसरी ओर, जब कभी दुर्घटना होती है या कम मुनाफे वाले ठेके मिलते हैं और संचालन खर्च ज्यादा होता है तो मैं रेलवे वालों से खर्चे कम करवा लेता हूं। नतीजा? काम बड़ा हो या छोटा मेरा मुनाफ़ा चला जाता है रेल की जेब में।'

'आपको जो मिलता होगा, वह उस मैनेजर की तनख्वाह के बराबर ही होगा, जो वह रखते, अगर खदान रेल वालों की होती। है न?' अर्नेस्ट ने पूछा।

'एक दम वही। कुछ ही दिन हुए मैंने दस साल के हिसाब-किताब पर नज़र दौड़ाई। मैंने पाया कि दस सालों से मेरा मुनाफा मैनेजर की तनख्वाह से ज्यादा नहीं था। रेल वालों की होती खदान और मुझे मैनेजर रख लेते तो हालत ऐसी ही रहती।'

'एक फर्क तो होता—वे सारे जोखिम उन्हें उठाने होते जो आप उठाने को मजबूर हैं यह व्यवसाय चलाने में।' हंसते हुए अर्नेस्ट ने कहा।

'एकदम सच है।' एसमुनसेन ने उदास होकर कहा।

उनको अपनी-अपनी कह लेने का अवसर देने के बाद अर्नेस्ट ने दाएं-बाएं सवाल करने शुरू कर दिया। शुरू ओवेन से किया :

'हां। आपने बर्कले में अपनी शाखा खोली है न—छः महीने पहले?'

'तबसे मैंने देखा आस-पास की तीन छोटी दुकानें बंद हो चुकी हैं। इसका कारण आपकी शाखा तो नहीं?'

'मेरे आगे वे क्या टिकते!' आत्मतोष से मुस्कराते हुए ओवेन ने कहा।

'क्यों? क्यों?'

'हमारे पास उनसे बड़ी पूंजी है। बड़े व्यवसाय में निश्चित ही बेकार कम ही जाता

मज़दूरों की खूनी क्रांति बची है। निश्चित ही अंतत: हम जीतेंगे, पर उसकी कल्पना कंपा देती है।'

उस क्षण से अर्नेस्ट की आशा 'क्रांति' में टंग गई। इसमें वह पार्टी से आगे निकल गया था। इसके साथी उससे समहत नहीं थे। उन्हें अभी भी चुनाव से जीत पर विश्वास था। वे स्तब्ध नहीं थे। इतना संतुलन और जीवन्तता तो धी उनमें। बस वे अविश्वासी थे। अर्नेस्ट उन्हें विशिष्ट-तंत्र के आगमन के बारे में समझा नहीं पाया। वे उद्वेलित होते, पर अपनी शक्ति पर उन्हें विश्वास था। उनके सैद्धांतिक विवेचन में 'ऑलिगैर्की' के लिए कोई स्थान नहीं था। फिर वह कैसे आ सकता था।

एक गुप्त मीटिंग में उन्होंने कहा—

'हम तुम्हें कांग्रेस में पहुंचा देंगे और बस सब ठीक हो जाएगा।'

'और अगर वे मुझे कांग्रेस से उठाकर दीवाल से सटाकर गोलियों से भून दें तो?' अर्नेस्ट ने पूछा।

'तब हम सारी ताकत लगा उठ खड़े होंगे।' दर्जनों आवाज़ें उठीं।

'तब तुम लोग खून से लथपथ होंगे। मैंने मध्यवर्ग को यह तराना गाते कई बार सुना है। पर कहां है वे?' अर्नेस्ट ने ललकारा।

महान् उद्यम

मिस्टर विक्सन ने पापा को बुलाया नहीं था। वे इत्तफाक से सानफ्रांसिस्को जाने वाली बोट पर मिल गए थे। इसलिए कहा जा सकता है जो चेतावनी उन्होंने पापा को दी वह सोची-समझी नहीं थी। वे मिले नहीं होते तो चेतावनी का सवाल ही नहीं था। हालांकि परिणाम तो वही निकलने वाला था। पापा उन लोगों के वंशज थे जो 'मेफ्लावर' जहाज से सबसे पहले अमरीका आए थे। इसलिए उनकी वंश परंपरा का विशेष महत्त्व था। घर लौट कर उन्होंने कहा—

'अर्नेस्ट ने ठीक कहा था, वह अनूठा व्यक्ति है। मैं तो तुम्हें रॉकफैलर, या इंग्लैंड के राजा की अपेक्षा उसी की पत्नी के रूप में देखना चाहूंगा।'

'आखिर बात क्या है?' मैंने घबड़ाकर पूछा।

'विशिष्ट तंत्र हमारे और तुम्हारे चेहरे रौंदने वाला है। विक्सन ने हमें इतना तो बता ही दिया। उसी तंत्र का होते हुए भी मेरे प्रति मेहरबान था। उसने मुझे यूनिवर्सिटी में पुनर्नियुक्त करने को कहा। क्या सोचती हो इस बारे में? विक्सन, एक लुटेरा, इतना शक्तिशाली है कि वह तय कर सकता है कि मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ाऊं या न पढ़ाऊं। तो इससे भी ज्यादा का प्रलोभन दिया। वह मुझे शीघ्र खुलने वाले भौतिक विज्ञान के महाविद्यालय का 'प्रेसीडेन्ट' बना सकता है। ऑलिगार्की को अपने अतिरिक्त धन को

आ जाएंगे, यहां गृह युद्ध के खून में डूबने।

अब तो वे निश्चित ही स्तब्ध हो गए, नि:शब्द।

ओवेन धीरे से बुदबुदाया : 'हम मिलिशिया में नहीं भर्ती होंगे। इसी से बात तय हो जाएगी। हम इतने स्वार्थी नहीं होंगे।'

अर्नेस्ट ज़ोर से हंस पड़ा— 'आप उस संयोजन को समझ ही नहीं पा रहे जो बन गया है। आप कुछ कर नहीं सकते। आपको भर्ती होना ही पड़ेगा।'

'नागरिक कानून भी कुछ होता है।' ओवेन ने अपनी बात पर ज़ोर दिया।

'तब नहीं जब उसे सरकार निलम्बित कर दे। जिस दिन आप पूरी ताक़त से उठ खड़ा होने की बात करते हैं उस दिन वही आपके खिलाफ हो जाएगा। आपको मिलिशिया में किसी न किसी तरह जाना ही पड़ा जाएगा। मैंने किसी को 'हैबियस कॉरपस' का नाम लेते सुना। उसके बदले आपको मिलेगा पोस्ट मार्टम (—यानी आप पहले सावधानी बरतना चाहेंगे पर सरकार अपना काम करने के बाद की स्थिति में रखेगी।) अगर आपने मिलिशिया में जाने से या जाने पर वहां आदेश-पालन से इन्कार किया तो आप दिमाग के पहले कोर्ट मार्शल के सामने प्रस्तुत होंगे और कुत्तों की तरह मार दिए जाएंगे। यही कानून है।'

'ऐसा नहीं है कानून।' काल्विन ने ज़ोर दिया, 'ऐसा कोई कानून नहीं है। नौजवान आपने ऐसी कल्पना कर ली है।' तुमने अभी मिलिशिया के फिलिपीन्स भेजने की बात की। यह असंवैधानिक होगा। संविधान साफ-साफ कहता है कि मिलिशिया देश के बाहर नहीं भेजी जा सकती।'

'इससे संविधान को क्या लेना-देना। संविधान की व्याख्या अदालतें करती हैं और वे, जैसा कि श्री ऐसमुनसेन ने स्वीकारा है, वे ट्रस्ट की मुट्ठी में है। इसके अलावा, जैसा मैंने कहा, कानून ऐसा ही है। यह कानून वर्षों से लागू है-नौ वर्षों से।'

'कि हमें मिलिशिया में भर्ती किया जाएगा? कि इन्कार करने पर पहले कोर्ट मार्शल के बाद हमें गोली से उड़ा दिया जाएगा?' काल्विन ने अविश्वास के साथ पूछा।

'हां, एकदम ऐसा ही।' अर्नेस्ट ने जवाब दिया।

'हमने तो कभी नहीं सुना ऐसे कानून के बारे में। मेरे पिता ने भी नहीं सुना इसके बारे में।'

'दो कारणों से। एक इसे लागू करने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ी। पड़ती तो आप तत्काल सुन पाते। दूसरे, यह कानून जल्दी में पास कर दिया गया था गुप्त रूप से— करीब-करीब बिना बहस के। अखबारों में इसकी कोई चर्चा नहीं हुई। पर हम समाजवादियों को इसके बारे में पता था। हमने इसे अपने अखबारों में प्रकाशित किया था। लेकिन आप हमारे अखबार तो पढ़ते नहीं।'

'मैं फिर कह रहा हूं कि आप सपना देख रहे हैं। यह देश इसकी कभी इजाज़त नहीं देता।' काल्विन ने ज़िद की।

'लेकिन देश ने इज़ाजत दी।' अर्नेस्ट ने जवाब दिया, 'और जहां तक मेरे सपना देखने की बात है आप ही बताइए कि क्या यह सपना है।' उसने जेब से एक पर्चा निकालकर दिखाते हुए कहा। उसने उसे खोला और पढ़ना शुरू कर दिया:

'सेक्शन 1 कानून बने कि ... कोलम्बिया डिस्ट्रिक्ट और दूसरे राज्यों और क्षेत्रों के 18 से ज्यादा और 45 से कम उम्र का हर पुरुष मिलिशिया में शामिल होगा।'

'सेक्शन 7, हर सूचीबद्ध अफ़सर और व्यक्ति-याद करें सेक्शन 1 आप सब सूचीबद्ध हैं, जो आह्वान किए जाने पर नकारेगा या लापरवाही करेगा उस पर कोर्ट मार्शल का मुकदमा चलाएगा और उसके द्वारा निर्धारित सज़ा पाएगा।'

'सेक्शन 8, कोर्ट मार्शल में मिलिशिया के ही अफसर होंगे।

'सेक्शन 9 जब भी मिलिशिया युनाइटेड स्टेट्स की वास्तविक सेवा के लिए आहूत होगी उस पर वे ही नियम कानून लागू होंगे जो सामान्य सेवा पर लागू होते हैं।'

'तो यह है आप महानुभावों—अमरीकी नागरिकों और बिरादर मिलिशियामेन की स्थिति। नौ साल पहले हम समाजवादी सोचते थे कि कानून मज़दूरों के खिलाफ है। पर लगता है वह आपके भी खिलाफ है। व्यवस्थापिका के सदस्य विली ने उस छोटी सी बहस के दौरान कहा था: 'हम चाहते हैं एक रिज़र्व फोर्स, जो भीड़ का गला दबोच सके।' आप हैं वह भीड़। किसी भी क़ीमत पर 'जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति' की रक्षा करें। भविष्य में जब आप पूरी ताकत से उठ खड़े हो जाएंगे तो याद रखिएगा आप ट्रस्टों की सम्पत्ति और स्वतंत्रता के विरुद्ध खड़े हो रहे होंगे। महानुभाव आपके दांत उखाड़े जा चुके हैं। आपके पंजे कतर दिए गए हैं। जब उठ खड़े होंगे तो आप दन्तहीन, नखहीन फौज की तरह होंगे—पूरी तरह अहानिकर।

'मुझे विश्वास नहीं होता। ऐसा कोई कानून नहीं है। यह बकवास तुम समाजवादियों द्वारा फैलाया गया दुष्प्रचार है।' कोवाल्ट चिल्लाया।

'यह बिल हाउस ऑफ रिप्रेज़ेन्टेटिव में 30 जुलाई 1902 को पेश हुआ था ओहायो के सदस्य डिक द्वारा। इसे जल्दी में पास कर दिया गया। सीनेट में सर्वसम्मति से 14 जनवरी, 1903 को पास हुआ और सात दिन बाद ही युनाइटेड स्टेट्स के राष्ट्रपति ने स्वीकृति दे दी थी।' अर्नेस्ट ने दो टूक जवाब दे दिया।

एक सपने का गणित

अर्नेस्ट के उद्घाटन से लोग मानो भौंचक रह गए। इस बीच उसने फिर शुरू किया:

'आप में से दर्जनों ने कहा कि समाजवाद असंभव है। आपने असंभाविता पर ज़ोर दिया है। मैं अनिवार्यता को चिन्हित कर रहा हूं। न केवल यह अनिवार्य है कि आप छोटे पूंजीपति विलुप्त हो जाएंगे-बड़े पूंजीपति और ट्रस्ट भी नहीं बचेंगे। याद रखो

समृद्धि के दिनों की कीमत चुकाने के दिन आ गए थे। बाज़ार भरे पड़े थे। मूल्य गिर रह थे। मूल्यों में गिरावट के बीच सबसे तेज़ी से गिर रहा था 'श्रम का मूल्य'। औद्योगिक झगड़ों की भरमार थी। यहां, वहां, हर कहीं, हड़तालें हो रही थीं। जहां हड़ताल नहीं थी वहां तालाबंदी थी। अखबारों में हिंसा की खबरें पटी पड़ी थीं। इनके बीच ब्लैक हण्ड्रेड्स के कारनामे—दंगे, आगजनी, बेहिसाब लूट-खसोट, ध्वंस बखूबी जारी थे। सरकार को फौज झोंकने का बहाना मिल गया था। शहर, कस्बे सशस्त्र कैम्प लगने लगे थे। मज़दूर कुत्तों की तरह मारे जा रहे थे। बेरोज़गार हड़ताल तोड़कों की तरह भर्ती हो रहे थे। जब यूनियनें उन्हें पछाड़तीं तो फौज बुला ली जाती। फिर मिलिशिया थी ही। अभी तक गुप्त मिलिशिया कानून की ज़रूरत नहीं पड़ी थी। सामान्य मिलिशिया ही हर जगह मौजूद थी। ऐसे समय में सरकार ने फौज के लिए एक लाख की नई भर्ती कर डाली थी।

मज़दूरों की ऐसी भरपूर पिटाई कभी नहीं हुई थी। उद्योग के नेता विशिष्ट जनों ने अपनी पूरी ताक़त दमन में झोंक दी थी। मालिकों के मध्यवर्गीय संगठन इन मुश्किल दिनों और ध्वस्त होते बाज़ार से प्रभावित हो बड़े उद्योग चालकों की भरपूर मदद पाकर मज़दूरों पर कहर बरपा कर रहे थे। एक शक्तिशाली समझौता हो गया लगता था। पर यह शेर और भेड़ के बीच का समझौता था—जल्दी ही मध्यवर्ग को पता चल गया।

मज़दूर के सिर पर भी खून सवार था। पर वे दबा दिए गए। लेकिन इस हार से भी कठिन दिन समाप्त नहीं हुए। विशिष्ट तंत्र के एक मुख्य आधार बैंकों ने ऋण लेना जारी रखा। वाल स्ट्रीट ने सट्टे को ज़मीन छूला दी। इसी विध्वंस और अराजकता के बीच नए विशिष्ट तंत्र का निश्चित उभार शुरू हुआ। इसका आत्मविश्वास और गंभीरता भयभीत करने वाले थे। इसने अपना ही नहीं युनाइटेड स्टेट्स के सरकारी कोष का भी भरपूर इस्तेमाल किया, अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए।

अब मध्यवर्ग की बारी थी। अभी तक मज़दूरों के दमन में साथी रहे मालिकों के संगठनों को झंझोड़ा जाने लगा। छोटे व्यवसायियों और उत्पादकों के दमन में भी ट्रस्टों ने दृढ़ता ही नहीं, कठोरता दिखाई। वे हवा बोते गए। हवा ताकि तूफान की फ़सल काट सकें और उससे मुनाफ़ा कमा सकें, भारी मुनाफ़ा। मूल्यों-मान्यताओं को हाशिए पर फेंक दाएं-बाएं ट्रस्टों ने हर तरफ हाथ मारा और नए-नए क्षेत्रों में अपना काम बढ़ाया, मध्यवर्ग की कीमत पर।

इस प्रकार 1912 की गर्मियां मध्यवर्ग के लिए मौत का पैगाम लेकर आईं। अर्नेस्ट भी इस तेज़ी पर चकित था। वह समझ नहीं पा रहा था क्या करे। आसन्न चुनाव के लिए आशा नहीं बची थी।

'कोई फायदा नहीं। हम हार चुके हैं।' आयरन हील' रौंद रहा है। मैंने मतपेटिका में शांति पूर्ण विजय की आशा की थी। मैं ग़लत साबित हुआ। विक्सन सही था। हमारी बची खुची स्वतंत्रताएं भी छिन जाएंगी। आयरन हील हमारे चेहरे रौंद देगा। अब बस

इस तरह पापा की किताब तो नष्ट हो गई। ब्लैक हण्ड्रेड के कारनामे बढ़ते गए। समाजवादी अखबारों पर प्रतिबंध लगता गया और उन्हें नष्ट भी किया जाता रहा। दूसरे अखबार शासकों की नीतियों का प्रचार करते रहे और समाजवादी प्रेस की निन्दा में जुटे रहे। ब्लैक हन्ड्रेड को देशभक्त और समाज रक्षक की तरह चित्रित किया जाता रहा। यह दुष्प्रचार इतना प्रभावी था कि पादरी भी हिंसा की ज़रूरत पर दुख प्रकट करते हुए गिरिजाघरों में ब्लैक हन्ड्रेड की प्रशंसा करते रहे।

इतिहास तेज़ी से रचा जा रहा था। अगला चुनाव नज़दीक था। समाजवादी पार्टी ने अर्नेस्ट को केन्द्रीय व्यवस्थापिका का चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवार बनाया। उसके चुने जाने की संभावना थी। सानफ्रांसिस्को में ट्राम की हड़ताल तोड़ी जा चुकी थी। थोड़े ही दिन बाद तांगों-बग्घियों की हड़ताल भी तोड़ दी गई थी। इन हारों ने संगठित मज़दूरों को भयानक नुकसान पहुंचाया था। दूसरी यूनियनों ने भी इन हड़तालों का समर्थन किया था। पर सब शर्मनाक ढंग से ध्वस्त हो गया था। हड़ताल में खून बहा था। पुलिस ने बहुतों के सिर फोड़े थे। मरने वालों की संख्या कुछ जगहों पर मालिकों द्वारा मशीनगन चलाने से भी बढ़ गई थी।

परिणामस्वरूप लोग उदास और बदले की भावना से भरे हुए थे। वे खून का बदला खून से चाह रहे थे। पराजित होने के बाद वे राजनीतिक निर्णय द्वारा बदला लेना चाहते थे। उनकी यूनियन बरकरार थी। इससे उन्हें सारे राजनीतिक संघर्ष में शक्ति मिल रही थी। अर्नेस्ट की जीत की संभावना बढ़ती जा रही थी। विभिन्न छोटी-बड़ी यूनियनों का समर्थन मिलता जा रहा था। अर्नेस्ट को मज़ा आ रहा था। मज़दूर अड़ियल होते जा रहे थे। समाजवादियों की मीटिंगों में भीड़ बढ़ रही थी और पुरानी पार्टियों के नेता चौकन्ने होते जा रहे थे। उनके प्रसिद्ध वक्तव्यों को खाली हाथ मिलते या लोग मिलते तो इतनी गड़बड़ी करते कि कभी-कभी पुलिस को बुलाना पड़ता।

इतिहास तेज़ी से रचा जा रहा था। घट रही और संभावित घटनाओं से हवा में गर्मी थी। मुश्किल दिन आने वाले थे क्योंकि कई वर्षों की सफलता से बढ़ी समृद्धि के अतिरिक्त बचे हुए धन का विदेशों में निवेश कठिनतर होता जा रहा था। उद्योग पूरे वक्त नहीं चल पा रहे थे। कई बड़ी फैक्ट्रियां बंद पड़ी थीं और मज़दूरी में कटौती की जा रही थी।

फिर यन्त्र चालकों की हड़ताल तोड़ी गई। दो लाख चालकों के पांच लाख समर्थक थे। पर उनका ऐसा खूनी दमन हुआ जैसा अमरीका के इतिहास में कम ही हुआ होगा। मालिकों ने हड़ताल तोड़कों की फौज उतार दी और उनसे खूनी संघर्ष हुआ। ब्लैक हण्ड्रेड्स ने बीसियों जगहों पर सम्पत्ति नष्ट कर डाली। स्थिति को नियंत्रित करने के नाम पर लाखों फौजी बुला लिए गए। कितने ही मज़दूर नेता मार दिए गए। बहुतों को जेल, हज़ारों को कांजी हाउस जैसी जगहों में बंद कर दिया गया। उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया।

विकास की धारा पीछे नहीं लौटती। वह आगे ही बढ़ती जाती है, प्रतियोगिता से संयोजन की ओर, छोटे संयोजनों से बड़े संयोजन की ओर, फिर विराट संयोजन की ओर और फिर समाजवाद की ओर जो सबसे विराट संयोजन है।

'आप कह रहे हैं कि मैं सपना देख रहा हूं। ठीक है मैं अपने सपने का गणित प्रस्तुत कर रहा हूं और यहीं मैं पहले से आपको चुनौती दे रहा हूं कि आप मेरे गणित को ग़लत साबित करें। मैं पूंजीवादी व्यवस्था के ध्वंस की अनिवार्यता प्रमाणित करूंगा और मैं इसे गणितीय ढंग से प्रमाणित करूंगा। मैं शुरू कर रहा हूं। थोड़ा धैर्य रखें, अगर शुरू में यह अप्रासंगिक लगे।

'पहले हम किसी एक औद्योगिक प्रक्रिया की खोजबीन करें और जब भी आप मेरी किसी बात से असहमत हों, फौरन हस्तक्षेप कर दें। एक जूते की फैक्ट्री को लें। वहां लेदर जूता बनाया जाता है। मानलीजिए सौ डालर का चमड़ा खरीदा गया। फैक्टरी में उसके जूते बने। मानलीजिए दो सौ डालर के। हुआ क्या? चमड़े के दाम सौ डालर में सौ डालर और जुड़ गया। कैसे? आइए देखें।

पूंजी और श्रम ने जो सौ डालर जोड़े। पूंजी ने फैक्टरी, मशीनें जुटाई, सारे खर्चे किए। श्रम ने श्रम जुटाया। दोनों के संयुक्त प्रयास से सौ डालर मूल्य जुड़ा। आप अब तक सहमत हैं?'

सब ने स्वीकार में गर्दन हिलाई।

'पूंजी और श्रम इस सौ डालर का विभाजन करते हैं। इस विभाजन के आंकड़े थोड़े महीन होंगे। तो आइए मोटा-मोटा हिसाब करें। पूंजी और श्रम पचास-पचास डालर बांट लेते हैं। हम इस विभाजन में हुए विवाद में नहीं पड़ेंगे। यह भी याद रखें कि यही प्रक्रिया सभी उद्योगों में होती है। ठीक है न?'

फिर सब ने स्वीकृति में गर्दन हिलायी।

'अब मानलीजिए मज़दूर जूते खरीदना चाहें तो पचास डालर के ही जूते खरीद सकते हैं। स्पष्ट है न?'

'अब हम किसी एक प्रकिया की जगह अमरीका की सभी प्रक्रियाओं की कुल प्रक्रिया को लें जिसमें चमड़ा, कच्चा माल, परिवहन सब कुछ हो। मान लें अमरीका में साल भर में चार अरब के धन का उत्पादन होता है। तो उस दौरान मज़दूरों ने 2 अरब की मज़दूरी पाई। चार अरब का उत्पादन जिसमें से मज़दूरों को मिला—दो अरब—इसमें तो कोई बहस नहीं होनी चाहिए वैसे पूंजीपतियों की ढेरों चालों की वजह से मज़दूरों को आधा भी कभी नहीं मिल पाता। पर चलिए मान लेते हैं कि आधा यानी दो अरब मिला मज़दूरों को। तर्क तो यही कहेगा कि मज़दूर दो अरब का उपयोग कर सकते हैं। पर दो अरब का हिसाब बाकी है जो मज़दूर नहीं पा सकता और इसलिए नहीं खर्च कर सकता।'

'मज़दूर। अपने दो अरब भी खर्च नहीं करता—क्योंकि तब वह बचत खाते में जमा क्या करेगा? कोबाल्ट बोला।'

'मज़दूर का बचत खाता एक प्रकार का रिजर्व फंड होता है जो जितनी ज़ल्दी बनता है उतनी ही जल्दी खत्म हो जाता है। यह बचत वृद्धावस्था, बीमारी, दुर्घटना और अन्त्येष्टि के लिए की जाती है। बचत रोटी के उस टुकड़े की तरह होती है जिसे अगले दिन खाने के लिए बचा कर रखा जाता है। मज़दूर वह सारा ही खर्च कर देता है जो मज़दूरी में पाता है।

'दो अरब पूंजीपति के पास चले जाते हैं। खर्चों के बाद के सारे का क्या वह, उपभोग कर लेता है? क्या अपने सारे दो अरब का वह उपभोग करता है।

अर्नेस्ट ने रुककर कई लोगों से दो टूक पूछा। सबने सिर हिला दिया।

'मैं नहीं जानता।' एक ने साफ-साफ कह दिया।

'आप निश्चित ही जानते हैं। क्षणभर के लिए ज़रा सोचिए। अगर पूंजीपति सबका उपभोग कर ले तो पूंजी बढ़ेगी कैसे? अगर आप देश के आर्थिक इतिहास पर नज़र डालें तो आप देखेंगे कि पूंजी लगातार बढ़ती गई है। इसलिए पूंजीपति सारे का उपभोग नहीं करता। आपको याद है जब इंग्लैंड के पास हमारी रेल के अधिकांश बॉन्ड थे। फिर हम उन्हें खरीदते गए। इसका क्या मतलब हुआ? उन्हें उस पूंजी से खरीदा गया जिसका उपभोग नहीं हुआ था। इस बात का क्या मतलब है कि युनाइटेड स्टेट्स के पास मैक्सिको, इटली और रूस के करोड़ों बॉन्ड हैं? मतलब है कि वे लाखों-करोड़ों वह पूंजी है जिसका पूंजीपतियों ने उपभोग नहीं किया। इसके अलावा पूंजीवाद के प्रारम्भ से ही पूंजीपति ने कभी अपना सारा हिस्सा खर्च नहीं किया है।'

अब हम मुख्य मुद्दे पर आएं। अमरीका में एक साल चार अरब के धन का उत्पादन होता है। मज़दूर उसमें से दो अरब पाता है और खर्च कर देता है। पूंजीपति शेष दो अरब खर्च नहीं करता। भारी हिस्सा बचा रह जाता है। इस बचे अंश का क्या होता है? इससे क्या हो सकता है? मज़दूर इसमें से कुछ नहीं खर्च कर सकता क्योंकि उसने तो अपनी सारी मज़दूरी खर्च कर दी है। पूंजीपति जितना कर सकता है, करता है; फिर भी बचा रह जाता है। तो इसका क्या हो? क्या होता है?

'इसे विदेशों में बेच दिया जाता है।' कोवाल्ट ने एक जवाब ढूंढ़ा।

'एकदम ठीक! इसी शेष के लिए हमें विदेशी बाज़ार की ज़रूरत होती है। उसे विदेशों में बेचा जाता है। वही किया जा सकता है। उसे खर्चने का और उपाय नहीं है। और यही उपर्युक्त अतिरिक्त धन जो विदेशों में बेचा जाता है हमारे लिए सकारात्मक व्यापार संतुलन कहलाता है। क्या हम यहां तक सहमत हैं?'

'इस व्यवसाय के क, ख, ग पर बात करना वक्त ज़ाया करना है। हम सब इसे समझते हैं।' काल्विन ने शुष्कता से कहा।

'इस सुप्रस्तुत क, ख, ग से ही मैं आपको चकित करूंगा। यहीं। अमरीका एक पूंजीवादी देश है जिसने अपने संसाधनों का विकास किया है। अपनी पूंजीवादी औद्योगिक व्यवस्था से उसके पास काफी धन बच जाता है जिसका वह उपभोग नहीं

लगातार समझाता रहा कि टकराहट छोड़ वह बचने का उपाय तलाशें।

बहरहाल समाजवादी प्रेस ने बीड़ा उठा लिया और मज़दूरों के बीच यह प्रचारित हो गया कि किताब दबा दी गई है। लेकिन यह बात मजदूर वर्ग तक सीमित थी। फिर 'अपील टु रीज़न' नामक बड़े समाजवादी प्रकाशन ने पापा की किताब के प्रकाशन की बात चलाई। पापा तो खुश हो गए, पर अर्नेस्ट चौकन्ना हो गया। उसने कहा :

'हम किसी अज्ञात के कगार पर खड़े हैं। चारों ओर बड़ी घटनाएं गुप्त रूप से घट रही हैं। हम उन्हें महसूस कर सकते हैं। हम जान नहीं रहे कि क्या हो रहा है, पर हो तो रहा है। उनके साथ समाज का पूरा ढांचा हिल रहा है। मुझसे मत पूछो क्योंकि मुझे पता नहीं। किताब का दमन साफ इशारा है। इस उद्वेलन से कुछ जन्मने वाला है—जन्म ले रहा है। कितनी किताबें दबा दी गई हैं—हमें नहीं पता। हम अंधकार में हैं। हम देख नहीं पा रहे। जल्दी ही समाजवादी प्रेस और प्रकाशन पर गाज गिरेगी। ऐसा होने ही वाला है। हमारा गला घोंटा जाएगा।'

अर्नेस्ट की उंगली नब्ज़ पर थी। वह अन्य समाजवादियों से बेहतर देख पा रहा था घटनाक्रम को। दो दिन के अन्दर ही पहला प्रहार हुआ। 'अपील टु रीज़न' एक साप्ताहिक था और उसका मज़दूरों में सर्कुलेशन साढ़े सात लाख था। प्राय: बीस से पचास लाख के विशेष संस्करणों पर प्रहार हुआ। पोस्ट आफिस ने मनमाने ढंग से निर्णय ले किया कि विशेष संस्करण सामान्य संस्करण नहीं है इसलिए उन्हें डाक से नहीं भेजा जा सकता।

हफ्ते भर बाद एक और नियम बना कि यह अखबार षड्यंत्रकारी है और उसे डाक के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया। समाजवादी प्रचार के लिए यह गंभीर प्रहार था। 'अपील' को लेकर हताशा छा गई। कोशिश की गई कि उन्हें निजी संचार कंपनियों के माध्यम से पहुंचाया जाए, पर उन्होंने इन्कार कर दिया। इस तरह अपील को बंद होना पड़ा। फिर भी कुछ गुन्जाइश थी। किताबों का प्रकाशन जारी रखने का प्रयास हुआ। पापा की किताब की बीस हज़ार प्रतियां जिल्दसाज़ी के लिए पड़ी थीं और प्रतियां छप रही थीं। और तभी एक दिन बिना किसी चेतावनी के एक भीड़ उमड़ी—हाथों में अमरीकी झण्डा और होठों पर देशभक्ति के तराने लिए और सारे प्रेस को जलाकर ख़ाक कर दिया गया।

कैनसस में जिरार्ड एक शांत कस्बा था। वहां कभी कोई मज़दूर समस्या नहीं थी। 'अपील' यूनियन से तय मज़दूरी देता था और कस्बे में सैकड़ों को नौकरी देकर उनकी रीढ़ बना हुआ था। प्रेस को जलाने वाली भीड़ कस्बे की नहीं थी। वह मानो धरती से प्रकट हो गई थी और अपना 'काम' करके धरती में ही समा गई लगती थी। अर्नेस्ट ने इसमें भयानक षड्यंत्र सूंघ लिया। उसने कहा ब्लैक हण्ड्रेड (रूसी क्रांति के पहले रूस में संगठित प्रतिक्रियावादी भीड़) अमरीका में भी जुटाई जा रही है। यह तो शुरुआत है। और भी होगा ऐसा। 'आयरन हील' का साहस बढ़ रहा है।

उसकी चर्चा ही एकदम बंद कर दी। साथ ही उसी अचानकता के साथ किताब बाज़ार से ग़ायब हो गई। एक प्रति भी कहीं उपलब्ध नहीं बची। पापा ने प्रकाशकों को लिखा तो उन्हें बताया गया कि प्लेटें दुर्घटनावश थोड़ी खराब हो गई हैं। फिर खत-किताब शुरू हुई। संतोषजनक नतीजे नहीं निकले। फिर प्रकाशकों ने निर्णय सुना दिया कि वे फिर प्रकाशित नहीं कर पाएंगे। हां, वे प्रकाशन में अपना अधिकार छोड़ने को तैयार हो गए।

अर्नेस्ट ने साफ-साफ बता दिया: 'आपको दूसरा प्रकाशक मिलेगा ही नहीं जो आपकी किताब को दूर से छूने को भी तैयार हो। मैं आपकी जगह होता तो फौरन बचने की राह ढूंढ़ने लगता। आपको 'आयरन हील' का बस पूर्व-स्वाद मिला है।'

पर पापा तो सबसे पहले वैज्ञानिक ही थे। वह नतीजों तक कूदकर पहुंचने में विश्वास नहीं करते थे। प्रयोगशाला में प्रयोग का मतलब है छोटे-छोटे ब्योरों पर भी ध्यान देना। इसलिए वह धैर्यपूर्वक प्रकाशनों का चक्कर लगाते रहे। वे तरह-तरह के बहाने बनाते रहे, पर एक भी प्रकाशन के लिए तैयार नहीं हुआ।

जब उन्हें विश्वास हो गया कि किताब को वास्तव में दबा दिया गया है तो उन्होंने इस बात को अखबारों में प्रकाशित करने की कोशिश की। पर वहां भी उनके वक्तव्यों को प्रकाशित नहीं होने दिया गया। समाजवादियों की एक मीटिंग में जहां कई पत्रकार मौजूद थे उन्हें मौका दिखाई दिया और उन्होंने अपनी पुस्तक के दमन की कहानी सुना दी। जब दूसरे दिन उन्होंने अखबार देखा तो पहले हंसे और फिर क्रुद्ध हो गए। इस बार उसमें कोई सकारात्मकता नहीं थी। अखबारों में किताब का कोई ज़िक्र नहीं था पर बात तोड़ मरोड़कर खूबसूरती से पेश की गई थी। उन्होंने पापा के शब्दों को संदर्भ से काटकर इस तरह पेश किया कि उनकी नियंत्रित और संतुलित टिप्पणियां अराजक प्रलाप जैसी लग रही थीं। यह बहुत कौशल के साथ किया गया था। एक उदाहरण मुझे याद है। उन्होंने 'सामाजिक क्रांति' शब्दों का इस्तेमाल किया था। रिपोर्टर ने सामाजिक शब्द हटा दिया था। एसोसिएटेड प्रेस के माध्यम से इसे सारे देश में पहुंचा दिया गया और खतरे की घंटी बजा दी गई। पापा को 'अनार्किस्ट' और 'निहिलिस्ट' करार दिया गया। एक कार्टून छपा, जिसे बहुतों ने पुनर्प्रकाशित किया जिसमें उन्हें लम्बे बालों वाले, जंगली आंखों वाले, हाथ में मशालें, चाकू और बम लिए लोगों की भीड़ का नेतृत्व करते दिखाया गया था। उनके हाथ में लाल झण्डा थमाया गया था जिसे वह लहरा रहे थे।

गाली भरे संपादकीयों में उनकी भर्त्सना की गई अराजकता के लिए और यह भी इशारा किया गया कि मानसिक असंतुलन बढ़ रहा है। अर्नेस्ट ने बताया कि पूंजीवादी प्रेस का यह रवैया कोई नया नहीं है। समाजवादियों की हर मीटिंग में रिपोर्टर जाते थे ताकि उनकी कही बातों को तोड़ा-मरोड़ा जा सके और मध्यवर्ग को इतना डरा दिया जाय कि वह सर्वहारा के साथ कोई संबंध स्थापित न कर सके। अर्नेस्ट पापा को

कर पाता। उसे विदेशों में खर्च करना ज़रूरी है। यही बात दूसरे पूंजीवादी देशों के बारे में भी सच है अगर उनके संसाधन विकसित हैं। यह न भूलें कि वे आपस में खूब व्यापार करते हैं फिर भी अतिरिक्त काफी बच जाता है। इन देशों में मज़दूर सारी मज़दूरी खर्च कर देता है और इसे बचे हुए अतिरिक्त को खरीदने में असमर्थ है। इन देशों के पूंजीपति जितना भी उपयोग कर सकते हैं करते हैं फिर भी बहुत कुछ बच जाता है। इस अतिरिक्त धन को व एक दूसरे को नहीं दे सकते। फिर उसका वे क्या करें?'

'उन्हें अविकसित संसाधनों वाले देशों को बेच दें।' कोवाल्ट बोला।

'एकदम यही ठीक है। मेरा तर्क इतना स्पष्ट और सीधा है कि आप स्वयं मेरा काम आसान कर रहे हैं। अब अगला कदम! मान लिया युनाइटेड स्टेट्स अपने अतिरिक्त धन को एक अविकसित देश जैसे ब्राज़ील में लगाता है। याद रखें यह अतिरिक्त उस व्यापार से अलग है जिसका इस्तेमाल हो चुका है। तो उसके बदले में ब्राज़ील से क्या मिलता है?'

'सोना' कोवाल्ट बोला।

'लेकिन दुनिया में सोना तो सीमित है!' अर्नेस्ट ने एतराज किया।

'सोना प्रतिभूति बॉन्ड आदि के रूप में।' कोवाल्ट ने अपने को सुधारा।

'आप पहुंच गए। ब्राज़ील से अमरीका अपने अतिरिक्त धन के बदले में लेता है सिक्योरिटी और बॉन्ड। क्या मतलब हुआ इसका? इसका मतलब है अमरीका ब्राज़ील में रेल, फैक्ट्रियों, खदानों और जमीनों का मालिक बन सकता है। और तब इसका क्या मतलब हुआ?'

कोवाल्ट सोचने लगा पर नहीं सोच पाया और नकारात्मक सिर हिला दिया।

'मैं बताता हूं। इसका मतलब हुआ ब्राज़ील के संसाधन विकसित किए जा रहे हैं। जब ब्राज़ील पूंजीवादी व्यवस्था में अपने संसाधन विकसित कर लेगा तो उसके पास भी अतिरिक्त धन बचने लगेगा। क्या वह इसे अमरीका में लगा सकता है? नहीं क्योंकि उसके पास तो अपना ही अतिरिक्त धन है। तो क्या अमरीका अपना अतिरिक्त धन पहले की तरह ब्राज़ील में लगा सकता है? नहीं; क्योंकि अब तो स्वयं ब्राज़ील के पास अतिरिक्त धन है।

'तब क्या होता है? इन दोनों को तीसरा अविकसित देश ढूंढना पड़ेगा जहां वे अपना सरप्लस उलीच सकें। इस क्रम से उनके पास भी अतिरिक्त धन बचने लगेगा। महानुभाव ग़ौर करें धरती इतनी बड़ी तो है नहीं। देशों की संख्या सीमित है। तब क्या होगा जब छोटे से छोटे देश में भी कुछ अतिरिक्त बचने लगेगा।'

उसने रुककर श्रोताओं पर एक नज़र डाली। उनके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। उसे मज़ा आया। थोड़ा डर भी झांक रहा था। जितने बिम्ब खींचे थे अर्नेस्ट ने उनमें से कई उन्हें डरा रहे थे।

'मिस्टर काल्विन हमने ए. बी. सी. से शुरू किया था। मैंने अब सारे अक्षर सामने रख दिए हैं। कितना आसान है। यही तो है इसका सौन्दर्य। आपको उत्तर सूझ रहा होगा। क्या होगा जब हर देश के पास अतिरिक्त बचा रह जाएगा और तब आपकी पूंजीवादी व्यवस्था का क्या होगा?'

काल्विन का दिमाग़ परेशान हो रहा था। वह अर्नेस्ट की बातों में गलती ढूढ़ने में लगा हुआ था। अर्नेस्ट ने ही फिर शुरू किया:

'मैं अपनी बात संक्षेप में दोहरा दूं। हमने एक विशेष औद्योगिक प्रक्रिया से बात शुरू की थी। एक जूता फैक्ट्री से। हमने पाया कि जो हाल वहां है वही सारे औद्योगिक जगत में है। हमने पाया कि मज़दूर को उत्पादन का एक हिस्सा मिलता है जिसे वह पूरी तरह खर्च कर देता है और पूंजीपति पूरा खर्च नहीं कर पाता। बचे हुए अतिरिक्त धन के लिए विदेशी बाज़ार अनिवार्य है। इस निवेश से वह देश भी अतिरिक्त पैदा करने में समर्थ हो जाता है। जब एक दिन सभी इसी स्थिति में पहुंच जाएंगे तो अंततः इस अतिरिक्त का क्या होगा? मैं एक बार फिर पूछता हूं क्या होगा?

किसी ने जवाब नहीं दिया।

'काल्विन महोदय!'

'मुझे समझ नहीं आ रहा।' उसने स्वीकारा।

'मैंने तो यह सपने में भी नहीं सोचा था पर यह तो एकदम स्पष्ट लग रहा है।' ऐसमुनसेन ने कहा।

मैं कार्लमार्क्स के अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत की इतनी सरल प्रस्तुति सुन रही थी और मैं स्तब्ध और चकित बैठी थी।

अर्नेस्ट ने कहा : 'मैं आपको एक रास्ता सुझाता हूं—इस अतिरिक्त को समुद्र में फेंक दीजिए। हर साल लाखों-करोड़ों के जूते-कपड़े-गेहूं और अन्य उत्पाद समुद्र में फेंक दें। हल नहीं हो जाएगी समस्या?'

'हो तो जाएगी पर ऐसी बात करना बकवास है।' काल्विन ने कहा।

अर्नेस्ट उस पर टूट पड़ा।

'जिसकी आप वकालत कर रहे थे, आप मशीन भंजक लोग पूर्वजों की ओर लौटने की बात कर रहे थे न? क्या यह बात उससे ज्यादा बकवास है? आखिर अतिरिक्त धन की समस्या के समाधान का क्या उपाय है आपके पास? एक हल है कि अतिरिक्त का उत्पादन ही न हो। पर कैसे? आदिम उत्पादन पद्धति की ओर लौट कर? इतना विभ्रमित, अतार्किक, अव्यवस्थित और महंगी पद्धति ताकि अतिरिक्त का उत्पादन ही असंभव हो जाय?

काल्विन ने मुखरस निगला। बात स्पष्ट हो गई थी। उसने गला साफ किया और कहा :

'तुम सही हो। मैं मान गया तुम्हारी बात। यह बकवास है। लेकिन हमें कुछ करना

सपना नहीं। तुम्हारा समाजवादी सपना ... हुंह बस सपना है। हम तुम्हारे पीछे नहीं जा सकते।'

'काश आप महानुभाव थोड़ा विकास और समाजशास्त्र जानते। हमारी काफी कठिनाइयां कम हो जातीं, अगर आप जानते होते।' अर्नेस्ट ने हाथ मिलाते हुए कहा।

भंवर

उस, व्यवसायियों की दावत, के बाद एक के बाद एक ऐसी घटनाएं घटती चली गईं मानो बिजली तालियां बजा रही हो। मैं, बेचारी मैं—अपने यूनिवर्सिटी टाउन में शांत-सुखद जीवन जीने वाली, मैं और मेरी ज़िन्दगी, मानो दुनिया के बड़े सवालों के भंवर में फंस गए। मुझे नहीं पता मुझे क्रांतिवादी उसके प्यार ने बनाया या उस समझ ने जो दुनिया-समाज के बारे में उसने मुझमें विकसित की थी। पर यह सच है कि मैं क्रांति समर्थक बन गई और ऐसी घटनाओं के चक्कर में आ गई जिनके बारे में तीन महीने पहले सोच पाना कठिन होता।

मेरे जीवन में संकट समाज के संकट के साथ ही आया। सबसे पहले तो पापा की नौकरी खत्म कर दी गई। उन्हें तकनीकी तौर पर बरखास्त नहीं किया गया, उनका इस्तीफा मांग लिया गया। यह भी कोई बड़ी बात नहीं थी। पापा को दरअसल खुशी ही हुई। उन्हें विशेष रूप से खुशी इसलिए हुई कि यह सब उनकी किताब 'इकोनॉमिक्स एंड एजूकेशन' (अर्थशास्त्र और शिक्षा) के प्रकाशन के बाद हुआ। उनका ख्याल था कि उसने मामले को निर्णय तक पहुंचा दिया। शिक्षा पर पूंजीपति वर्ग के वर्चस्व को सिद्ध करने के लिए इससे बेहतर और क्या तर्क हो सकता था।

लेकिन इस प्रमाण से हुआ कुछ नहीं। किसी को पता नहीं चला कि उनका इस्तीफा जबरदस्ती लिया गया था। वह इतने विख्यात वैज्ञानिक थे कि उनके इस्तीफे के कारण की घोषणा सारी दुनिया में एक खलबली मचा देती। अखबारों में उनकी प्रशंसा और सम्मान की खबरें छपीं और इसका बखान हुआ कि अब वह रोज़-रोज़ पढ़ाने की एकरसता से मुक्त होकर अपना सारा समय शोध में लगाएंगे।

पहले तो पापा खुश हुए। फिर नाराज़ हुए—स्वस्थ क्रोध। फिर उनकी पुस्तक का दमन शुरू हुआ। यह इतने मुक्त रूप से हुआ कि शुरू में तो हम समझ ही नहीं सके। उसके प्रकाशन ने देश में तत्काल उद्वेलन पैदा किया था। पिता पर पूंजीवादी प्रेस में तत्काल इल्ज़ाम लगाए गए थे। आरोप इस तरह का था कि इतने बड़े वैज्ञानिक को समाजशास्त्र में घुस-पैठ करने की क्या जरूरत थी जिसके बारे में उन्हें कुछ खास पता नहीं और जहां वह खो जाएंगे। यह हफ्ते भर चला। पापा हंसते रहे कि किताब ने पूंजीवाद की दुखती रग छू ली है। और अचानक अखबारों और समीक्षा-पत्रिकाओं ने

करने लगते हैं। यह न भूलें कि प्रेस, चर्च और विश्वविद्यालय ही जनमत को गढ़ते हैं, देश की प्रक्रिया को दिशा देते हैं। जहां तक कलाकारों का सवाल है वे धनतंत्र की रुचियों की तुष्टि में खपते हैं।

पर धन अकेले तो वास्तविक शक्ति बनता नहीं, वह शक्ति का साधन है और शक्ति तो सरकारी होती है। सरकार को कौन नियंत्रित करता है? दो करोड़ सर्वहारा? आप भी इस बात पर हंस पड़ेंगे। अस्सी लाख विभिन्न पेशों में लगा मध्यवर्ग? सर्वहारा की ही तरह भी नहीं। फिर कौन? ढाई लाख की संख्या वाला धनिकतंत्र। पर यह ढाई लाख भी सरकार को नियंत्रित नहीं करता, हालांकि वह विशिष्ट सेवा करता है। धनिकतंत्र का दिमाग सरकार को नियंत्रित रखता है और यह दिमाग है शक्तिशाली लोगों के सात ग्रुप। और यह नहीं भूलना चाहिए कि ये ग्रुप आजकल एकदम तालमेल के साथ काम कर रहे हैं।

'मैं आपको उनमें से बस एक-रेलरोड ग्रुप, के बारे में बताऊं'। उसके पास लोगों को कोर्ट में पराजित करने के लिए चालीस हज़ार वकील हैं। उसने अनगिनत जजों, बैंकरों, संपादकों, मंत्रियों और यूनिवर्सिटी वालों और विधायकों को फ्री पास दे रखे हैं। हर राजधानी में उनकी ऐशोआराम से पोसी जा रही लॉबी है। उसके पास हज़ारों दलाल और छुटभैये नेता हैं जो कहीं भी अपने आकाओं के हित में छोटे-बड़े किसी तरह के सही-ग़लत काम के लिए जुटे रहते हैं।

'महानुभाव मैंने तो सात में से बस एक ग्रुप का खाका खींचा है। आपकी चौबीस अरब की सम्पत्ति पच्चीस सेन्ट के बराबर भी सरकारी शक्ति नहीं प्रदान करती। वह खोखली कौड़ी है और वह भी छिनने वाली है। आज धनिकतंत्र सर्वशक्तिमान है। आज उसके कब्जे में है, सीनेट, कांग्रेस, अदालतें और राज्यों की विधायिकाएं। इसलिए वह अपने अनुसार कानून बनवाता है। यही नहीं, कानून के पीछे उसे लागू करवा पाने वाली शक्ति होनी चाहिए। उसके लिए उसके पास है पुलिस, फौज, नौसेना और अंत में मिलिशिया, जिसका मतलब है हम, आप, सब।

कुछ खास बहस नहीं हुई। और डिनर खत्म हो गया। इजाज़त मांगते वक्त भी चुप्पी-सी बनी रही। लग रहा था समय का अहसास उन्हें डरा गया था।

काल्विन ने अर्नेस्ट से कहा :

'स्थिति वास्तव में खराब है। जैसे तुमने उसे पेश किया उससे मेरा कोई खास विवाद नहीं। मेरी असहमति बस मध्यवर्ग के अंत को लेकर है। हम बच जाएंगे और ट्रस्टों को उखाड़ फेकेंगे।'

'और पूर्वजों की राह लौट जाएंगे।' अर्नेस्ट ने बात पूरी कर दी।

'फिर भी यह मशीन भंजन से तो कम है और सब बकवास है इतना तो मैं जानता हूं। लेकिन करें क्या? जीवन ही बकवास हो गया है—धनतंत्र की चालों के कारण। कुछ भी हो हमारा मशीन भंजन कम से कम व्यावहारिक और संभव है जो तुम्हारा

चाहिए। हम मध्य वर्ग वालों के लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न है। हम अपने ध्वंस को नकारते हैं। हम बकवास को ही चुन रहे हैं और अपने पूर्वजों के मुद्दे और खर्चीले तरीके की ओर लौटना चाहते हैं। हम उद्योग को ट्रस्टों के पहले वाली स्थिति में ले जाएंगे। हम तोड़ डालेंगे मशीनों को। क्या करोगे तुम?'

'लेकिन आप मशीन तोड़ ही नहीं सकते, विकास की धारा को पीछे मोड़ ही नहीं सकते। आपके खिलाफ दो शक्तियां हैं हरेक तुम्हारे मध्यवर्ग से अधिक शक्तिशाली। बड़े पूंजीपति या ट्रस्ट तुम्हें पीछे लौटने ही नहीं देंगे। वे नहीं चाहते कि मशीने टूटें। ट्रस्टों से भी बड़ा और अधिक शक्तिशाली है मज़दूर वर्ग। वह भी मशीनें नहीं तोड़ने देगा। मशीनों के साथ इस दुनिया की मिल्कियत तो पूंजी और श्रम के बीच ही है। युद्ध का यही स्वरूप है। दोनों में से कोई भी मशीनों का ध्वंस नहीं चाहता। दोनों ही मशीनों का मालिक बनना चाहते हैं। इस युद्ध में मध्यवर्ग का कोई स्थान नहीं है। दो विराटों के बीच मध्यवर्ग एक बौना है। ध्वस्त हो रहे मध्यवर्ग—आप देख नहीं रहे आप दो पाटों के बीच पिस रहे हैं। शुरू हो चुकी है पिसाई।

'हमने आपको पूंजीपति वर्ग के अनिवार्य विनाश का गणित समझा दिया है। जब हर देश के पास ऐसा अतिरिक्त इकट्ठा हो जाएगा जिसका उपभोग असंभव होगा। तब अपने ही द्वारा शुरू की गई मुनाफे की व्यवस्था चरमराकर बैठ जाएगी। उस समय मशीनों का भंजन नहीं होगा। उस वक्त उनके स्वामित्व का संघर्ष होगा। अगर श्रम जीतता है तो तुम्हारे लिए आसानी होगी। अमरीका ही नहीं सारी दुनिया एक नए और शानदार युग में प्रवेश करेगी। मशीनें आदि आदमी को पीस देने की बजाय उसके जीवन को पहले से अधिक खुशहाल, बेहतर और भद्र बनाएंगी। ध्वस्त मध्यवर्ग और मेहनतकश—तब केवल मेहनतकश होंगे, मशीनों के उत्पादन के न्यायपूर्ण विभाजन में भागीदारी करेंगे। हम सब मिलकर और अच्छी मशीने बनाएंगे। कोई अतिरिक्त उत्पादन नहीं होगा जिसका उपभोग न हो, क्योंकि मुनाफा पैदा ही नहीं होगा।'

'पर मान लो मशीनों और दुनिया के स्वामित्व के संघर्ष में पूंजीपति जीत जाएं।' कोवाल्ट ने पूछा।

'तब हम और मज़दूर और आप सब इतिहास के किसी भी कमाऊ और कुख्यात अधिनायक की तरह के क्रूर अधिनायकत्व के इस्पाती जूतों के नीचे रौंद दिए जाएंगे। इस अधिनायक का उपयुक्त नाम होगा 'आयरन हील'।'

देर तक चुप्पी बनी रही। सभी कुछ गंभीर चिंतन में लगे थे.

'पर तुम्हारा यह समाजवाद का एक सपना है, सपना।' काल्विन ने दोहराया।

'मैं आपको कुछ दिखा दूंगा जो सपना नहीं है। उस 'कुछ' को मैं कुलीनतंत्र कहूंगा। आप चाहें तो इसे धनिकतंत्र कह सकते हैं। हमारा मतलब एक ही होगा—बड़े पूंजीपति या ट्रस्ट। देखें कि आज शक्ति कहां केंद्रित है। और उसके लिए समाज का वर्ग विभाजन कर लें।'

'समाज में तीन बड़े वर्ग हैं। पहला है धनिक वर्ग जिसमें पानी बैंकर, रेल के मालिक, कार्पोरेशनों के डायरेक्टर और ट्रस्टों के मालिक आते हैं। दूसरा है मध्यवर्ग, आप महानुभाव का वर्ग, जिसमें फार्मर, व्यवसायी, छोटे उत्पादक और पेशेवर लोग आते हैं। और अंत में है मेरा वर्ग-सर्वहारा जिसमें मजदूर आते हैं।

'आप मानेंगे ही कि आज अमरीका में धन का स्वामित्व ही शक्ति का सारभूत उत्स है। इस पर तीनों वर्ग का कैसा अधिकार है? आंकड़े बताते हैं—धनिकों के पास सड़सठ अरब डालर की सम्पत्ति है। इनकी संख्या एक प्रतिशत से भी कम है पर इनके पास करीब सत्तर प्रतिशत सम्पत्ति है। मध्यवर्ग के पास चौबीस अरब डालर की सम्पदा है। इनकी संख्या उन्तीस प्रतिशत है और इसके पास पचीस प्रतिशत सम्पदा है। अब बचे सर्वहारा जिसके पास चार अरब है। काम करने वालों में इनका अनुपात सत्तर प्रतिशत है पर उनके पास चार प्रतिशत ही सम्पदा है। तो सत्ता कहां है?'

'तुम्हारे ही आंकड़े के मुताबिक हम मध्यवर्ग मज़दूरों से अधिक शक्तिशाली है।' ऐसमुनसेन ने टिप्पणी की।

'हमें कमज़ोर बताने से आप धनिकों के रूबरू शक्तिशाली नहीं हो जाएंगे। और फिर मैंने अभी खत्म नहीं की है अपनी बात। सम्पदा से भी बड़ी है एक शक्ति जो इसलिए ज्यादा बड़ी है कि उसे छीना नहीं जा सकता। हमारी शक्ति, सर्वहारा की शक्ति, हमारी मांसपेशियों में है, हमारे हाथ में है जो वोट डालते हैं, हमारी उंगलियों में है जो बन्दूक का घोड़ा दबा सकती हैं। यह शक्ति हमसे छीनी नहीं जा सकती। यह आदिम शक्ति है, यह जीवन की नैसर्गिक शक्ति है। यह धन की शक्ति से बड़ी शक्ति है और इस धन को छीना नहीं जा सकता।

'लेकिन आपकी शक्ति आप से अलग की जा सकती है, छीनी जा सकती है। अन्ततः यह छीन ली जाएगी। अभी भी धनतंत्र आप से छीन ही रहा है। और तब आप मध्यवर्ग नहीं रह जाएंगे। आप नीचे उतरकर हमारी तरह सर्वहारा हो जाएंगे। मज़े की बात यह है कि तब आप हमारी शक्ति बढ़ाएंगे। हम आप भाइयों का स्वागत करेंगे और कंधे से कंधा मिलाकर मानवता की सेवा करेंगे।

'आपने देखा कि मज़दूर के पास ऐसा कुछ भी ठोस नहीं है जिसे लूटा जा सके। देश की सम्पदा में उसके हिस्से हैं कुछ कपड़े और घर का थोड़ा फर्नीचर और कभी-कभी एक मामूली सा मकान। पर आपके पास तो है ठोस दौलत-चौबीस अरब और धनिकतंत्र यह सब छीन लेगा। वैसे पूरी संभावना है कि इसके पहले सर्वहारा छीन लेगा यह सब। आपको अपनी हालत दिखाई नहीं देती? मध्यवर्ग बाघ और शेर के बीच एक हिलता-डुलता खरगोश मात्र है। अगर एक नहीं दबोचता तो दूसरा खा लेगा। अगर धनिक तंत्र पहले निगल लेता है तो याद रखें कुछ ही समय की बात है सर्वहारा उसे भी निगल लेगा।

'आपकी वर्तमान सम्पदा भी आपकी शक्ति का सही आकलन नहीं करती।

आपके धन की शक्ति आज खाली कौड़ी के बराबर है। तभी तो आप युद्ध का आह्वान कर रहे हैं—'पूर्वजों की पद्धति की ओर'। पर उसमें दम नहीं है। आप अपनी अशक्तता जानते हैं कि आपकी शक्ति खोखली है। मैं आपको दिखाऊंगा इसका खोखलापन।

'फार्मरों की क्या शक्ति है? आधे तो गुलाम ही हैं क्योंकि वे तो बस काश्तकार हैं या गिरवी हैं। एक तरह से सभी गिरवी हैं, इस कारण कि उनके उत्पाद को बाज़ार तक पहुंचाने के सारे उपकरणों—रेलें, कोल्डस्टोरेज, जहाज़, गोदाम भी—पर ट्रस्टों का नियंत्रण है। सबसे बड़ी बात तो यह कि पूंजीपतियों का ही बाज़ार पर नियंत्रण है। इस मामले में सारे फार्मर असहाय हैं। जहां तक उनकी राजनीतिक और सरकारी शक्ति का सवाल है उस पर बाद में बात करते हैं, सारे मध्यवर्ग की राजनीतिक और सरकारी शक्ति के संदर्भ में।

'दिन-रात पूंजीपति फार्मरों को चूसते हैं—उसी तरह जैसे उन्होंने मिस्टर काल्विन और दूसरे डेरीवालों को चूसा है। उसी तरह व्यवसायी चूसते रहते हैं। आपको याद है कैसे छः महीने में ही न्यूयार्क सिटी के चार सौ सिगार स्टोरों को टुबैको ट्रस्ट ने चूस लिया था? मुझे बताने की ज़रूरत नहीं आप सब जानते ही हैं कि रेलरोड ट्रस्ट का आज सारी कोयला खदानों पर कब्ज़ा है। क्या स्टैण्डर्ड आयल ट्रस्ट बीसों जहाजरानी कम्पनियों की मालिक नहीं है? क्या उसका तांबे पर नियंत्रण नहीं है और सहायक उद्योग के रूप में वे दूसरे काम नहीं करते? आज अमरीका में दस हज़ार शहर-कस्बे हैं जिसमें रोशनी स्टैन्डर्ड आयल की वजह से होती है। और इतने ही शहरों में उनके अन्दर और एक दूसरे के बीच परिवहन पर उसी का नियंत्रण है। ऐसे कामों में लगे हज़ारों छोटे पूंजीपतियों का सफाया हो चुका है। पता है न? उसी तरह आप भी जाने वाले हैं।

'छोटा उत्पादक भी फार्मर की ही तरह है। इन्हें आज कुछ दिन का मेहमान बना दिया गया है। इसी तरह पेशेवर और कलाकार लोग भी एक तरह से कृषि दास ही तो हैं। राजनीतिक लोग भी अनुचर ही हैं। मिस्टर काल्विन आप रात-दिन एक कर फार्मरों और मध्यवर्ग को एक राजनीतिक पार्टी के रूप में संगठित कर रहे हैं। क्यों? क्योंकि पुरानी पार्टियों के राजनीतिज्ञ आपकी आदर्शवादिता को कुछ नहीं समझते। और ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि वे भी अनुचर मात्र हैं, जरखरीद, धनिकतंत्र के।

'मैंने पेशेवर लोगों और कलाकारों को कृषिदास कहा। और क्या हैं वे? प्रोफ़ेसर, पादरी, संपादक धनिकतंत्र के ही मुलाज़िम हैं, उनका काम है वैसे ही विचारों का प्रचार जो धनिकतंत्र के विरुद्ध न हों और धनिकतंत्र की प्रशंसा में हों। जब भी वे धनिकतंत्र के विरोधी विचारों का प्रचार करते हैं उन्हें सेवामुक्त कर दिया जाता है और अगर उन्होंने संकट के दिनों के लिए कुछ बचाकर नहीं रखा है तो उनका सर्वहाराकरण हो जाता है। वे या तो नष्ट हो जाते हैं या मज़दूरों के बीच आंदोलनकर्ता की तरह काम

पहली बार जर्मन शासकों के सामने वे थे जिन्होंने जर्मन साम्राज्य को गढ़ा था। उनके बिना साम्राज्य चल भी नहीं सकता था। नई बात यह थी कि विद्रोह पैस्सिव था। वे लड़ नहीं रहे थे। न लड़कर उन्होंने युद्धदेवों के हाथ बांध दिए थे। उन्हें तो अवसर का इन्तज़ार था कि अपने लोलुप कुत्ते जर्मन सर्वहारा पर छोड़ दें। पर ऐसा हो नहीं पा रहा था। वह क्या करें। अपने ही विरोधी प्रजा पर कैसे हमला करें। साम्राज्य में एक भी पहिया नहीं चला, एक गाड़ी नहीं चली, एक तार नहीं भेजा जा सका। सब हड़ताल पर थे—जनता भी।

जो हाल जर्मनी का था वही अमरीका का। आखिर संगठित मज़दूर ने अपना सबक सीख लिया था। अपनी ज़मीन पर पराजित वे समाजवादियों की राजनीतिक ज़मीन पर आ खड़े हुए थे। क्योंकि जनरल स्ट्राइक एक राजनीतिक हड़ताल थी। इसके अलावा संगठित मज़दूर इस तरह पिट चुका था कि अब सोचने का वक्त नहीं था। वह हताशा में स्ट्राइक में शामिल हो गया। लाखों मज़दूरों ने अपने औज़ार डाल दिए। खासतौर पर चालक लोग। उन पर खून सवार था। उनके संगठन को ध्वस्त कर दिया गया था। फिर भी वे आ खड़े हुए थे।

सामान्य मज़दूर, असंगठित मज़दूर... सबने काम बंद कर दिया। हड़ताल ने सब जाम कर दिया था। औरतें हड़ताल की सबसे बड़ी समर्थक बन गई थीं। वे अपने मर्दों को युद्ध में मरने जाने देना नहीं चाहती थीं। सामान्य जनता का मूड भी हड़ताल के पक्ष में था। जैसे विचार संक्रामक हो गए थे। विद्यार्थी भी हड़ताल पर थे। शिक्षक आते तो खाली कक्षाएं मिलतीं। एक राष्ट्रीय पिकनिक का माहौल बन गया। मज़दूरों की एकजुटता का विचार सबको अच्छा लगा। इस विराट मज़े से कोई नुक्सान नहीं दिख रहा था। जब सभी अपराधी थे तो किसे सज़ा मिलती।

युनाइटेड स्टेट्स पंगु लग रहा था। किसी को पता नहीं था कि क्या हो रहा है। न अखबार थे, न खत। सभी समुदाय अकेले पड़ गए लग रहे थे। दुनिया मानो अस्तित्व में ही नहीं थी। यह हाल हफ्ते भर बना रहा।

हम सानफ्रांसिस्को में नहीं जान पा रहे थे कि खाड़ी के उस पार ओकलैंड या बर्कले में क्या हो रहा था। संवेदनाओं पर भयानक असर पड़ रहा था या हताशा बढ़ रही थी। लगता था कोई महान त्रासदी घट गई है—राष्ट्र की नब्ज़ बंद हो गई थी। सच कहें तो देश ही मृत लग रहा था। सड़कों पर कोई सवारी नहीं थी। फैक्ट्रियों की सीटी बंद हो गई थीं। बिजली की सनसनाहट नहीं थी। अखबारों की आवाजें बंद थीं। बस लोग दिख जाते प्रेतों की तरह—चुप्पी के कारण अवास्तविक लगते।

उस हफ्ते विशिष्ट तंत्र को सबक मिल गया। उसने सीख भी लिया। जनरल स्ट्राइक चेतावनी थी। ऐसा फिर न होने पाए, तंत्र ने निश्चय कर लिया।

सप्ताहान्त के बाद जैसा पूर्वनिश्चित था जर्मनी और अमरीका में टेलीग्राफ वाले काम पर लौट आए। उनके माध्यम से दोनों देशों के नेताओं को अल्टीमेटम दिया। युद्ध

किसी न किसी तरह खर्च तो करना ही है।

उसने कहा— 'जानते हो तुम्हारी बेटी के उस समाजवादी प्रेमी से मैंने क्या कहा? मैंने कहा कि हम मज़दूर वर्ग के चेहरों को रौंदेंगे। समझे? जहां तक तुम्हारा सवाल है; मैं एक वैज्ञानिक के रूप में तुम्हारा बहुत सम्मान करता हूं। पर अगर तुम अपनी किस्मत मज़दूरों से जोड़ते हो तो अपने चेहरे के बारे में सोचो। बस।' और वह मुड़कर चला गया।

जब हमने इसे अर्नेस्ट को बताया तो वह बोला— 'इसका मतलब हुआ हमें अपनी योजना से पहले ही शादी करनी पड़ेगी।

मैं उसका तर्क नहीं समझ सकी पर जल्दी ही पता चल गया। इसी समय सिएरो मिल्स के तिमाही लाभांश मिलने वाले थे, या यूं कहें कि मिलने चाहिए थे। क्योंकि पापा को नहीं मिले थे। कई दिनों तक इन्तज़ार करने के बाद उन्होंने सेक्रेटरी को लिखा। तुरंत जवाब मिला कि उनके पास कोई रिकार्ड नहीं है कि आपके पास शेयर हैं। कृपया विस्तार से जानकारी दें।'

'मैं उन्हें भरपूर जानकारी दूंगा। उन्हें हैरान कर दूंगा।' यह कर वह बैंक चले गए, सेफ से उन शेयरों को लाने। वहां से लौटकर बोले—

'ये अर्नेस्ट अनूठा व्यक्ति है, बेटी! मैं फिर कह रहा हूं ये तुम्हारा नौजवान अनूठा है।'

मैं जान गई थी। जब भी वह अर्नेस्ट की इस तरह प्रशंसा करते तो इसका मतलब होता कोई मुसीबत आने वाली है।

'वे हमारा चेहरा रौंद चुके हैं। शेयर वहां थे ही नहीं। सेफ खाली था। तुम्हें शादी जल्दी ही कर लेनी होगी।'

पापा ने अपने वैज्ञानिक तरीकों पर ज़ोर दिया। उन्होंने सिएरो मिल्स को कोर्ट में घसीटा पर वे उसके खातों को कोर्ट में नहीं मंगवा सके। कोर्ट उनके नहीं, मिल के नियंत्रण में थी। बात साफ थी। कानून ने उन्हें पीट दिया। नंगी लूट को सही माना गया।

हंसी आती है अब सोचकर, जिस तरह पापा को नीचा दिखाया गया। एक दिन यूं ही सड़क पर विक्सन से भेंट हो गई और पापा ने उससे बोल दिया, वह कितना बड़ा बदमाश है। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया हमला करने के अपराध में, उन पर जुर्माना ठोका गया और शांति बनाए रखने की चेतावनी दी गई। यह सब इतना हास्यास्पद था कि घर लौट कर वह खूब हंसे। पर स्थानीय प्रेस में हंगामा हो गया। इस पर गंभीर चर्चा हुई कि कैसे समाजवाद स्वीकारने वाले को हिंसा के कीटाणु ग्रस लेते हैं। उदाहरण दिया गया कि पापा जैसे शांतिप्रिय वैज्ञानिक भी हिंसक हो गए, समाजवादी होने के बाद। कई अखबारों ने यह भी सुझाया कि उनका दिमाग कमज़ोर हो गया है और उन्हें दिमाग का इलाज कराने पागलखाने में भर्ती हो जाना चाहिए। यह केवल बात नहीं थी, आसन्न खतरा था। पर पापा ने इसे समझ लिया। बिशप के उदाहरण से उन्हें सबक

मिल गया था। वह चुप रहे—जो भी अन्याय हो। दुश्मन भी चकित थे।

फिर घर का सवाल उठा। उसे गिरवी दिखाया गया और हमें उसे छोड़ना पड़ा। ज़ाहिर है गिरवी रखने का सवाल ही नहीं था। ज़मीन और मकान का पूरा पैसा चुका दिया गया था। घर पूरी तरह हमारा था। पर गिरवी रखने के कारण प्रस्तुत हो गए हस्ताक्षर के साथ। पापा विचलित नहीं हुए। पहले पैसे लूटे गए थे। अब घर! कोई चारा भी नहीं था। समाज का तंत्र उनके हाथ में था जो उन्हें तोड़ने पर आमादा थे। वह दिल से दार्शनिक थे। अब तो क्रोध भी नहीं आता था। बोले—

'मुझे टूटना ही है पर मैं यह तो कर ही सकता हूं कि कम से कम टूटूं। मेरी हड्डियां कमज़ोर हैं और मैंने सबक ले लिया है। ईश्वर जानता है मैं अपने अंतिम दिन पागलखाने में नहीं बिताना चाहता।'

मुझे बिशप मोरहाउस की याद आ गई, जिन्हें मैंने काफी देर से छोड़ रखा था। पर पहले मैं अपनी शादी के बारे में बता दूं। जैसी घट रही थीं घटनाएं, शादी-वादी बेमानी थी। इसलिए बस उसका जिक्र कर देती हूं। जब हम घर से निकाले गए तो पापा बोले—

'अब हम वास्तव में सर्वहारा बन गए। मैंने तुम्हारे नौजवान से अक्सर ईर्ष्या की है, क्योंकि वह सर्वहारा की स्थिति को वास्तव में जानता है। अब मैं स्वयं जानने की कोशिश करूंगा।'

पापा में साहसिक उद्यम की स्पिरिट मज़बूत रही होगी। उन्होंने हमारी विपदा को एक ऐडवेंचर की तरह लिया, न तो क्रोध था, न तिक्तता। वह बेहद दार्शनिक और सरल थे—ऐसे में बदले की भावना की गुन्जाइश नहीं थी। वह जितने चेतनशील थे उसमें यह नहीं हो सकता था कि भूल जाएं कि हम कितनी सुविधाएं छोड़ रहे थे। तो हम सानफ्रांसिस्को के एक स्लम में रद्दी से कमरों वाले घर में आ गए। मार्केट स्ट्रीट के उस घर से एक बच्चे के उत्साह से भर कर उन्होंने अपना नया ऐडवेन्चर शुरू किया—स्पष्ट दृष्टि और साधारण मस्तिष्क की पकड़ तो साथ थी ही। वह मानसिक रूप से कभी फूल-फल नहीं सके। उनके लिए मूल्य थे तो गणितीय और वैज्ञानिक तथ्य। मेरे पापा महान् थे। उनका मस्तिष्क और आत्मा महापुरुषों वाले थे। मेरे लिए अर्नेस्ट से महान् और कोई नहीं था। पर कुछ अर्थों में पापा उससे भी महान् थे।

इस परिवर्तन से मुझे भी कुछ राहत मिली। और कुछ नहीं तो उस संगठित बहिष्कार से तो मुक्ति मिली, जिसे हम यूनिवर्सिटी में भोग रहे थे। परिवर्तन मेरे लिए भी ऐडवेंचर था, इसलिए और कि यह एक 'लव-ऐडवेंचर' था। किस्मत ने पलटा खाया तो शादी जल्दी में करनी पड़ गई थी और मैं नए घर में पत्नी की हैसियत से रह रही थी।

जीवन में सबसे बड़ी बात यह थी कि मैं अर्नेस्ट को खुशी दे पा रही थी। उसके तूफानी जीवन में मैंने उसकी परेशानी नहीं बढ़ाई-बस सुख-शांति देने की कोशिश की।

व्यवस्थापिकाओं में बहुमत नहीं मिला। हमने हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव के लिए पचास सीटें जीतीं पर शपथ के बाद उन्हें समझ में आया कि उनके पास शक्ति तो है ही नहीं। फिर भी उनकी हालत ग्रांज पार्टी से बेहतर थी। उन्हें तो कई राज्यों में बहुमत मिला था पर उन्हें सत्ता नहीं दी गई। अधिकारियों ने पद छोड़ने से इन्कार कर दिया। न्यायालय शासकों की मुट्ठी में थे। पर यह तो बाद की बात है। अभी तो 1912 के उद्विग्न दिनों की कहानी बाकी है।

कठिन दिनों के कारण उपभोग में भारी गिरावट आई थी। मज़दूर बेकार थे तो क्या खरीदते। नतीजन धनिकों के पास अतिरिक्त धन इकट्ठा होता गया। इसे विदेशों में लगाना अनिवार्य हो गया। धन के लगाने की अनिवार्यता ने जर्मनी से टकराहट बढ़ा दी। आर्थिक टकराहटें युद्ध तक ले जाती हैं। इस बार भी वही हुआ। जर्मन युद्धलोलुप युद्ध की तैयारी कर रहे थे। वही अमरीका में भी हुआ।

युद्ध के काले बादल मंडराने लगे। विश्वव्यापी विपदा की तैयारी शुरू हो गई। हर जगह समय कठिन था—बेरोज़गारी, नष्ट होता हुआ मध्यवर्ग, विश्व बाज़ार में आर्थिक हितों की टकराहट, समाजवादी क्रांति की फुसफुसाहट, आहट।

विशिष्ट तंत्र जर्मनी से युद्ध चाहता था। दर्जनों कारण थे। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्ते फेटे गए तो ये सोचते थे उन्हें लाभ ही होगा। युद्ध में राष्ट्रों का अतिरिक्त धन खप जाएगा, बेरोज़गारी कम हो जाएगी। योजनाओं के लिए समय मिल जाएगा। युद्ध से विशिष्ट तंत्र का विश्व बाज़ार पर कब्ज़ा हो जाएगा। एक विराट सेना अस्तित्व में आ जाएगी जिसे कभी भंग नहीं किया जा सकेगा। और फिर समाजवाद बनाम विशिष्ट तंत्र अमरीका बनाम जर्मनी में रूपान्तरित हो जाएगा।

युद्ध से यही सब होता अगर समाजवादी न होते। पश्चिम के नेताओं की हमारे घर में बैठक हुई। हम क्या करें तय हुआ। यह पहला मौका नहीं था जब हमने युद्ध रोका था। पर अमरीका में यह पहली बार हुआ था। हमने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ब्यूरो से सम्पर्क किया। तेजी से सलाह मशविरा होने लगा।

जर्मन समाजवादी हमारे साथ थे। उनकी संख्या पचास लाख थी। वे फौज में भी थे। उनका ट्रेड यूनियनों से दोस्ताना संबंध था। दोनों देशों में समाजवादियों ने खुलकर युद्ध विरोधी घोषणा कर दी और जनरल स्ट्राइक की धमकी दे दी। तैयारी शुरू हो गई। सारी दुनिया की क्रांतिकारी पार्टियों ने शांति के सिद्धांत की पुष्टि में घोषणाएं कर दीं-हर कीमत पर शांति विद्रोह और क्रांति की कीमत पर भी।

जनरल स्ट्राइक अमरीकी समाजवादियों की बड़ी जीत थी। चार दिसम्बर को अमरीकी दूत को जर्मनी से वापस बुला लिया गया। उस रात जर्मन नौसेना ने होनोलुलू पर हमला कर दिया और तीन जहाज डुबो दिए। दूसरे दिन जर्मनी और युनाइटेड स्टेट्स ने युद्ध की घोषणा कर दी। घण्टों बाद दोनों देशों के समाजवादियों ने हड़ताल का ऐलान कर दिया।

नेताओं ने भारी कोशिश की फार्मरों को अपनी ओर करने की पर समाजवादी प्रेस और प्रकाशन के विनाश से हम पंगु हो गए थे। व्यक्ति प्रचार की पद्धति अभी पकी नहीं थी। इसी तरह काल्विन जैसे लोग जो खुद लुटे हुए फार्मर थे कुछ दिनों के लिए फार्मरों को लुभा ले गए। पर यह अभियान सफल नहीं होने वाला था।

अर्नेस्ट ने एक बार हंस कर कहा था— 'बेचारे फार्मर! बड़े पूंजीपति उन्हें कभी आगे तो कभी पीछे नचाते हैं।'

यही तो हाल था। सातो ट्रस्टों ने अपने संसाधन जुटा कर एक फार्म ट्रस्ट बना दिया था। रेलों ने किराया और बैंकों ने मूल्य नियंत्रित कर फार्मरों का खून चूस लिया था और उन्हें कर्ज में डुबा दिया था। उन्हें भारी रकम उधार दी गई थी। वे जाल में फंस गए थे। बस जाल उठा लेने की देर थी। यही किया फार्म ट्रस्ट ने।

1912 के कठिन दिनों में फार्म बाज़ार लुढ़क रहा था। रेलों ने किराया बढ़ाकर फार्मरों की कमर तोड़ दी। मजबूरी में उन्होंने और कर्ज लिया। उन्हें पुराना कर्ज लौटाने से रोका गया। फिर बन्धक खत्म कर दिए गए और कर्जों की जबर्दस्ती वसूली शुरू हुई। फार्मरों ने जमीनें फार्म-ट्रस्ट को सौंप दीं। और कर भी क्या सकते थे। जमीन दे देने के बाद फार्मर फार्म ट्रस्ट के मुलाज़िम हो गए—मैनेजर, सुपरिन्टेंडेंट, फोरमैन-यहां तक कि मज़दूर। मजदूरी के लिए काम करने की मजबूरी थी। वे ज़मीन से जुड़े दास से हो गए। वे मालिकों, धनिकों को छोड़ नहीं सकते थे। वे शहर में भी नहीं जा सकते थे क्योंकि वहां भी उनका ही राज था। एक ही चारा था—जमीन छोड़ें तो आवारा हो जाएं यानी भूखों मरें। वहां भी हताशा ही मिलनी थी क्योंकि आवारगी के खिलाफ सख्त कानून बने थे और सख्ती से लागू किए जाते थे।

निश्चित ही कहीं-कहीं कुछ फार्मर या उनका समुदाय विशेष स्थितियों के कारण नष्ट होने से बच गए थे। पर वे अपवाद ही थे। उन्हें भी अगले ही साल नाथ दिया गया।

इन्हीं हालात में अर्नेस्ट के अलावा दूसरे समाजवादी नेताओं ने सोच लिया कि पूंजीवाद का अंत आ गया है। कठिन समय, नतीजन बेरोजगारों की फौज, फार्मरों और मध्यवर्ग का विध्वंस, ट्रेडयूनियनों की हर जगह हार—समाजवादियों का सोच लेना कि पूंजीवाद का अंत आ गया है और धनिकतंत्र के सामने चुनौती फेंकी जा सकती है कोई गैर मुनासिब बात नहीं थी।

हमने कितनी ग़लत आंकी थी दुश्मन की शक्ति। हर जगह समाजवादियों ने मतपेटिकाओं द्वारा अपनी भावी विजय की घोषणा कर दी, साफ-साफ अपनी मंशा बता दी। धनिकतंत्र ने चुनौती स्वीकार ली। उसने नाप-तौल कर हमारी शक्ति विभाजित कर दी और अन्ततः शिकस्त दे दी। उसने अपने गुप्त एजेन्टों के माध्यम से हल्ला मचाया कि समाजवाद नास्तिक और ईश्वर विरोधी है। उसने एक हिस्सा छीन लिया। उसी ने ग्रांज पार्टी को शहरों तक पहुंचा मध्यवर्ग में जान फूंकी।

फिर भी समाजवादी भारी बहुमत से जीते, पर अधिकारी पदों पर नहीं और

उसे आराम दिया, यही मेरे प्यार का पुरस्कार था। इसमें मैं असफल नहीं हुई। मुझे इससे और कौन सी खुशी मिलती कि मैं उसकी थकी-दुःखी आंखों में खुशी का प्रकाश भर कर उसकी चिंताओं को थोड़ी देर के लिए कम कर सकती थी।

वे प्यारी थकी आखें। उससे ज्यादा शायद ही कोई मेहनत करता हो-सारी मेहनत औरों के लिए। यह था उसका पौरुष। वह मानवीय और प्रेमी जीवन था। उसमें सहज जुझारूपन था, ग्लैडिएटरों जैसा शरीर और ईगल वाली स्पिरिट। वह मेरे प्रति कवि की तरह मृदु और कोमल था। वह कवि था ही, कर्म में संगीतकार! सारा जीवन मानव संगीत गाता रहा। वह यह सब बस मानव प्रेम के कारण करता था। मानव के लिए ही वह मारा गया और कुर्बान हो गया।

यह सब करते हुए भविष्य में पुरस्कृत होने की आशा से वह मुक्त था। उसकी धारणा में भविष्य के जीवन की बात ही नहीं थी। वह जो अमर ज्योति की तरह जलता था अपनी अमरता को नकारता था—ऐसी थी उसकी विडंबना। उसकी स्पिरिट इतनी गर्म थी पर उस पर हावी थी रूखी भौतिकवादी एकात्मता। मैं उसका विरोध करती यह कह कर कि मैं उसकी अमरता, उसकी आत्मा के पंखों से नापती हूं और मुझे तो अपने जीवन को चरितार्थ करने के लिए कई जन्म तक जीना होगा। इस पर वह हंस देता और उसकी बांहें मेरी ओर उछल पड़तीं। वह मुझे 'अपनी प्यारी पराभौतिकवादी' कहता। ऐसे में उसकी थकान चुक जाती और उसकी आंखों में प्यार के प्रकाश की खुशी फैल जाती। यह स्वयं उसकी अमरता का प्रमाण होता।

वह मुझे अपनी द्वैतवादी कहता। वह बताता कि कान्ट ने शुद्ध तर्कबुद्धि से तर्क बुद्धि का अंत कर दिया था ताकि ईश्वर की पूजा हो सके। वह मुझे भी वैसा ही अपराधी साबित करता। और भींच लेता जब मैं अपना अपराध स्वीकार लेती। फिर फूटती उसकी निराली हंसी। इस वंशानुगतता और परिवेश, उसकी मौलिकता और जीनियस की वैसे ही व्याख्या नहीं कर सकते, जैसे अंधेरे में टटोलता विज्ञान जीवन की अंतर्वस्तु के सार का विश्लेषण नहीं कर सकता-ऐसा उससे कहने का कई बार मन करता।

मेरे ख्याल से 'स्पेस' ईश्वर की छाया है और आत्मा, ईश्वर के चरित्र की छाप। जब वह मुझे आध्यात्मिक कहकर चिढ़ाता तो मैं उसे अमर भौतिकवादी कहती। हमारा प्यार इसी तरह जारी था—हम खुश थे। मैं उसके भौतिकवाद को क्षमा कर देती क्योंकि वह दुनिया में बिना किसी आत्मिक लाभ की आकांक्षा और अभिमान के इस संसार में अनथक काम करता था।

पर उसमें मान तो था—ऐसा कैसे होता कि वह ईगल की तरह हो और अभिमान भी न हो। उसकी दलील थी कि एक मर्त्य जीवन का अपने को वह ईश्वर तुल्य समझना किसी देव के अपने को देव तुल्य समझने से अधिक सूक्ष्म बात है। इसी तरह वह अपनी मर्त्यता को उदात्त करता। वह किसी कविता का अंश उद्धृत करता। उसने

कभी पूरी कविता नहीं पढ़ी थी, न ही लेखक का नाम खोज पाया था। मैं वह अंश प्रस्तुत कर रही हूं—इसलिए नहीं कि वह इसे बेहद पसंद करता था, बल्कि इसलिए भी कि वह उसकी स्पिरिट और अपनी स्पिरिट की उसकी धारणा के विरोधाभास को उजागर करती है। क्योंकि यह भला कैसे संभव था कि कोई उर्जामय, आवेगमय, उदात्त व्यक्ति ऐसी कविता गाए फिर भी क्षणभंगुर और मर्त्य मानव मात्र हो। यह रही कविता—

खुशी दर खुशी, लाभ दर लाभ
मेरे जन्म सिद्ध अधिकार
मैं अपने अनन्त दिवसों की प्रशंसा में
चिल्लाता हूं और धरती गूंजती है
हालांकि मैं उन सारी मौतों से मरता हूं
जिनसे कोई व्यक्ति कालान्त तक मर सकता है
फिर भी मेरे आनन्द का प्याला भरा है
हर देश-काल में—
अभिमान की झाग, सत्ता की तान
नारीत्व की मृदुता
क्योंकि अच्छी है प्यास

मैं जीवन के लिए, मृत्यु के लिए, जीता हूं
मेरे होठों पर गीत थिरकते हैं
क्योंकि मैं जब मरूंगा, कोई और 'मैं' प्याले को आगे बढ़ा देगा।

जिसे तुमने इडन के बगीचे से निकाला था
मेरे खुदा! वह मैं था... मैं
और मैं तब भी रहूंगा जब धरती और हवा में
सागर में आकाश तक पड़ जाएगी दरार
क्योंकि यह मेरा संसार है, मेरा शानदार संसार
मेरे प्यारे दुखों का संसार
नवजात मैं की मद्धम मकार से
नारी की वेदना से तबाही तक

एक अजन्मी जाति की धड़कनों से लबरेज़
एक संसार की आकांक्षा से विदीर्ण
मेरे नौजवान जंगली खून की उमड़ती बाढ़
निर्णय की आग की प्यास बुझा देगी।

अभी भी उम्मीद बाकी है। हमने उनके मामले को उठाने की नाकाम कोशिश की। कुछ खास पता भी नहीं चल पाया इसके अलावा कि थोड़ी उम्मीद बाकी है। अर्नेस्ट ने पूरी तिक्तता के साथ कहा—

'ईसा मसीह ने धनी नौजवान से कहा था कि वह अपना सब कुछ बेच दें। बिशप ने आदेश माना और आज पागलखाने में है। यीशू के जमाने से वक्त बदल गया है। आज अगर कोई व्यक्ति अपना सब कुछ गरीबों को दे देता है तो पागल कहा जाएगा। कोई बहस नहीं। यह समाज की वाणी है।'

जनरल स्ट्राइक

1912 के उद्वेलन में अर्नेस्ट जीत गया भारी बहुमत से। समाजवादियों को इतना अधिक मत मिलने का एक कारण था। हर्स्ट का विनाश। (वह एक निम्न मध्यवर्गीय समाजवाद की बात कर रहा था और थोड़े ही दिनों में काफी लोकप्रिय हो गया था।) ऐसा करने में धनिक तंत्र को विशेष कठिनाई नहीं हुई। हर्स्ट अपने अखबार चलाने में करीब दो करोड़ डालर सालाना खर्च करता था। इतना-इससे ज्यादा ही वह मध्यवर्ग से विज्ञापन के रूप में वापस पा जाता था। उसकी शक्ति मिडिल क्लास में थी। ट्रस्ट उसे विज्ञापन नहीं देते थे। हर्स्ट को नष्ट करने के लिए उससे विज्ञापन छीन लेना काफी था।

अभी तक सारा मध्यवर्ग नहीं नष्ट हुआ था। उसका मजबूत अस्थिपंजर बाकी था। पर शीक्तहीन था। छोटे उद्योगपति और व्यवसायी पूरी तरह धनिकों की दया पर निर्भर थे। उनके पास अपनी आर्थिक या राजनीतिक आत्मा नहीं बची थी। जब धनिक तंत्र का आदेश मिला तो उन्होंने विज्ञापन रोक दिया।

हर्स्ट बहादूरी से जूझा। वह पन्द्रह लाख के मासिक घाटे पर अपने अखबार निकालता रहा। वह विज्ञापन भी प्रकाशित करता रहा हालांकि अब उसके लिए पैसे नहीं मिलते थे। फिर आदेश मिला और मध्यवर्ग ने हर्स्ट को नोटिसों में डुबा दिया कि वह पुराने विज्ञापन न छापे। हर्स्ट नहीं माना। उसे शासनादेश मिला। फिर भी वह नहीं माना। फिर उसे न्यायालय की अवमानना के लिए छः महीने की कैद हो गई। ढेरों डेमरेज के मुकदमें ठोक दिए गए और वह दिवालिया हो गया। अब कुछ नहीं बचा था।

हर्स्ट के साथ ही डेमोक्रेटिक पार्टी के विध्वंस के बाद उनके अनुयायियों के पास दो ही रास्ते थे—समाजवादी पार्टी या रिपब्लिकन पार्टी। तभी हमें हर्स्ट के नकली समाजवाद के प्रचार का लाभ मिल गया क्योंकि उसके अधिकांश अनुयायी हमारी ओर आ गए।

फार्मरों को भी इसी समय शिकार बनाया गया था। उनका भी मत हमें ही मिलता अगर थोड़े दिनों के लिए ग्रांज पार्टी का उभार न हो पाता। अर्नेस्ट और समाजवादी

कहा—'नौजवान, तुम एकदम सही कहते हो-मजदूर को बहुत कम मजदूरी मिलती है। मैंने जीवन भर कोई काम नहीं किया, सिवाय कभी-कभी सुन्दर शब्दों में अपील करने के—मैं सोचता था मैं संदेश का प्रचार कर रहा हूं—फिर भी मुझे पांच लाख डालर मिलते थे। मुझे अन्दाज़ा भी नहीं था कि पांच लाख डालर कितना है जब तक यह नहीं पता चला कि वह तो आलू, रोटी, गोश्त, कोयले वगैरह का पहाड़ खरीद सकता है फिर मुझे कुछ और समझ में आया कि इतना आलू, रोटी, गोश्त, कोयला मेरा है पर मैंने उसके लिए कुछ नहीं किया है। यह भी समझ में आया वह सब किसी और ने पैदा किया है पर लूट लिया गया है उससे। और जब मैं गरीबों के बीच आया तो पता चला कि वही थे जो भूखे और दरिद्र थे। क्यों लूट लिए गए थे?'

हम उनकी कहानी तन्मय हो सुनते रहे।

'धन? मैंने उसे अलग-अलग बैकों में अलग-अलग नामों से जमा कर दिया है। उसे मुझसे छीना नहीं जा सकता क्योंकि वह मिलेगा ही नहीं। और कितना बढ़िया है वह धन। उससे जितना ज्यादा भोजन खरीदा जा सकता है। मुझे पहले पता ही नहीं था कि धन क्या-क्या कर सकता है?'

'काश! कुछ हमें प्रचार के लिए मिल जाता कितना भला होता!' अर्नेस्ट ने डूब कर कहा। बिशप ने पूछा—

'तुम ऐसा सोचते हो? मुझे राजनीति में ज्यादा विश्वास नहीं। मैं तो समझता भी नहीं राजनीति।'

अर्नेस्ट इन मामलों में संवेदनशील था। उसने अपनी बात दोहराई भी नहीं। हालांकि वह जानता था कि धन की कमी के कारण समाजवादी पार्टी कितनी मुसीबत में थी।

बिशप ने जारी रखा— 'मैं सस्ती जगहों में रहता हूं। मुझे डर है इसलिए एक ही जगह ज्यादा दिन नहीं रहता। मैं मजदूर बस्तियों में दो कमरे किराए पर ले लेता हूं। शाहखर्ची लगती है यह बात। पर जरूरी है। इसकी भरपाई के लिए मैं अपना खाना खुद पका लेता हूं या सस्ती जगह से खरीद लेता हूं। मैंने खोज निकाला है। तामाल (एक मैक्सिकन खाना) थोड़ी ठंड बढ़ जाय तो बहुत अच्छा लगता है। थोड़े महंगे होते हैं पर एक दूकान है, जहां दस सेन्ट के तीन मिलते हैं। वे उतने अच्छे तो नहीं पर गर्मी पहुंचाते ही हैं।'

'तो इस तरह नौजवान! मुझे संसार में अपना काम मिल गया है—तुम्हारी वजह से, मालिक का काम।' उन्होंने मेरी ओर देखा, आंखों में चमक थी, 'तुमने मुझे मालिक की भेड़ों को खिलाते पकड़ लिया। मुझे विश्वास है तुम लोग मेरा रहस्य, रहस्य ही रहने दोगे।'

वह लापरवाही से बोल रहे थे पर डर झांकता था। उन्होंने फिर आने को कहा। पर हफ्ते भर बाद ही हमने खबर पढ़ी कि उन्हें पागलखाने भेज दिया गया है। छपा था कि

मैं इन्सान हूं, इन्सान इन्सान झलझलाते मांस
से लक्षित धरती की धूल तक
गर्भ के पोषक अंधेरे से
मेरी नग्न आत्मा की चमक तक
मेरी हाड़-मांस का पर्याय
सारा संसार मेरी इच्छा में जीवन्त
शापित इडन की अनबुझी प्यास
धरती को भरपूर करेगी तैयार
सर्वशक्तिमान ईश्वर जब मैं जीवन के पात्र से
उसकी इन्द्रधनुषी चमम पोछूं
तो असहाय अनंत रात
मेरे सपनों के लिए बहुत लम्बी न सिद्ध हो

जिसे तुमने इडन के बगीचे से निकाला था
वह मेरे खुदा! वह मैं था... मैं
और मैं रहूंगा तब भी जब धरती से हवा तक
पड़ जाएगी दरार, सागर से आकाश तक
क्योंकि यह है मेरा संसार, मेरा शानदार संसार
शीत कटिबंध की धारा की बेहतरीन चमक से
मेरी अपनी रति-रात्रि के धुंधलके तक

अर्नेस्ट हमेशा काम के मामले में अतिवादी था। शरीर की मजबूत काठी साथ देती थी। पर वह भी आंखों में थकावट के भाव पर पर्दा नहीं डाल पाती थी—उसकी प्यारी थकी आंखें। वह साढ़े चार घंटों से ज्यादा कभी नहीं सोता था। फिर वह जितना कुछ करना चाहता था उसके लिए समय पूरा नहीं पड़ता था। प्रचारक के रूप में वह अनवरत् काम करता था और मज़दूर संगठनों में उसके कार्यक्रम बहुत पहले से तय रहते थे। और चुनाव प्रचार। उसमें तो वह एक आदमी पूरा काम करता ही था। जो थोड़ी बहुत रायल्टी मिलती थी, समाजवादी प्रकाशन बंद हो जाने से, वह भी बंद हो गई और आजीविका के लिए मुश्किल खड़ी हो गई। पत्रिकाओं के लिए वह वैज्ञानिक और दार्शनिक विषयों के लेखों का अनुवाद करने लगा। थका-हारा घर लौटता तो अनुवाद का काम लेकर देर तक जूझता रहता। और फिर अपना अध्ययन भी तो करते रहना था जिसे उसने अंतिम दिन तक जारी रखा था। उसका अध्ययन भी तो अपार था।

इस सब के बावजूद उसके पास मुझे प्यार करने, खुश रखने, का समय था। यह इसलिए संभव हो गया था कि मेरा जीवन उसके जीवन में पूरी तरह घुल-मिल गया था। मैंने शार्टहैंड और टाइपिंग सीख लिया था और उसकी सेक्रेटरी बन गई थी। उसने

ज़ोर दिया कि मैं उसका काम आधा बांट लूं। इसके लिए मुझे उस काम को ठीक से समझना भी पढ़ा। हमारी रुचियां भी घुल मिल गईं और फिर हम साथ-साथ काम करते, साथ ही खेलते-खिलते। काम के बीच हम कुछ क्षण चुरा लेते, एक-दो शब्द, एक पुचकार, प्यार के प्रकाश की एक झलक। इस चोरी से वे क्षण और आनन्ददायी हो जाते। हम एक ऊंचाई पर जी रहे थे, जहां हवा में शिद्दत और चमक थी, जहां परिश्रम मानवता के लिए था और जहां क्षुद्रता और स्वार्थ का प्रवेश नहीं था। हम प्यार से प्यार करते थे और सर्वोत्तम से कम को वहां इजाज़त नहीं थी। और फिर मैं भी तो असफल नहीं थी, उसे सुख देती जो औरों के लिए ही परिश्रम कर रहा था—मेरा प्यारा थकीं आंखों वाला सांसारिक।

बिशप

शादि के बाद एक दिन बिशप मोरहाउस से भेंट हो गई। घटनाक्रम ठीक से बता दूं। बिशप शरीफ इन्सान था और कन्वेंशन के बाद दोस्ताना सलाह मानकर छुट्टी पर चला गया था। पर वह लौटा तो चर्च का संदेश लोगों तक पहुंचाने का निश्चय दृढ़तर हो चुका था। उसका पहला सर्मन वैसा ही था जैसा उसने कन्वेंशन में बोला था और उद्वेलन शुरू हो गया था। उसने और जोर देकर, ब्योरे के साथ बताया कि चर्च यीशू के रास्ते से भटक कर धन देवता की राह चल पड़ा था और उसे ही स्थापित कर दिया गया था।

परिणाम यह हुआ कि उसे एक प्राइवेट सेनीटोरियम में दिमाग के इलाज के लिए पहुंचा दिया गया। अखबारों में उसकी संतता और दु:खद मनोविकार के किस्से छपे। उसे सेनीटोरियम में कैदी की तरह रखा गया। मैं कई बार गई, पर मिलने नहीं दिया गया। मैं एक नार्मल संत सरीखे भद्र व्यक्ति के समाज की क्रूर शक्तियों द्वारा दमन की त्रासदी से बेहद प्रभावित थी। बिशप नार्मल, शुद्ध और भद्र था ही। अर्नेस्ट के हिसाब से समझ यह थी कि उसे जीवविज्ञान और समाजविज्ञान की समुचित जानकारी नहीं थी और उसमें समस्याओं को ठीक तरीके से समझने की कूवत नहीं थी।

मैं बिशप की असहायता से आतंकित थी। अगर वह अपने सत्य पर अड़ेगा तो नष्ट होगा। वह कुछ नहीं कर सकता। उसका धन, उसकी हैसियत, उसकी संस्कृति उसे कुछ बचा नहीं पाया। उसके विचार समाज के लिए खतरनाक थे और समाज सोच भी नहीं सकता था कि ऐसे खतरनाक विचार एक स्वस्थ दिमाग में आ भी सकते थे। समाज शायद ऐसा ही सोचता था।

पर अपनी भद्रता और शुद्धता के बावजूद बिशप पर बुराई हावी थी। वह अपना खतरा समझ रहा था। वह फंस गया था मकड़जाल में, और मुक्त होना चाहता था। उसे अर्नेस्ट, पापा और मुझसे मदद नहीं मिली। उसे अकेले लड़ना पड़ा। सेनीटोरियम के

जब तक पेट नहीं भरता, आत्मा का कुछ नहीं हो सकता। उसकी भेड़ों का पेट भरना चाहिए— उसके बाद, उसके बाद ही आत्मा की तृप्ति की बात हो सकती है।'

मैंने खाना पकाया। बिशप ने जी भर कर खाया। पहले कभी उसने हमारे घर इस तरह नहीं खाया था। उसने कहा कि जीवन में इतना स्वस्थ कभी महसूस नहीं किया था।

मैं अब हमेशा पैदल चलता हूं। यह कहते हुए उसके गाल लाल हो गए मानो यह याद कर उसे शर्म आई हो कि कभी बग्घी पर चलता था। 'इससे मेरा स्वास्थ्य बेहतर है और मैं खुश हूं-बेहद खुश। वह देख रहा था कच्चा जीवन, जो उस जीवन से एक दम भिन्न था जिसे उसने किताबों के बीच बैठकर लाइब्रेरी में जाना था।

'और इस सब के लिए तुम्हीं जिम्मेदार हो नौजवान!' उसने अर्नेस्ट को संम्बोधित किया।

अर्नेस्ट थोड़ा अटपटाया। लड़खड़ाते हुए बोला—

'मैं ..... मैंने तो ..... कहा ही था।'

'नहीं, नहीं। मैं आलोचना नहीं कर रहा। तुमने समझा नहीं। मैं कृतज्ञ हूं। मैं राह दिखाने के लिए तुम्हें धन्यवाद देता हूं। तुम ज़िन्दगी के सिद्धांतों से' खुद जिन्दगी तक ले गए मुझे। तुमने सामाजिक पाखण्डों पर से पर्दा उठा दिया। तुम मेरे अंधकार में प्रकाश बने और अब मैं स्वयं देख सकता हूं प्रकाश। और अब मैं बेहद खुश हूं— बस।' यहां उसकी आवाज़ थम गई आंखों में भय तैर गया। बस वह उत्पीड़न! मैं किसी का नुकसान नहीं करता, फिर वे मुझे अकेला क्यों नहीं छोड़ देते? बात वही नहीं है—उत्पीड़न की प्रकृति। मेरी खाल खींच लें, बांधकर जला दें मैं कुछ नहीं कहूंगा, सर नीचे लटकाकर फांसी दे दें। पर पागलखाना मुझे डराता है। ज़रा सोचो—मैं एक पागलखाने में। विद्रोह कर उठता है मन। मैंने कुछ मामले देखे-हिंस्र थे। मेरा खून जम जाता है सोचकर। सारा जीवन चीखते पागलों के बीच कैद रहना—नहीं-नहीं—कभी नहीं।'

दया आई। उसके हाथ हिल रहे थे, सारा शरीर मानों सिकुड़ रहा था उस तस्वीर से जिसे उन्होंने खींचा था। पर वह शांत हो गए। बोले—

'माफ करना, मेरे स्नायु तंत्र। अगर मालिक का काम वहीं ले जाता है तो ले जाए। कौन होता हूं मैं शिकायत करने वाला।'

मेरा मन किया चिल्लाऊं—'महान् बिशप! हीरो, ग्रेट हीरो।'

शाम बीतती गई। और बातें पता चलीं।

'मैंने, अपना घर, कहें अपने घर बेच दिए, अपनी सारी सम्पत्ति। मुझे पता था कि यह सब गुप्त रूप से नहीं किया गया तो वे लोग सब छीन लेंगे। यह तो भयानक होता! आज मुझे आश्चर्य होता है सोच कर कि दो-तीन लाख डालर में कितना ज्यादा आलू, रोटी, गोश्त, कोयला वगैरह खरीदा जा सकता है।' अर्नेस्ट की ओर मुखातिब होकर

'किराया चुक जाय तो ठीक ही चल जाता है। ठीक है, गोश्त नहीं खरीद सकते। कॉफी में दूध भी नहीं डाल सकते। पर एक भोजन, कभी-कभी दो भी, दिन में मिल ही जाता है।'

यह बात उसने साभिमान कही। उसकी बात में सफलता का पुट था। वह सिलती जा रही थी। मैंने उसकी सुन्दर आंखों की उदासी और मुंह का झुकाव नोटिस किया। आंखें दूर देखती लगीं। उसने आंखों को मला, शायद धुंधली हो रही थीं।

'दिल में दर्द भूख से नहीं होता। भूख की तो आदत पड़ जाती है। मैं तो अपने बच्ची के लिए रोती हूं। मशीन ने उसे मार डाला। ठीक है वह बहुत मेहनत करती थी—पर मैं समझ नहीं पाती। वह मजबूत थी, जवान थी—बस चालीस की। और बस तीस साल काम किए थे। उसने जल्दी ही काम शुरू कर दिया था पर क्या करती पति जल्दी चला गया था। काम पर ब्यायलर फट गया था। हम क्या करते? वह तब दस की थी पर बहुत मजबूत थी। लेकिन मशीन ने मार डाला। वह सबसे तेज़ काम करती थी, पर मशीन ने मार डाला। मैंने अक्सर सोचा है, मैं जानती हूं। इसीलिए मैं वर्कशाप में नहीं काम करती। मशीन मेरा दिमाग खराब कर देती है। मुझे बराबर सुनाई देते हैं—मैंने कर दिया, कर दिया। और दिन भर यही आवाज़ निकालती रहती है। फिर मुझे बेटी की याद आती है और मैं काम नहीं कर पाती।'

बूढ़ी आंखें फिर नम हो गईं। उसे फिर आंखें पोछनी पड़ीं। सीलना जो था।

मैंने बिशप को सीढ़ी चढ़ते सुना और दरवाज़ा खोल दिया। क्या दृश्य था! कन्धे पर आधा बोरा कोयला लदा था। उसके ऊपर था एक औजार। मुंह पर भी कोयले की धूल चिपकी थी। पसीना चू रहा था। उसने कोयला चूल्हे के पास उतार दिया और एक खुरदरे कपड़े के रूमाल से मुंह पोछ डाला। आंखों पर भरोसा करना कठिन था। बिशप! एक कोयला मज़दूर की तरह काला, सस्ती कमीज़ जिसका एक बटन टूटा हुआ था। पतलून तो सबसे बेढंगा। सीट के पास झड़ा हुआ। फूचरे निकले हुए, एक मामूली सी बेल्ट मजदूरों वाली।

बिशप तो मेहनत से गर्म था। पर बूढ़ी औरत अकड़ने लगी थी। चलने से पहले बिशप ने आग जला दी थी। मैंने आलू छील कर उबलने को रख दिया था। मुझे जल्दी ही पता चल गया कि मेरे ही पड़ोस में ऐसे कितने ही लोग थे, उन अंधेरे इलाकों में कुछ तो और बुरी हालत में हैं।

हम लौटे तो अर्नेस्ट मेरी देर की वजह से परेशान था। प्रारंभिक आश्चर्य के बाद बिशप अपनी कुर्सी में फैल गया और टांगे सीधी कर दरअसल आराम की सांस ली। उसने बताया कि पुराने दोस्तों में हम पहले थे जो उसके ग़ायब होने के बाद मिले थे। इस दौरान उसने कितना एकाकीपन झेला होगा। उसने काफी कुछ बताया-ज्यादातर खुदा का काम कर पाने से मिलने वाली खुशी के बारे में उसने कहा—

'अब मैं दरअसल उसकी भेड़ों को पोस रहा हूं। मुझे एक बड़ा सबक मिला है।

एकान्त में वह संभला, स्वस्थ हुआ। उसे विजन आने बंद हो गए। वह उस कल्पना से मुक्त हुआ कि समाज का कर्त्तव्य है कि वह 'मालिक' की भेड़ों का पोषण करे।

हां, तो वह अच्छा हो गया, एकदम स्वस्थ। अखबारों और जनता ने उसका भरपूर स्वागत किया। मैं एक बार उसके चर्च गई। उसका सर्मन वही विज़न आने के पहले वाले थे। मुझे निराशा हुई। मैं स्तब्ध रह गई। तो क्या समाज ने उसे पीट कर सीधा कर दिया था? क्या वह कायर था? क्या वह अपनी गलती मानने को मजबूर किया गया था? या फिर तनाव और दबाव झेल नहीं सका और अन्ततः व्यवस्था की कुटिलताओं के आगे समर्पण कर दिया था?

मैं उसके खूबसूरत घर गई। वह दुःखदायी ढंग से बदल गया था। दुबला हो गया था, चेहरे पर ऐसी लकीरें थीं जो पहले कभी नहीं थीं। वह मेरे आने से दुःखी हो गया। उसकी आंखें इधर-उधर फड़कती रहीं, मुझसे आंखें मिलाने से वह लगातार बचता रहा। वह कुछ और सोचता अनुपस्थित लगा। बात करते-करते काफी देर विराम देता-झट से विषय बदल देता। बात में कोई तरतीब नहीं थी। मैं आश्चर्यचकित थी। क्या यह वही यीशू जैसा शुद्ध, स्थिर और संतुलित व्यक्ति था जिसे मैं जानती थी? उसके साथ बुरा व्यवहार हुआ था, दमन हुआ था। वह बहुत कोमल था। समाज के भेड़ियों का संगठित प्रहार झेल नहीं सका था।

मैं उदास हो गई, क्या बताऊं कितना! वह अस्पष्ट ढंग से बोलता रहा। वह इतना डरा लगा रहा था कि मैं पता नहीं क्या कह दूं कि मैं कुछ पूछने का साहस नहीं जुटा सकी। वह अपनी बीमारी के बारे में, चर्च के बारे में, और इधर-उधर की बातें करता रहा और मेरे जाने के लिए उठने पर राहत महसूस की। अगर मन रो नहीं रहा होता तो उसके अटपटे व्यवहार पर हंसी आ जाती।

एक नन्हा हीरो। काश मैं जान पाती। वह दैत्य की तरह जूझ रहा था और मैं अनुमान नहीं लगा सकी। लाखों के बीच वह निपट अकेला अपनी लड़ाई लड़ रहा था। पागलखाने में टूट-बिखर जाने के बाद भी अपनी सत्यनिष्ठा में डिगा नहीं था। पर इतना अकेला था कि मुझ पर भी भरोसा नहीं कर पा रहा था। उसने सबक ले लिया था-ठीक से।

लेकिन मुझे जल्दी ही पता चल गया। एक दिन बिशप गायब हो गया। उसने किसी को कुछ नहीं बताया था। दिन बीतते गए और वह लौटा नहीं, तरह-तरह की खबरें उड़ने लगीं कि पागलपान के दौर में उसने आत्महत्या कर ली। पर यह बात गलत साबित हुई जब पता चला कि उसने अपना सब कुछ बेच दिया था-बड़ा सा घर, मेनो पार्क वाला कन्ट्रीहाउस, पेंटिंग्स और दूसरी कीमती चीजें-यहां तक कि बहुमूल्य लाइब्रेरी। स्पष्ट था कि गायब हो जाने के पहले उसने एक-एक चीज़ ठिकाने लगा दी थी।

यह उस दौरान हुआ था जब हम स्वयं विपदाग्रस्त थे। जब हम नए घर में स्थापित

हो गए तभी हमें बिशप के बारे में पता करने की फुरसत मिली। और तब सब समझ में आ गया। एक दिन शाम को एक आदमी निकला, अजीब सा। परिचित-सा लगा। पर वह तेज़ी से आगे निकल गया। उसके बाल, चाल और रंग-ढंग से कुछ ऐसा था जो स्मृतियों पर ज़ोर डाल रहा था। मैंने तेजी से पीछा किया। दिमाग तेज़ी से दौड़ रहा था। मैंने उसे रोकना चाहा। मैं तेज़ नहीं चल पर रही थी।

मैं रुकी, अपने पर हंसी आई। पीछा करना छोड़ने का मन बना लिया। पर उन बालों, मद्धम परिचय ने ललकारा। मैं फिर भागी। उससे आगे निकलते हुए मैंने नज़र डाली और तेज़ी से मुड़कर रुक गई। सामने बिशप था।

वह भी झटके से रुका था और सांस फूल गई थी। उसके हाथ का काग़ज का थैला नीचे गिर पड़ा। फट जाने से उसमें रखे आलू बिखर गए। उसने मुझ पर चकित और डरी सी नज़र डाली। फिर वह सम्हल गया। थोड़ा हताश। लम्बी सांस ली।

मैंने हाथ बढ़ाया। उसने हाथ मिलाया। हाथ कांप रहा था। उसने घबराहट में खखारा। उसके ललाट पर पसीने की बूंदें उभर आईं थीं। ज़ाहिर था वह बेहद डर गया था।

'आलू! कीमती हैं।' वह बुदबुदाया।

हम दोनों ने आलू उठाकर फटे थैले में डाले। मैंने बताया कि उससे मिलकर कितनी खुशी हो रही है, और उसे फौरन साथ घर चलने को कहा।

'पापा खुश हो जाएंगे मिलकर। हम पास ही में रहते हैं।' मैंने आग्रह किया।

'नहीं, मैं नहीं आ सकता। गुड बाई।'

वह डरा लग रहा था कि पहचान लिया गया है और जाने को तत्पर था।

'मुझे बता दो कहां रहती हो। मैं बाद में आऊंगा।' उसने मुझे साथ चलते हुए देख कर कहा।

'नहीं, अभी चलना पड़ेगा।' मैंने दृढ़तापूर्वक कहा।

उसने थैले में से झांकते आलुओं और दूसरे छोटे थैलों की ओर देखा। 'एकदम असंभव है। काश तुम जानतीं। माफ करना मेरे इस बर्ताव को। ' लगा कि वह रो पड़ेगा। पर तुरंत सम्हल गया।

'और फिर यह भोजन! बहुत भयानक है। वह बूढ़ी है। मुझे इसे तत्काल उसे देना चाहिए। वह भूखी है। मुझे फौरन जाना चाहिए। समझने की कोशिश करो। मैं बाद में आता हूं।'

'तो मैं भी चलती हूं। दूर है?'

उसने सांस छोड़ी और हार मान ली।

'बस थोड़ी दूर। चलो जल्दी करो।'

उसके साथ मैंने अपने पड़ोस को बेहतर जाना। मैंने कल्पना नहीं की थी कि पड़ोस में इतने दरिद्र, इतने फटेहाल हैं लोग! मैंने इधर ध्यान नहीं दिया था। मैं अर्नेस्ट के तर्क

से सन्तुष्ट हो गई थी कि 'चैरिटी' घाव की सिकाई जैसी चीज़ है, यानी अस्थायी इलाज। उसके लिए इलाज़ है ऑपरेशन-लोगों को उनको सही मज़दूरी और बुढ़ापे में पेन्शन मिले। फिर चैरिटी की क्या ज़रूरत? इसे सही मान कर मैं क्रांति के काम में जुटी थी और व्यवस्थाजन्य अन्याय के कारण उत्पन्न बुराइयों को कम करने वाले सुधार कार्यों में समय और ऊर्जा नहीं बर्बाद करती थी। इसीलिए चेरिटी वालों की तरह आस-पड़ोस की दुर्दशा के बारे में नहीं जानती थी।

मैं दस गुणा बारह के एक छोटे से कमरे में बिशप के साथ घुसी। वहां एक चौसठ साल की बूढ़ी जर्मन औरत थी। वह मुझे देख अचम्भित हुई, अभिवादन किया और घुटनों पर टिकी पतलून सीने में जुटी रही। उसके बगल में पतलूनों का ढेर था। बिशप ने देख लिया था कि घर में कोयला नहीं था और लाने बाहर निकल गया।

मैं एक पतलून उठा देखने लगी उसका काम।

'छ : सेन्ट, मोहतरमा!' वह धीरे-धीरे सीलने में जुटी रही।

'पूरी सिलाई के? इतनी ही मिलती है सिलाई? कितना वक्त लगता है?'

'हां! इतना ही मिलता है! छ सेन्ट दो घन्टे के काम के।' वह बोली। फिर जल्दी से जोड़ा, 'पर बॉस को पता नहीं। मैं धीमी हूं न। मेरे हाथों में गठिया है। लड़कियां तेज़ काम करती हैं। वह तो एक ही घंटा लगाती हैं। बॉस मेहरबान है। वह मुझे काम घर ले आने देते हैं। बूढ़ी हूं और मशीनों के शोर से सिर में दर्द होने लगता है। उनकी मेहरबानी न होती तो भूखों मर जाती। हां, दूकान में काम करने वालों को आठ सेन्ट मिलते हैं। पर करें क्या? नौजवानों के लिए पर्याप्त काम नहीं है बूढ़ों को कौन पूछेगा। अक्सर दिन के लिए एक ही जोड़ा मिलता है। आज राज से पहले आठ जोड़े पूरे करने हैं।

मैंने पूछा कितने घन्टे काम कर पाती हैं। वह बोली मौसम पर निर्भर होता है।

'गर्मियों में जब काम ज्यादा होता है मैं सुबह पांच बचे से रात नौ बजे तक काम करती हूं। पर जाड़ों में इतनी ठण्डक होती है। सुबह हाथ ही नहीं चलते। तब कभी-कभी आधी रात तक काम करना पड़ता है। ये गर्मियां बहुत बुरी थीं। मुश्किल दिन थे। खुदा जरूर नाराज़ होगा। हफ्ते में यह पहला काम मिला है। काम नहीं तो कोई खाए क्या? पर मुझे तो आदत है। मैंने तो जीवन भर सिया ही है—वहां जर्मनी में भी और तैंतीस वर्ष से सानफ्रांसिस्कों में।'

'अगर किराया ठीक-ठीक चुके, तो मालिक ठीक है। अच्छा आदमी है। उसे किराया तो मिलना ही चाहिए। सही तो यही है। इस कमरे के तीन डॉलर लेता है। सस्ता ही हुआ। पर हर महीने तीन डॉलर जुटा पाना आसान नहीं होता।'

उसने बात करना बंद कर दिया, पर सीलना लगातार जारी रहा।

'आमदनी को खर्च करने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।' मैंने सुझाया।

उसने सहमति में गर्दन हिलाई।

फिर भी उसने संतुलन नहीं खोया था। वह बोला शोर को चीरते हुए : 'याद रखना आज जैसी दया तुम लोग दिखा रहे हो सर्वहारा के प्रति वैसी ही कल वह भी दिखाएगा तुम्हारे प्रति'।

'देश द्रोह', 'अनार्किस्ट' की आवाजें और तेज हो गईं।

'मैं जानता हूं कि आप लोग इस बिल को पास नहीं होने देंगे। आपको निर्देश मिल चुके हैं इसके लिए फिर भी आप मुझे अनार्किस्ट कह रहे हैं। आपने जनता की सरकार को नष्ट कर दिया। निर्लज्ज हो अपनी लाल शर्म का झन्डा बुलन्द करते हो और मुझे अनार्किस्ट कहते हो। मुझे नरक में विश्वास नहीं पर ऐसे मौकों पर अफसोस होता है कि मैं नास्तिक क्यों हुआ। नहीं! नहीं!! ऐसे मौकों पर तो मैं करीब-करीब आस्तिक हो जाता हूं। निश्चित ही कोई नरक होगा क्योंकि उससे कम में तो तुम्हारे अपराधों की सजा ही नहीं हो सकती। जब तक तुम जैसे लोग हैं ब्रह्माण्ड में नरक की जरूरत बनी रहेगी।'

दरवाज़ों पर हरकत हुई। अर्नेस्ट, स्पीकर और दूसरों ने मुड़कर देखा। अर्नेस्ट ने पूछा : 'मिस्टर स्पीकर! आप क्यों नहीं अपने सिपाहियों को अन्दर बुलाते और अपना काम करने को कहते? आपकी योजना उन्हें अच्छी तरह कार्यान्वित करनी चाहिए।'

'दूसरी योजनाओं की योजना है। इसीलिए सिपाही लोग हैं।'

'हमारी योजनाओं की ओर इशारा है न? हत्या या उसी तरह की कोई और चीज?' अर्नेस्ट ने व्यंग्य किया।

हत्या शब्द पर फिर हंगामा हो गया। अर्नेस्ट की बात सुनी नहीं जा सकी पर वह खड़ा रहा और शांति की प्रतीक्षा करता रहा। और तभी जो होना था हुआ। मैंने गैलरी से देखा बस एक धमाका और धुआं जिसमें अर्नेस्ट गिर पड़ा। सिपाहियों की चारों ओर भागदौड़ शुरू हो गई। उसके साथी उठ खड़े हुए गुस्से से लाल, किसी भी हिंसा के लिए तैयार। अर्नेस्ट ने अपने को सम्भाला और बांह हिलाकर शांति के लिए इशारा किया। उसने चिल्लाकर सावधान किया : 'षड्यंत्र है यह। कुछ मत करना वर्ना नष्ट कर दिए जाओगे।'

फिर वह धीरे-धीरे बेहोश हो गया। सिपाही उस तक पहुंच चुके थे। उसी क्षण सिपाही गैलरी खाली करवाने लगे और मैं कुछ भी देख नहीं सकी।

वह मेरा पति था पर मुझे उस तक जाने की इजाजत नहीं दी गई। जैसे ही मैंने बताया कि मैं कौन हूं, मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। उसी समय वे सारे समाजवादी गिरफ्तार कर लिए गए, सिम्सन भी जो अपने होटल में टायफायड से बीमार पड़ा हुआ था।

मुकदमा तत्काल शुरू हुआ-संक्षिप्त। सब पहले से तय था। पर अर्नेस्ट को फांसी नहीं दी गई। यह बहुत महंगा पड़ा शासकों के लिए दरअसल उन दिनों शासकों का आत्मविश्वास निस्सीम था। सफलता से मदहोश थे वे। उन्हें पता नहीं था कि कुछ

वापस लिया जाए नहीं तो स्ट्राइक जारी रहेगी। जल्दी ही समझौता हो गया। युद्ध बंद करने की घोषणा हो गई। दोनों देशों में कामकाज नार्मल हो गया।

शांति लौटते ही जर्मनी और अमरीका के बीच संधि हो गई। दरअसल यह जर्मन सम्राट और अमरीकी ऑलीगैर्की के बीच संधि थी। उनके समान शत्रु दोनों देशों के मज़दूरों के विरुद्ध। इस संधि के साथ अमरीकी विशिष्ट तंत्र ने विश्वासघात किया जब जर्मन समाजवादियों ने अपने शासक को उखाड़ फेंका। यही तो योजना थी—जर्मन प्रतिद्वन्द्वी का विनाश। जर्मन सम्राट के अंत के बाद जर्मनी में विदेशी बाज़ार के लिए सरप्लस होगा ही नहीं। समाजवादी राज्य की प्रकृति के अनुसार जर्मनी में जो उत्पादन होगा सब का उपभोग हो जाएगा । निश्चित ही विदेशों से व्यापार होगा—उसका जिसका वह उत्पादन करता है उसके लिए जिसका वह उत्पादन नहीं करता। वह पहले के अतिरिक्त उत्पादन से एकदम भिन्न होगा।

जब जर्मनी से विश्वासघात का पर्दाफाश हो गया तो अर्नेस्ट ने कहा—'शासक कोई कारण ढूंढेंगे। हमेशा की तरह वे सोचेंगे कि उन्होंने ठीक ही किया।'

और निश्चित की शासकों ने कहा ही ऐसा उन्होंने अमरीकी जनता के हित में किया है। अमरीका का घृणित प्रतिद्वन्द्वी विश्व बाज़ार से बाहर फेंक दिया गया है ताकि हम अपना सरप्लस बाहर बेच सकें। अर्नेस्ट की टिप्पणी थी—

'मूर्खतापूर्ण स्थिति यह है कि ये मूर्ख ही हमारे भाग्यविधाता हैं। उन्होंने हमें बाहर ज्यादा बेचने में समर्थ बनाया है जिसका मतलब हुआ हम अन्दर कम का उपभोग करें।'

अंत का प्रारम्भ

1913 की जनवरी में ही अर्नेस्ट ने घटनाओं की दिशा देख ली थी पर सहयोगी नेताओं को 'आयरन हील' के प्रादुर्भाव के बारे में नहीं समझा सका। वे तो आत्मविश्वास से भरे हुए थे। घटनाएं तेज़ी से घट रही थीं। विश्व संक्रमण में फंस गया था। अमरीकी शासकों का विश्व बाज़ार पर कब्ज़ा हो गया लगता था और दूसरे देश बाहर किए जा रहे थे। ऐसे देशों के पास पुनर्गठन के अलावा कोई उपाय नहीं बचा था। वे पहले जैसा उत्पादन जारी नहीं रख सकते थे। उनके हिसाब से पूंजीवादी व्यवस्था ध्वस्त हो गई थी।

इन देशों के पुनर्गठन ने क्रांति का रूप ले लिया—चारों ओर विभ्रम और हिंसा का प्रभाव था। हर जगह संस्थाएं और सरकारें गिर रही थीं। एक दो देशों के अलावा हर जगह सत्तासीन पूंजीपति अपनी सत्ता बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। पर उनसे जुझारू सर्वहारा शक्ति छीन रहा था। कार्ल मार्क्स की धारणा अन्ततः चरितार्थ हो रही थी—'पूंजीवादी निजी सम्पत्ति का अंत निकट है। लूटने वाले लुटेंगे।' जैसे-जैसे पूँजीवादी

सरकारें गिर रही थीं सहकारी कॉमनवेल्थ गठित होते जा रहे थे।'

'युनाइटेड स्टेट्स पीछे क्यों?', 'अमरीकी क्रांतिकारियों, काम में लगो?', 'क्या हुआ अमरीका का?', दूसरे देशों से ऐसे ही संदेश आ रहे थे हमारे पास। लेकिन हम संबद्ध नहीं थे। विशिष्ट तंत्र रास्ते में खड़ा था। वह रोड़ा बना हुआ था।

'बंसत तक रुकिए! हमें सत्ता में आने दीजिए। तब देखिएगा' हम जवाब देते।

इसी के पीछे हमारा रहस्य था। ग्रैन्ज पार्टी हमारे पक्ष में खड़ी हो गई थी। बसंत में कुछ राज्य उसके शासन में आने वाले थे। वे फौरन सहकारी कॉमलवेल्थ बना दिए जाएंगे। इसके बात बातें आसान हो जाएंगी।

'पर अगर ग्रैन्जर को सत्ता न सौंपी गई?' अर्नेस्ट ने पूछा।

साथी लोगों ने उसे 'भेड़िया आया! भेड़िया आया' चिल्लाने वाला घोषित कर दिया।

परंतु अर्नेस्ट के दिमाग में सबसे बड़ा खतरा ग्रैन्जर को सत्ता न सौपना नहीं था, उसे खतरा था ट्रेड यूनियनों के पाला बदलने और संकीर्णताओं के प्रादुर्भाव से।

'घेन्ट ने विशिष्टों को सब कुछ सिखा दिया है। उसकी किताब 'आवर बेनेवोलेंट फ्यूडलिज़्म' (हमारा प्रबुद्ध सामन्तवाद)। टेक्सट बुक बना दी जाएगी।' अर्नेस्ट ने कहा।

मैं उस रात को कभी नहीं भूलूंगी। आधा दर्जन मज़दूर नेताओं से अर्नेस्ट गर्मा गरम बहस में व्यस्त था। बात खत्म हुई तो उसने मुझसे कहा—'बात साफ हो गई। 'आयरन हील' जीत गया। अंत दिखाई दे रहा है।'

हमारे घर की यह बैठक अनौपचारिक थी। अर्नेस्ट मजदूर नेताओं से आश्वासन चाह रहा था कि अगली जनरल स्ट्राइक में वे शामिल होंगे। चालकों की यूनियन व अध्यक्ष ओ' कोनोर ने सबसे स्पष्ट तरीके से आश्वासन देने से इन्कार कर दिया था।

'आप देख चुके हैं कि आपकी हड़ताल और बायकाट की पुरानी टैक्टिक्स कारगर नहीं होती।' अर्नेस्ट ने आग्रह किया।

उन्होंने सिर हिलाया।

'आपने यह भी देखा कि जनरल स्ट्राइक ने काम किया। हमने जर्मनी से युद्ध रोक दिया। मज़दूर एकजुटता और शक्ति का दूसरा कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। मजदूर दुनिया पर हुकूमत कर सकता है और करेगा। अगर आप साथ दें तो हम पूंजीवाद का अंत कर सकते हैं। यह अंतिम आशा है। आप भी इसे जानते हैं। और कोई रास्ता है ही नहीं। अगर आपने पुरानी टैक्टिक्स अपनाई तो हार अवश्यम्भावी है—और किसी वजह से नहीं इसलिए कि न्यायालय उनकी मुट्ठी में है।' अर्नेस्ट ने कहा।

'तुम बहुत तेज़ आगे-आगे भागते हो। तुम्हें दूसरे रास्तों का पता नहीं। एक और रास्ता है। हमें पता है कि हम क्या कर रहे हैं। हम हड़ताल से ऊब चुके हैं। उन्होंने उसमें हमें हरा दिया है। अब हमें हड़ताल की शायद ही ज़रूरत पड़े।' ओ'कोनोर ने जवाब दिया।

अर्नेस्ट नाक तक संघर्ष में डूबा हुआ था जब अन्त आया। बेरोजगारों की सहायता वाले प्रस्ताव पर बहस हो रही थी। पिछले साल की मुश्किलों ने मजदूरों की भारी संख्या को भूख की रेखा के नीचे धकेल दिया था। बढ़ती अराजकता ने बेहाली और बढ़ा दी थी। लाखों लोग उन्नीसवीं सदी में अंग्रेजों के राज में भारतीयों की तरह भूख के शिकार थे जब कि शासक और उनके समर्थक मौज कर रहे थे। हम इन बेचारों को एच. जी. वेल्स की तरह 'रसातल के लोग' कहते और उनके दुख-दर्द को घटाने के लिए समाजवादियों ने बेरोजगारी बिल पेश किया था। पर यह आयरन हील को पसन्द नहीं था। इन लाखों को काम देने की उनकी अपनी योजना थी-निश्चित ही हमसे भिन्न, इसीलिए उनका निर्देश था कि हमारे बिल को पास न होने दिया जाए। अर्नेस्ट और साथियों को पता था कि उनका प्रयास बेकार था पर अनिश्चय से भी तो वे थक गए थे। वे चाह रहे थे कि सब न सही कुछ तो घटे। वे कुछ कर नहीं पा रहे थे इसलिए सोचा कि उस कानूनी प्रहसन का तो अंत हो जिसमें वे न चाहते हुए भी शामिल थे। उन्हें पता नहीं था कि अंत क्या होगा पर जो हुआ वह उससे भी ज्यादा विध्वसंक था जिसकी उन्होंने कल्पना की थी।

मैं उस दिन दर्शक दीर्घा में थी। हमें लग रहा था कि कुछ भयानक होने वाला है। हवा में ही आतंक था। इससे भी अंदाजा लग रहा था, क्योंकि कारिडोर में बहुत सिपाही थे और हर दरवाजे पर ढेरों अधिकारियों की भीड़ थी। शासकों का आक्रमण आसन्न था। अर्नेस्ट बोल रहा था। वह बेरोजगारों की दु:खभरी कहानी कह रहा था जैसे दूर कहीं आशा हो कि उनका हृदय शायद पिघल ही जाए। लेकिन रिपब्लिकन और डेमोक्रेट सदस्य उसका मजाक उड़ाते रहे। हंगामा हो रहा था। अचानक अर्नेस्ट ने मोर्चा बदल दिया :

'मैं ऐसा कुछ भी नहीं कह सकता जो आपको प्रभावित कर पाए। आपके पास आत्मा है कहां कि प्रभावित हों। आप तो रीढ़विहीन लिजलिजे लोग हैं। आप बढ़-चढ़ कर अपने को रिपब्लिकन या डेमोक्रेट कहते हैं। हकीकत यह है कि न रिपब्लिकन पार्टी है न डेमोक्रेटिक। आप तो चमचे हैं, भड़ुए हैं धनिकों के। आप अपने मुक्ति-प्रेम के बारे में पुरानी पड़ गई शब्दावली में लफ्फाजी करते हैं, पर हर वक्त आयरन हील की लालवर्दी पहने रहते हैं।'

तभी 'आर्डर! आर्डर' की आवाज गूंजी और अर्नेस्ट की आवाज़ उसमें डूब गई। वह खड़ा रहा। धीरे-धीरे शोर-शराबा थोड़ा कम हुआ। उसने इशारे से सबको शामिल करते हुए अपने साथियों से कहा : 'सुनिए इन खाए-पिए जानवरों की चिग्घाड़।'

हंगामा फिर शुरू हो गया। स्पीकर फिर आर्डर! आर्डर! चिल्लाया और उम्मीद भरी आंखों से अधिकारियों की ओर देखने लगा। कुछ लोग चिल्लाए 'देश द्रोह'। न्यूयार्क का एक मुटल्ला सदस्य चिल्लाया 'अनार्किस्ट'।

अर्नेस्ट का रोम-रोम कांप रहा था। वह आक्रमण को तैयार जानवर लग रहा था।

'क्या है तुम्हारा रास्ता?' अर्नेस्ट ने पूछा।

'इतना ही कहूंगा कि हम सो नहीं रहे हैं। हम सपना नहीं देख रहे।' हंसते हुए उसने जवाब दिया।

'उम्मीद करता हूं डर या शर्म की बात नहीं होगी।' अर्नेस्ट का गुस्सा बढ़ रहा था।

जवाब मिला— 'हमने अनुभव के लिए खून-पसीना बहाया है। और जो हो रहा है हमारी कमाई है। दान अपने घर से शुरू होता है।'

'अगर तुम्हें डर लग रहा है अपना उपाय बताने में तो बताए देता हूं। आप लूट में भागीदारी करने जा रहें है तुमने दुश्मन से समझौता कर लिया है—हां दुश्मन से समझौता! तुमने मज़दूरों का, सारे मज़दूरों का हित बेच डाला है। तुम कायरों की तरह छोड़ रहे हो मैदान।' अर्नेस्ट का खून उबल रहा था।

'मैं कुछ नहीं कर रहा। बस इतना कि हमें तुमसे थोड़ा ज्यादा ही पता है कि हमारे लिए सर्वोत्तम क्या है।' ओ'कोनोर ने कहा।

'और दूसरे मज़दूरों की रत्ती भर परवाह नहीं। वे गड्ढे में गिरें तो गिरें।'

'मै कुछ नहीं कर रहा सिवाय इसके कि मैं चालकों के संघ का अध्यक्ष हूं, और मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उनके हितों की रक्षा करूं जिनका प्रतिनिधित्व करता हूं। बस!' उसका जवाब था।

और जब मज़दूर नेता चले गए तो पराजय की शांति के साथ अर्नेस्ट ने भविष्य की संभावनाओं की रूपरेखा बताई—

'समाजवादी खुशी खुशी भविष्यवाणी करते थे कि संगठित मज़दूर औद्योगिक क्षेत्र में पराजित होकर राजनीतिक क्षेत्र में आ जाएगा। तो लो आयरन हील ने उन्हें औद्योगिक क्षेत्र में पराजित कर दिया है और राजनीतिक क्षेत्र में हांक दिया है पर इससे हमें खुशी के बदले दुख ही मिलने वाला है। आयरन हील ने सबक सीख लिया है। हमने उसे अपनी शक्ति जनरल स्ट्राइक के दौरान दिखा दी थी। उसने फिर जनरल स्ट्राइक के विरुद्ध लामंबंदी कर ली है।'

'लेकिन कैसे?' मैंने पूछा।

'बस बड़ी यूनियनों की आर्थिक मदद करके। वे नहीं शामिल होंगी और स्ट्राइक जनरल नहीं होंगी।'

'लेकिन आयरन हील इतना खर्चीला कार्यक्रम स्थायी तौर पर तो नहीं चला सकता।'

'उसने सभी यूनियनों की थोड़े ही मदद की है। उसकी जरूरत भी नहीं थी। देखो हो गया यह। रेल कम्पनियों, लोहा-इस्पात और इन्जीनियरों की यूनियनों में मजदूरी बढ़ा दी जाएगी और काम के घण्टे कम कर दिए जाएंगे। इन यूनियनों के लिए अनुकूल स्थितियां बढ़ा दी जाएंगी। इन यूनियनों की सदस्यता स्वर्ग की सदस्यता की तरह मूल्यवान हो जाएगी।'

युद्ध में हम टिके हुए थे। सब कुछ अदृष्ट होता, पहले से अन्दाजा लगाना कठिन होता-लगता अंधा-अंधे से टकरा रहा है, फिर भी इस सबके बीच एक व्यस्था थी, उद्देश्य था, नियंत्रण था। हमारे एजेन्ट आयरन हील के संगठनों में और उसके हमारे संगठनों में चारों और भरे पड़े थे। यह एक अंध युद्ध था, खतरनाक, चारों तरफ षड्यंत्र, छल-कपट, उठा-पटक। सबके पीछे थी मंडराती मौत-हिंस्र और भयंकर। हमारे प्रियतम, निकटतम नारी-पुरुष अचानक गायब हो जाते। आज हमारे साथ होते, कल गायब, फिर कभी नहीं दिखते। हम जान जाते कि वह अब नहीं रहे।

कहीं विश्वास नहीं, भरोसा नहीं। जो हमारे बगल में बैठा योजना बना रहा होता, हो सकता था वह आयरन हील का एजेन्ट हो। उनके लिए हम और हमारे लिए वे सुरंगें बिछा रहे थे। भरोसे और विश्वास का सर्वाधिक अभाव था फिर भी हम काम तो भरोसा और विश्वास के आधार पर ही कर रहे थे। अक्सर विश्वासघात होता। लोग कमजोर थे। आयरन हील पैसे, अवकाश और अपने आश्चर्यजनक शहरों में तरह-तरह के ऐशोआराम का लालच देता। हम तो बस यही दे सकते थे एक नेक विचार में विश्वास और फिर जो अडिग थे उनकी ओंखों में घूरते, खतरे, उत्पीड़न, मौत।

लोग कमजोर थे, इसलिए हम एक ही और पुरस्कार दे पाते—मौत। मजबूरन हम विश्वासघातियों को मौत की सजा देते। हम पोकाक जैसों को भले ही मौत के घाट नहीं उतार सके पर अपने बीच के विश्वासघातियों को तो मौत की राह दिखा ही देते। कुछ साथी हमारी इजाज़त से विश्वासघाती बनते ताकि उनके आश्चर्यजनक शहरों में जाकर वास्तविक विश्वासघातियों को मौत का पैगाम सुना सकें। हम इतने भयानक बन गए थे कि हमारे साथ रहना जितना खतरनाक था उससे ज्यादा बड़ा खतरा था हमारे साथ विश्वासघात।

क्रांति ने धर्म का चरित्र अपना लिया। हम क्रांतिवादी मुक्ति के मंदिर में आराधना करते। हमारे अन्तर में मानो दैवी ज्योति जल रही थी। नारी-पुरुष लक्ष्य को अपना सब कुछ समर्पित कर देते। नवजात को उसी तरह चढ़ा दिया जाता जैसे लोग बच्चों को भगवान को चढ़ाते हैं। हम मानवता से प्रेम करते थे।

लालवर्दी

ग्रैन्जर राज्यों के ध्वस्त होते ही ग्रैन्जर लापता हो गए। उन पर देशद्रोह का मुकदमा चल रहा था और उनकी जगह आयरन हील के लोगों ने ले ली थी। समाजवादी भारी अल्पमत में थे और जानते थे कि अन्त निकट है। व्यवस्थापिका के दोनों सदनों की तरह ही कानून बनते नज़र आते पर वास्तव में शासकों के आदेशों को संवैधानिक जामा भर पहनाया जाता।

'फिर भी मैं समझ नहीं पा रही थी कि और यूनियनों का क्या होगा?' 'इस समूह के बाहर वाली यूनियनों की संख्या बहुत ज्यादा है।' मैंने एतराज़ किया।

'दूसरी यूनियनें पीस दी जाएंगी। तुम देख नहीं रही हो कि हमारी मशीनी सभ्यता में सारे अत्यावश्यक काम रेलवे वाले, इन्जीनियर, इस्पात वाले और चालक समुदाय ही करते हैं। इनके सहयोग से आश्वस्त होकर आयरन हील अन्य मज़दूरों को दो कौड़ी का करार दे सकती है। सारे औद्योगिक तंत्र की रीढ़ हैं—इस्पात, कोयला, यंत्र और परिवहन।'

'लेकिन कोयला? कोयला खदानों में करीब दस लाख खनिक काम करते हैं।'

'वे प्राय: अकुशल मज़दूर होते हैं। उनका क्या महत्व? उनकी मज़दूरी कम कर दी जाएगी और काम के घंटे बढ़ा दिए जाएंगे। वे हम सब की तरह गुलाम बना दिए जाएंगे। और हम सब से ज्यादा जंगली हो जाएंगे। वे फार्मरों की तरह मजबूर कर दिए जाएंगे। उन मालिकों के लिए काम करने के लिए जिन्होंने उन्हें इस हालत में पहुंचाया है। यह बाहर की हर यूनियन के साथ होगा। देखती जाओ उनकी तबाही।'

'जानती हो फारली और उसके हड़ताल भंजकों का क्या होगा? बताता हूं। हड़ताल भंजन का पेशा खत्म हो जाएगा। क्योंकि अब हड़तालें होंगी ही नहीं। हड़ताल की जगह गुलामों के विद्रोह होंगे। फारली का प्रमोशन हो जाएगा। वह दास नियंत्रक हो जाएगा। जाहिर है उसका यह नाम नहीं होगा। उसे कहा जाएगा कानून संचालक—जो देश का कानून लागू करेगा। यूनियनों का विश्वासघात संघर्ष को लम्बा खींच देगा। खुदा जाने अब क्रांति कहां और कैसे विजयी होगी?'

'लेकिन विशिष्ट तंत्र और बड़ी यूनियनों की साझेदारी के बाद कैसे विश्वास करें कि क्रांति कभी जीतेगी भी? यह साझा हमेशा ही नहीं कायम रहेगा?' मैंने पूछा।

'हमारा एक सामान्यीकरण यह है कि वर्ग और जाति पर आधारित कोई भी व्यवस्था में उसके पतन के बीज अन्दर ही होते हैं। वर्ग पर आधारित व्यवस्था में और संकीर्णताएं आएंगी ही। आयरन हील भी इसे रोक नहीं सकता और अंतत: ये संकीर्णताएं आयरन हील को भी नष्ट कर देंगी। विशिष्टों ने अपने अंदर भी एक जाति व्यवस्था विकसित कर ली है। पर ट्रेड यूनियन में इसे पनपने दो फिर देखना। आयरन हील इसे रोकने में सारी ताकत लगा देगी पर सफल नहीं होगी।

'संरक्षित यूनियनों में अमरीका के कुछ सर्वोत्तम लोग हैं, मज़बूत और सक्षम लोग। बड़े अध्यवसाय और प्रतियोगिता के बाद उन्होंने अपनी जगह बनाई है। वे हर स्वस्थ मज़दूर पोषित यूनियन में अपनी जगह बनाने की कोशिश करेंगे। शासक इस महत्वाकांक्षा और तज्जन्य प्रतियोगिता को पोसेंगे। इस तरह जो क्रांतिकारी हो सकते थे खरीदे जाएंगे और उनकी शक्ति शासकों को मज़बूत करने में लगेगी।

'दूसरी ओर मज़दूर की श्रेणियां, पोषित यूनियनों के सदस्य, अपने संगठनों को और बंद संगठन में परिवर्तित करेंगे और सफल होंगे। बेटा बाप की जगह लेगा।

मिलिशिया वाले फौज के निकट पहुंच ही नहीं पाए। जमीन पट गई थी मारे गए लोगों से। अन्त में घोड़े दौड़ा दिए गए और अधमरे लोग घोड़ो के खुरों या फिर नजदीक से दागी गई पिस्तौलों की गोली से मर खप गए।

ग्रैन्जरों के विनाश के साथ ही शुरू हुआ कोयला खनिकों का विद्रोह। यह संगठित मजदूरों का अंतिम प्रतिरोध था। सात-आठ लाख खनिक हड़ताल पर चले गए। पर वे सारे देश में इस तरह फैले हुए थे कि अपनी शक्ति का लाभ नहीं उठा सकते थे। वे अपने इलाकों में भी अलग-अलग थे और पीट कर ठीक कर दिए गए। यहीं से शुरू हुआ कुख्यात हड़ताल भंजक पोकॉक का कारनामा। मजदूर उससे नफरत करते थे और कई बार उसकी हत्या की कोशिश हुई पर मानों उसे कोई वरदान हो, वह हर बार बच जाता था। उसी ने खनिकों के बीच रूसी कानून लागू करवाया जिसके कारण उनके देश के एक क्षेत्र से दूसरे में जाने पर रोक लग गई।

इस बीच समाजवादी मजबूती से जुटे रहे। ग्रैन्जर जलकर राख हो गए। संगठित मजदूर ध्वस्त कर दिए गए। पर समाजवादी जमे रहे और उनके गुप्त संगठन पनपते रहे। ग्रैन्जरों ने हमें भी अपनी राह चलाने की बहुत कोशिश की थी पर हमने उन्हें साफ कह दिया था, 'हमारा विद्रोह आत्मघाती होगा-पूरी क्रांति के लिए।' पहले आयरन हील को सम्पूर्ण सर्वहारा से एक साथ निपटने की राह नहीं सूझ रही थी पर उन्हें तो उम्मीद से ज्यादा आसानी हुई दमन में। हमारा विद्रोह उनका काम आसान ही कर देता। हमारे बीच भी उनके एजेन्टों की भीड़ थी। पर हमने टकराहट टाली। हमारे साथियों ने उन्हें बार-बार बाहर खदेड़ा। यह सब कठिन था पर हम अपने जीवन और क्रांति के लिए जूझ रहे थे और दुश्मन से उसी के हथियारों से लड़ना था। फिर भी हमने न्याय का दामन नहीं छोड़ा था। उनके किसी एजेन्ट को बिना मुकदमे के सजा नहीं दी गई। हमसे गलतियां हुईं पर कभी-कभी ही। हमारे 'फायरिंग ग्रुप' में सबसे जुझारू और त्यागी किस्म के साथी शामिल थे। एक बार दस साल बाद अर्नेस्ट ने हिसाब लगाया था कि फायरिंग ग्रुप में शामिल हमारे नारी-पुरुष साथियों की औसत उम्र पांच साल थी। सभी अपनी-अपनी तरह से 'हीरो' थे। उनके बारे में विशेष बात यह थी कि वे किसी का जीवन ले लेने के विचार के ही विरुद्ध थे। वे अपनी ही प्रकृति की अवहेलना करते थे पर स्वतंत्रता की कद्र करते थे और अपने लक्ष्य के लिए कोई भी कुर्बानी देने को तैयार रहते थे।

हमने अपने लिए तीन तरह के काम तय कर रखे थे। पहला, अपने बीच से गुप्त एजेन्टों को उखाड़ फेंकना। दूसरा, फायरिंग ग्रुप्स और उसके बाहर क्रांति का एक गुप्त संगठन बनाना। तीसरे, शासकों के बीच अपने भी गुप्त एजेन्ट घुसाना- उनके हर तरह के संगठनों में। यह खतरनाक और धीमा काम था और अक्सर महंगी कीमत चुका कर भी असफलता मिलती।

आयरन हील खुले युद्ध में जीत गया था पर इस नए, अजीब भयानक और गुप्त

भी हमला हुआ। बारूद और हर जगह बारूद, बहुत से गरीब फार्मर मारे गए। प्रतिहिंसा भी हुई-बहुत से फौजी और धनिक भी मारे गए। हर तरह रक्त और हिंसा का ही राज्य था। फौजी, फार्मरों से वैसी ही बर्बरता से लड़े जैसे मूल निवासियों के विरुद्ध लड़े थे। उन्हें ओरेगान में लगातार विस्फोटों में मरे अट्ठाइस सौ सिपाहियों की मौत का बदला भी तो लेना था। जगह-जगह ट्रेन विस्फोटों में भी वे मारे गए थे। इसलिए फार्मरों की तरह फौजी भी जी जान से लड़े।

1903 के मिलिशिया कानून को लागू कर दिया गया और एक राज्य के मजदूर मिलिशिया में मौत के डर से भर्ती होकर दूसरे राज्य के सभी मजदूरों को भूनने लगे। जाहिर है शुरू में यह कानून ठीक से नहीं चल पाया। कई मिलिशिया अधिकारी मारे गए और कितनों का ही कोर्ट-मार्शल हुआ। अर्नेस्ट की भविष्यवाणी अचूक साबित हुई मिस्टर कोवाल्ट और मि. ऐसमुनसेन के मामले में। दोनों ही मिलिशिया में भर्ती किए गए थे। दोनों को मिस्सूरी में किसानों के विरुद्ध ड्यूटी पर लगा दिया गया। दोनों को गोली मार दी गई।

बहुत से नौजवान मिलिशिया में भर्ती होने से बचने के लिए पहाड़ों में भाग गए। वहां वे अपराधी बन गए और हालात बेहतर हुए तो लौटने पर उन्हें सजा मिली, बहुत सख्त। सरकार ने घोषणा की कि सभी कानून मानने वाले नागरिक पहाड़ों से तीन महीनों के लिए नीचे उतर आएं। तीन महीना बीतते ही पांच लाख सिपाही भेज दिए गए पहाड़ी इलाकों में। कोई जांच पड़ताल नहीं हुई। कोई मुकदमा नहीं चला। जो भी आदमी मिलता फौरन गोली मार दी जाती। सेना इस सोच के आधार पर काम कर रही थी कि अब जो भी पहाड़ों पर बचा है वह अपराधी हो गया है। कुछ लोगों ने संगठित हो विरोध भी किया पर अंततः जो भी मिलिशिया में भर्ती होने से बचकर भागा था मारा गया।

कैनसास मिलिशिया को दूसरे तरह का सबक दिया गया। कैनसास मिलिशिया के छः हजार सदस्यों ने विद्रोह कर दिया था। वे कई हफ्तों से उद्विग्न और गुम-सुम थे। उन्हें कैम्पों में रखा गया था। निश्चित ही विद्रोह के लिए उन्हें ऐजेन्टों ने ही भड़काया था।

22 अप्रैल की रात में विद्रोह शुरू हुआ और अफसर मार दिए गए। कुछ ही बचकर भाग सके। यह आयरन हील की योजना में नहीं शामिल रहा होगा। पर एजेन्टों ने ज्यादा ही अच्छी तरह से अपना काम कर दिया था, आयरन हील तैयार था। इतने अफसरों की हत्या ने उन्हें मौका दे दिया। जैसे किसी जादू से चालीस हजार रेगुलर आर्मी ने असंतुष्टों को घेर लिया। जाल फेंक दिया गया था। बेचारे मिलिशिया वालों ने पाया कि उनकी मशीनगनें चल नहीं रही हैं। उनमें गोलियां ठीक से लग ही नहीं रहीं। उन्होंने सफेद झंडा लहराकर आत्मसमर्पण की पहल की पर उसे नजरअंदाज़ किया गया। पूरे छ हजार मार दिए गए। एक भी नहीं बचा। एक चश्मदीद गवाह ने बताया कि

वंशानुगत होते ही जनता से लगातार नई शक्ति का संचार होना बंद हो जाएगा। इससे उनका क्षरण होगा और वे कमज़ोर होते जाएंगे। पर संस्था के रूप में कुछ दिनों के लिए तो उनका शक्तिशाली हो जाना तय है, वे रोम के महलों के पहरुओं की तरह हो जाएंगे जिनके बीच विद्रोह होते रहेंगे। इन महल क्रांतियों के दौरान कभी एक सत्तासीन होगा तो कभी दूसरा। और अन्ततः सामान्य जन को अपना रंग दिखाने का मौका मिल जाएगा।'

अर्नेस्ट ने यह सब यूनियनों द्वारा पाला बदलने से जन्मी हताशा के दौरान कहा था। मैं कभी इस पर सहमत नहीं हो पाई थी। और आज भी, जब मैं यह सब लिख रही हूं, असहमति बरकरार है। क्योंकि आज अर्नेस्ट तो नहीं है हमारे बीच, हम उस विद्रोह की पूर्व संध्या में हैं, जो इस शासन को उखाड़ फेंकेगा। फिर भी मैंने उसकी भविष्यवाणी लिख दी क्योंकि यह उसकी थी। इसमें विश्वास करते हुए भी इसी के खिलाफ वह अनथक प्रयास करता रहा। और किसी से ज्यादा उसी के प्रयास से आज यह स्थिति है कि हम आशान्वित हैं।

'लेकिन अगर यही शासन बना रहा तो उस अतिरिक्त धन का क्या होगा जिसका मूल्य हर साल गिरता जाएगा?' मैंने उसी शाम पूछा था।

'उसे खर्च तो करना ही होगा। नए उपाय ढूंढे जाएंगे। शानदार सड़कें बनेंगी। विज्ञान और खासतौर पर कला के क्षेत्र में बड़े-बड़े काम किए जाएंगे। जनता पर प्रभुत्व कायम कर लेने के बाद उनके पास और चीज़ों के लिए भी समय होगा। वे सौन्दर्य की पूजा करेंगें। कला प्रेमी हो जाएंगे। उनके संरक्षण में पुरस्कृत होते हुए कलाकार अपना काम समृद्ध करेंगे। कला जन्मेगी क्योंकि कल की तरह कलाकार मध्यवर्ग की पूंजीवादी अभिरुचियों को चरितार्थ नहीं करेगा। बड़े-बड़े नगर बनेंगे जो पहले के नगरों को छोटा और बौना कर देंगे। इनमें रहते हुए शासक सौन्दर्य पूजा करेंगे।

'इस प्रकार मज़दूर मेहनत करते रहेंगे, अतिरिक्त बचेगा और इस तरह खर्चा होता रहेगा। तब जब खर्चा बढ़ता जाएगा मज़दूरों को राशन पर जीने भर पोषण मिलेगा। यह खर्च हज़ारों साल चलेगा। वे ऐसे निर्माण करेंगे जिनकी मिस्र और बेबीलोनिया वालों ने कल्पना भी नहीं की होगी। जब उनके दिन बीत जाएंगे तब भी उनकी सड़कें और इमारतें बची रह जाएंगी और उन पर चलेंगे, उनमें रहेंगे मज़दूर भ्रातृत्व के सदस्य।'

'वे ऐसा करेंगे क्योंकि और कोई चारा नहीं है। वे अपना अतिरिक्त धन इसी रूप में खर्च कर पाएंगे जैसे बहुत दिन हुए मिस्र के शासक अपनी लूट को पिरामिड और मंदिर बनवाने में खर्च करते थे। इन विशिष्टों के अन्तर्गत कोई पादरी वर्ग नहीं पनपेगा, पनपेगा एक कलाकार वर्ग। पूंजीपतियों के व्यवसायी वर्ग की जगह होंगी कई मज़दूर श्रेणियां। नीचे होगी खाई जिसमें सड़ेंगे और भूखे मरेंगे सामान्य जन अपना नवीकरण करते। और एक दिन, कौन जानता है—कब, समान्तर जन उस खाई में उठ खड़ा होगा। विशिष्ट तंत्र और मज़दूर नेता ध्वस्त हो जाएंगे और तब शताब्दियों की कठिनाइयों

के बाद उसका दिन लौटेगा। मैंने सोचा था देखूंगा वह दिन, पर आज जानता हूं कि मैं कभी नहीं देख पाऊंगा।'

मेरी ओर देखता रहा वह थम कर। फिर बोला—

'जानेमन, सामाजिक विकास हताश करने की हद तक धीमा होता है। है न?'

मेरी बाहें उसे घेरे हुए थीं और उसका सिर मेरी छाती पर था। उसने अप्रत्याशित ढंग से कहा—'मुझे गा कर सुला दो। मुझे विज़न हो रहे थे। मैं उन्हें भूलना चाहता हूं।'

अंतिम दिन

1913 की जनवरी के अंतिम दिनों में यूनियनों के प्रति शासकों के बदले दृष्टिकोण को सार्वजनिक किया गया। अखबारों में रेल, इस्पात, इंजीनियरिंग आदि उद्योगों में अभूतपूर्व मज़दूरी बढ़ने और काम घटने की खबरें छपीं। पर सारी सच्चाई नहीं बताई गई। ऐसा करने का साहस नहीं जुटा पाए शासक! वास्तव में मज़दूरी और सुविधाएं काफी बढ़ाई गई थीं। इसे गुप्त रखा गया था। पर मज़दूरों ने पत्नियों को बताया। उन्होंने इधर-उधर बात की और फिर तो बात को फैलाना ही था। सभी जान गए वास्तव में क्या हुआ था?

यह उस प्रक्रिया की तार्किक परिणति थी जिसे उन्नीसवीं सदी में लूट का बंटवारा कहा गया था। उस समय के औद्योगिक युद्ध में मुनाफे के बंटवारे की कोशिशें हुई थीं यानी पूंजीपतियों ने कोशिश की थी कि मज़दूरों को आर्थिक लाभ पहुंचाकर उन्हें अपने काम में और संलग्न किया जाए। लेकिन यह पद्धति हास्यास्पद और असंभव थी। ऐसा संकट के समय इक्के-दुक्के मामलों में हो सकता था क्योंकि अगर सभी पूंजीपति और सभी मज़दूर मुनाफे में हिस्सेदारी करने लगें तो वही हालात पैदा हो जाएंगे जैसे पहले थे।

इसलिए मुनाफा-बंटवारे के अव्यावहारिक विचार से लूट के बंटवारे का विचार जन्मा। मजबूत यूनियनों का कहना था—हमारी तनख्वाह बढ़ाओ और इसे जनता पर थोपो। यह स्वार्थपूर्ण नीति एकाध जगह चली भी। जनता पर लादने का मतलब था असंगठित मज़दूरों या कमज़ोर संगठनों पर भी लादना। यह शासकों और बड़ी यूनियनों की मिलीभगत से संभव हुआ था।

जैसे ही पता चला कि कुछ यूनियनों ने विश्वासघात किया है मज़दूर जगत में कानाफूसी से शोर शराबा तक शुरू हो गया। फिर पोषित यूनियनों ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से सारा संबंध तोड़ लिया। फिर तो गड़बड़ी और हिंसा शुरू हो गई। फिर तो उन यूनियनों के सदस्यों को विश्वासघाती कहा जाने लगा। बाज़ार में, वेश्यालयों में, शराबखानों में, मिलों में, यानी हर जगह उन पर हमले होने लगे-उन्हीं साथियों द्वारा जिनकी पीठ में उन्होंने छुरा घोंपा था।

तो इस तरह मजे में बीत रही थी पापा की जिन्दगी जब मैं और अर्नेस्ट वाशिंगटन गए। पुराने दिन बीत चुके थे, बस अंत बाकी था। वह हमारी उम्मीद से पहले ही आ पहुंचा। हमारी आशा के विपरीत समाजवादियों को अपनी सीट पर बैठने में कोई रुकावट नहीं डाली गई। सब कुछ ठीक-ठाक बीता। मैंने अर्नेस्ट की हंसी उड़ाई जब उसने इस ठीक-ठाक गुजरने में भी षड्यंत्र देखा।

हमारे समाजवादी साथी आत्मविश्वास से भरे हुए थे। अपनी शक्ति और संभावना के प्रति आश्वस्त थे। कुछ ग्रैन्जर्स भी चुन कर आए थे। उनसे हमारी संख्या बढ़ गई थी। मिलकर एक बड़ा कार्यक्रम तैयार किया गया था। इस सबमें अर्नेस्ट पूरे मन और क्षमता से जुटा रहा पर, बीच-बीच में यू ही बोल देता-'जहां तक बारूद का सवाल है, रासायनिक मिश्रण यांत्रिक मिश्रण से बेहतर होता है-मेरी बात मानो।'

समस्या उन राज्यों में पहले पैदा हुई जहां ग्रैन्जर बहुमत में आए थे। ऐसे दर्जनों राज्यों में उन्हें पदग्रहण नहीं करने दिया गया। लोगों ने पद नहीं छोड़े,बहुत सरल था ऐसा करना। उन्होंने चुनाव में धांधली का आरोप लगाया और कानून की लाल फीताशाही में मामले को फंसा दिया। ग्रैंजर्स शक्तिहीन हो गए। कोर्ट ही अंतिम सहारा थे और वे दुश्मनों की मुट्ठी में थे।

यही थी खतरे की घड़ी। अगर छले गए ग्रैन्जर हिंसा पर उतरते सब कुछ समाप्त हो जाता। समाजवादियों ने कैसे उन्हें सम्हाला। उन दिनों अर्नेस्ट झपकी भी नहीं ले पाता। उनके बड़े नेता खतरे को देख पा रहे थे और पूरी तरह हमारे साथ थे। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। शासक हिंसा ही चाहते थे और उन्होंने भड़काने वाले एजेन्ट लगा रखे थे। यह निर्विवाद है कि उन्होंने ही किसानों का विद्रोह भड़काया था।

करीब दर्जन भर राज्यों में विद्रोह भड़का। लुटे फार्मरों ने जबर्दस्ती राज्य सरकारों पर कब्जा कर लिया। निश्चित ही यह असंवैधानिक था और संघ सरकार ने फौज भेज दी। एजेन्ट हर जगह लोगों को भड़का रहे थे। आयरन हील के इन एजेन्टों ने अपने को कारीगरों, फार्मरों और खेत-मजदूरों के रूप में छिपा रखा था। कैलीफोर्निया की राजधानी सैक्रोमेन्टो में ग्रैन्जर व्यवस्था बनाए रखने में कामयाब हो गए थे। वहां हजारों एजेन्ट गुप्त रूप से भेजे गए और उन्होंने ही भीड़ बढ़ाकर आगज़नी और लूटपाट शुरु की। अन्त में भड़क कर लोग भी इसमें शामिल हो गए। झोपड़पट्टियों में शराब बांटी गई। और जब सारी तैयारी पूरी हो गई तो प्रकट हुए फौजी जो आयरन हील के ही सिपाही थे। सैक्रोमेंटो की सड़कों और घरों में ग्यारह हजार मर्द, औरतें और बच्चे भून डाले गए। संघ सरकार ने राज्य सरकार पर नियंत्रण कर लिया। कैलिफोर्निया में सब कुछ समाप्त हो गया।

ऐसा ही ग्रैन्जर नियंत्रित हर राज्य में हुआ। पहले हिंसा भड़काई गई और फिर फौज बुली ली गई। देहात में दंगों और भीड़ तंत्र का ही बोलबाला बना रहा। रात दिन चारों ओर धुआं उठता रहता। रेलवे लाइनें, सड़कें, पुल उड़ा दिए गए। रेलगाड़ियों पर

बहुत से सिर फूटे, जाने भी गईं। पोषित यूनियनों का कोई सदस्य सुरक्षित नहीं बचा। वे काम पर समूह बनाकर जाने लगे और लौटते भी वैसे ही। सड़क के बीच में चलते। सड़क के किनारे बगल की खिड़कियों से पत्थर आकर उनका सिर फोड़ सकते थे। उन्हें हथियार रखने की इजाज़त दे दी गई। अधिकारी उनकी हर तरह से मदद करने लगे। उन्हें सताने वालों को जेल होने लगी, जहां उन्हें उत्पीड़ित किया जाता। उन यूनियनों के बाहर के लोगों के लिए हथियार रखने पर पाबन्दी थी। नियम का उल्लंघन करने पर कठिन सजा थी।

नाराज लोग विश्वासघातियों को सज़ा पहुंचाते रहे। जातियां बन गईं। पोषित यूनियनों के बच्चों को वंचितों के बच्चे पीटने लगे और उनका खेलना, स्कूल जाना कठिन हो गया। पत्नियों का भी बहिष्कार होने लगा। उन्हें सामान बेचने वाले दुकानदारों का भी बहिष्कार होने लगा।

हर तरह से बहिष्कृत विश्वासघातियों के परिवारों के बीच कुनबाई संबंध बनने लगे। वंचितों के बीच रहना असंभव होते देख वे अपने जैसों के बीच रहने दूसरे मुहल्लों में चले गए। इसमें उनकी मदद की गई। उनके लिए आधुनिक और साफ-सुथरे घर बनाए गए। पार्क और क्रीड़ास्थल बनाए गए। उनके बच्चों के लिए विशेष स्कूल बने। उनमें रोज़गारपरक शिक्षा दी जाने लगी। इस सबसे अनिवार्यत: एक जातिवादी भेदभाव पैदा हो ही गया। पोषित यूनियनों के सदस्य मज़दूरों के सामन्त (लेबर एरिस्टो-क्रेसी) बन गए। वे अन्य मज़दूरों से अलग दिखने लगे, बेहतर घर, बेहतर वस्त्र, बेहतर शिक्षा, बेहतर लगने वाले। वे बदले की भावना के साथ लूट में हिस्सेदारी कर रहे थे।

इस दौरान शेष मज़दूर वर्ग के साथ कठोर व्यवहार होता रहा। उनसे सुविधाएं छीनी जाती रहीं। जीवन स्तर गिरता गया। उनके स्कूलों का स्तर गिरता गया और शिक्षा अनिवार्य नहीं रह गई। अशिक्षित नौजवानों की संख्या खतरनाक बिन्दु तक पहुंच गई।

विश्व बाज़ार पर अमरीका के कब्ज़े ने शेष विश्व को उलट-पलट दिया था। हर जगह संस्थाएं और सरकारें ध्वस्त या रूपांतरित हो रही थीं। जर्मनी, इटली, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में सहकारी कामनवेल्थ का प्रयोग शुरू हो गया था। ब्रिट्रिश साम्राज्य टूट-बिखर रहा था। इंग्लैंड के सामने समस्याएं ही समस्याएं थीं। भारत में विद्रोह की स्थिति थी। एशिया में नारा बुलंद हो रहा था—'एशिया, एशिया वालों के लिए।' इनके पीछे जापान का हाथ था जो श्वेतों के विरुद्ध भूरी और पीत जातियों को उकसा रहा था। जापान एशियाई साम्राज्य का सपना देख रहा था—उस ओर अग्रसर भी था, पर अपने देश में मज़दूर क्रांति का दमन करता था। यह जातियों के बीच संघर्ष था, कुली बनाम समुराई। कुली समाजवादी हज़ारों की संख्या में मारे जा रहे थे। तोकियो की सड़कों पर और मिकादो महल पर हमले में, चालीस हज़ार मारे जा चुके थे। कोबे खंडहर बन चुका था। कपड़ा मिलों में मशीनगनों से हुई भयानक हत्या एक क्लासिक उदाहरण बन

गया। एक हफ्ते वह सड़क पार बार में वेटर का काम करते रहे। चौकीदार का काम किया, आलू बेचा। डिब्बों पर लेबल चिपकाया, कागज की दूकान पर काम किया और एक रेलवे गैंग में पानी ढोया, एक डिशवाशर्स यूनियन में भी शामिल हो गए पर वह जल्दी ही टूट गई।

कपड़ों के बारे में बिशप का उदाहरण उन्हें अच्छा लगा होगा क्योंकि वह एक सस्ती कमीज, ढीली-ढाली पतलून और सस्ती सी बेल्ट पहनते। पर एक आदत नहीं छूट रही थी—डिनर के वक्त सजधज कर बैठते।

मैं तो अर्नेस्ट के साथ कहीं भी खुश रह लेती। बदले हालात में पापा की खुशी ने तो मुझे हर तरह खुश कर दिया था।

एक दिन पापा ने कहा : 'जब मैं लड़का था बहुत जिज्ञासु था। मैं जानना चाहता कोई चीज़ क्यों हैं, कुछ क्यों होता है। तभी तो भौतिकशास्त्री हो गया। जिज्ञासा आज भी वैसी ही है और तभी जीना अच्छा लगता है।'

कभी-कभी वह उत्तर की ओर आगे बढ़ जाते—शापिंग और थिएटर वाले मोहल्ले की ओर। वहां वह अखबार बेचते टैक्सी के दरवाजे खोलते-कोई भी ऐसा वैसा काम।

वहां एक दिन एक टैक्सी में मिस्टर विक्सन मिले। शाम को लौट कर पापा ने हंसते हुए हमें बताया :

'जब मैंने टैक्सी का दरवाजा बंद किया तो विक्सन घूरते हुए बुदबुदाया-'खुदा का कहर' बस यूँ ही बोलता रहा (खुदा का कहर)।' चेहरा लाल हो गया। इतना परेशान हो गया कि मुझे टिप देना भी भूल गया। पर जल्दी ही सम्भल गया होगा क्योंकि टैक्सी पचास फीट ही गई होगी कि लौट पड़ी। वह झांक कर बोला : 'क्या बात है प्रोफेसर, यह तो हद हो गई। बोलो क्या कर सकता हूं मैं तुम्हारे लिए?'

'मैंने आपकी टैक्सी का दरवाजा बंद किया था। चलन के हिसाब से मुझे टिप दे सकते हैं।'

'क्या बात हुई। मैं कुछ ठोस के बारे में कह रहा था।' वह गंभीर लग रहा था—अन्तरात्मा की पुकार?

मैं उसे गंभीरतापूर्वक देखता रहा। उसके चेहरे पर आशा के भाव थे जब मैंने कहना शुरू किया था पर जब खत्म किया तब का भाव देखते।

'मेरा घर मेरे शेयर वापस कर सकते हो!'

पापा थम गए।

'क्या बोला वह?' मैंने हड़बड़ी में पूछा।

'क्या कहता वह? कुछ नहीं बोला। पर मैंने कहा 'उम्मीद है खुश होंगे।' मेरी ओर उसने अजीब तरह से देखा। मैंने पूछा : 'बोलिए न, खुश हैं न?'

'उसने गाड़ी आगे बढ़वा दी और बड़ी-बड़ी गालियां देता गया। उसने न मुझे टिप दी न घर, न शेयर; देखो न तुम्हारे पापा के नए जीवन में कितनी निराशाएं हैं।'

गया। सबसे क्रूर तो जापानी विशिष्ट तंत्र था। जापान का पूर्व पर वर्चस्व कायम हो गया। विश्व बाज़ार के एशियाई हिस्से, भारत को छोड़कर, को उसने दबोच लिया।

इंग्लैंड अपनी सर्वहारा क्रांति का दमन करने में सफल हो गया और भारत का उपनिवेश बचाए रख सका। हालांकि इसमें वह खप सा गया। उसके हाथ से उसके कई बड़े उपनिवेश निकल गए। समाजवादी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को तभी सहकारी कामनवेल्थ बना सके। इसी तरह कनाडा भी हाथ से निकल गया। पर वहां आयरन हील की मदद से समाजवादी क्रांति कुचल दी गई। आयरन हील ने क्यूबा और मैक्सिको को भी विद्रोह कुचलने में मदद की। इस तरह नई दुनिया में आयरन हील मजबूती से जम गया। पनामा नहर से आर्कटिक क्षेत्र तक विराट भू-भाग पर उसका एकक्षत्र प्रभुत्व कायम हो गया।

इंगलैंड के पास भारत ही बचा। जापान और शेष एशिया से संघर्ष बस टला था। कुछ ही दिनों बाद भारत भी नहीं बचा। उसके पीछे संयुक्त एशिया और विश्व के बीच का संघर्ष जारी रहा।

सारी दुनिया में संघर्ष जारी था तो यहां युनाइटेड स्टेट्स में भी जन शान्त और चुप नहीं बैठे थे। बड़ी यूनियनों के विश्वासघात ने सर्वहारा विद्रोह रोक दिया था पर हिंसा तो हर जगह व्याप्त थी। मज़दूरों की समस्या, फार्मरों तथा मध्यवर्ग के अवशेष के असंतोष के साथ एक धार्मिक पुनरुत्थान भी जोर पकड़ने लगा। सेवेन्थ डे एडवेंटिस्ट की एक नई शाखा ने शीघ्र ही विश्व के अंत की बात चला दी।

'करेला और नीम चढ़ा। इन टकरावों और विग्रहों के बीच कैसे बनेगी हमारी एकजुटता?' अर्नेस्ट चिल्लाता।

धार्मिक पुनरुत्थान खतरनाक तरीके से बढ़ रहा था। लोगों का हाल बुरा था—हर तरफ निराशा-हताशा के बीच इस सोच का जोर पकड़ना स्वाभाविक था कि कम से कम उत्पीड़कों का स्वर्ग पहुंचना उतना ही कठिन था जितना सुई के छेद के बीच से ऊंट का निकल जाना (जैसा कि बाइबिल में लिखा है)। जंगली आंखों वाले उपदेशक सारे देश में विचरण करने लगे थे। नागरिक प्रशासन द्वारा प्रतिबंधित होने और उल्लंघन पर सज़ा होने के बावजूद अनगिनत कैम्प धार्मिक उन्माद फैला रहे थे।

अंतिम दिन आ पहुंचे हैं। वे घोषित करते-विश्व के अंत का प्रारंभ है यह। चारों हवाएं मुक्त कर दी गई थीं। विज़न और चमत्कारों की चर्चा थी चारों ओर। संतों और भविष्यवक्ताओं की चल निकली थी। लाखों लोग काम छोड़ पहाड़ों में भाग गए थे। उन्हें ईश्वर के प्रादुर्भाव और चौदह लाख चार हज़ार लोगों के स्वर्गारोहण का इन्तज़ार था। पर ईश्वर तो आए नहीं और उनमें से अधिकांश भूखों मर गए। हताशा में उन्होंने भोजन के लिए फार्मों को रौंद डाला। गांवों में उथल-पुथल मच गई। अराजकता ने वंचित हुए फार्मरों की कठिनाई बढ़ा दी।

फार्म और गोदाम आयरन हील की सम्पत्ति हो गए थे। फौज लगा दी गई और

धर्मान्धों को संगीन की नोक पर उनके कामों पर वापस भेज दिया गया। वहां भीड़ बढ़ी तो दंगे हो गए। उनके नेताओं को देशद्रोह के लिए पागलखाने भेज दिया गया, फांसी दे दी गई। वे फांसी पर शहीदों की तरह खुशी-खुशी चढ़ गए। लोगों पर पागलपन सवार था। अशांति बढ़ती गई। दलदलों, रेगिस्तानों और उपेक्षित इलाकों में, फ्लोरिडा से अलास्का तक, बचे खुचे इंडियन अपने मसीहा के इंतजार में भूत नृत्य करते मस्त थे।

इस सबके दौरान निश्चय और गंभीरता के साथ उस काल के दैत्य विशिष्ट तंत्र (आलिगैर्की) का स्वरूप बढ़ता गया-भयानक रूप से। इस्पाती दृढ़ता के साथ उसने उफनते लाखों लाखों लोगों को नियंत्रित किया, अव्यवस्था खत्म कर व्यवस्था कायम की और उसी दौरान अपनी नींव और संरचना मजबूत की।

काल्विन ने हमें बताया था कि ग्रैन्जर कह रहे थे : 'बस हमारे पहुंचने का इन्तजार करो। देखो कितने राज्यों पर हमने कब्जा किया है। हम पद ग्रहण तो कर लें-फिर समाजवादियों की मदद से उन्हें अपने गीत गाने पर मजबूर कर देंगे।'

समाजवादी कह रहे थे : 'लाखों दुखियारे हमारे साथ हैं। ग्रैन्जर हमारे साथ हैं। साथ हैं फार्मर, मध्यवर्ग और मजदूर। पूंजीवादी व्यवस्था चकनाचूर हो जाएगी। एक महीने में हम पचास लोग केंद्रीय विधायिका में पहुंचा देंगे। दो साल में राष्ट्रपति से नीचे कुत्ता पकड़ने वाले कर्मचारी तक सभी पदों पर हमारे लोग होंगे।'

यह सब सुन अर्नेस्ट उद्विग्न हो सिर हिलाता और कहता : 'कितनी राइफलें हैं तुम्हारे पास?' कहां मिलेंगे हथियार, जानते हो? बारूद के लिए रासायनिक मिश्रण जरूरी है यांत्रिक नहीं—याद रखना हमारी बात!'

अंत

जब अर्नेस्ट और मेरे वाशिंगटन जाने का वक्त आया तो पापा साथ नहीं चले। वह सर्वहारा जीवन में रंग गए थे। वह पड़ोस की झोपड़पट्टी को एक बड़ी सी प्रयोगशाला मानकर उसमें जांच-पड़ताल करने में व्यस्त थे। उनकी मजदूरों से दोस्ती हो गई थी और कितनों ही घरों में आना-जाना था। तरह-तरह के काम करते। काम उनके लिए मनोरंजन और शोध एक-साथ होता जिसे वह खुशी-खुशी अंजाम देते और घर लौटते दिखते आकड़ों और नोट्स के साथ। परिपूर्ण वैज्ञानिक हो गए थे वह।

वैसे उनको काम करने की जरूरत नहीं रह गई थी। अर्नेस्ट अनुवादों से हम तीनों के जीने भर का कमा ले रहा था। लेकिन वह काम करने पर जोर देते- यह उनका प्रिय शगल था। वह शाम मैं कभी नहीं भूलंगी जब वह फेरी वाले का साजों सामान लेकर घर लौटे थे-फीते, लटकन वगैरह या वह दिन जब मैं नुक्कड़ के किराने की दुकान में घुसी तो देखा सामान बेचने पापा खड़े हैं। उसके बाद तो मुझे आश्चर्य होना बंद हो

बिडेनबाख की आंखें भर आईं जब उसने कहा विक्सन को मरना पड़ेगा। और जब हमने उसकी राय के विरुद्ध मत दिया तो उसे राहत मिलती दिखी। पर हम भी उसे जाने देने के खिलाफ थे।

अर्नेस्ट ने कहा : 'मैं बताता हूं। हम उसे यहां रख कर शिक्षित करेंगे।'

'तो मैं उसे न्याय व्यवस्था में शिक्षित करने की जिम्मेदारी लेता हूं।' बिडेनबाख चीखा।

हंसते-हंसते एक निर्णय लिया गया। हम फिलिप को क़ैद रखेंगे और उसे अपनी नैतिकता और समाजशास्त्र सिखाएंगे। पर इसके लिए कुछ काम निपटाने थे। उसके आने के सारे निशान मिटा देने थे। ऊपर से नीचे फिसलते वक्त उसके निशान बन गए थे। यह काम बिडेनबाख के जिम्मे आया। एक रस्सी से लटका वह देर तक इसी में लगा रहा। इसी तरह मांद के ऊपर छोर पर से भी सारे निशान मिटाए गए। शाम को जॉन कार्लसन आया और उसने विक्सन के जूते मांगे।

नौजवान अपने जूते देने को तैयार नहीं था। वह तो लड़ने को तैयार था पर अर्नेस्ट के हाथों की ताकत महसूस करने के बाद उसने हथियार डाल दिए। वे जूते छोटे थे और कार्लसन के पैरों की कई जगह से चमड़ी छिल गई पर उन्हें किसी तरह पहनकर वह मांद के मुंह तक आकर बाएं तरफ दूर तक चला गया। वह टीलों पर, पहाड़ियों पर, बीहड़ में और अंत में वह नदी के पेटे में भी चक्कर लगा आया। उसके बाद उसने अपने जूते पहन लिए। विक्सन को हफ्ते भर बाद मिले उसके जूते।

उस रात कुत्ते घूमते रहे और मांद में नींद हराम थी। दूसरे दिन भी भूंकते कुत्ते मांद के मुंह तक आते फिर कार्लसन द्वारा बनाए गए निशान के पीछे भागते चले जाते और दूर तक से उनकी आवाज़ मद्धम-मद्धम सुनाई पड़ती। हर वक्त हमारे साथी बन्दूक, राइफल और बिडेनबाख की बनाई ज्वालामुखी मशीनें ताने इन्तजार करते रहते। अगर विक्सन की तलाश पार्टी वहां पहुंच जाती तो उसके आश्चर्य की कल्पना करना मुश्किल था।

मैंने एक समय के कुलीन और बाद में क्रांति के साथी फिलिप विक्सन के ग़ायब होने की सच्ची कहानी सुना दी। हम अन्ततः उसे रूपान्तरित करने में सफल हो गए थे। उसका दिमाग़ ताज़ा और नमनीय था। प्रकृत्या वह बहुत नैतिकतावादी था। कई महीने बाद हम उसे उसके पिता के घोड़े पर बिठा सोनोमा पहाड़ ले गए फिर पेटालूमा ले गए और एक मछली पकड़ने वाली बोट में बिठा दिया। थोड़ा-थोड़ा करके हमने उसे अपनी भूमिगत रेल से उसे कारमेल वाली शरणस्थली तक पहुंचा दिया।

वहां वह आठ महीने रहा। उसके बाद दो कारणों से वह हमसे दूर जाने को तैयार नहीं था। एक तो यह कि वह अन्ना रायलस्टन से प्यार करने लगा था। दूसरे यह कि वह हम में से एक हो गया था। जब उसने समझ लिया कि उसका प्यार सफल नहीं हो सकता तभी वह पिता के पास लौटने को राज़ी हुआ। मृत्यु तक वह देखने में कुलीन तंत्र

दीवानों में उनकी नींव हिला देने की कूवत होती है। कल जब महाविद्रोह शुरू होगा और सारी दुनिया में बंदूक की आवाज गूंजेगी, शासकों को अहसास होगा-हालांकि काफी देर हो चुकी होगी, कि आखिर ये समाज के नए नायक कितने बड़े हो गये हैं।

स्वयं एक क्रांतिवादी की हैसियत से मैं उनके डर और आशाएं जानती-समझती थी। क्रांतिवादियों की गुप्त योजनाएं थीं। इस आरोप का कि वे व्यवस्थापिका भवन में बम विस्फोट करना चाहते थे। उत्तर देने में मैं पूरी तरह समर्थ हूं कि समाजवादियों की कहीं भी-न अन्दर न बाहर, बम विस्फोट की कोई योजना नहीं थी। बम किसने फेंका हम नहीं जानते पर एक बात निश्चित है हमने नहीं फेंका था।

इसके विपरीत इस बात का प्रमाण है कि आयरन हील ने ही ऐसा करवाया था। निश्चित ही हम इसे साबित नहीं कर सकते। हम बस अनुमान लगा सकते हैं पर कुछ तथ्य तो स्पष्ट हैं। सीक्रेट सर्विस ने स्पीकर को बताया था कि समाजवादी कांग्रेस सदस्य आतंकवादी तरीके अपनाने पर आमादा हैं और उन्होंने तिथि भी तय कर रखी। यही दिन मुकर्रर था। तभी सारी इमारत में सिपाही भरे पड़े थे। चूंकि हम इसके बारे में बिल्कुल नहीं जानते थे, चूंकि वास्तव में उसी दिन बम फूटा, चूंकि अधिकारियों ने पहले से ही इस विस्फोट की तैयारी कर रखी थी, यह उचित होगा कि हम नतीजा निकालें कि आयरन हील को निश्चित ही पता था। इसीलिए हम आरोप लगाते हैं कि इस अपराध के लिए आयरन हील जिम्मेदार है, उसी ने इस अपराध की योजना बनाई थी कि अपराध हमारे सिर मढ़ कर हमें बरबाद किया जा सके।

स्पीकर से यह खबर सभी लालवर्दीधारियों तक चुपके-चुपके पहुंच गई थी। जब अर्नेस्ट बोल रहा था तब उन्हें पता था कि कुछ विस्फोटक घटने वाला है। न्याय तो यही कहेगा कि उन्हें वास्तव में यही पता था कि विस्फोट समाजवादी करेंगे। मुकदमें के दौरान कुछ ने पूरे विश्वास के साथ गवाही दी कि अर्नेस्ट बम फेंकने की तैयारी कर रहा था पर वह वक्त के पहले फूट गया। निश्चित ही उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं देखा था। पर भय की अकुलाहट में उन्होंने कल्पना में ऐसा होते देख लिया। मुकदमें के दौरान अर्नेस्ट ने कहा था :

'क्या यह विश्वसनीय है? अगर मुझे बम फेंकना ही होता तो उतना मामूली बम फेंकता जैसा फेंका गया था? उसमें तो पर्याप्त बारूद ही नहीं था। उससे धुंआ खूब उठा पर चोट तो मेरे अलावा किसी को नहीं आई। मेरे पांव के पास ही फूटा फिर भी मैं मरा नहीं। विश्वास रखिए। अगर बम फेंकने का निर्णय लूंगा तो नुक्सान भी होगा अच्छा खासा। मेरे बमों में धुंआ ही नहीं होगा।

सरकार की ओर से दलील दी गई कि यह समाजवादियों की गलती थी कि उन्होंने इतना कमजोर बम चुना-ठीक उसी तरह जैसे गलती से उनका बम पहले ही फट गया क्योंकि अर्नेस्ट नर्वस हो गया था। बहुत से सदस्यों ने बाकायदा गवाही दी कि उन्होंने अपनी आंख से देखा था कि अर्नेस्ट ने बम निकाला, लड़खड़ाया और बम गिर पड़ा।

जहां तक हमारा सवाल है हममें से किसी को पता नहीं था कि बम कैसे फटा। अर्नेस्ट ने मुझे बताया था कि जिस क्षण बम फटा उसने उसे फटते देखा और सुना था। उसने मुकदमें के दौरान ऐसा कहा पर किसी को विश्वास ही नहीं हुआ। लोगों की जुबान में कहें तो खिचड़ी पकाई जा चुकी थी।

आयरन हील ने हमें नष्ट करने का निश्चय कर लिया था और तब उसे कौन डिगा पाता!

कहावत है कि सच्चाई उजागर हो ही जाती है। मुझे इसकी सच्चाई पर शक है। उन्नीस साल बीत चुके हैं पर हम उस आदमी का पता नहीं लगा सके जिसने ऐसा किया था। निश्चित ही वह आयरन हील का आदमी रहा होगा। उसे खोजा नहीं जा सका। उसके हुलिया के बारे में भी कोई सुराग नहीं मिला। और अब यह मामला इतिहास के रहस्यों में से एक बन गया है। (यहां उन्नीसवीं शताब्दी के शिकागो के हे मार्केट की उस त्रासदी की याद कर लेना मुनासिब होगा जिसमें यह प्रमाणित हो चुका है कि सरकार ने ही बम फिकवाया था और पार्सन्स जैसे नेताओं को उसके लिए फंसा कर फांसी दे दी थी। सारी कथा होवर्ड फास्ट के उपन्यास 'द अमेरिकन' में उपलब्ध है। हिन्दी में भी अनूदित—अनुवादक। उस समय के सर्वमान्य समाजवादी नेता इउजीन डेब्स ने कहा था—'जिन मजदूर नेताओं को खरीदा नहीं जा सकता उन्हें जलाया-मारा जा सकता है.....पूंजीपतियों ने हमारा देश चुरा लिया है, हमारी राजनीति भ्रष्ट कर दी है, न्यायपालिका को विकृत कर दिया है। हमें रौंद दिया है। और जो समर्पण नहीं करेंगे उनकी हत्या कर दी जाएगी।')

सोनोमा की छांव में

उस दौरान मेरे बारे में कुछ खास कहने को नहीं है। मुझे महीने तक जेल में रखा गया हालांकि अपराध कोई नहीं लगाया गया था। मुझ पर शुबहा था। यह एक डरावना शब्द बन गया सभी क्रांतिवादियों के लिए। इस बीच हमारी अपनी नवजात गुप्तचर सेवा शुरु हो गई थी। जेल के दूसरे महीने के अंत तक एक जेलर ने अपने को क्रांतिवादी बताया जिसकी संगठन तक पहुंच थी। कुछ हफ्ते बाद नव नियुक्त डॉक्टर जोसेफ मार्कहर्स्ट 'फाईटिंग' ग्रुप्स का सदस्य निकला।

इस प्रकार जैसे शासकों का संगठन फैल रहा था, हमारा मकड़जाल भी फैल रहा था। इस तरह हमें भी बाहरी दुनिया की खबरें मिलने लगीं। हमारे हर नेता का आयरन हील की लालवर्दी में बैठे हुए अपने आदमियों से सम्पर्क स्थापित हो गया। हालांकि अर्नेस्ट प्रशान्त महासागर तट पर मुझसे तीन हजार मील दूर कैद था, परन्तु हमारा सम्पर्क बना हुआ था और हमारे बीच खतो-किताबत भी जारी थी।

फिलिप विक्सन था, हालांकि उस वक्त मैं उसे जानती नहीं थी। उसने इत्मिनान से मुझे देखा और आश्चर्य वाली सीटी निकली उसके मुंह से। वह बोला:

'तो! भई! माफ करिएगा। मुझे किसी के यहां होने की उम्मीद नहीं थी।'

मैं उतनी संतुलित नहीं रह सकी। ऐसी अप्रत्याशित स्थिति में कैसे व्यवहार करना चाहिए के बारे में नौसिखुआ ही थी। बाद में जब मैं अन्तर्राष्ट्रीय जासूस बन गई, मैं थोड़ा और सन्नद्ध रहने लगी थी। खैर मैं झट से उठ खड़ी हुई और खतरे की आवाज़ निकाल दी।

वह मेरी ओर खोजपूर्ण आंखों से देखता रहा और पूछा : 'ऐसा क्यों किया आपने?'

स्पष्ट था कि उसे हमारे यहां रहने के बारे में कुछ नहीं पता था। यह जानकर थोड़ी राहत मिली। उस दिन ज्यादा व्यवस्थित नहीं थी : मैंने प्रतिप्रश्न कर दिया: 'क्यों किया होगा ऐसा मैंने?'

उसने सिर हिलाते हुए कहा : पता नहीं। आपके कुछ दोस्त तो नहीं हैं यहां? आपको जवाब देना पड़ेगा। आपने हमारे पिता की जायदाद में घुसपैठ की है। उसी क्षण बिडेनबाख ने अपने परिचित भद्र लहजे में कहा :

'हैन्ड्सअप! मेरे नौजवान सर!'

उसने पहले हाथ ऊपर उठा दिया फिर मुड़ा तो देखा बिडेनबाख एक आटोमेटिक राइफल ताने खड़ा था। विक्सन विचलित नहीं हुआ। बोला :

'अच्छा तो क्रांतिकारियों का घोंसला है—काफी आक्रामक घोंसला है। पर कहे देता हूं ज्यादा दिनों तक यहां नहीं रह सकोगे।'

'हो सकता है तुम्हें यहां ज्यादा दिन रहना पड़े अपने वक्तव्य पर पुनर्विचार के लिए। बहरहाल मेरे साथ अंदर चलो।' बिडेनबाख ने शांतिपूर्वक कहा।

'अन्दर? तो क्या यहां भूमिगत रिहाइश है। सुना तो है उनके बारे में।' उसे दरअसल आश्चर्य हुआ था अन्दर सुनकर।

'आकर देख लो।' बिडेनबाख ने उसी लहजे में जवाब दिया।

'पर यह तो ग़ैरकानूनी है।' उसने विरोध दर्ज किया।

'हां तुम्हारे कानून के हिसाब से। पर हमारे अपने कानून के अनुसार इसमें कुछ भी ग़ैरकानूनी नहीं है। आदत डाल लो कि अब तुम अपनी उत्पीड़न और बर्बर दुनिया से भिन्न संसार में हो।' क्रांतिकारी ने उसे समझाया।

'इस बात में तो तर्क की गुन्जाइश है।' विकसन ने कहा।

'तो क़रो तर्क यहां रहकर।'

नौजवान हंसा और उसके पीछे हमारे घर में दाखिल हुआ। उसे गुफा के अन्दर से ले आया गया। एक व्यक्ति उस पर पहरा देने लगा। हमने किचन में राय मशविरा किया।

में जब मैंने पुरानी एविस वाला लहजा अपनाकर उसके कान में कुछ ऐसा कहा जिसे अर्नेस्ट और एविस के अलावा कोई नहीं जानता था तब उसने मुझे अपनी पत्नी की तरह स्वीकार किया।

बाद में वह मुझे बाहों में भरकर अपने बहुपत्नीत्व की बात कर चिढ़ाने लगा :

'तुम मेरी एविस हो और कोई और भी हो। तुम दो हो इसलिए मेरा हरम तो बन गया। बहरहाल हम अब सुरक्षित हैं। अगर युनाइटेड स्टेट्स में हमारे लिए रहना बहुत खतरनाक हो जाता है तो हम (बहुविवाह के कारण) तुर्की की नागरिकता पा सकते हैं।'

अब उस शरणस्थल में मेरे लिए जीवन बहुत सुखद हो गया। यह सच है कि हम बहुत देर तक कठिन परिश्रम करते, पर साथ-साथ करते। अट्ठारह बहुमूल्य महीने के दौरान हमने साथ काम किया। और फिर अकेले भी नहीं थे क्योंकि लगातार नेताओं और साथियों का आना-जाना लगा रहा—भूमिगत संसार और क्रांति के अजीब-अजीब स्वर, संघर्ष और युद्ध में कठिनाइयों के ढेरों किस्से! इनके बीच हंसी-खुशी भी थी। हम मुंह लटकाए षडयंत्रकारी नहीं थे। हम कठिन परिश्रम करते, कठिनाइयां झेलते, अपने बीच पैदा होने वाले गैप भरते और आगे बढ़ते जाते और जीवन-मृत्यु के बीच इस खेल के दौरान हम प्यार और हंसी-खुशी के लिए भी समय निकालते रहते। हमारे बीच होते—कलाकार, वैज्ञानिक, विद्वान, संगीतकार, कवि और हमारे उस बिल में महलों और निराले नगरों की अपेक्षा बेहतर और उच्चतर संस्कृति चरितार्थ होती। दरअसल उन महलों और नगरों के वास्तविक निर्माण में भी तो प्राय: हमारे ही साथियों की मेहनत और हुनर लगती है।

और फिर हम उस बिल तक ही तो सिमटे नहीं थे। अक्सर रात को हम एक्सरसाइज़ के लिए घुड़सवारी करते, विक्सन के घोड़ों पर। अगर उसे पता चल जाता कि उसके घोड़ों पर कितने क्रांतिकारियों ने सवारी की है तो खुदा ही....। हम कभी सामान्यत: अज्ञात जगहों पर पिकनिक पर भी जाते—भोर के पहले पहुंच जाते और शाम होने के बाद लौटते। हम विक्सन की गोशाला का दूध और मक्खन भी इस्तेमाल करते। अर्नेस्ट तो कभी-कभी विक्सन की चिड़ियों और खरगोश का भी शिकार कर लेता।

निश्चित ही जगह सुरक्षित थी। मैंने कहा है न कि बस एक बार कोई अजनबी वहां आ धमका था। यह बात युवा विक्सन के ग़ायब हो जाने से जुड़ती है। अब वह रहा नहीं तो मैं बताने के लिए स्वतंत्र हूं। उस मांद में एक कोना ऐसा था जो ऊपर से दिखता नहीं था पर वहां कई घण्टे तक धूप रहती थी। वहां हमने ऊपर के ढेरों छोटे-छोटे पत्थर लाकर बिछा दिए थे। इसलिए वह सूखी ज़मीन थी, धूप खाने के लिए एकदम फिट। एक दोपहर मैं मेन्डेनहाल की कविताएं पढ़ते-पढ़ते ऊंघ रही थी। मैं इतने आराम से थी कि उसकी उत्तेजक कविताएं भी मुझे जगाए नहीं रख सकीं।

मेरे पैर के पास एक मिट्टी का ढेला गिरा तो मैं जाग उठी। फिर सरकने की आवाज़ आई और दूसरे ही क्षण एक नौजवान फिसलकर मेरे पास आ खड़ा हुआ—

नेता अन्दर हो या बाहर पूरे अभियान के बारे में विचार विमर्श कर लेते और उसे संचालित करते। कुछ ही महीनों में कुछ नेताओं को जेल से बाहर भगा लेने की संभावना बन गई थी पर चूंकि हमारा काम-काज ऐसे भी चल ही रहा था हमने कुछ भी ऐसा करने से अपने को रोका जो अपरिपक्व सिद्ध होता। हमारे बावन विधायक जेल में थे, कुल मिलाकर तीन सौ नेता। फैसला हुआ कि उन्हें एक साथ मुक्त कराया जाय। अगर कुछ को पहले निकाला जाता तो औरों का पलायन दूभर हो जाता क्योंकि उन पर निगरानी बढ़ जाती। दूसरी ओर सारे देश से एक साथ सबका जेल तोड़ना मेहनतकशों के लिए बहुत मनोवैज्ञानिक लाभ पहुंचाने वाला सिद्ध हो सकता था। इससे हमारी शक्ति प्रदर्शित होती औरआत्मविश्वास बढ़ता। तो यह तय हुआ कि छ: महीने की सजा से छूटने पर मैं गायब हो जाऊं और अर्नेस्ट के लिए एक सुरक्षित जगह ढूंढ़ कर रखूं। गयाब हो जाना अपने में कोई आसान बात नहीं थी। जैसे ही मैं छूटी मेरे पीछे आयरन हील के जासूस लग गए। जरूरी हो गया कि उन्हें भटकाकर में कैलिफोर्निया भागूं। जिस तरह यह संभव हो पाया वह हास्यास्पद था।

रूस की तरह ही पासपोर्ट व्यवस्था का चलन शुरू हो गया था। मैं अपनी ही तरह यह दूरी तय नहीं कर सकती थी। जरूरी था कि मैं पूरी तरह गायब हो जाऊं-अगर अर्नेस्ट से मिलने की ख्वाहिश बची हो क्योंकि उसके पलायन के बाद मेरा पीछा करके उस तक पहुंचा जा सकता था। पर मैं भेष बदल कर मजदूर तो बन नहीं सकती थी कि ट्रेन का सफर कर लेती। एक ही उपाय था-शासकों की नकल करना। हालांकि शासकों के शीर्ष पर कुछ ही लोग थे, उनके नीचे और बहुत से लोग थे। जैसे श्री विक्सन-छोटे लखपति। इन शासकों की हैसियत लखपतियों जैसी थी। इन छुटभइयों की बहू-बेटियों की नकल की जा सकती थी। कुछ वर्षों बाद यह असम्भव हो जाता क्योंकि पासपोर्ट व्यवस्था लागू हो जाती और व्यवस्था इतनी मजबूत हो जाती कि कोई राजपत्रित होने से बच नहीं जाता। सभी सरकारी हिसाब-किताब के अंग बन जाते।

वक्त आते ही मेरे पीछे लगे जासूस भटका दिए गए। एक घन्टा बाद एविस एवरहार्ड का वजूद खत्म हो गया। उस वक्त फेलिक्स फान फेड्रियन दो नौकरानियों और एक गोद वाले कुत्ते के साथ प्रकट हुई। एक नौकरानी कुत्ते के लिए थी। वह रेलगाड़ी के डिलक्स डब्बे में घुसी और पश्चिम की ओर चल दी।

मेरे साथ जा रही तीनों नौकरानियां क्रांतिवादी थीं। दो तो फाईटिंग ग्रुप की सदस्या थीं। तीसरी ग्रेस हॉल बुक एक दूसरे ग्रुप में शामिल हो गई और छ: महीने बाद मार दी गई। वही कुत्ते का ख्याल रखती थी। बाकी दो भी बारह साल बाद गुम हो गईं। अन्ना टायस्टन अभी भी जिन्दा है और क्रांति के काम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

बिना किसी दुस्साहस की नौबत के हम लोग महाद्वीप जैसा देश पार करके कैलिफोर्निया पहुंच गईं। हम ओकलैन्ड स्टेशन पर उतरे और नौकरानियां तथा कुत्ता हमेशा के लिए गायब हो गए। उन्हें विश्वसनीय साथी अपने साथ ले गए। दूसरे साथी

मेरे साथ हो लिए। आधा घन्टे में ही मैं एक छोटी नाव में सानफ्रांसिस्को की खाड़ी में थी। हवा तेज थी और रात में हम काफी देर तक भटकते रहे। मुझे अलकतराज़ की रोशनी दिखी। अर्नेस्ट वहीं कैद था। निकटता बोध से मन को सुख मिला। सुबह होते-होते हम मरीन द्वीप समूह पहुंच गए। यहां हम दिन भर छिपे रहे। दूसरी रात, ज्वार और तेज हवाओं के चलते हम दो घंटों में सान पाब्लो खाड़ी पार करके पेतालूमा की चट्टानों तक पहुंच गए। वहां घोड़े मौजूद थे और हम सितारों वाली रात में बिना देर किए चल पड़े। हमें उत्तर में सोनोमा पहाड़ की चोटियां दिख रही थीं। हमें उसी ओर जाना था। रास्ता संकरा होता गया-सड़क से वन पथ, वन पथ से गोपथ और वह पगडंडी बनता लम्बी घास के मैदान में खो गया। हम सीधे सोनोम पहाड़ पर चढ़ गए। यही सबसे सुरक्षित राह थी। हमें पहचानने वाला कोई नहीं था यहां।

भोर हुई तो हम उत्तर की ओर अग्रसर थे। उजाला बढ़ने के साथ हम चट्टानी बीहड़ कैन्यान में उतरते गए। गर्मी गुजर रही थी। चट्टानों के बीच गर्माहट थी। यह इलाका मेरा जाना-पहचाना था। थोड़ी ही देर में मैं गाइड बन गई। छुपने वाली जगह मेरी थी-मैंने ही चुना था उसे। हमने छोटी बल्लियों से बना बैरीकेड हटाया और लम्बी चरागाह में घुसे। फिर आया ओक के पेड़ों से ढका एक रिज और उसके बाद एक छोटा चरागाह और रिज सामने था। इस बार पेड़ों के पत्ते काफी लाल थे। चढ़ाई शरू हुई तो हमारी पीठ पर धूप पड़ रही थी। झाड़ियों के बीच से बटेरों का एक झुंड पास से ही उड़-भागा। सामने से एक बड़ा सा खरगोश हिरण की तरह उछलता भागा। तभी कई सींघों वाला एक नर हिरन, जिसकी पीठ पर धूप खिल रही थी, रास्ते से हट कर गायब हो गया।

हम उधर ही जा रहे थे जिधर हिरन भागा था। टेढ़े-मेढ़े रास्ते से हम एक तालाब तक पहुंचे जिसका पानी गंदला हो रहा था। मुझे राह ठीक से पता थी? एक जमाने में यह इलाका एक लेखक दोस्त का था। बाद में वह क्रांति समर्थक हो गया और उसका तो हमसे भी बुरा हाल हुआ क्योंकि वह तो गायब ही हो गया। पता ही नहीं चला कहां-कैसे? उसे ही पता था उस जगह के बारे में जहां हम छिप कर रहने वाले थे। इस जगह को इसकी सुन्दरता के लिए खरीदा था। उसने जो कीमत चुकाई थी उससे पास के फार्मर काफी क्षुब्ध थे। वह बताता था कि कैसे दाम सुनकर किसान आपस में गर्दन हिलाते, हिसाब लगाते और फिर आपस में बतियाते : 'इस पर छः प्रतिशत का फायदा तो नहीं हो सकता।'

अब वह मर चुका था। यह सम्पत्ति उसके बच्चों को नहीं मिली थी। यह सम्पत्ति अब मिस्टर विक्सन की थी-सोनोमा पहाड़ के उत्तर और पूरब की सारी सम्पत्ति। उसमें उन्होंने एक खूबसूरत डियर-पार्क बनवाया था। जिसमें हजारों एकड़ में पहाड़ी नदियों, चट्टानों और जंगलों के बीच हिरण आदिम आजादी का उपयोग करते थे। जिनकी मूलतः जमीन थी उन्हें भगा दिया गया था। वहां स्थापित मंदबुद्धि लोगों के एक 'होम' को भी ध्वस्त कर दिया गया था डियर पार्क के लिए।

ही क्षण मैं अर्नेस्ट की बाहों में थी। इस क्षण मैंने महसूस किया कि मेरा इतना रूपान्तरण हो चुका था कि एविस एवरहार्ड की पुरानी भंगिमाएं और मुस्कराहट, वापस लाने में मुझे प्रयास करना पड़ा। बहुत मेहनत करके मैं अपनी पुरानी पहचान बनाए रख पायी क्योंकि अपने नए व्यक्तित्व को अनिवार्यता की आदत पड़ गई थी।

अंदर के केबिन में पहुंचकर मैंने अर्नेस्ट का चेहरा रोशनी में देखा। जेल में रहने से आए पीलेपन के अलावा उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था—कम से कम ऐसा नहीं जो फौरन दिखता। वही था मेरा वही प्रेमी-पति हीरो था। हां उसके चेहरे की बढ़ी लकीरों में एक फकीराना झलक थी। पर इसने एक तरह से उसके चेहरे पर जिन्दगी के अतिरेकों की छाप को संतुलित ही किया था। पहले के मुकाबले गंभीर हो गया था पर आंखों में हंसी की चमक बरकरार थी। वज़न बीस पाउण्ड घट गया था पर पूरी तरह स्वस्थ रहा था। उसने जेल में एक्सरसाइज़ जारी रखी थी और मांसपेशियां लोहे जैसी हो रही थीं। सच कहें तो अब उसका स्वास्थ्य पहले से बेहतर था। घन्टों बाद ही वह लेट गया और मैंने उसे सहला-सहला कर सुला दिया। पर मेरी नींद तो गायब थी। मैं बेहद खुश जो थी और फिर जेल तोड़ने और घुड़सवारी करने की थकान भी तो नहीं थी मुझे।

अर्नेस्ट सो रहा था और मैंने इस बीच कपड़े बदले और बाल अपने नए चोले के अनुसार बना लिए। जब बिडेनबाख और दूसरे साथी जागे तो उनकी मदद से एक षड्यंत्र रच डाला। हमने तैयारी कर ली थी। हम उस जगह थे जो किचन और डाइनिंगरूम की तरह इस्तेमाल होता था। अर्नेस्ट दरवाजा खोलकर अंदर आया। उसी समय बिडेनबाख ने मुझे मेरी कहकर संबोधित किया और मैंने मुड़कर जवाब दिया। फिर मैंने अर्नेस्ट पर ऐसी नज़र डाली जैसे कोई भी नवयुवती क्रांति के एक नायक को पहली बार देखने पर करती। अर्नेस्ट धोखा खा गया और मेरे चारों ओर कमरे का मुआइना करने लगा। मेरा मेरी होम्स के रूप में उससे परिचय कराया गया।

मज़ाक को पूरा करने के लिए एक एक्स्ट्रा प्लेट लगाई गई और एक कुर्सी खाली छोड़ दी गई। अर्नेस्ट की अधीरता और अकुलाहट देखकर मैं खुशी से पागल हो रही थी। अंत में उससे रहा नहीं गया। वह बोला :

'मेरी बीबी कहां है?'

'वह अभी भी सो रही है।' मैंने ही जवाब दिया।

निर्णायक क्षण था। पर मेरी आवाज़ बदली हुई थी। वह पहचान नहीं पा रहा था। खाना चलता रहा। मैं एक प्रशंसक की तरह बतियाए जा रही थी। लग रहा था मैं उसे 'हीरो' के रूप में देख रही हूं। उत्साह और पूजा के चरमोत्कर्ष, पर मैं उठी और बाहें उसके गले में डाल चूम लिया उसके होठों को। उसने मुझे दूर हटाकर गुस्से में घूरा। और तब चारों साथी ठट्ठा मारकर हंस पड़े। असलियत बताई। पहले तो उसने मुझे जांचा परखा और फिर तो आसमान से गिर पड़ा और विश्वास ही नहीं कर पाया। अन्त

विक्सन का शिकार गृह हमारे गुप्त-गृह से करीब एक मील दूर था। यह खतरे की जगह अतिरिक्त सुरक्षा का सूचक था। हम एक मझोले धनिक की नाक के नीचे ही रहने वाले थे। वहां किसे शंका होती। आयरन हील के जासूस मुझे और अर्नेस्ट को वहां ढूंढते उसकी तनिक भी संभावना नहीं थी।

हमने तालाब के किनारे रेडबुड के पेड़ों से घोड़े बांधे। एक गिर पड़े भारी पेड़ के पीछे से हमारा साथी वहां छुपाई गई ढेरों चीजें निकाल लाया-एक बोरी आटा, कुछ बर्तन, डिब्बा बंद खाने की चीजें, कम्बल, बरसाती, कुछ किताबें, कागज कलम, चिट्ठियों का पुलिंदा, एक गैलन मिट्टी का तेल और सबसे जरूरी मजबूत रस्सी का एक बड़ा सा बंडल। चीजें इतनी थीं कि शरण स्थली से कई बार यहां आना पड़ता।

वह जगह काफी पास थी। रस्सी उठाकर मैं झाड़ियों के बीच से रास्ता बनाती आगे-आगे चल पड़ी। पगडण्डी अचानक एक पतली नदी के किनारे पहुंच कर खत्म हो गई। नदी बहुत छोटी थी और एक सोते से निकली थी जो तेज से तेज गर्मी में भी नहीं सूखता था। दोनों तरफ लम्बे-लम्बे पेड़ों से लदे टीले थे जिन्हें लगता था किसी लापरवाह दैत्य ने वहां उछाल दिया है। उनमें कोई आधार चट्टान नहीं थी। वे जड़ से सैकड़ों फीट ऊपर तक उठे हुए थे और ज्वालामुखी की लाल मिट्टी के बने थे। यही वह मिट्टी थी जो सोनोमा की शराब की धरती के नाम से मशहूर थी। (जाहिर है वहां अंगूर की बहुत अच्छी खेती होती थी।) इन्हीं के बीच उस नन्हीं नदी ने अपनी गहरी धारा काटकर निकाली थी।

नदी का घाट नीचे काफी दूर था। वहां पर करीब सौ फीट नीचे तक जाना पड़ा। वहां वह विराट सुराख दिखा अचानक, कोई पूर्व सूचना नहीं थी। वह कोई सामान्य सूराख था भी नहीं। डालियों और पथरीली धरती के बीच से रेंगते हुए उसके किनारे पहुंच कर एक हरा सा पर्दा जैसा दिखाई पड़ता था, सौ-दो सौ फीट लम्बा चौड़ा। गहरा भी सौ-पचास फीट होगा ही। प्रकृति जब इस क्षेत्र को रच रही होगी तभी किसी भूल या गलती से पानी के बहाव ने काटकर इस का निर्माण किया होगा-न जाने कितनी सदियों के दौरान। कहीं नंगी धरती दिखती ही नहीं थी। वनस्पतियों की वेष-भूषा सब कुछ ढंके हुए थी-नन्हीं घास के विराट रेडवुड वृक्षों तक वनस्पतियों की अपार विविधता। सूराख की दीवारों में भी पेड़ उग आए थे। कुछ तो पैंतालिस डिग्री का कोण बनाए हुए थे। पर ज्यादातर लम्बवत उत्तान खड़े थे।

बेहतरीन जगह थी छुपने के लिए। कोई नहीं आता था यहां—गांव के बच्चे भी नहीं। यह जगह किसी कैन्यान की मीलों लम्बी घाटी में होती तो उसे सब जान गए होते। पर यह जगह बहुत छोटी थी। नदी की कुल लम्बाई पांच सौ गज होगी। सूराख से तीन सौ गज दूर नदी एक सपाट घास के मैदान में प्रवेश कर जाती थी। नीचे सौ गज पर वह मुख्य धारा में मिल जाती थी जो खुली घास लदी धरती के बीच से लुढ़कती हुई बहती चली जाती थी।

शिकागो कम्यून के दो साल बाद एक दिन देर रात मैं और अर्नेस्ट बेन्टर हार्बर वाले शरणस्थल पर पहुंचे, झील के पार शिकागो के सामने मिशिगन में। हम तब पहुंचे जब एक जासूस का मुकदमा खत्म हो रहा था। उसे मौत की सजा मिली थी और उसे ले जाया जा रहा था। यही था दृश्य। दूसरे ही क्षण उसने अपने को छुड़ा कर मेरे पैर जकड़ लिए पागलों की तरह दया की भीख मांगने लगा। जैसे ही उसने अपना सिर उठाया मैंने उसे पहचान लिया। मैंने बहुत से भयानक दृश्य देखे हैं पर मैं कभी इतनी विचलित नहीं हुई थी जितनी इस व्यक्ति के जीवनदान की प्रार्थना से। वह जीवन के लिए पागल हो रहा था। दयनीय थी स्थिति। दर्जनों लोग उसे घसीट रहे थे पर वह मेरा पैर जकड़े हुए था। अन्ततः वह चीखता रहा और लोग उसे घसीट कर ले गए तो मैं गश खा कर वहीं गिर पड़ी। बहादुर लोगों को मरते देखना आसान है पर कायरों को जीवन की भीख मांगते देखना नहीं।

खोया कुलीन

पुराने दिनों की याद करते-करते मैं अपनी कहानी में काफी आगे भाग आई। सामूहिक जेल वाली घटना 1915 तक नहीं घटी थी। जटिल तो थी पर वह कार्रवाई हुई थी बिना किसी असमंजस के और हमें अपने काम की एक उपलब्धि के रूप में खुशी बहुत हुई थी। क्यूबा से कैलीफोर्निया तक बीसों जेलों और सैनिक जेलों और किलों से एक ही रात हमने अपने बावन विधायकों में से इक्यावन और अन्य तीन सौ से ज्यादा लोगों को छुड़ा लिया था। कहीं भी कोई गलती नहीं हुई थी। न केवल वे जेल से बाहर आकर अपने-अपने निर्धारित ठिकानों पर सही सलामत पहुंच गए थे। आर्थर सिम्पसन, जो नहीं छूटे, उत्पीड़न से पहले ही क्यूबावास में मारे जा चुके थे।

उसके बाद के अट्ठारह महीने अर्नेस्ट के साथ मेरे जीवन के बेहतरीन दिन थे। उस दौरान हम कभी अलग नहीं हुए। बाद में जब हम सामान्य जगत में लौटे तो प्रायः अलग रहना पड़ता। मैं जितनी बेताबी के साथ कल के विद्रोह की मशाल का इन्तज़ार करती हूं उससे भी ज्यादा बेसब्री से मैं उस रात अर्नेस्ट का इन्तज़ार कर रही थी। मैं अरसे से उससे नहीं मिली थी और यह ख्याल कि हमारी किसी ग़लती से वह शायद अपने उस द्वीप स्थित जेल से न भाग पाए मुझे पागल किए दे रहा था। घण्टे युगों की तरह बीत रहे थे। मैं अकेली थी। बीडेनबाख और तीन दूसरे नौजवान बाहर पहाड़ों पर गए थे, किसी भी स्थिति के लिए तैयार होकर। ज्यादातर शरणस्थल उस रात खाली से थे।

भोर की दस्तक के साथ ऊपर से सिग्नल आया और मैंने उत्तर दिया। पहले बीडेनबाख उतरा। मैंने उसको अर्नेस्ट समझ आलिंगन सा कर लिया अंधेरे में। पर दूसरे

मेरे साथी ने रस्सी को एक पेड़ से लपेट कर बांधा और झट मुझे एक छोर पकड़ा नीचे तल तक पहुंचा दिया। थोड़ी देर में उसने सारा समान भी नीचे पहुंचा दिया। फिर उसने रस्सी ऊपर उठाकर छिपा दी और ऊपर से ही खुशी-खुशी विदा कह गायब हो गया।

आगे बढ़ने से पहले कुछ शब्द इस क्रांति के विश्वसनीय हमसफर जांन कार्लसन के लिए। वह विक्सन का कर्मचारी था, शिकार गृह के घुड़साल में दरअसल हम विक्सन के ही घोड़ों पर यहां तक पहुंचे थे। बीस साल से कार्लसन ही इस गुप्त शरणस्थली की निगरानी करता था। इस दौरान कभी कोई विचलन का क्षण शायद ही आया हो, सपने में भी नहीं। वह इतना भावशून्य और शान्त व्यक्ति था कि कल्पना करना मुश्किल था कि इस व्यक्ति के लिए क्रांति का क्या अर्थ होगा। फिर भी उसकी आत्मा में मुक्ति-प्रेम की चमक थी। एक तरह से अच्छा ही था कि वह लड़ाकू और कल्पनाशील नहीं था। वह हमेशा संतुलित रहता था। उसे बस आज्ञापालन आता था। वह न जिज्ञासु था, न बातूनी। मैंने एक बार उसे पूछा था कि वह क्रांति की राह पर कैसे चल पड़ा। उसका उत्तर था :

'जब मैं नौजवान था तो एक सिपाही था, जर्मनी में। वहां सभी जवानों को फौज में भर्ती होना पड़ता था। तो मैं भी था। एक और नौजवान था उसी सेना में। उसका बाप आंदोलन करने वालों में था—उसे जेल भी जाना पड़ा था—क्या कहते हैं सम्राट के विरुद्ध सच बोलने के अपराध में। वह नौजवान, यानी लड़का जनता, काम और पूंजीपतियों, द्वारा जनता की लूट के बारे में बताता रहता था। उसकी बात सच्ची और अच्छी होती थी। मैं तो उसे भूला ही नहीं। जब मैं यहां अमरीका आया तो मैंने समाजवादियों को ढूंढ निकाला। मैं पार्टी का सदस्य हो गया। जब फूट पड़ी तो मैं लोकल पार्टी का मेम्बर बना रहा। मैं तब सानफ्रांसिस्को की एक घुड़साल में नौकर था, भूकम्प के पहले। मैं बाइस साल से अपनी सदस्यता दे रहा हूं। आज भी सदस्य हूं। हालांकि अब तो सब कुछ बहुत गुप्त है। मैं हमेशा सदस्यता देता रहूंगा और जब सहकारी कामनवेल्थ बन जाएगा तो मुझे बहुत खुशी होगी।'

अब मैं अकेली थी। मैंने शुरू किया स्टोव पर नाश्ता बनाना और इस घर को ठीक करना। अक्सर सुबह से पहले और शाम के बाद कार्लसन चुपके से आ जाता और कुछ देर काम करता। पहले तो मेरा घर बरसाती का ही था। फिर एक छोटा सा टेन्ट लगाया गया। कुछ दिन बाद जब जगह पूरी तरह सुरक्षित लगने लगी तो एक छोटा सा घर खड़ा किया गया। घर ऐसा था कि इत्तफाक से भी सुराख से नहीं दिखाई देता। हरा भरा परिवेश ढंके हुए था घर को। घर बना ही था दीवार में कमरे खोदकर और मजबूत तख्ते लगाकर ताकि सीलन से भी बचा जा सके। दो कमरे थे और आराम की कई सहूलियतें। जब जर्मन आतंकवादी बीडनबाख कुछ दिन यहां छिपा रहा तो उसने धुंआ सोखने वाली कोई जुगत कर दी। उसके बाद तो हम जाड़ों में आग जलाकर खूब तापते।

कूट-कूट कर भरा था, जोर मारा। बेटे को बचाने के लिए उसने साथियों के साथ विश्वासघात किया। इसमें व्यवधान आए पर फ्रिस्को रेड्स के दर्जन भर सदस्य मारे गए और वह ग्रुप करीब-करीब नष्ट ही हो गया। प्रतिकार में जो बच गए थे उन्होंने डोनेल्ली को भी मौत की सजा सुना दी। जाहिर है यह उसके विश्वासघात की कमाई थी

टिमोथी भी बहुत दिनों तक नहीं बचा। रेडस ने उसकी मौत की शपथ खा ली थी। शासकों ने उसे बचाने का भरसक प्रयास किया। उसे देश के एक भाग से दूसरे भाग स्थानान्तरित किया जाता रहा। उसे मारने के प्रयास में तीन रेडस मारे गए। ग्रुप में केवल मर्द थे। अंत में उन्होंने एक महिला का सहारा लिया-कोई और नहीं अन्ना रायलस्टन का। हमारे आन्तरिक काट ने उसे मना किया पर वह मजबूत इच्छाशक्ति वाली थी और अनुशासन से घृणा करती थी। इसके अलावा वह इतनी प्यारी और जीनियस थी कि अनुशासन में बांधने में हम कभी सफल नहीं हुए। उसकी अपनी श्रेणी थी और उसे सामान्य क्रांतिवादियों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता था।

हमारे इजाजत न देने के बावजूद वह गई। वह थी बेहद आकर्षक महिला। उसे बस किसी पुरुष को आमंत्रित करना होता-उसने कितनों का दिल तोड़ा था और कितनों के दिल की नकेल पकड़ संगठन में लाई थी। पर वह लगातार शादी से इन्कार करती। उसे बच्चों से बेहद प्यार था पर उसका मानना था कि उसका अपना बच्चा उसे लक्ष्य में भटकाएगा और वह तो लक्ष्य को ही समर्पित थी।

उसके लिए टिमोथी को जीतना आसान काम था। उसकी अन्तरात्मा को कोई कष्ट नहीं हुआ क्योंकि उसी समय नैशविल हत्याकांड हुआ था। जब डोनेल्ली के नेतृत्व में आठ सौ बुनकरों की एक तरह से हत्या कर दी गई थी। उसने टिमोथी को कैदी रेड्स को सुपुर्द कर दिया। यह पिछले ही साल हुआ था और अब फिर उसका नाम लिया गया था। हर जगह उसे क्रांति के खेमे में 'लाल वर्जिन' कहा जा रहा था।

पुराने परिचितों में कर्नल इन्ग्रैम और कर्नल फान मिलबर्ट भी बाद में मिले थे। इन्ग्रैम तरक्की करते-करते जर्मनी में राजदूत बन गया था। उससे दोनों देशों के सर्वहारा नफरत करते थे। मेरी मुलाकात बर्लिन में हुई थी। वहां आयरन हील के अन्तर्राष्ट्रीय जासूस की हैसियत से मेरी उसने काफी मदद की थी। यहां मैं लगे हाथ बता ही दूं कि मैं अपनी दोहरी भूमिका में क्रांति के लिए कुछ महत्वपूर्ण कर सकी थी।

गिलबर्ट का नाम पड़ गया था डलमाऊ फान गिलबर्ट। शिकागो कम्यून के बाद उसने एक नया कोड बनाने में विशेष भूमिका निभाई थी। पर उसके पहले एक स्थानीय न्यायाधीश के रूप में उसके भयानक कुकृत्यों के लिए उसे मौत की सजा दी जा चुकी थी। उसे सजा देने वालों में मैं भी थी। उसे मारा अन्ना ने था।

एक और पुराना परिचय स्मृति में उभर रहा है-जैक्सन का वकील। इस आदमी, जोसेफ हर्ड से मुलाकात की शायद ही कभी उम्मीद की हो। अजीब थी मुलाकात।

यहां दो शब्द उस सज्जन आतंकवादी के बारे में कह दूं जिससे ज्यादा क्रांतिकर्म में लगा शायद ही कोई बन्दा इतना गलत समझा जाता हो। कामरेड बीडनबाख ने कोई विश्वासघात नहीं किया था। न ही उसे साथियों ने ही मार डाला, जैसा प्राय: सोचा जाता है। यह दुष्प्रचार तो शासकों की ही कारस्तानी है। वह थोड़े भुलक्कड़ और खोए-खोए रहने वाले आदमी थे। उन्हें इसलिए मार दिया गया क्योंकि एक शरण-स्थल पर वे गुप्त कोड भूल गए थे और पूछने पर बता न सके थे। एक दु:खदायी गलती थी। उनके विश्वासघात की खबर एकदम झूठ है। उनसे सच्चे और समर्पित क्रांतिवादी कम ही होंगे।

उन्नीस साल से उस शरणस्थल में कोई न कोई रहता ही रहा। बस एक बार किसी बाहरी आदमी को उसका पता चला था। और तब जब कि वह विक्सन के शिकारगृह से बस पौना मील और ग्लेन एलेन गांव से बस एक मील दूर था। मैं हर दिन सुबह और शाम की ट्रेनों को आते जाते सुनती और उनकी सीटी से घड़ी मिलाती थी।

रूपान्तरण

'तुम्हें अपनी पुनर्रचना कर लेनी चाहिए। तुम्हारा अंत हो जाना चाहिए। तुम्हें दूसरी औरत बन जाना चाहिए-केवल वस्त्रों में नहीं, कपड़ों के अन्दर, चमड़ी के भी अन्दर। तुम्हारा ऐसा रूपान्तरण हो जाना चाहिए कि मैं भी पहचान न पाऊं-तुम्हारी आवाज, तुम्हारी भंगिमाएं, आचार-व्यवहार, चाल-ढाल, सब कुछ बदल जाना चाहिए।' अर्नेस्ट ने चिट्ठी में लिखा।

मैंने इसका पालन किया। हर दिन मैं कई घन्टे पहले की एविस एवरहार्ड को दफन करने का अभ्यास करती। इसके लिए लम्बे अभ्यास की जरूरत थी। आवाज के उतार-चढ़ाव के लिए ही मैं लगातार बोलती रहती ताकि एक नया लहजा स्थापित हो जाए जो स्वाभाविक रूप से निकले। नई भूमिका की सहजता ही आवश्यक थी, अपने को भी झुठला पाने की सहजता। एक नई भाषा मान लें फ्रेंच बोलने पर अटपटा लगता है—आदमी सोचता अंग्रेजी में है और उसे फ्रेंच में बदलता है और फिर फ्रेंच पढ़ता है और फिर उसे अंग्रेजी में बदलकर समझता है। फिर धीरे-धीरे जड़ मजबूत हो जाने पर स्वाभाविक रूप से व्यक्ति फ्रेंच पढ़-लिख-सोच सकता है बिना अंग्रेजी का सहारा लिए।

यही हाल भेष बदलने का था। कुछ दिनों बाद ही बदला रूप ही वास्तविक रूप बन पाया। शुरू में प्रयोग होते, गलतियां होतीं। हम एक नई कला विकसित कर रहे थे, हमें बहुत कुछ खोजना था। यह अभ्यास हर जगह चल रहा था। इसमें कुछ लोग दक्ष होते जा रहे थे। नए-नए तौर-तरीकों और चालों का संग्रह हो रहा था। यह एक प्रकार

रखते थे। मैं वहां एक बहुत जरूरी काम से गई थी। बीसों आदमियों के बीच बस मैंने मुखौटा नहीं पहना था। मेरा काम खत्म होते ही एक व्यक्ति मुझे बाहर ले गया। अंधेरे में गुजरते हुए उसने तीली जलाई और मुखौटा हटा दिया। क्षण भर को मैं आवेगमय चेहरा देखती रह गई। फिर पीटर डोनेल्ली की तीली बुझ गई। अंधेरे में उसने कहा : 'मैं इतना चाहता था कि आप जान लें कि यह मैं हूं। आपकों सुपरिन्टेंडेंट डलास की याद है?'

मुझे वह चालाक चेहरा याद आया। मैंने हामी भरी। डोनेल्ली ने कहा जरा अभिमान के साथ : 'मैंने ही ठिकाने लगा दिया उसे। उसके बाद शामिल हुआ रेड्स में।'

'पर यहां कैसे? बीवी बच्चे?'

'नहीं रहे। तभी तो। नहीं, नहीं। उनका बदला नहीं ले रहा। वे तो रोग से मरे, एक-एक करके। उनके कारण मेरे हाथ बंधे थे। जब नहीं रहे तो मेरे बर्बाद जीवन का बदला है यह सब। एक समय मैं पीटर डोनेल्ली, फोरमैन था अब नम्बर 27 हूं, फ्रिस्को रेड्स का। चलिए मैं यहां से बाहर छोड़ दूं।'

उसके बारे में बाद में और पता चला। एक तरह से उसने सच ही कहा था कि सब मर-खप गए। एक बच गया-टिमोथी और उसे उसका पिता मृत समझता था क्योंकि उसने आयरन हील की नौकरी कर ली थी 'मरसीनरीज' नामक उस बल में जो पुलिस और फौज के बीच का सैनिक बल था। फ्रिस्कों रेड्स का सदस्य शत्रुओं की हत्या की शपथ लेता था। असफल होने की सजा मौत थी। जो पूरा नहीं कर पाता प्राय: आत्महत्या कर लेता। ये हत्याएं बेहिसाब यूंही नहीं की जाती। ये पागल लोग अक्सर मिलते और समवेत निर्णय ले लेते अपने असफल सदस्यों और दुश्मन शासक वर्ग के सेवकों के विरुद्ध। फिर हत्याएं सदस्यों के बीच बांट ली जातीं।

वास्तव में उस रात मैं एक ऐसे ही मामले के सिलसिले में आई थी। हमारा एक साथी आयरन हील की गुप्त सेवा के स्थानीय दफ्तर में क्लर्क की हैसियत से वर्षों से काम कर रहा था। फ्रिस्को रेड्स ने उसे अपराधी मान उस पर अपना नियम लागू कर दिया था। वह मौजूद नहीं था और उसके बारे में निर्णय लेने वालों को भी पता नहीं था कि वह हमारा आदमी था। मुझे उसकी पहचान करनी थी और विश्वासपात्रता की पुष्टि करनी थी। ताज्जुब हो सकता है कि हमें बात का पता ही कैसे चला। हुआ यह कि हमारा एक गुप्तचर फ्रिस्को रेड्स का सदस्य था। हमारे लिए दुश्मनों के साथ दोस्तों पर भी नजर रखना जरूरी था। यह पागलों का जत्था भी ऐसा नहीं था कि नजरअंदाज किया जाए।

पीटर डोनेल्ली और उसके बेटे की ओर लौटें। सब कुछ पीटर के लिए ठीक-ठाक चल रहा था। पर दूसरे साल जिनको फांसी देनी थी उनकी फेहरिस्त में उसने टिमोथी डोनेल्ली का नाम देखा। तभी पारिवारिक कुनबापरस्ती वाले दृष्टिकोण ने, जो उसमें

का टेक्स्टबुक बन गया, क्रांति के स्कूल के पाठयक्रम का अंग।

इसी समय पापा गायब हो गए। उनकी नियमित चिट्ठियां बंद हो गई। वह हमारे पुराने वाले घर पर भी नहीं आए। दोस्तों ने हर जगह तलाशा। अपने गुप्तचरों के माध्यम से सारे जेल ढुढ़वाए। पर वह ऐसे गायब हुए मानों धरती लील गई हो और आज तक उनका पता नहीं। (उन दिनों ऐसा बहुत होता था। हर तरह के लोग अचानक गायब हो जाते।)

मैंने उस जगह छः एकाकी माह बिताए पर करने को बहुत होता था। संगठन ठीक से चल रहा था और काम का पहाड़ हमेशा सामने खड़ा रहता। जेल में बंद अर्नेस्ट और दूसरे नेता तय करते और हम बाहर वाले अंजाम देते। एक संगठन था मुंह से कान तक प्रचार का, अपनी तमाम गोपनीयता और जटिलता के साथ। गुप्त प्रेस स्थापित करना था। भूगर्भ रेल का निर्माण भी जरूरी था-तमाम शरणस्थलों को जोड़ने के लिए। उन जगहों पर नए शरण स्थल बनाने थे जहां नहीं थे।

इसीलिए कहती हूं कि काम तो खत्म ही नहीं होता था। छः महीने बाद दो साथी आए, दो जवान लड़कियां-लोरा पीटरसन जो 1992 में गायब हुई और केट बीयर्स जिनसे बाद में द्युबुआ से शादी की और जो आज भी जिन्दा है उज्जवल भविष्य की ओर ताकती। दोनों ही बहादुर थीं और थीं मुक्ति-प्रेमी।

दोनों पहुंची थीं आवेग, खतरे और अचानक मौत की हड़बड़ी के साथ। जिस बोट ने उन्हें सान पाब्लों खाड़ी पार कराया उसके कर्मचारियों में एक जासूस था। वह आयरन हील का कुत्ता था और क्रांतिकारी बन कर हमारे संगठन में अंदर तक पैठ गया था। निस्संदेह वह मेरी तलाश में था क्योंकि मेरा गायब होना शासकों के जासूसों के लिए काफी परेशानी पैदा कर रहा था। संयोग से उसने अपनी खोजों के बारे में किसी को बताया नहीं था। घटनाओं ने यही स्पष्ट किया। उसने रिपोर्ट करने में देर कर दी थी-शायद इस ख्याल से कि मेरी तलाश पूरी हो जाय तो मुझे गिरफ्तार करने का श्रेय उसे मिल जाय। उसकी सूचना का उसी के साथ अंत हो गया। जैसे ही उतर कर लड़कियां घोड़ों तक पहुंची वह भी किसी बहाने बोट से गायब हो गया।

रास्ते में कार्लसन ने लड़कियों को आगे-जाने दिया, अपने घोड़े को भी और पैदल लौट पड़ा। उसे शक हो गया था। उसने जासूस को दबोच लिया। उसके बाद की जानकारी उसने हमें दी :

'हमने उसे ठिकाने लगा दिया, लगा दिया ठिकाने।' यही दोहराता रहा। उसने कोई आवाज नहीं की। मैंने उसे छिपा दिया। आज जाकर गहरा गाड़ दूंगा।' उसकी मजबूत खुरदरी मुट्ठियां खुलती बंद होती रहीं, और आंखों में उदास रोशनी जलती रही।

उन दिनों मैं अपने रूपान्तरण पर चकित थी। कभी-कभी असंभव लगता कि कभी मैं एक कैम्पस में शांत सरल जीवन जीती थी या फिर मैं क्रांतिवादी बन गई थी जो हिंसा

या मौत से तनिक भी नहीं घबड़ाती थी। दोनों में से एक तो सच नहीं लगता था। एक यथार्थ या तो दूसरा सपना। पर कौन क्या था? आज का यह क्रांतिकारी जीवन, एक गुप्त स्थान में इस तरह रहना एक दुःस्वप्न तो नहीं। या फिर मैं एक क्रांतिवादी थी जिसने कहीं सपना देख था कि किसी पूर्व जीवन में मैं बर्कले में ऐसा जीवन जीती थी जिसमें उद्वेलन का मतलब होता था टी पार्टी, डांसपार्टी, डिबेटिंग सोसायटी, और लेक्चर रूम। पर कदाचित उन सबका ऐसा ही अनुभव रहा होगा जिन्होंने इन्सानी बिरादरी के लाल झंडे तले इकट्ठा होने का निर्णय लिया था।

मुझे अक्सर दूसरे जीवन के आंकड़े याद आते—इस नए जीवन में वे आते-जाते रहते। बिशप मोरहाउस याद आते। जब संगठन बढ़ गया तो हमने उन्हें तलाशने की नाकाम कोशिश की। उन्हें एक पागलखाने से दूसरे में भेजा जाता रहा। हमने नापा से स्टाकटन और फिर सान्ताक्लरा तक के स्थानान्तरण की टोह ली, पर उसके बाद कुछ पता नहीं चला। उनकी मौत का भी रिकार्ड नहीं था। निश्चित ही वह पलायन कर गए होंगे। कल्पना भी नहीं की थी जिस हाल में उन्हें फिर देखा, उस शिकागो कम्यून के तूफान के दौरान बस एक झलक।

जैक्सन जिसकी बांह कट गई थी और जिसके कारण मेरा कायाकल्प हुआ था कभी नहीं दिखा। अपनी किस्मत से जला-भुना, उसके साथ हुई ज्यादतियों पर सोचता हुआ, वह अनार्किस्ट हो गया-दार्शनिक अर्थों में नहीं बस प्रतिहिंसा और घृणा से उबलते एक पागल जानवर की तरह। और उसने बदला लिया। एक रात जब सब सो रहे थे, चौकीदारों से बचते हुए उसने पर्टनबैथ महल को बम से उड़ा दिया। कोई नहीं बचा, गार्ड लोग भी नहीं। मुकदमे के इन्तजार के दौरान जेल में उसने कम्बल से अपना दम घोंट लिया।

डा. हैमरफील्ड और डा. बैलिंग फोर्ड की किस्मत जैक्सन से भिन्न थी। वे काफी स्वामिभक्त थे और उसका उन्हें इनाम मिला। वे आज महलों में ठाट से रह रहे हैं। दोनों शासकों के प्रवक्ता हैं। दोनों मुटल्ले हो गए हैं।

अर्नेस्ट ने एक बार कहा था : 'डा. हैमरफील्ड अपनी पराभौतिकी के रूपान्तरण में सफल हो गए हैं। वह आयरन हील को ईश्वर की अनुकम्पा दिला देते हैं। वह अपने संरक्षकों को अधिक स्वीकार्य और सुन्दर बनाकर पेश करते हैं। डा. बैलिंगफोर्ड बस इसी माने में भिन्न हैं कि वह शासकों के ईश्वर को उतना सुन्दर और उदार बनाकर नहीं पेश करते।'

पीटर डोनेल्ली ने, वही फोरमैन जिससे मैं जैक्सन के सिलसिले में मिली थी, हम सबको आश्चर्यचकित कर दिया। 1918 में मैं एक फाइटिंग ग्रुप 'फ्रिस्को रेडस' जो ज्यादा ही भयानक, निर्दयी और शक्तिशाली था, की एक बैठक में मौजूद थी। वास्तव में वह हमारे संगठन का अंग नहीं था। उसके सदस्य अंधानुकरण करते थे-पागलों जैसे। हम ऐसों को उत्साहित करने से बाज आते थे। पर उनसे मित्र-संबंध बनाकर

और घायलों तथा हम जैसों को भी मारने लगे। उन्होंने ढेर से एक आदमी को खींचा। वह गिड़गिड़ाता रहा और एक पिस्तौल ने उसे शांत कर दिया। वहीं एक ढेर से एक औरत ने हमला कर दिया। मरने से पहले उसने छः बार फायर किया। पता नहीं चला कि उसने कितनों को मारा। हम यह सब केवल सुनकर जान पा रहे थे। थोड़ी-थोड़ी देर में ये आवाज़ें उठतीं और उनका अंत पिस्तौल की ठांय-ठांय से होता। अन्तराल में हमें कुछ बातें सुनाई पड़तीं, अधिकारी सिपाहियों को जल्दी करने के लिए उकसाते, सिपाही ढेर में जिन्दा लोग खोजते-गाली बकते।

अन्त में वे वहां पहुंचे जिस ढेर में हम मृतक बने पड़े थें। बोझ कम लगा जब कुछ लोग—लाशें और घायल, घसीटकर बाहर किए गए। गार्थवैट ने सिग्नल देना शुरू किया। जब उसे सुना नहीं गया तो वह ज़ोर से चिल्लाया। फिर एक सिपाही ने सावधान किया : 'सुनो! सुनो' फिर एक अधिकारी बोला : 'ठहरो, ज़रा सावधानी से।'

हमें खींचकर बाहर किया गया तो एक ताज़ा हवा का झोंका मिला। पहले गार्थवैट ही बोला। पर मुझे भी परीक्षा देनी पड़ी—साबित करने के लिए कि मैं 'आयरन हील' की सेवा में थी।

'तो तुम आजा प्रोवोकातर (उकसाने वाले एजेन्ट) हो!' एक नौजवान अधिकारी बोला। किसी बड़े घराने का लगता था।

'भयानक नारकीय काम है। मैं तो इस्तीफा देने की कोशिश करूंगा ताकि फौज में जा सकूं। तुम लोगों के ही मज़े हैं।' गार्थवैट भुनभुनाया।

'तुम्हें मिलनी ही चाहिए राहत। मेरा परिचय है। देखता हूं क्या हो सकता है? मैं बताऊंगा उन्हें कि तुम्हें मैंने कहां पाया था?'

उसने गार्थ का नाम और नम्बर नोट किया फिर मेरी ओर मुखातिब हुआ :

'और तुम?'

'मेरी तो शादी होने वाली है, फिर मैं छोड़ दूंगी यह सब।'

इस तरह हम बात करते रहे और घायलों को मारा जाता रहा। आज यह सब सपना लगता है पर उस समय एकदम स्वाभाविक लगा था। गार्थ और नौजवान बहस में उलझ गए थे—आधुनिक युद्ध और उस तरह के सड़क युद्ध और दोनों तरफ की इमारतों से लड़ी जाने वाली लड़ाई के बीच अन्तर के बारे में। अपने बल ठीक करती और फटे कपड़ों में पिन लगाती मैं उनकी बातें सुन रही थी। इस बीच घायलों का मारा जाना जारी था। कभी-कभी उनकी आवाज़ गोलियों के बीच दब जाती और उन्हें दोहराना पड़ता था।

शिकागो कम्यून में तीन दिन जो मैंने गुज़ारे उस दौरान मैंने मामूली इन्सानों के कत्लेआम और इमारतों से लड़े जा रहे युद्ध के अलावा कुछ नहीं देखा था। मैंने कॉमरेडों के बहादुर कारनामों को तनिक भी नहीं देखा था। मैंने बस उनके बमों और विस्फोटकों की आवाज़ें सुनी थीं, धुंआ देखा था। बैलून की मदद से किलों पर हमलों

का अंग बना रहा पर वास्तव में वह हमारे सबसे मूल्यवान एजेन्टों में से एक था। अक्सर, हां अक्सर, आयरन हील की हमारे विरुद्ध योजनाएं असफल हो जातीं। उन्हें पता लग जाता कि उसके कितने लोग हमारे एजेन्ट हो गए हैं तो उन्हें असफलता का कारण समझ में आ जाता।

दहाड़ता जघन्य जानवर

अपनी मांद में हमें बाहरी दुनिया के बारे में पता चलता रहता था। हम जिस कुलीन तंत्र के विरुद्ध थे उसकी शक्ति के बारे में भी हमें जानकारी मिलती रहती थी। संक्रमण काल के दौरान नई संस्थाएं पनप रही थीं और धीरे-धीरे स्थायित्व ग्रहण करती लग रही थीं। शासकों ने एक शासन तंत्र विकसित कर लिया था—जटिल और व्यापक, हमारे बार-बार व्यवधान पैदा करने के बावजूद। और वह कारगर हो रहा था।

इससे क्रांतिवादियों को आश्चर्य होता। वह सोचते उनका तंत्र चल नहीं पाएगा। पर देश का कारोबार चल ही रहा था। खेतों-खदानों में लोग काम करते—जबरदस्ती गुलामों की तरह। मूलभूत उद्योग समृद्ध होते जा रहे थे। मज़दूरों की उच्च श्रेणियां संतुष्ट थीं और खुशी-खुशी मेहनत करतीं। उन्हें पहली बार औद्योगिक शांति का सुख मिल रहा था। उन्हें हड़ताल, लॉक आउट, यूनियनबाज़ी किसी बात की चिन्ता नहीं थी। पहले की झोपड़पट्टियों और स्लमों के मुकाबले आरामदेह घरों और मनपसन्द सुन्दर शहरों में रहने को मिल रहा था। उन्हें बेहतर भोजन मिलता, काम के घन्टे कम हो गए थे, छुट्टियां बढ़ गई थीं। आनन्द और अवकाश के नए ढंग मालूम हो गए थे। अपने से कम भाग्यशाली बिरादरी, वंचित उपेक्षित मज़दूरों के बारे में उन्हें कोई चिंता नहीं थी। एक घोर स्वार्थवादी काल का शिकार हो रही थी मानवता। फिर भी यह पूर्ण सत्य नहीं है। मज़दूरों के बीच हमारा प्रभाव फैल रहा था—ऐसे लोग भी थे जो पेट के अलावा भी सोचते, जिन्हें स्वतंत्रता और भ्रातृत्व की चमकती छवि दिखाई देती।

एक और संस्था ठीक से चल रही थी—भाड़े के सिपाहियों की। इस नई फौज में सामान्य सेना के पूर्व सैनिक थे और उनकी संख्या बढ़ते-बढ़ते दस लाख तक पहुंच गई थी। इन भाड़े के टट्टुओं की एक अलग ही जाति थी। वे अपने ही स्वशासित शहर में रहते। उनको बहुत-सी विशिष्ट सुविधाएं प्राप्त थीं। अर्थव्यवस्था में उत्पन्न ढेर से अतिरिक्त धन का काफी हिस्सा उन पर खर्च होता। उनका लोगों से संबंध और सरोकार टूट रहा था। उनकी अपनी वर्ग चेतना और वर्ग नैतिकता विकसित होने लगी थी। उनके बीच भी हमारे एजेन्ट पहुंच ही गए थे।

कुलीन तंत्र के अन्दर ही एक प्रकार से अनपेक्षित परिवर्तन हो रहा था। वे लोग वर्ग की तरह अपने को अनुशासित कर रहे थे। हर सदस्य का काम निर्धारित था, उसे

करना ही पड़ता था। अब कोई आलसी धनाढ्य नौजवान जैसे लोग नहीं रह गए थे। उन सबकी मिली-जुली शक्ति कुलीन तंत्र की शक्ति में ढल रही थी। अब वे उद्योग को नेतृत्व प्रदान कर रहे थे। कप्तान की तरह। वे प्रयुक्त विज्ञान में हाथ आजमा रहे थे और कई विख्यात इन्जीनियर बन गए थे। वे सरकार के महकमों में घुस रहे थे, उपनिवेशों में जा रहे थे और हज़ारों की संख्या में गुप्तचरी कर रहे थे। शिक्षा, कला, चर्च, विज्ञान, साहित्य आदि क्षेत्रों में भी सक्रिय थे और कुलीन तंत्र को शाश्वत सिद्ध करने के लिए जो भी आवश्यक था कर रहे थे।

उन्हें यही सिखाया गया था और वे यही सिखा रहे थे कि जो भी ने कर रहे थे वह सही था। बचपन से ही वे अभिजात विचारों को आत्मसात करना सीख गए थे, इस तरह कि वह उनकी प्रकृति का अंग बन गया था। वे अपने को जानवरों के ट्रेनर के रूप में देखने लगे थे—सर्कस के रिंगमास्टर की तरह। उनके पैरों तले विद्रोह की परतें दबी रहतीं। वे चाकू, गोली, बम वगैरह, मौत भी, से पूरी तरह परिचित थे और उन्हें चिंघाड़ते जघन्य जानवर के हिंस्र उपकरण समझते जिन्हें नियंत्रण में रखना ज़रूरी था, ताकि मानवता जिन्दा रह सके। वे अपने को मानव जगत का त्राता समझते थे, सर्वोत्तम मूल्यों के लिए साहस और त्याग के साथ जूझने वाले मेहनतकश।

बहैसियत वर्ग वे समझते थे कि वही सभ्यता के रक्षक हैं। उनका विश्वास था कि अगर वे कमज़ोर पड़े तो विराट जानवर उन्हें घेर लेगा और जो भी सुन्दर, सुखकर, और भला है उसे लील जाएगा। उनके बिना अराजकता फैल जाएगी और मानता पिछड़ेपन और आदिम अवस्था के गर्त में गिर जाएगी जिससे बड़ी कठिनाईयों से निकल पाई थी। अराजकता की भयानक तस्वीर उनके बच्चों के सामने हरदम बनी रहती थी और बड़े होकर वे अपने बच्चों को यही तस्वीर दिखाते थे। इसी जानवर को कुचलना था और हर कुलीन का सर्वोच्च धर्म था इसे कुचलना। संक्षेप में, एकमात्र वे ही खड़े थे—अपनी सारी मेहनत और त्याग के साथ-कमज़ोर मानवता और भक्षक पशु के बीच। उन्हें यही विश्वास था, गहरा विश्वास।

उनके कुलीन वर्ग के इस नैतिक सदाचार पर बेहद विश्वास था। यही आयरन हील की शक्ति थी। इस बात को हमारे बहुत से कामरेड नहीं समझ पाते थे। बहुत धीरे-धीरे समझते थे। बहुत लोग आयरन हील की शक्ति का आधार पुरस्कार और दंड की व्यवस्था को समझते थे। यह ग़लत है। स्वर्ग-नर्क किसी धर्मान्ध के उत्साह का कारक हो सकता है पर अधिकांश धार्मिक लोगों के लिए स्वर्ग-नर्क की धारणा सही और ग़लत के निधारण में गौण बात है। सही से लगाव, सही की इच्छा, सही न होने पर अप्रसन्नता—संक्षेप में सही व्यवहार धर्म का प्राथमिक तत्व है। यही बात कुलीन तंत्र पर भी लागू होती है। जेल, निष्कासन, दमन या सम्मान, महल, निराले नगर यानी दण्ड और पुरस्कार प्रसंगवश ही महत्वपूर्ण हैं। कुलीन तंत्र की सबसे बड़ी कारक शक्ति है विश्वास कि वह सही कर रहे हैं। अपवाद हैं, यह भी सच है कि आयरन

उसने आयरन हील के गुप्त संगठन के सिग्नल मुझे यह सूचित करने के लिए बताए ताकि मैं जान जाऊं कि वह भी उनकी नौकरी कर रहा था। उसने मुझे आश्वस्त किया : 'जितना जल्दी संभव हुआ यहां से निकालूंगा पर अपने कदमों पर गौर करो। लुढ़को और गिरो मत'।

उस दिन हर चीज़ अचानक घट रही थी। उसी परेशान करने वाली अचानकता के साथ भीड़ ने अपने को रोक लिया। मैं अपने सामने एक लम्बी चौड़ी औरत से टकरा गई। फटे कोट वाला आदमी ग़ायब हो चुका था। मेरे पीछे वाले मुझसे टकरा गए थे। एक शैतानी शोर फैला हुआ था—चीख-पुकार, गालियां, मौत की आवाज़ें और फिर मशीनगनों की गुर्राहट और रायफलों की फट-फट। पहले तो समझ में नहीं आया। दाएं-बाएं चारों ओर लोग गिर रहे थे। सामने वाली औरत पेट पकड़ कर चिंघाड़ती हुई बैठ गई। मेरे पैरों के पास एक औरत जिन्दगी-मौत के बीच झूल रही थी।

हम एक कतार के अगल हिस्से में थे। इसका आधा मील लम्बा हिस्सा न जाने कहां गायब हो चुका था। मुझे आज तक नहीं मालूम कि उसका क्या हुआ—वह किसी बम से उड़ा दिया गया, बिखरकर एक-एक कर मार दिया गया या जान बचाकर भाग गया। पर हम सब सिरे पर थे और चीखते-चिल्लाते बाढ़ द्वारा बहा दिए जाने के खतरे के सामने खड़े थे।

जैसे ही भीड़ की जकड़ कम हुई गार्थवैट ने मेरा हाथ पकड़े-पकड़े मुझे और दूसरे कुछ लोगों को एक दफ्तर के फाटक में घुसा दिया। यहां हांफती भीड़ ने हमें दरवाज़ों पर ठेला। हम थोड़ी देर तक तो वही दबाव सहते रहे।

गार्थवैट ने मुझसे कहा : मैंने कितनी खूबसूरती से किया यह सब तुम्हें सीधे जाल में फंसा दिया। सड़क पर बचने की थोड़ी गुंजाइश भी थी, यहां तो बस....। सब खत्म हो गया है—बाकी है बस चिल्लाहट-इंकलाब! जिन्दाबाद!!'

फिर वही हुआ जिसकी उसे उम्मीद थी। भाड़े के सिपाही अन्धाधुन्ध मार रहे थे। पहले तो हमारे ऊपर पड़ने वाले दबाव को कुचला गया। लोग मारे जा रहे थे। इसलिए थोड़ी देर में दबाव कम हो गया। गार्थवैट ने मेरे कान में कुछ चिल्लाकर कहा पर शोर इतना था कि कुछ स्पष्ट नहीं हुआ। वह रुका नहीं उसने मुझे पकड़ा और नीचें फेंक दिया। फिर एक मरणासन्न औरत को मेरे ऊपर लुढ़का दिया। मरे और मरने वाले लोगों का ढेर लगने लगा। लोग रो रहे थे, कराह रहे थे। फिर शान्ति छा गई जो लोगों की सिसकियों से, सुबकने से, बीच-बीच में टूट जाती थी।

गार्थवैट न होता तो मैं कुचलकर मर चुकी होती। पर जब बच गई तो यह सोच के बाहर था कि मैंने इतना बोझ कैसे बर्दाश्त किया। दर्द के अलावा अगर कोई भाव था तो वह थी जिज्ञासा कि इसका अंत कैसे होगा? मौत कैसी होगी? शिकागो के पहले मौत मेरे लिए अमूर्त थ्योरी थी पर अब वह एक सामान्य तथ्य था—यूं ही आसान।

पर वे भाड़े के टट्टू इतने से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने फाटक पर भी हमला किया

हील की धारणा दमन और अन्याय के बीच पनपी। यह सब ठीक है। मुद्दा यह है कि आज कुलीनतंत्र की शक्ति निहित है उस सन्तुष्ट धारणा में कि वे सही हैं। (पूंजीवाद की नैतिक असंगतियों और असंबद्धताओं के सामने इस नए कुलीनतंत्र ने एक संगत और कठोर नैतिक आधार प्रस्तुत किया जो एकदम अवैज्ञानिक और अटपटा था फिर भी बेहद प्रभावी था।)

दूसरी ओर क्रांति की भी शक्ति इसी विश्वास में है कि वह सही और उचित है। उसके लिए की जाने वाली शहादत और त्याग की और कोई व्याख्या नहीं हो सकती। और क्या कारण हो सकता था कि मेन्डेनहाल ने अपनी आत्मा को लक्ष्य के लिए मशाल बना दिया। बुलबर्ट ने उत्पीड़न के दौरान जान दे दी पर साथियों के साथ विश्वासघात नहीं किया—और क्या कारण हो सकता था। अन्ना रायलस्टन ने मातृत्व के आशीर्वाद को नकार दिया—किस कारण से? जॉन कार्लसन ने क्यों जान दी? नौजवान और बूढ़े, मर्द और औरत, बड़े और छोटे, प्रतिभाशाली और सामान्य सभी जो क्रांति की राह पर चल चड़ते हैं एक ही चालक शक्ति से प्रेरित होते हैं—सही के प्रति सतत् लगाव।

लेकिन मैं अपनी कहानी से भटक गई। अर्नेस्ट और मैं इस जगह से बाहर आने से पहले ठीक से समझ गए थे कि आयरन हील की शक्ति बढ़ रही थी। मज़दूरों की उच्च श्रेणियां, भाड़े के सिपाही 'मर्सीनरीज़', भारी संख्या में गुप्तचर और तरह-तरह की पुलिस—ये सब कुलीनतंत्र को समर्पित थे। अगर स्वतंत्रता की बात अलग कर दें तो वे सब पहले से बेहतर स्थिति में थे। दूसरी ओर असहाय जनता, गड्ढे में गिरे लोग लगातार बद से बदतर होते जा रहे थे। जब भी कोई मजबूत सर्वहारा जनता के बीच अपनी शक्ति स्थापित करता उन्हें फोड़ लिया जाता बेहतर सुविधाएं देकर, उच्च श्रेणी या मर्सिनरीज़ में शामिल करके। इस तरह असन्तोष को ठण्डा कर दिया जाता और सर्वहारा को नैसर्गिक नेतृत्व से वंचित कर दिया जाता।

निचली श्रेणी के लोगों की हालत दयनीय थी। सामान्य शिक्षा व्यवस्था ठप्प पड़ गई थी। वे जानवरों की तरह मलिन-बस्तियों में दु:ख और अपमान झेलते। उनकी आज़ादियां छिन चुकी थीं। वे श्रम-दास हो चुके थे। वे अपना काम चुन नहीं सकते थे। वे एक जगह से दूसरी जगह नहीं जा सकते थे, कोई हथियार नहीं रख सकते थे। वे फार्मरों की तरह कृषि दास नहीं थे—वे मशीनदास, श्रमदास थे। जब हाइवे निर्माण, भूमिगत परिवहन, हवाई अड्डे, नहरें, किलेबंदियों जैसे बड़े काम आ जाते तो मलिन-बस्तियों से हज़ारों लोग जबर्दस्ती भर्ती कर ज़रूरत की जगह भेज दिए जाते। उनकी लम्बी फौज आर्डिस के निर्माण के लिए भेज दी गई। उन्हें गंदे बैरकों में रखा गया है जहां परिवार नहीं रह सकते। जहां जीवन में पशुता का ही बोलबाला है। वास्तव में वहीं वह चिंघाड़ता जघन्य जानवर दिखेगा जिससे शासक डरते हैं पर वह तो उन्हीं का कारनामा है। वहां वे बंदरों और चीतों को मरने नहीं देंगे। अभी-अभी सुनने को मिला

दौड़ी। भीड़ का एक हिस्सा उसके पीछे झपटा। ये पंक्तियां लिखती हुई मैं उसे देख पा रही हूं—भूरे उड़ते हुए बाल, सिर में कहीं लगी चोट से बहता खून, दाहिने हाथ में एक कुदाल, बायें दुबले झुर्रियों वाले हाथ का पंजा हवा को पकड़ने की कोशिश में। हार्टमन उछलकर मेरे सामने आ गया। स्पष्टीकरण देने का समय नहीं था। हम अच्छे कपड़ों में थे। यही पर्याप्त था। उसकी मुट्ठी ने महिला की जलती आंखों के बीच में प्रहार किया। वह चोट खाकर पीछे लुढ़क गई पर गुज़रती भीड़ ने उसे फिर मानो आगे ठेल दिया। असहाय और ध्वस्तमना उसने कुदाल चलाई जो हार्टमन के कन्धे पर हल्के से गिरी।

अब मुझे समझ में आ रहा था कि हो क्या रहा है? हम भीड़ से घिर चुके थे। चारों ओर चीख-पुकार, गालियां सुनाई दे रही थीं। मुझ पर प्रहार हो रहे थे। लोग मुझे और मेरे कपड़े नोच रहे थे। लग रहा था मेरे चीथड़े हो जाएंगे। मेरा दम घुट रहा था। तभी किसी मज़बूत हाथ ने मेरा कंधा पकड़ा और मुझे घसीटना शुरू किया। दर्द और दबाव से मैं बेहोश हो गई। हार्टमन वहां से निकल पाया। उसने पहले प्रहार अपने ऊपर झेल लिए थे इसलिए मैं थोड़ा बच गई थी।

आदमियों की इस बाढ़ में मैं बही जा रही थी। पर ताज़ा हवा मेरे गालों से टकरा रही थी—मेरे फेफड़ों तक भी पहुंच रही थी। मुझे बस इतना अहसास था कि कोई मजबूत हाथ मुझे बाहर खींच रहा है। मेरा कमज़ोर पड़ गया शरीर भी मेरी मदद कर रहा था। मैं अपने सामने आगे बढ़ता एक कोट देख पा रही थी। कोट की ऊपर से नीचे तक बीच की सिलाई खुल गई थी और वह मानो ताल पर हिल रहा था। इसने मुझे थोड़ी देर के लिए आकर्षित किया। मेरी चेतना लौट रही थी। मैंने गालों और नाक में पीड़ा महसूस की। मेरे चेहरे से खून टपक रहा था। मेरी टोपी गायब हो चुकी थी। मेरे बाल बिखर कर उड़ रहे थे। मेरी छाती और बाहों में दर्द हो रहा था। घाव भी बन गए थे। मुझे सिर पर पड़े एक हाथ की याद आई।

अब मेरा दिमाग़ थोड़ा साफ-साफ सोच पा रहा था। बाहर की ओर दौड़ती मैंने मुड़कर उस आदमी को देखा जो मुझे पकड़े हुए था। उसी ने मुझे बाहर निकालकर बचाया था। उसने भी मेरा हिलना-डुलना देख लिया। वह रूखी आवाज़ में चिल्लाया:

'ठीक है! मैंने तो फौरन तुम्हें पहचान लिया था।'

मै उसे पहचान नहीं पा रही थी। पर इसके पहले कि मैं बोलती मेरा पैर किसी ऐसी चीज़ पर पड़ गया जो कराह रही थी। भीड़ के कारण मैं झुककर देख नहीं पाई पर मैं समझ गई कि वह कोई औरत थी जो गिर गई थी और जिसे भीड़ के अनगिनत पैर कुचलते जा रहे थे।

'ठीक है, ठीक है! मैं गार्थवैट हूं।' उसने दोहराया।

दाढ़ी के अटपटेपन और उसकी गन्दगी के बावजूद मैं उसे पहचान गई। उसने तीन साल पहले हमारी शरणस्थली में तीन महीने बिताए थे। प्रभावशाली नौजवान था वह।

है कि नई भर्ती शुरू हो गई है, आर्डिस से भी बड़े आश्चर्य-नगर, अस्गार्ड के निर्माण के लिए। हम क्रांति वाले भी उस काम को जारी रखेंगे। पर तब उसमें दुखियारे अर्धदास नहीं खपेंगे। तब वहां निर्माण होगा संगीत के साथ-नगर के सौन्दर्य और आश्चर्य में घुलेगा यह-कराह नहीं संगीत और हंसी।

अर्नेस्ट दुनिया में शामिल होने, कुछ कर गुज़रने के लिए अधीर था क्योंकि शिकागो कम्यून में समय के पहले हो जाने के कारण नष्ट हुआ पहला विद्रोह अब सम्हल कर फिर पक रहा था। फिर भी वह धैर्य संजोए हुआ था। जिस दौरान इल्लिनाय से लाया गया हैडली उसे रूपान्तरित कर रहा था उसके दिमाग में सर्वहारा को शिक्षित करने की कई योजनाएं घूम रही थीं ताकि दलित लोगों को थोड़ी बहुत शिक्षा तो दी जा सके। यह सब तब जब पहला विद्रोह असफल हो जाता।

हम लोग जनवरी 1917 के पहले यह जगह नहीं छोड़ सके। हमने झट से अपने को आयरन हील के भड़काऊ एजेन्टों वाला रोल अख्तियार कर लिया। मैं अर्नेस्ट की बहन बना दी गई। हमारी जगह बना दी गई थी। हमारे दस्तावेज पूरे थे। हमारा एक दूसरा अतीत गढ़ा जा चुका था। अन्दर से मदद मिल जाने पर यह काम कठिन नहीं था। क्योंकि गुप्तचरों के छाया-संसार में किसी की पहचान अस्पष्ट ही होती थी। एजेन्ट प्रेत की तरह आते-जाते थे—आदेशों का पालन करते अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते, सुरागों का पीछा करते और अपने अज्ञात अफसरों के लिए रपट तैयार करते।

शिकागो कम्यून

भड़काऊ एजेन्टों की तरह हमें काफी यात्रा करनी पड़ती और हमारा अपने खेमे के लोगों के साथ भी सम्पर्क होता। इस तरह हम दोनों ही खेमों में थे, खुलेआम आयरन हील के लिए काम करते और गुप्त रूप से अपने लक्ष्य के लिए जो भी कर पाते। हमारे जैसे बहुत से लोग थे, भिन्न-भिन्न गुप्तचर संगठनों में। कई बार उनका पुनर्गठन हुआ, सुधार हुए पर कभी भी हमें पूरी तरह से निकाल फेंकना संभव नहीं हुआ।

पहले विद्रोह की काफी हद तक योजना अर्नेस्ट ने बनाई थी। तिथि निर्धारित हुई थी—1918 का बसन्त। 1917 के जाड़ों तक हम तैयार नहीं हो पाए थे। काफी कुछ अधूरा था। फिर भी वक्त से पहले जब विद्रोह हो ही गया तो उसे असफल तो होना ही था। जरूरत के मुताबिक योजना बहुत जटिल थी और कुछ भी अपरिपक्व उसे नष्ट ही कर देता। आयरन हील ने इसे देख लिया था और उसी के अनुसार योजना बना ली थी।

हमारी योजना कुलीनतंत्र के स्नायुतंत्र पर पहला आक्रमण करने की थी। उसने जनरल स्ट्राइक के बाद गांठ बांध ली थी। तार घरों में हड़ताल से सबक ले उसने तार

दोनों के बीच लड़ाई हुई थी। पर यह बताना मुश्किल था कि किस इमारत में कौन था।

आगे बढ़ता कालम जब उन इमारतों के बीच से गुज़र रहा था तो एक तरफ से उस पर बम गिराए गए और दूसरी ओर से बम गिराने वालों पर हमला हुआ। इस तरह हमें पता चल गया कि किस इमारत में हमारे साथी थे। उन्होंने सड़क से गुज़र रहे साथियों को बचाने का बड़ा काम किया था।

हार्टमन ने मेरी बांह पकड़कर एक बड़े से दरवाज़े के अंदर खींच लिया। कान में बोला— 'वे हमारे साथी नहीं हैं।'

दरवाज़े के अंदर का हिस्सा पूरी तरह बंद था। उधर भागना संभव नहीं था। उस पल जलूस का सामना गुज़रा। जलूस क्या था भीड़ थी। एक तूफानी नदी गुज़र रही थी, रसातल के लोगों की, नशे में पागल, अन्ततः अपने मालिकों के खून के प्यासे। मैंने ऐसे लोग देखे थे—उनकी बस्तियों में सोचती थी मैं उन्हें जानती हूं पर उस वक्त लगा ऐसे लोगों को पहली बार देख रही थी। उनकी गूंगी असहायता गायब हो चुकी थी। उनका आवेग देखने लायक था। आक्रोश का ज्वार उमड़ रहा था। आदमखोर लग रहे थे। औरत-मर्द-बच्चे जिनके चेहरों से अच्छाई के सारे निशान ग़ायब थे। अब वे बन्दर और बाघ या फिर खूंखार चौपाए लग रहे थे जिनका खून नर-पिशाचों ने चूस लिया था और जिनके चीथड़ों से उधड़के फूहड़, अनगढ़ शरीरों को भूख, कुपोषण और बीमारी ने खंडहर बना रखा था। दुकानों से लूटी शराब से धुत चिल्लाती चीखती, चिंघाड़ती दैत्याकार भीड़ आगे बढ़ी जा रही थी।

और फिर क्यों न होता ऐसा। इन रसातली लोगों के पास खोने को क्या था सिवाय मुसीबतों और जिल्लतों के। और पाने को? कुछ भी नहीं सिवाय एक अंतिम बदले के प्रहार के। इस बहते लाश के समुद्र को देखते हुए ख्याल आया कि उसी के बीच हैं हमारे वे साथी और नायक जिनके जिम्मे काम था उस रसातल के सोए हुए जानवर को जगाना और दुश्मन को उससे निपटने में उलझाए रखना।

उस पल एक अजीब बात हुई, मेरा रूपान्तरण हो गया। मौत का डर, मेरे लिए या औरों के लिए, समाप्त हो गया। मैं मानो ऊपर उठ गई, एक दूसरा प्राणी, एक दूसरे जन्म में। किसी चीज़ का कोई मतलब नहीं था। उस पल लक्ष्य भी समाप्त, पर लक्ष्य तो कल फिर सामने होगा, वही लक्ष्य, हमेशा ताज़ा, हमेशा ज्वलन्त। उसके बाद के कुछ घण्टों के दौरान होने वाले संत्रास के उत्सव को ठंडे दिमाग से ले सकी। न जीवन का कोई अर्थ रहा न मृत्यु का। मैं घटनाओं की सम्पृक्त दर्शक थी, कभी-कभी बह जाती प्रवाह में पर उनमें भागीदार भी थी। मैं एक ऐसी उदात्त स्थिति में पहुंच गई लगती थी जिसमें मूल्यों से ऊपर उठ गई थी। अगर ऐसा नहीं हुआ होता तो मैं मर गई होती।

आधा मील लम्बा जुलूस गुज़र चुका था जब हमें पहचान लिया गया। अजीब चिथड़ों में लिपटी एक धंसें गावों वाली औरत ने पतली संकरी जलती काली आंखों से हमें और हार्टमन को झटके से देखा। उसके मुंह से चीख निकली और वह हमारी ओर

घर मर्सीनरीज़ के नियंत्रण में कर दिया था। हमने इसका प्रतिकार करना शुरू कर दिया था। जब भी सारे देश में फैले साथी अपने मुकामों से सिग्नल देते हमारे समर्पित कॉमरेड तार घर उड़ा देते। इस तरह पहले ही धक्के में आयरन हील को ज़मीन पर ला खड़ा किया गया था। चिथड़े-चिथड़े हो गई थी उसकी तैयारी।

उसी क्षण पुल, सुरंगें आदि उड़ाकर सारी रेल व्यवस्था अस्त-व्यस्त कर दी गई। उसी तरह इशारा मिलते ही पुलिस और दूसरे विभागों के अधिकारियों को पकड़ लिया गया। इस प्रकार शत्रु के स्थानीय नेतृत्व को सीन से हटा देने की कोशिश की गई।

सिग्नल मिलते ही कई तरह की घटनाएं एक साथ घटने वाली थीं। 'पड़ोसी कनाडा और मैक्सिको के देशभक्त इतने शक्तिशाली थे जितने की आयरन हील कल्पना नहीं कर सकता था। उन्होंने भी हमारी टैक्टिक्स दोहराई। हमारे गुप्त छापाखानों में छपे इश्तहार हमारी महिला साथियों द्वारा जगह-जगह लगा दिए गए। आयरन हील की व्यवस्था में हमारे जैसे उच्चपदासीन लोगों को हर तरफ अव्यवस्था फैला देनी थी। मर्सीनरीज़ के बीच भी हमारे हज़ारों साथी थे। उन्हें गोली-बारूद में आग लगा देनी थी और युद्ध तंत्र को नष्ट कर देना था। उच्च श्रेणी के मज़दूरों और भाड़े के टट्टुओं के लिए बसाई गई बस्तियों में भी इसी तरह तोड़-फोड़ की गई।

संक्षेप में, अचानक एक भारी प्रहार कर देना था। इसके पहले कि पंगु हो गई व्यवस्था सम्हल पाती उसका अंत हो जाता। इसका मतलब होता भयानक दिन और ढेरों मौते पर क्रांति-पथिक कभी ऐसे मौकों पर द्विविधाग्रस्त नहीं होता। हम क्या करते—हम तो खाई में गिरे असंगठित लोगों पर बहुत निर्भर कर रहे थे। उन्हें ही मालिकों के महलों और नगरों पर हमलावर होना था। जान-माल का विध्वंस होता है तो हो। पशुवत् जीने को मजबूर दमित लोग दहाड़ें और भाड़े के टट्टुओं और पुलिस को मारें। खैर वे दहाड़ेंगे ही और ज़ालिमों को मारेंगे ही। बस होना यह था कि हमें जिनसे खतरा था उनमें से कई आपस में टकरा कर नष्ट हो रहे थे। इस दौरान हमें अपना काम करना था निर्बाध और समाज के सारे तंत्र को वश में कर लेना था।

ऐसी थी हमारी योजना जिसका छोटा से छोटा ब्योरा तरीके से ही तैयार होना था और ज्यादा से ज्यादा साथियों तक पहुंचना था। यही खतरा था षड्यंत्र के विस्तार में। पर वहां तक बात पहुंची ही नहीं। अपने गुप्तचर तंत्र से आयरन हील को हवा लग गई और उसने एक और खूनी सबक सिखाने का इन्तजाम कर लिया। इसके लिए शिकागो को चुना गया था-वहीं मिला सबक।

शिकागो सबसे पकी जगह थी। (एक अंग्रेज लेबर लीडर जो कुछ दिनों तक मंत्री था शिकागो को 'नरक का जेबी संस्करण' कहता था। कुछ दिन बाद उससे पूछा गया कि क्या उसने अपनी राय बदली है तो वह बोला : 'हां! नरक शिकागो का जेबी संस्करण है।') तो शिकागो खुनी शहर की तरह कुख्यात था। वहीं क्रांतिकारी स्पिरिट भी मजबूत थी। वहां इतनी बार बड़ी-बड़ी हडतालें कुचली गइ थीं कि मजदूर उन्हें

सभी पैदल लोग गायब हो चुके थे। हमारे पास का वातावरण और गहरा गया। दूर खलबली जारी थी। हर तरफ से धमाकों की आवाज आ रही थी। धुएं के स्तम्भ उठते जा रहे थे।

रसातल में धंसे लोग

अचानक चीजें बदली-बदली सी लगने लगीं। आवेग की एक खुनक हवा में तैरने लगी। बगल से मोटरें गुजरी दो-तीन-दस और उनसे चेतावनी की आवाज गूंज रही थी। एक मोटर बड़ी तेजी से कोई पचास गज आगे गई होगी कि उसके पीछे छूट गई सड़क का फुटपाथ धमाके के साथ कई फिट धंस गया। हमने पुलिस को चौराहे से भागते देखा और भांप लिया कि कुछ भयानक घटने वाला है। हमें एक दहाड़ सुनाई दे रही थी।

हार्टमन ने कहा : 'हमारे बहादुर कॉमरेड आ रहे हैं।'

उन मोटरों के काफिले की आखिरी मोटर गुज़री ही थी कि एक किनारे से दूसरे तक फैला आगे बढ़ते कालम का सामना दिखाई पड़ा। वह अंतिम गाड़ी हमसे थोड़ा ही आगे रुकी। उसमें से एक सिपाही कूद कर बाहर आया। वह हाथ में कोई चीज बड़ी सावधानी के साथ पकड़े हुए था। उसने उसे उसी सावधानी के साथ गटर में डाल दिया। कूद कर वह गाड़ी में बैठ गया और गाड़ी तेजी से आगे के मोड़ से मुड़कर ओझल हो गई।

हार्टमन दौड़ा और झांककर गटर पर झुक गया।

'पीछे ही रहना।' उसने मुझे चेताया।

मैं देख पा रही थी कि उसके हाथ कुछ कर रहे थे तेजी से।

जब वह लौटा तो पसीने-पसीने हो रहा था। वह बोला : मैंने एकदम कुछ क्षण पहले उसे बेकार कर दिया। वह सिपाही अनाड़ी था। उसने बम रखा था हमारे साथियों को उड़ाने के लिए पर उसे वक्त का अन्दाजा नहीं था। वह उनके पहुंचने के पहले ही फटने वाला था। चलो बच गए।'

घटनाएं तेजी से घट रही थीं। सड़क के उस पार कुछ दूरी पर इमारतों से ऊपर की मंजिलों से कुछ लोग झांक रहे थे। मैंने हार्टमन को उधर मुखातिब किया ही था कि उस बिल्डिंग के सामने एक आग और धुंए की परत फैल गई और विस्फोट से माहौल कांप उठा। इमारत के सामने के पत्थर उड़ गए और लोहे का ढांचा दिखने लगा। कुछ ही पल में उस इमारत के सामने सड़क के उस पार धमाका हुआ। धमाकों के बीच पिस्तौलों और राइफलों के दगने की आवाजे सुनाई दी। कुछ मिनट बाद ये धमाके बंद हो गए। साफ़ हो गया था कि एक बिल्डिंग में हमारे साथी थे और दूसरे में भाड़े के टट्टू और

भूल नहीं सकता था। वहां तो उच्च श्रेणी वाले मजदूर भी विद्रोही भाव संजोए हुए थे। उनके हालात बेहतर थे, पर मालिकों के लिए घृणा समाप्त नहीं हुई थी। मर्सीनरीज के बीच ऐसे लोगों की बहुतायत थी। उनके तीन डिवीजन पूरे-के-पूरे हमारी ओर आने को तैयार बैठे थे।

शिकागो पूंजी और श्रम के बीच के संघर्षों का गढ़ था जहां भड़की टकराहटें वहां वर्ग चेतना से लैस मजदूर और पूंजीपति के बीच खून-खराबा होता रहता था। स्कूल के शिक्षक यूनियनों में शामिल थे और अमेरिकन फैडरेशन ऑफ लेबर से जुड़े हुए थे। समय से पूर्व हुए पहले विद्रोह का विस्फोट-केन्द्र बन गया था शिकागो।

आयरन हील ने चालाकी से शुरूआत की। उच्च श्रेणी के मजदूरों सहित सारी जनता को जुल्म का शिकार होना पड़ा। सारे वादे-समझौते तोड़ दिए गए और छोटे-छोटे अपराधों के लिए भी कठोर सजा दी गई। दलित-दमित का इतना उत्पीड़न हुआ कि वे तटस्थ नहीं रह सके। वास्तव में शासक चाह ही रहे थे कि पशु चिंघाड़े। सारी सावधानियों के बावजूद उनसे कुछ लापरवाही तो हो ही गई। काफी टट्टू दूसरे क्षेत्रों को भेज दिए गए थे, फिर भी काफी बचे थे और उन्हीं के बीच असावधानी हुई।

सब कुछ कुछ ही हफ्तों में हो गया। हमें खबर मिली थी कि क्या हो रहा है पर सूचनाएं स्पष्ट थीं और उतने पर ठोस कर पाना कठिन था। हम सोचते थे कि नैसर्गिक विद्रोह पर थोड़ा अंकुश रखना पड़ेगा। हमने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे तो गुप्त रूप से रचा गया था, शासकों के अन्तरतम द्वारा और हमें हवा तक नहीं लगने दी गई। उसका प्रतिकार सुनियोजित था और हमारी उपलब्धि भी।

मुझे न्यूयार्क में आदेश मिला तत्काल शिकागो पहुंचने का। आदेश देने वाला एक धनिक था। मैं उसकी जुबान सुनकर ही बता सकती थी, बिना उसके नाम और चेहरे से परिचित हुए। आदेश स्पष्ट थे-गल्ती की गुंजाइश नहीं थी। संदेश में इशारा था कि हमारे षड्यंत्र का पता चल चुका है और हमारे विरुद्ध कार्रवाई शुरू हो गई है। बस बारूद में आग लगाने की देर थी। मेरे जैसे हजारों एजेन्ट इसीलिए वहां थे या भेजे गए थे। मैं खुश थी कि मैं संदेशवाहक के सामने संतुलन बनाए रख सकी पर दिल तो जोर-जोर से धड़क रहा था। मैं चीख पड़ने वाली थी, आदेश के अंतिम क्रूर शब्दों के सुनने से पहले उसकी गर्दन अपने नंगे हाथों से दबोच लेने वाली थी।

उसके जाते ही मैंने वक्त का हिसाब किया। गाड़ी पकड़ने के पहले स्थानीय नेताओं से सम्पर्क करने भर को बस कुछ ही पल बाकी थे। पीछा न हो उससे बचने के लिए मैं सीधे इमरजेंसी हॉस्पिटल भागी। किस्मत ने साथ दिया। मुझे कॉमरेड गैल्विन, मुख्य सर्जन फौरन मिल गए। मैं हांफते हुए खबर उगलने वाली थी। पर उन्होंने रोक दिया। उनकी आयरिश आंखों में चमक थी। उन्होंने शांतिपूर्वक कहा:

'मुझे पता है तुम किस लिए आई हो। पन्द्रह मिनट पहले ही मुझे पता चला और मैंने खबर पहुंचा दी है। साथियों को खामोश रखने के लिए हर कोशिश की जाएगी।

हार्टमन उछल पड़ा खुशी से। वह बार-बार फुसफुसा रहा था: 'शाबाश। बहुत अच्छे! सर्वहारा को सबक मिला आज, पर उसने सबक सिखाया भी।'

पुलिस दौड़ पड़ी। एक और पेट्रोल आ कर रुकी। मैं तो अवाक थी। अचानकता ने स्तब्ध कर दिया था। कैसे हुआ यह सब? मुझे पता नहीं था पर मैं सीधे इसे ही देख तो रही थी। मैं इस कदर सुन्न थी कि पता ही नहीं था कि हम गिरफ्तार थे। मैंने अचानक देखा कि एक सिपाही हार्टमन को गोली मारने वाला था। पर वह शांत था और पासवर्ड बता रहा था। मैंने तनी रिवाल्वर में हिचक देखी फिर पिस्तौल नीचे चली गई और सिपाही गुर्राया। वह बहुत गुस्से में था और सारे गुप्तचर विभाग को गाली दे रहा था। वह भुन्नाया हुआ था और हार्टमन उससे बात कर रहा था और वह गुप्तचर विभाग वाले दर्प के साथ पुलिस वालों की ढिलाई के बारे में बता रहा था।

दूसरे ही पल मैं समझ गई कि यह कैसे हुआ था? घटना की जगह कई लोग थे और एक जख्मी अधिकारी को दूसरी गाड़ी में ले जा रहे थे। फिर डर कर लोग इधर-उधर भागे, ज़ख्मी को यूं ही छोड़कर। हमारे पास वाला सिपाही भी भागा। हम भी भागे। मालूम नहीं हुआ क्यों बस उस अंध-आतंक के कारण, उस जगह से दूर भागना था बस।

उस समय तो कुछ नहीं हुआ पर सब स्पष्ट हो गया। आगे लोग डरे-डरे से वापस आ रहे थे। दोनों तरफ कैनयान की दीवारों की तरह खड़ी ढेरों खिड़कियों वाली इमारतों की तरफ देखते हुए। उन्हीं में से किसी खिड़की से बम फेंका गया था पर पता नहीं था किस्से। दूसरा बम तो नहीं आया पर डर तो था ही।

हम अन्दाजा लगाते खिड़कियों की ओर देख रहे थे। किसी के भी पीछे से मौत आ सकती थी। हर इमारत खतरनाक थी। उस शहर, आधुनिक जंगल, में युद्ध शुरू हो गया था। हर सड़क कैनयान थी और हर इमारत पहाड़। हम आदिम आदमी से आगे नहीं गए थे, भले ही अगल बगल-चलती गाड़ियां विकास की सूचक हों।

एक मोड़ पर एक औरत मिली। वह खून में लथ-पथ पड़ी थी। हार्टमन ने झुक कर उसकी जांच की। मैं तो अंदर तक बीमार हो गई। उस दिन कई लाशें देखीं पर वैसी प्रतिक्रिया नहीं हुई जैसी पहली बार पैर के पास पड़ी लथपथ लाश देखकर हुई थी।

'छाती में गोली लगी है।' हार्टमन ने जांच कर बताया।

जैसे किसी बच्चे को चिपका रखा हो उसने एक बंडल दबा रखा था। लगता था मर कर भी वह उस छपे कागज के बंडल को नहीं छोड़ना चाहती थी हालांकि उसी के कारण मरी थी। जब हार्टमन ने उसे सावधानी से खींचा तो पता चला वे क्रांति की घोषणाओं के पोस्टर थे।

'एक कॉमरेडे!' मैंने कहा।

लेकिन हार्टमन ने बस गाली दी आयरन हील को। कई बार रोका गया पर हम पासवर्ड के सहारे आगे बढ़ते गए। खिड़कियों से और कोई बम नही फेंका गया पर

शिकागो की कुर्बानी देनी होगी पर बस, और नहीं।'

'शिकागो से कोई खबर?' मैंने पूछा।

'तार संबंध टूटे हुए हैं। तर्क हो रहा होगा वहां।' सिर हिलाते वह बोले। क्षण को वह रुके। उनकी सफेद मुट्ठियां भिंची। फिर वह फूट पड़े :

'या खुदा! काश मैं वहां होता।'

'अब भी एक मौका है उसे रोकने का अगर मै वहां वक्त से पहुंच जाऊं, ट्रेन को कुछ न हो। या फिर दूसरे कुछ गुप्तचर सेवा वाले कॉमरेड वहां पहुंच पाते, जिन्हें सच्चाई मालूम है।'

'तुम अन्दर से तैयारी करने वाले ऊंघते पकड़ लिए गए।'

मैंने विनम्रतापूर्वक स्वीकृति में गर्दन हिला दी। मैंने कहा : 'बात एकदम गुप्त थी। केवल अंदर के चीफ जान पाते आज के पहले। हम अभी तक वहां पहुंच नहीं पाए हैं इसलिए अंधकार में ही थे। काश! अर्नेस्ट यहां होता। कौन जाने वह शिकागो में ही हो और सब कुछ ठीक-ठाक हो।'

'अंतिम खबर के मुताबिक वह बोस्टन या न्यू हैवन में होगा। दुश्मन उसके लिए मुश्किलें खड़ी करेगा ही। पर किसी शरणस्थली में पड़े रहने से तो यह बेहतर ही है।'

मैं चलने लगी तो गैल्विन ने मेरा हाथ कस कर दबाते हुए कहा : 'हिम्मत रखना। क्या हुआ अगर पहला विद्रोह असफल हो जाता है। दूसरा होगा और तब हम बेहतर काम लेंगे अक्ल से। गुडबाई एण्ड गुडलक! पता नहीं अब मिलें या न मिलें। वहां तो नरक, ही होगा पर मैं अपनी जिन्दगी के दस साल तुम्हें देने को तैयार हूं ताकि तुम वहां पहुंच सको।'

उस जमाने की सबसे तेज ट्रेन 'ट्वेनटिएथ सेन्चुरी' न्यूयार्क से शाम छः बजे छूटी। उसे दूसरे दिन सुबह सात बजे शिकागो पहुंचना था। पर वह लेट होती गई। एक और ट्रेन आगे-आगे जा रही थी। मेरे ही डिब्बे में कॉमरेड हार्टमन भी थे। वह भी मेरी तरह आयरन हील के गुप्तचर विभाग में थे। उन्होंने ही मुझे आगे वाली ट्रेन के बारे में बताया। वह हमारे ट्रेन की डुप्लीकेट थी हालांकि उसमें कोई मुसाफिर नहीं था। ख्याल यह था कि अगर ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी को उड़ाने की कोशिश हो तो खाली वाली गाड़ी ही उड़े। वैसे हमारी गाड़ी में भी थोड़े ही लोग थे। हमारे डिब्बे में होंगे दस-बारह।

हार्टमन ने नतीजा निकाला : 'लगता है कोई बड़ा आदमी है गाड़ी में। गाड़ी के पीछे एक प्राइवेट सैलून भी है।'

रात हो गई थी जब इंजन बदलने के लिए गाड़ी रुकी। मैं भी ताजा हवा लेने के लिए प्लेटफार्म पर उतरी। देखना भी चाहती थी जो कुछ दिखाई देता। प्राइवेट डिब्बे की खिड़की से मैने तीन आदमियों को पहचाना। हार्टमन का अनुमान सही था। एक था जनरल आल्टेनडार्फ, अन्य दो थे—मैसन और वैन्डरबोल्ड—गुप्तचर सर्विस के कोर के दिमाग।

और हार्टमन सही था। महीने भर के अंदर ही विश्वासघात के लिए नॉलटन को जान देनी पड़ गई। उसे मिलवॉकी में सथियों ने फांसी दे दी।

सड़कों पर शांति थी-एक दम शांति। शिकागो मुर्दा लग रहा था। ट्रैफिक का शोर-शराबा गायब था। सड़क पर सवारियां भी नहीं थीं। फुटपाथ पर कुछ लोग पैदल आ-जा रहे थे। पर सभी जल्दी में थे, थोड़े भयाक्रांत भी मानो इमारतें गिरने वाली हैं या सड़क धंसने वाली है। थोड़े लड़के जरूर वहां थे। वे भी अनागत के प्रति उत्कंठा के आवेग को दबाए-दबाए से लगते थे।

कहीं दूर दक्षिण से एक विस्फोट की आवाज सुनाई दी। बस! फिर शांति छा गई। हालांकि लड़के हिरनों की तरह चौंके थे आवाज सुनकर। सभी घरों के दरवाजे बंद थे। दुकानों के शटर गिरा दिए गए थे। चारों ओर पुलिस थी और मर्सीनरीज की पेट्रोल जारी थी।

हार्टमन और मैं सहमत थे कि हमारे लिए चीफ को रिपोर्ट करना बेमानी था। बाद में हमारी उस गलती को हालात देखते हुए माफ कर दिया जाएगा, हमें पता था। इसलिए हम दक्षिण में स्थित झोपड़पट्टी की ओर लपके। वहां कोई संदेश मिलने की आशा थी। पर देर हो चुकी थी। हमें आभास था। पर हम उन भयानक और खामोश सड़कों पर निष्क्रिय तो नहीं रह सकते थे। आखिर अर्नेस्ट कहां होगा! क्या-क्या हो रहा होगा-शहरों में, किलेबंदियों में?'

जैसे जवाब में एक जोर का धमाका हुआ, कहीं दूर, फिर रुक-रुक कर धमाके शुरू हो गए।

'ये तो रहीं किलेबंदियां। खुदा ही खैर करे उन तीनों रेजीमेंटों का।'

एक चौराहे पर हमने देखा गोदामों की दिशा में धुंए का उठता हुआ विराट स्तम्भ। एक और चौराहे से पश्चिम में ऐसे कई स्तम्भ उठते दिखे। मर्सीनरीज के मोहल्ले की ओर एक बैलून दिखा जिसमें हमारे देखते-देखते विस्फोट हुआ और नीचे जलता मलबा गिरा। समझ में नहीं आया इसका राज। आखिर कौन थे उसमें—दोस्त या दुश्मन। थोड़ी ही देर में एक गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी। हार्टमन ने बताया कि ये मशीनगन और ऑटोमेटिक राइफलें चलने की आवाज है।

पर आस-पास शांति थी। यहां कुछ नहीं फट रहा था। बस पेट्रोलिंग जारी थी। फिर कुछ अग्निशमन की गाड़ियां लौटती गुजरीं। हमने सुना अधिकारी को यह कहते हुए कि पानी नहीं है वहां। किसी ने मुख्य पम्प ही उड़ा दिया।

हार्टमन खुश होकर बोला : 'हमने पानी की सप्लाई तबाह कर दी। अगर हम इतना सब एकाकी, अपरिपक्व और असफल प्रयास के दौरान कर सकते हैं तो एकजुट तैयारी के साथ किए गए प्रयास में क्या नहीं कर सकते।'

वह गाड़ी आगे बढ़ गई थी। अचानक एक कान फोड़ने वाला धमाका हुआ। एक मशीन हवा में उछली और लाशों और मलबे के साथ धरती पर आ गिरी।

शांत चांदनी पसरी थी। मैं करवट बदलती रही। नींद नहीं आ रही थी। पांच बजे सुबह ही मैंने बिस्तर छोड़ दिया और तैयार हो गई। परिचारिका ने पूछने पर बताया कि गाड़ी दो घन्टे लेट थी। वह मिश्रित जाति की मुलाटो महिला थी दुबली-पतली, आंखों के चारों ओर काले घेरे थे और आंखों में कोई मंडराता भय।

'क्या बात है?' मैंने पूछा।

'कुछ भी नहीं मिस! मैं सो नहीं सकी, शायद वही!' उसने जवाब दिया।

मैंने नजदीक से देखा फिर अपना एक सिगनल आजमाया। उसने उत्तर दिया। मैंने बात पुष्ट कर ली। वह बोली : 'शिकागो में कुछ बहुत भयानक होने वाला है। आगे-आगे झूठी ट्रेन जा रही है। उसने और फौजी गाड़ियों ने हमारी ट्रेन लेट कर दी।'

'फौजी गाड़ियां?' मैने पूछा!

उसने गर्दन हिलाई। 'सारे रास्ते वही मिली। शिकागो जा रही हैं। मतलब है कुछ खास बात।' मेरा एक प्रेमी है शिकागो में। हमारे साथ ही है। मर्सीनरीज में भर्ती है। उसी के लिए डर रही हूं।

बेचारी! उसका प्रेमी उसी तीन विद्रोही रेजीमेंट्स में था।

हार्टमन और मैंने डाइनिंग कार में नाश्ता किया। मैंने जबरदस्ती खाया कुछ। बादल घिर आए थे। नए दिन के भूरे माहौल के बीच बुलेट की तरह सनसनाती चली जा रही थी गाड़ी। सभी अश्वेत परिचर जान रहे थे कि कुछ भयानक घटने को था। सभी तनावग्रस्त थे। सर्विस के दौरान वे गुम-सुम या गुम दिमाग थे। किचन के बगल में खड़े थे, वे फुस-फुसा रहे थे। हार्टमन उलझ गया था।

बीसवीं बार होगा जब उसने कंधे उचका कर पूछा : 'हम करें क्या?'

खिड़की से बाहर इशारा करते हुए बोला: 'देखो, सब तैयार है।'

स्टेशन पर रुकी फौजी गाड़ियों की ओर उसने इशारा किया था। सिपाही लोग ट्रेन के बगल में अपने नाश्ते पका रहे थे। वे हमारी तेजी से गुजरती ट्रेन को जिज्ञासु की तरह देख रहे थे।

जब हम शिकागो में घुसे, सब शांत था। स्पष्ट था कि अभी तक कुछ नहीं हुआ था। उपनगरों में अखबार मिले। उनमें वैसे तो कुछ नहीं था पर जो शब्दों के बीच का अर्थ पहचानने में दक्ष हो उसे पता चल जाता कि कुछ छुपाया जा रहा है। हर कालम पर आयरन हील की कुशलता की मुहर थी। शासक तंत्र की कमजोर कड़ियों की भी झलकी पर कुछ निश्चित नहीं था। अक्टूबर 27 के अखबार गल्प की तरह मास्टर पीस थे।

स्थानीय खबरें नदारद थीं। यह अपने में कौशल था। शिकागो रहस्य में घिरा हुआ था और सामान्य पाठक तक यही संदेश जा रहा था कि शासक शिकागो की खबर छापने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। ऐसे झूठे इशारे थे देश में अवज्ञा बढ़ रही थी और उसे सजा देने के इरादे को भी छुपाया गया था। रपटें छपी थीं बहुत से तारघर उड़ा दिए

गए थे और अपराधियों को पकड़वाने के लिए भारी पुरस्कार की घोषणाएं छपी थीं। हकीकत में एक भी तारघर नहीं उड़ाया गया था। और भी ऐसी ही खबरें थीं जो क्रांतिकारियों के अपराध की ओर इशारा कर रही थीं। शिकागो के कॉमरेडों तक यह संदेश पहुंच रहा था कि विद्रोह शुरू हो रहा था। हां ब्योरों में गड़बड़ी थी। जिसे सही बात पता न हो उसके लिए यह न मानना असंभव था कि विद्रोह के लिए जमीन पक चुकी है और विस्फोट शुरू होने ही वाला है।

खबर थी कि कैलिफोर्निया में मर्सीनरीज का विद्रोह इतना गंभीर था कि आधा दर्जन रेजीमेन्टों को बर्खास्त कर उनको परिवारों सहित घरों से खदेड़कर स्लमों में पहुंचा दिया गया है। जबकि कैलिफोर्निया के टट्टुओं को सबसे अधिक स्वामिभक्त समझा जाता था। पर यह बात शिकागो कैसे जानता जिसे सारी दुनिया से काट दिया गया था? फिर एक टेलीग्राम की खबर थी जिसमें बताया गया था कि न्यूयार्क में लोगों ने विद्रोह कर दिया है जिसमें उच्च श्रेणी के मजदूर भी शामिल हो रहे थे। खबर के अंत में यह इस तरह बताया गया कि लोग विश्वास न करें कि हालात नियंत्रण में है।

शासकों ने जो अखबारों के माध्यम से किया था वही हजारों और तरीकों से भी किया था। उदाहरण के लिए ऐसी ढेरों खबरें भेजी गई थीं इस इरादे से कि क्रांति समर्थकों को पता चल जाएं।

जब गाड़ी सेन्ट्रल डिपो पर रुकी तो हार्टमन ने अखबार समेटते हुए कहा : 'मेरा अनुमान है कि आयरन हील को हमारी सेवाओं की जरूरत नहीं रही। यहां भेज कर उन्होंने अपना वक्त ही बरबाद किया है। उनकी योजनाएं आाशा से अधिक सफल हो रही हैं। नरक का विस्फोट होने ही वाला है।' गाड़ी से उतरते ही उसने कहा, मेरा सोचना ठीक ही था क्योंकि प्राइवेट सैलून रास्ते में ही काट दी गई।'

वह बेहद हताश था। मैंने उसका हौसला बढ़ाने की बहुत कोशिश की पर मेरी कोशिशें नजरअंदाज कर वह जल्दी-जल्दी फुसफुसाने लगा। हम स्टेशन से गुजर रहे थे। पहले तो मैं समझ नहीं पाई। वह कह रहा था :

'मैं निश्चिंत नहीं था, और मैंने किसी से कहा भी नहीं। मैं इस पर हफ्तों से काम कर रहा था पर मैं निश्चित नहीं हो सकता। नॉलटन पर निगाह रखना। मेरा संदेह है उस पर। उसे हमारे बहुत से ठिकानों का पता है। उसके हाथ में हमारे सैकड़ों साथियों की जान है और वह है विश्वासघाती। बस मन में ऐसा ख्याल आ रहा है। पर मैंने थोड़ा पहले उसमें एक परिवर्तन मार्क किया है। खतरा है कि या तो उसने हमें बेच दिया है या ऐसा करने वाला है। अब हमें निश्चिंत हूं। मैं अपना संदेह किसी को नहीं बताऊंगा पर मुझे लगता है मैं यहां से जिन्दा नहीं लौटूंगा। नॉलटन पर निगाह रखना। फांसो उसे पता करो मुझे और कुछ पता नहीं। बस यह एक अन्तर्भाव है, कोई सुबूत नहीं जुटा पाया हूं।' हम बाहर फुटपाथ पर चलने ही वाले थे कि उसने दोहराया: 'याद रखना! नॉलटन पर निगाह रखना।'

को भी देखा था—दूसरे दिन। तीन विश्वासघाती रेजीमेन्टों को किले में नेस्तनाबूत कर दिया गया था।

बीडेनबाख ने हमारी शरणस्थली छोड़ने के बाद एक बेहद विस्फोटक पदार्थ का आविष्कार कर लिया था। नाम रखा था 'एक्सपिडाइट'। इसी का इस्तेमाल किया गया था बैलूनों में। वे मामूली बैलून थे पर काम ठीक किया था। मैंने एक आफिस बिल्डिंग की छत से देखा था कारनामा। पहला बैलून निशाना चूक गया था और उड़कर दूर चला गया था। बाद में पता चला उसमें बर्टन और ओसलीखन थे। उतरते वक्त उनके सामने शिकागो जाती एक ट्रेन आ गई और उन्होंने सारा विस्फोटक उसके इंजन पर गिरा दिया था। नतीजे में लाइन कई दिनों तक बंद रही थी। बारूद गिर जाने से हल्का हुआ बैलून काफी ऊपर उड़ गया था। पांच छः मील तक नहीं उतरा और इस तरह दोनों व्यक्तियों की जान बच गई थी।

दूसरा बैलून असफल रहा था। वह ठीक से उड़ नहीं सका और उसमे ढेरों छेद कर दिए गए नीचे से बरसाई गोलियों से। उसमें सवार हर्टफोर्ड और गिनेश के चीथड़ें उड़ गए थे। बीडेनबाख, जैसा कि हमने बाद में सुना, हताश हो गया था। तीसरे में वह अकेला उड़ा। वह भी नीचे-नीचे उड़ा। पर उसकी किस्मत अच्छी थी। उसमें ज्यादा पंक्चर नहीं किया जा सका। वह बैलून के नीचे चिपका हुआ था। मैं दूर से देख रही थी। मैंने नीचे का किला तो नहीं देखा पर विस्फोटक गिरते ही बैलून को ऊपर उछलते मैंने देखा था और आज भी उसे कल्पना में देखती हूं। क्षणभर बाद मैंने धमाका सुना था। उस भद्र बीडेनबाख ने एक किले का विध्वंस कर दिया था। तुंरत बाद दो और बैलून आए थे। एक आसमान में ही फट गया और उसके ज़ोर से दूसरा भी नष्ट होकर किले में ही गिर गया था। हालांकि उसमें सवार कॉमरेड मारे गए थे पर काम पूरा हो गया था।

पाताल के लोगों की ओर लौटें। मेरे अनुभव उन्हीं तक सीमित हैं। उन्होंने शहर में संहार और विध्वंस किया और फिर स्वयं नष्ट हो गए। पर वे पश्चिम में स्थित धनाढ्यों के शहर तक एक बार भी नहीं पहुंच पाए। धनाढ्यों ने अपनी सुरक्षा का बेहतरीन इन्तज़ाम किया था। शहर में जितना भी विध्वंस होता उनके मुहल्लों में उनके बाल-बच्चे सुरक्षित थे। मैंने सुना कि उनके बच्चे पार्कों में उन दिनों भी खेलते रहे थे—अपने बुज़ुर्गों के खेल की ही नकल—गरीबों को रौंदने का खेल।

किराए के फौजियों के लिए जनता और कामरेडों दोनों से एक साथ लड़ना आसान नहीं था। शिकागो ने अपनी साख बनाए रखी। अगर क्रांतिवादियों की एक पीढ़ी तबाह हो गई तो उनके शत्रुओं की भी एक पीढ़ी तबाह हुई थी। हालांकि आयरन हील ने पर्दा गिराए रखा परन्तु पता चल ही गया कि एक लाख तीस हज़ार भाड़े के सिपाही मारे गए थे। परन्तु कामरेडों का तो बुरा हाल हुआ। सारे देश में एक साथ विद्रोह होने के बजाय कामरेड अकेले पड़ गए थे और शासक धनाढ्य अपनी पूरी

की तलाश में सारी सामाजिक संरचना रौंदी जा रही थी। भाड़े के सिपाही, जासूसी संगठन और गद्दार मेहनतकश मिलकर जुटे थे सज़ा अभियान में। वे भी कीमत चुका रहे थे। चुपचाप सहते और अपने हताहतों की जगह मरते हुए। इसी के साथ अर्नेस्ट और दूसरे नेता जुटे हुए थे। क्रांति की शक्तियों को पुनर्गठित करने में। कार्यभार कितना बड़ा था, इसका अहसास तो उसमें लगने.....

एविस एवरहार्ड की पाण्डुलिपि यहीं अचानक खत्म हो गई थी। हो सकता है उसे आक्रमण की सूचना मिल गई हो और उसने समय से पाण्डुलिपि छिपा दी थी—भागने या गिरफ्तारी से पहले। दुख है कि वह इसे पूरा नहीं कर सकी। कर पाती तो शायद सात सदियों से घिरे रहस्य से पर्दा उठ गया होता।

ताक़त उनके खिलाफ लगा सकते थे। हर घण्टे, हर दिन ट्रेन भर-भर कर भाड़े की फौज शिकागो भेजी जा रही थीं।

और पाताली जनता? उसे जानवरों की तरह घेर कर मानो मिशिगन झील में डुबो देने की योजना थी। उसी दौरान हमारे साथ वह घटना घटी थी। यह योजना कामरेडों की बहादुरी के कारण सफल नहीं हो पाई थी। वे केवल चालीस हज़ार लोगों को शिकागो तक घेर कर पहुंचा सके थे। जबकि जनता को घेर कर झील तक पहुंचाया जाता। कामरेड कहीं न कहीं घेरे को छेद डालते और जनता बाहर भाग लेती।

मैंने और गार्थवैट ने ऐसी एक घटना देखी थी। जिस भीड़ में हम थे उसे दक्षिण और पूर्व की ओर भारी फौज ने रोक दिया था। फिर उसे पश्चिम से भी घेर लिया गया। अब एक ही रास्ता बचा था—उत्तर का और वह झील की ओर जाता था। हम पश्चिम की ओर जाकर इस भीड़ से निकलना चाहते थे पर उधर से आती मोटरों ने हमें रोक दिया था और हम फिर फंस गए थे। गार्थ ने फिर मुझे खींचकर बचाया था। भीड़ उन पर टूट पड़ी थी और लगता था उन्हें दबोच लेगी, मशीनगनें चलने से पहले छीन ली जाएंगी। मोटरों ने रास्ता रोक लिया था और सिपाही उनके बीच या फिर फुटपाथों पर थे। सिपाही आते ही जा रहे थे और उस जैम से निकल पाना मुश्किल था। गार्थ ने मेरा हाथ पकड़ा हुआ था और हम एक बिल्डिंग से चिपके खड़े रहे।

भीड़ बस पचीस फीट दूर रही होगी। जब बन्दूकें चलने लगीं। जलती मौत की चादर बिछ गई जिस तक भीड़ का पहुंचना असंभव हो गया। वह लाशों और घायलों के ढेर में परिवर्तित होती गई। पीछे से हौसला अफज़ाई होती रही पर ज्वार मोटरों और सिपाहियों के पैरों तक आकर टूट कर ढेर हो जाता। तब सिपाही अपनी संगीनें घोंप देते। पर मैंने देखा कि कैसे एक ने उछल कर एक सिपाही की गर्दन अपने दांतों से दबोच ली थी। दोनों ही नीचे गिर पड़े थे।

आखिर बन्दूकें शांत हो गईं। काम हो गया था। भीड़ का घेरा तोड़ देने का प्रयास चकनाचूर हो गया था। आदेश मिल चुके थे कि रास्ते साफ कर दिए जाएं। लाशें पटी हुई थीं और उन्हें घसीटा जाने लगा। तभी कुछ और घट गया। हमें बाद में पता चला कि क्या कैसे हुआ? थोड़ी दूर पर हमारे कामरेडों ने एक बिल्डिंग को कब्ज़े में ले लिया था। वे छतों से कूदते हुए सिपाहियों के ठीक पास तक पहुंच गए और शुरू हो गया प्रति नरसंहार।

बिना चेतावनी के इमारतों के ऊपर से सिपाहियों पर बमों की बौछार हुई। मोटरों के परखचे उड़ गए—साथ ही सिपाहियों के भी। हम जल्दी से पीछे भागे। थोड़ी दूर पर फिर गोली चलने लगी ऊपर से। मैं और गार्थवैट न जाने कैसे बचे। हम फिर एक फाटक में घुस गए। इस बार वह ज्यादा सावधान था। बमों का धमाका रुकते ही वह बाहर झांककर पता लगाने लगा।

वह चिल्लाया : 'भीड़ वापस आ रही है। हमें निकल भागना है।'

पराजित हुआ था। अर्नेस्ट को निहारते हुए मैं रो पड़ी। अर्नेस्ट की बांह ने मुझे घेर लिया। उसमें प्यार उमड़ रहा था। वह बोला : 'इस बार हार गए पर हमेशा के लिए नहीं। हमने सीखा भी तो। कल फिर उठेंगे विवेक और अनुशासन से और मजबूत होकर।'

गाड़ी एक रेलवे स्टेशन पर रुकी। वहां से हमें न्यूयार्क की ट्रेन पकड़नी थी। हम प्लेटफार्म पर इन्तज़ार कर रहे थे। इस बीच शिकागो की ओर जाती तीन तेज़ रफ्तार ट्रेनें गुज़रीं। उनमें कृशकाय, अकुशल मज़दूर भरे पड़े थे—(रसातल के लोग)।

अर्नेस्ट बोला : 'शिकागो के पुनर्निर्माण के लिए दूसरी जगहों से गुलाम मज़दूर। ज़ाहिर है ऐसे लोग शिकागो में नहीं बचे।'

आतंकवादी

हमारे न्यूयार्क लौटने के हफ्तों बाद हमें अपनी हार और विपत्ति का पूरा स्वरूप और परिप्रेक्ष्य समझ में आया। सारे देश में कई जगहों पर इन दासों ने विद्रोह किया था और मारे गए थे। शहीदों की संख्या बढ़ती जा रही थी। अगणित लोगों को फांसी दी गई थी। पहाड़ों और निर्जन क्षेत्रों में शरणार्थी और बदमाश लोग जा छुपे थे। उन्हें निर्दयतापूर्वक मारा जा रहा था। हमारे अपने शरण-स्थलों पर हमारे कामरेड भरे पड़े थे। उनकी गिरफ्तारी पर सरकारी इनाम घोषित हो चुका था। जासूसों से सूचना पाकर कई बार इन जगहों पर छापे पड़ चुके थे।

बहुत से कामरेड हताश हो गए थे और आतंकवादी प्रतिकार कर रहे थे। आशाओं के ध्वंस ने उन्हें हताश और संत्रस्त बना दिया था। हमसे असम्बद्ध हताशा के इस दौर में ढेरों आतंकवादी बने जिनकी मुख्य उत्प्रेरणा थी 'बदला'। इनके नाम और काम अनोखे थे। डेनाइट्स का नाम बदले के देवता के नाम पर था। वालकाइरीज़ औरतों कां संगठन था—बहुत घातक, उन्हीं का जिनका कोई न कोई रिश्तेदार धनाढ्यों द्वारा मारा गया था। वे अपने कैदियों को यंत्रणा देकर मारते थे। बेरसर्कस जान हथेली पर रखते थे। उन्होंने बेलोना नामक मर्सीनरियों के शहर को नेस्तनाबूत कर दिया था। इनके अलावा कुछ सक्रिय सगठनों के नाम थे—हेलडैमाइट्स, बेडलमाइट्स, राथ ऑफ गॉड, ब्लीडिंग हाड्र्स, सन्स ऑफ मार्निंग,मार्निंग स्टार्स, द फ्लैमिंगोज़, द ट्रिपल ट्रायंगल्स, द श्री वार्स, द ऱ्यूबोनिक्स, द विंडिकेटर्स, द कोमाचेज़ आदि। बहुत से आतंकवादी संगठन बन गए थे और हमारे लिए मुसीबत खड़ी कर दी थी। ये दिग्भ्रमित लोग अपने जीवन की भी बाज़ी लगा रहे थे—निर्ममतापूर्वक वे हमारी योज़नाएं भटका देते और हमारे संगठन को पीछे ढकेल देते थे।

इस सबके बीच से आयरन हील का मार्च जारी था। चैतन्य और सोद्देश्य कामरेडों

हम हाथ पकड़े-पकड़े उस खून सने रास्ते से भागे, फिसलते बिछलते एक कोने की ओर। हमें कुछ दौड़ते सिपाही दिखे। गोलियां नहीं चल रही थीं। रास्ता साफ लगा। हमने रुककर पीछे देखा। भीड़ धीरे-धीरे आ रही थी। वह मारे गए लोगों की राइफलों से लैस हो रही थी। हमें बचाने वाले अफसर ने हमारे सामने दम तोड़ा। उसने कुहनियों के बल कराहते हुए उठने की कोशिश की फिर लुढ़क गया। गार्थवैट ने देखा एक औरत उस पागल व्यक्ति पर एक बड़े से चाकू के साथ पिल पड़ी है।

वह हंसने लगा : 'मेरे प्रमोशन का चांस तो गया। आओ चलो। यह ठीक दिशा नहीं पर किसी तरह से निकल ही लेंगे।'

और हम पूरब की ओर शान्त सड़कों पर भागे। हर चौराहे पर अप्रत्याशित के लिए तैयार थे। दक्षिण में आसमान लपटों और धुएं से भर गया था। हम समझ गए कि वहां झुग्गी बस्तियां जला दी गई हैं। आखिर मैं फुटपाथ पर थक कर बैठ गई—चला ही नहीं जा रहा था। रोम-रोम दुख रहा था। जगह-जगह लगी चोटों में भयानक दर्द हो रहा था। फिर गार्थ को सिगरेट बनाते हुए कुछ बोलते देख मुस्कराहट रोक नहीं पाई :

''जानता हूं तुम्हें बचाने का मैं कबाड़ा कर दे रहा हूं पर क्या करूं मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा। सब गड़बड़-सड़बड़ हो गया है? जब भी हम निकल जाने वाले होते हैं कुछ न कुछ घट जाता है और हम फिर फंस जाते हैं। हम उस जगह से बस थोड़ी ही दूर हैं जहां मैंने फाटक में से तुम्हें निकाला था। दोस्त और दुश्मन सब का घालमेल हो गया है। एकदम गड़बड़झाला है। कहा नहीं जा सकता कि उन मनहूस इमारतों में कौन होगा? पता करो तो ऊपर से बम गिर सकता है। शांति से अपनी राह चलो तो कोई भीड़ मिल सकती है और गोली चल सकती है। भाड़े के सिपाही भी मार सकते हैं और भीड़ भी।'

उसने अपना सिर हिलाया, सिगरेट जलाई और मेरे बगल में बैठ गया।

'भूख इतनी लगी है कि कंकड़-पत्थर खा सकता हूं।'

वह उठा और दरअसल एक पत्थर उठा लाया। उसने साथ की दुकान का शीशा फोड़ दिया उसी पत्थर से। उसने एक सुराख बनाया पर निराशा में बोला:

'यह तो जमीन वाला तल्ला है, बेकार। पर क्या करें। तुम यहां थोड़ा आराम करो मैं तब तक पता करता हूं। मैं तुम्हें बचा लेने का काम पूरा करके ही छोडूंगा। पर मुझे समय चाहिए, ढेर-सा समय और अभी तो कुछ खाने को...।

हम जिस दुकान में घुसे वह घोड़ों के नाल लगाने की दुकान थी। उसने मुझे आफिस में घोड़ों के इस्तेमाल वाले कम्बलों से ढककर आराम करने को कहा। मेरी बदहाली बढ़ाने के लिए ज़ोर का सिरदर्द भी शुरू हो चुका था। आंख मूंद कर सोने की कोशिश करने में खुशी ही हो रही थी।

जाते हुए उसने कहा : 'अभी लौटता हूं। सवारी तो शायद ही मिले पर कुछ न कुछ खाने के लिए ज़रूर लाऊंगा।'

सिर दर्द वैसा ही था। सर्जन ने देर तक रुककर मुझे कोई ऐसी दवा दी जो दिल पर असर करे और मुझे आराम दे। मैं फिर सो गई। इसके बाद जागी तो इमारत की छत पर थी। युद्ध रुका लग रहा था और मैंने बैलून से किले पर हमला देखा। किसी की बांह मुझे घेरे हुए थी और मैं उस पर झुकी हुई थी। मुझे यूं ही लगा कि वह अर्नेस्ट है और मुझे आश्चर्य हो रहा था कि इसके बाल भौंहें इतनी बुरी तरह झुलसे क्यों हैं।

यह एक अनोखा संयोग था कि हम एक दूसरे को इस शहर में पा गए थे। उसे बिलकुल पता नहीं था कि मैं न्यूयार्क में नहीं थी और उस कमरे से गुज़रते हुए, जहां मैं सोई हुई थी, उसे विश्वास नहीं हुआ था कि वह मैं थी। शिकागो कम्यून का मैंने और कुछ खास नहीं देखा। बैलून से आक्रमण देखने के बाद अर्नेस्ट मुझे इमारत में अन्दर ले गया। मैं रात भर सोती रही। तीसरा दिन हमने उसी इमारत में बिताया। चौथे दिन अर्नेस्ट इजाज़त और एक गाड़ी ले आया और हमने शिकागो छोड़ दिया।

मेरा सिर दर्द खत्म हो गया था पर शरीर और मन बेहद थके हुए थे। मैं अर्नेस्ट पर टिकी पड़ी थी और गाड़ी में निस्संग आंखों से निहार रही थी। लड़ाई छिट-पुट अभी भी जारी थी। कुछ जिले अभी भी कामरेडों के कब्ज़े में थे पर वे फौज़ से बुरी तरह घिरे हुए थे। वे सैकड़ों जालों में फंसे हुए थे और उनके दमन का काम जारी था। उनकी पराजय का मतलब था मौत—कोई दूसरी संभावना नहीं थी। इसलिए वे अंतिम क्षण तक जूझ रहे थे। बहादुरी से, जितने मरे उतने ही मारे।

जब हम ऐसे इलाकों में पहुंचे तो सिपाही हमें लौटा देते घूमकर जाने को कहते। एक बार तो हम दोनों तरफ चल रही लड़ाई के बीच से गुज़रे। हम विध्वंस की भूलभुलैया में थे। हम धीरे-धीरे ही आगे बढ़ पा रहे थे।

हम पुलमन नामक शहर से गुज़रे—यूं कहें शहर जिसका नाम पुलमन था। अब तो सब नष्ट हो चुका था। अभी भी धुंआ उठ रहा था आसमान को धुंधलाता हुआ। सिपाही ड्राइवर ने बताया कि वहां बहुत भयानक लड़ाई लड़ी गई थी। कुछ सड़कें तो इस क़दर लाशों से पटी थीं कि वहां से गुज़रना मुश्किल था।

एक इमारत के बगल से गुज़रते हुए गाड़ी रोक देनी पड़ी क्यों लाशों की लहरें जमी हुई लगती थीं। सिपाही और गुलाम साथ पड़े थे—विरूपित, अंग-भंग-हथियारों और गाड़ियों के ढेर। कल्पना करना मुश्किल नहीं था कि वहां क्या हुआ होगा।

अर्नेस्ट गाड़ी से बाहर कूद गया। परिचित से कंधों पर सूती कमीज़ और परिचित-सी बालों की सफेदी ने उसका ध्यान आकर्षित किया था। मैं नहीं देख पाई थी। वह लौटकर मेरी बगल में बैठ चुका था और गाड़ी चल पड़ी थी तब उसने बताया : 'बिशप मोरहाउस थे।'

जल्दी ही हम हरियाले प्रदेश में पहुंच गए। मैंने मुड़कर धुंआ भरे आसमान पर आखिरी नज़र डाली। एक विस्फोट की आवाज़ सुनाई दी दूर से। हमारा अभियान

उसके बाद मैंने तीन साल तक नहीं देखा गार्थवैट को। कहां से लौटता। उसके फेफड़े और गर्दन में गोली लग गई। उसे अस्पताल में भर्ती कर दिया गया।

दुःस्वप्न

पिछली रात मैं पल भर भी नहीं सो पाई थी। और आज के हालात! मैं घोड़ा बेचकर सोई। मैं जब पहली बार जागी तो रात थी। गार्थ लौटा नहीं था। घड़ी खो गई थी इसलिए वक्त का पता नहीं चला। आंख बंद किए पड़ी थी—वही विस्फोट की बेसुरी आवाज़ें दूर से सुनाई दे रही थीं। नरक अभी भी धधक रहा था। मैं रेंगकर दुकान के सामने पहुंची। विस्फोट से फैली रोशनी में दिन-सा लगा रहा था। कोई भी लिखावट पढ़ी जा सकती थी। पास से बन्दूकों और हथगोलों की और दूर से बमों की आवाज़ आ रही थी। मैं अपने कम्बलों में वापस चल गई और फिर सो गई।

जब मैं फिर जागी तो एक रोशनी मुझ पर पड़ रही थी। दूसरे दिन की सुबह हो चुकी थी। मैं दुकान के बाहर आई। आसमान में धुएं की लकीरें थीं। सड़क के दूसरी ओर एक असहाय हिलडुल रहा था। उसका एक हाथ उसकी बगल में चिपका हुआ था और उसके पीछे खून की छीटों की लकीर। वह चारों ओर देख रहा था। उसकी आंखों में आशंका और डर पसरे थे। उसने एक बार सीधे मेरी ओर देखा। उसकी आंखों में घायल शिकार वाला भाव तैर गया। उसने मुझे देखा पर हमारे बीच संबंध की कोई कड़ी नहीं जुड़ी, कोई समझ-सहानुभूति नहीं, और वह आगे रेंगने लगा। ईश्वर की इस दुनिया में उसे कहीं से किसी सहायता की उम्मीद नहीं थी। दुनिया के मालिक दासों के शिकार पर निकले थे और वह भी एक दास था। उसे बस एक सुराख की उम्मीद थी जिसमें वह रेंगकर छिप सकता। कोने पर एम्बुलेंस की आवाज़ से वह चौंका पर उसके जैसों के लिए तो ऐम्बुलेन्स होती नहीं। कराहते हुए वह एक दरवाज़े से सिमट गया। क्षणभर बाद वह निकला और आगे घिसटने लगा।

मैं फिर अपने कम्बलों पर लौट गई और गार्थ का इन्तज़ार करने लगी। मेरा सिर का दर्द गया नहीं था। उल्टे बढ़ रहा था। मैं इच्छाशक्ति से ही आंखें खोलकर चीज़ों को देख पा रही थी। पर ऐसा करने में बहुत दर्द हो रहा था। दिमाग में भी धक्-धक् हो रही था। कमज़ोरी और तकलीफ के बावजूद मैं टूटी खिड़की से बाहर निकली और सड़क पर आकर उस बेहूदा जगह से भागने की कोशिश में लग गई। उसके बाद तो बस दुःस्वप्न है। उसके बाद के घन्टों की याद तो बस दुःस्वप्न की याद है। बहुत सी तस्वीरें दर्ज हैं दिमाग में पर उनके बीच अचेतन अन्तराल है। उस दौरान क्या हुआ नहीं मालूम, न ही कभी जान पाऊंगी।

मुझे याद है कोने पर मैं एक टांग से टकरा गई थी। उसी जान बचाते असहाय की

टांग थी। कितनी अच्छी तरह मुझे याद है वह, तुड़ी-मुड़ी बाहें, हाथ जो खुर और पंजों जैसे हो रहे थे। सम्हल कर उठते हुए उस चीज़ के चेहरे पर नज़र पड़ी, जान बाकी थी। आंखों में जान बाकी थी, आंखें मुझे देख रही थीं।

उसके बाद एक खालीपन। मुझे कुछ पता नहीं था, कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मैं बस लड़खड़ा रही थी। सुरक्षा के लिए। मेरा दूसरा दुःस्वप्न था मुर्दों की एक शांत सड़क। मैं अचानक उस पर आ गई थी जैसे कोई घुमक्कड़ गांव में अचानक एक धारा के किनारे आ जाए। फर्क यही था कि यह धारा बह नहीं रही थी। वह मौत से जम गई थी। चारों ओर लाशें पटी पड़ी थीं—बस कहीं-कहीं लाशों के ढेर थे समधरातल को तोड़ते हुए। रसातल के मारे गए दास—वैसे ही जैसे कैलिफोर्निया में खरगोश को घेर कर शिकार करने के बाद खरगोश खेतों में पटे रहते थे। मैंने चारों ओर देखा। न कहीं गति थी न ध्वनि। दोनों तरफ ही इमारतें इस दृश्य को अपनी खिड़कियों से निहार रही थीं। उस मुर्दा धारा में मैंने एक बार—बस एक बार, एक बांह उठते देखी थी। कसम खाती हूं उस हाथ की गति में एक मरोड़ती वेदना थी। फिर एक सिर उठा-लथपथ, आतंकित और फिर सड़क पर पड़कर शांत हो गया हमेशा के लिए।

एक और सड़क की याद है—दोनों ओर शांत इमारतें। मैं डर से सिहर गई—फिर रसातल वाले लोग। पर इस बार धारा में गति थी। मैंने देखा डर की कोई बात नहीं। धारा धीरे-धीरे बह रही थी। उसमें से कराह, चीख, सिसकियां, गालियां, बड़बड़ाहट, पागल आवाज़ें उठ रही थीं—बूढ़े-जवान, कमज़ोर-बीमार, असहाय-निराश झुग्गियों के अकिंचन लोगों की आवाज़ें। उनकी बस्तियां जला दी गई थीं और वे सड़क युद्ध के नरक में ढकेल दिए गए थे। उनका क्या हुआ मैं जान नहीं सकी।

खिड़की तोड़ने और दुकान में छिपने की मुझे हल्की ही याद है, पर इसकी तीखी याद है कि अचानक राइफल की आवाज़ आई और मैंने देखा एक मोटर से एक सिपाही मेरे ऊपर गोली चला रहा है। निशाना चूका और दूसरे ही क्षण मैं सिग्नल देने के लिए चिल्ला रही थी। गाड़ी में चढ़ने की मद्धिम याद है पर एक तस्वीर उभरती है—राइफल चली तो आंख खुली और मैंने देखा जार्ज गिलफोर्ड को फुटपाथ पर गिरते—उसे मैं बचपन से जानती थी। सिपाही ने फिर गोली चलाई और गिलफोर्ड उछलकर ढेर हो गया। सिपाही हंसा और गाड़ी आगे बढ़ गई।

इसके बाद की याद है कि मेरी आंखें तब खुलीं जब मैंने किसी को अपने पास बार-बार एक ओर से दूसरी ओर चलते देखा। उसका चेहरा उतरा हुआ था, तनाव पूर्ण। माथे से पसीना नाक पर बह रहा था। एक हाथ दूसरे को सीने पर पकड़े हुए था और खून फर्श पर गिर रहा था। उसने भाड़े के सिपाहियों का यूनिफार्म पहन रखा था। बाहर से बम फूटने की आवाज़ आ रही थी। मैं किसी ऐसी इमारत में थी जिसे औरों से अलग कर बंद कर दिया गया था।

एक सर्जन मरहम पट्टी के लिए आया और मैंने जाना कि दोपहर के दो बजे हैं।